ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३६३ म अंक ०१ जनवरी २०२३ (वर्ष १६ मास १८२ अंक ३६३)

(विदेह www.videha.co.in)

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

 भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क बाद http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html कर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*
ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

 ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत

छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ओ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यांतरण आ ओकर वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ओ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ओ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha e-Journal: Issue No. 363 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक निश्चायणि- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>**अक्षर खम्भा (आखर खाम्ह)**</u>

तिष्ठन् खम्भे काठि तस् किष्किनल्लि यसनद्गु। अक्षर खम्भानम् जड मत्त्रा वन्नि न दद्गु॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः यहिल दासा।)*

मात्र आखर सुधी खाम्ह निर्माण कऽ उद्देश्यन (*गद्य-पद्य सुधी*) मंच उँ नै वाह्ल जाय गँ उ त्रिभुवनसुधी उत्तम उकन कीर्तिसुधी लक्ष्मी कना यसना।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.६.आचार्य रामानंद मंडल- मैथिली साहित्य मे घोटाला

२.७.आचार्य रामानंद मंडल- २ टा कथा

२.८.योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'- ॐ तत् सत् एकम् एव अद्वितीयम्

२.९.संतोष कुमार राय 'बटोही'- मंगनौना (उपन्यास- खण्ड १०)

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल- रंगनाह कवि

२.११.जगदीश प्रसाद मण्डल- माउपर (धारावाहिक उपन्यास आठम पड़ाव)

२.१२.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २० म खण्ड

२.१३.डॉ किशन कारीगर- मैथिली साहित्य मे सालकर साहित्यकार सब क असलियत

२.१४.दुर्गानन्द मण्डलक ३ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१५.दुर्गानन्द मण्डलक ५ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१६.दुर्गानन्द मण्डलक ५ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१७.दुर्गानन्द मण्डलक ५ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१८.दुर्गानन्द मण्डलक ५ टा कथा- कथा ५ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१९.गजेन्द्र ठाकुर- लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ सम्पादक वा पुनर्लेखनक अज्ञानतावश उद्यम छद्मारम्भ

३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र- चानन

३.२.कल्पना झा- मायक आँचर

४. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

अनुलेखक: मैथिलीम छन्द समीक्षा आ कमलानन्द झा प्रसंग



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६२ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

(पछिला अंकसँ आगाँ)

मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा प्रसङ्ग

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जेऽ ई सेहो जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ओमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

ओनाऽ एकटा दूल सुधान अछि, एकटा गैर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम ओऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहियो होएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेशी मनोरंजक अनुभव होएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे ओ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति

विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

एहि उपन्यासमे राजनीति टुन-टुन बनि नै छै उठऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क गँ प्रश्न नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधन धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कएलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'राट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे ए http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा उपन्यासकार सुभाषजीक रचना शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधनक आवश्यकता नै पड़लै। एकर हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ए http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घंटी अछि। एहि हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक साधन पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सतर्क अछि। ई अपन बायोडाटामे गबन सन्दर्भसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गबनसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडाटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियन्हि? कारण ओ छद्म समीक्षक छथि। ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गम्भीरतापूर्वक उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छन्हि।" तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलन्हि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरो बढ़ा सकै छी आ ककरो उतारि सकै छी- कोन रचनाकार्य थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण? चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा केर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादूबला साहित्यिक निश्छल दुनियाँमे। अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यिक दुनियाँमे। प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर। पहिल पाँतिमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि- "विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।" आ उपन्यास आरम्भ। *गामवालीक मृत्यु आ रखन ममला, गामवालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?*

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच में' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूँक, The Kamla River and People On

Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा प्रकाशन द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पेनाक पेना मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपवाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ओ आन लेखकक निसर्ग कहै छथि। ओऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई आन लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई निसर्ग दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ मे बी. एस. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे एम.एस. १९७०मे कने छथि, आ ओइ निसर्ग लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हानि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लैए, नै तँ कमलानन्द झा केँ बूझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई निसर्ग कोना सिविल इन्जीनियरक रहऽ सकैए अछि, रहऽ सकैए बूझला होइतन्हि। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ ठामक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकत, मुदा मूलस्थानक पुनस्थान आ पाइ लालुप लोकसँ कृतघ्न भेल से हुन सिद्ध भेल। ओ लेखककेँ दस बारह वर्ष पहिने सहो बाबानन्द विरागी उद्यानक भेटल छलखिन्ह जे लिखने नहि छथिन्ह जे ओ कविताम प्रकाशित भऽ अनायास अपन नवनाम दासनक सामिग्री बानि कऽ लेइ छथि,

ओहन सन। आब ओ कमलानन्द झा क आश्रय एकलहि मृदा दूर्रोग्य! अन्त हिसाब ब्राह्मणवादकँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा नामयंथक साठन यकोउ छथि आ सामाजिक न्यायक वलि चढ़बऽ चाहै छथि, एकर प्रति समानान्तर धारा सदा अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जठावला लोक कम्युनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचबालेल नामयंथक शनध, ओहन लोक सदसँ कम्युनिज्मकँ बहुत नूकसान देल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सदृटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमः

http://videha.co.in/pothi.htm

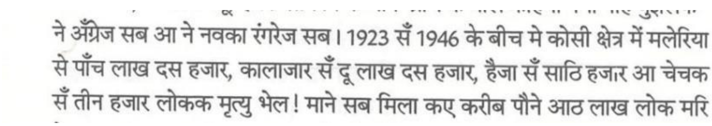
ओतऽ ओकरा गप मोन पाडि देखै ज जखन बिल (गेझकँ युद्धल गेलहि ज की उा ओक्क वॉक्क रानाम पाण्डेशीक उनसँ दनीसँ आनि नहल छथि? गँ हुनकर उत्तर नहहि ज माझ्काऔक पाण्डेशीक उन काना उयाद दनीसँ नै उानल अछि। स विदेह यटानम हम सद ओ एनहक निष्क नहिगा ओकरा आन समृद्ध करैत नहब, कारण समानान्तर धाराम स्ठल माँछ ब्रान पारखनिक सद माँछ नै सउेज, ओकरा मलाह (गाट-गाट कऽ स्ठल माँछ निकालैत नहल छथि, निकालैत नहता।

सिद्धीकरेउ समीक्षायन अन्तिम प्रहार।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन क बीच मं... २००६): यह ध्यान देन की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में

मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजा से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

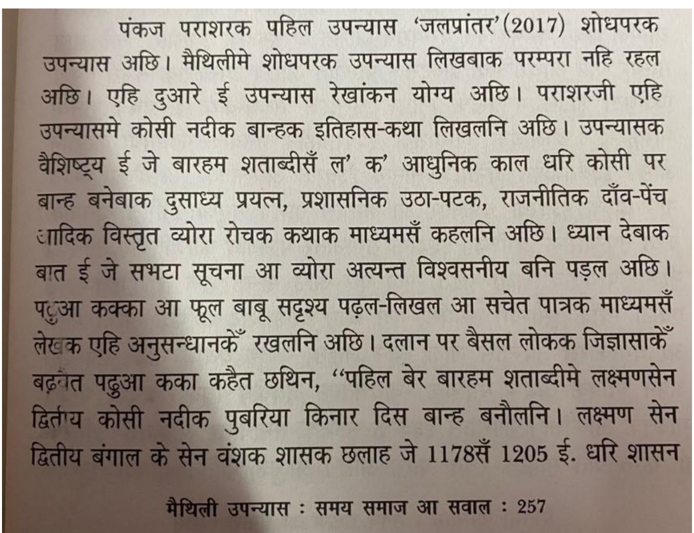
श्री पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०३)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुई पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बाँधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'वीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबंध 'वीर बाँध' कहलाया। इस तटबंध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से करीब 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बाँध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बाँध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हण्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बाँध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हण्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इस किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे

बना कोई गटवन्ध नहीं होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस गटवन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छन्म समीक्षक कमलानन्द झा ज्ञाना चान उपन्यासकारक पी0 (0ाकव, दखु छन्म समीक्षक कमलानन्द झा ज्ञाना उज्ज्वल चान पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):



पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

श्री पंकज झा पराशर (साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०११ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम–तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह कि ख्यातनामा की एक मिसाल फिरोजशाह तुगलक की फौज के

सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे साथ में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाये और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाये वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और पियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के हाथी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इन रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुल्तान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

श्री पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०३)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनेँ रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनेँ कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनेँ शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनेँ आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनेँ छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र एही लिंकपर आन स्क्रीनशॉट अपडेट कएल जाएत।)

(अगिला अंकमे जारी..)

२

विदेह "साहित्यिक ग्रन्थागार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमी:-

(क) पुनर्स्थापनक राजनीति

(ख) सरकारी अकादमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काज करबाक तरीका

(घ) सरकारी संस्थाक छद्म निर्णायक उपजल तात्कालिक सम्मानित संस्थाक कार्यपद्धति

(ङ) अकादमी पुरस्कारक पाछाँ रहस्य: मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३. प्रकाशन उद्योग पसरल ग्रन्थागार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण

५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक ग्रन्थागारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, विद्यु, मंच-माला-पाग्ग आ लोकार्पणक खेल-तमाशा।

७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कीर्तननाद आ तकरा पाछूक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सबहक संग छद-छाद आ ओकर शोषणक विविध तरीका

९. कोनो आन विषय।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

आब अहाँ पूछब जे एकर प्रतिकार समानान्तर धारा कोना केलक, तँ हम कहबाक नै करैत, तँ एकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, बेगूसराय सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस वर्खसँ गीजि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ओ पोथी पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि।

पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

निज नजरि सुभाष चन्द्र यादव

निज नजरि सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

संगम पर कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादपर प्रहार:

दुखद पत्री- The Black Book

दुखद पत्री- □□□ □□□□□ □□□□ (मिथिलाक्षर)

४

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

दुर्गानन्द मण्डलक पाँचटा लघुकथापर समग्र टिप्पणी

Five Short Stories by Sh. Durganand Mandal

Sh Durganand Mandal has adjudged the following five short stories as his best:

1.The Red Sister-in-Law (Lal Bhauji)

2.Dr Karaveer (Doctor Karmveer)

3.The Birthday of Lord Krishna (Kishna Mutthi)

4.The Simpleton (Baklel)

5.The First Wedding Anniversary (Biyahak Pahil Salgirah)

In Mthila, there is a tradition to call a sister-in-law by adding a prefix symbolising the colour Red or by adding the prefix New or Old or by adding a prefix of her father's village. The Red Sister-in-Law begins with a description of the winter season, the red sister-in-law is nowhere to be seen in the first half. It tells the story

of an old couple. The second half describes the relationship between a newlywed woman and her brother-in-law in the backdrop of the Holi festival. The strength of the story is not in its plot but in the description of surroundings and relationships.

The second short story Dr Karmveer begins with excitement relating to social work and change and ends with disappointment whether all these were for personal achievement.

The Birthday of Lord Krishna is a story of a baby Marni. The economy of a poor family, how they survive, and the economy based on nature all are intricately woven in style. The festival on the occasion of the birthday of Lord Krishna is going to be held, the baby thinks of it not only for herself but for her siblings also. The mother comes to know about the money she got by selling wild grain, and the innocent reply of the baby wins hearts.

The Simpleton is a story about Radha and Mohan, the newlyweds. Radha goes to her father's place

and Mohan is dying to see her. The simple things have been dealt with, with dexterity and in a humorous way.

The First Wedding Anniversary is a story of a celebration resulting in death.

- Gajendra Thakur, editor, Videha (Be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast list.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६२ पर टिप्पणी

<u>अंक ३६२ पर टिप्पणी</u>

आशीष अनचिन्हार

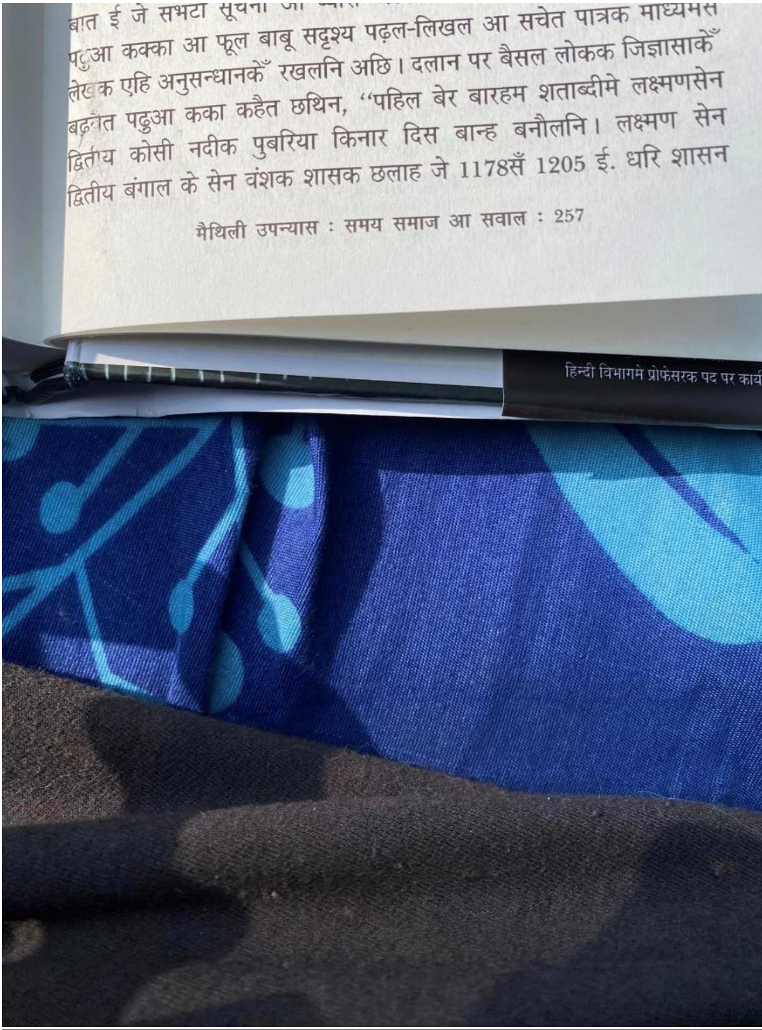
कुमार मनोज कश्यप जी लगातार आबि रहल छथि से नीक संकेत अछि। मुदा हिनक लघुकथा "ढ्रंत" काफी प्रभाव नहि छोड़लक। श्री नरेन्द्रः साफल मीतियाम शाश्वत रूप चुटकुला केर मैथिलीकरण अछि। उम्मेद अछि जे मनोजजी एहियन ध्यान देताह। किशन कारीगर केर रचना पढ़ल मुदा श्री हास्य-कटाक्ष केर विधा नै अछि। एकरा मात्र कटाक्ष कहल जेतै। महाकान्त प्रसाद केर बीहनि कथा प्रभावित कएलक।

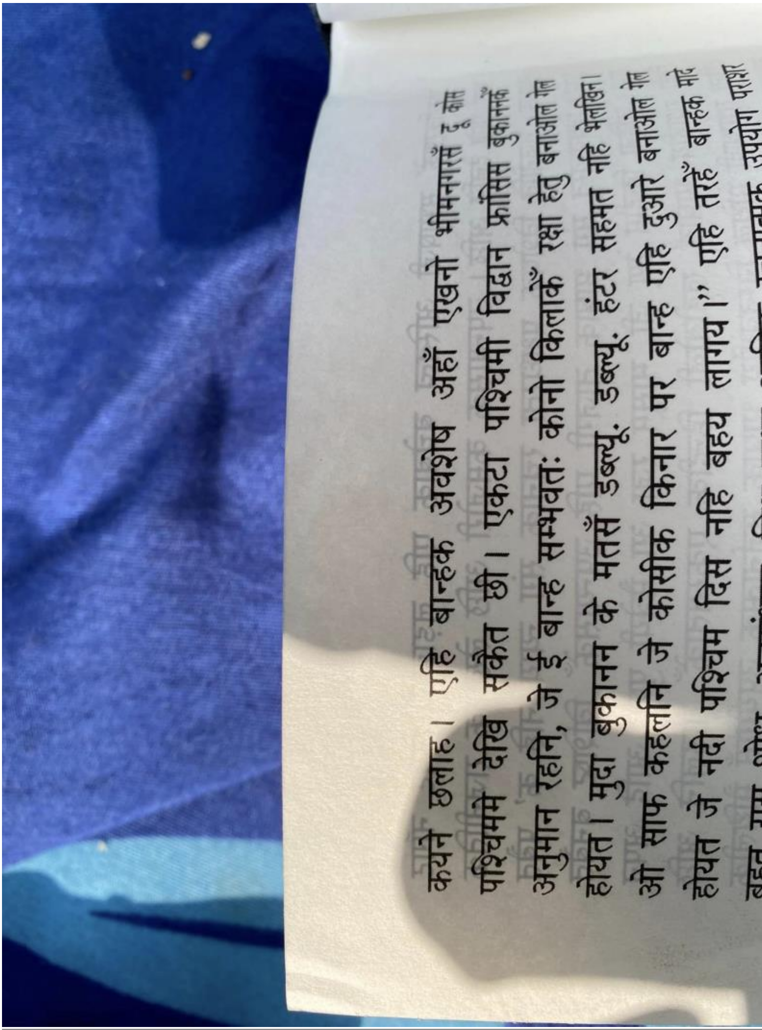
कल्पना झा, दिल्ली

आदरणीय अशेष। सविनयहुँ विदेह पढ़ब सुखद पढ़ब थिक। साहित्य ओ सामाजिक पढ़ब आ गहन उत्कृष्ट पत्रिका। एकर नाम सर्वोपरि भावि रहल छै।।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). http://videha.co.in/ अंक ३६२ क नियारई पर टिप्पणी


बात ई जे सभटा सूचना
पढुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ
लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
बढ़बैत पढुआ कका कहैत छथिन, “पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन
मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257
हिन्दी विभागमे प्रोफेसरक पद पर



कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे बहुत रास शोध, [illegible] रचनात्मक उपयोग पराशर

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

....

उपन्यासकार क छथि, पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)

दुखद

Rabi ndraChaudhary

....

वृत दुर्योधयुद्ध, आयफ्जिनक आ आयनाधिक कृत्य..

KumarManoj Kashyap

....

ऽऽसिर यढि वहुत विंगिग छी।

R N Mshra

....

दुर्योधयुद्ध

Kal pna J haPat na

....

आश्चिनवा..! रून ऽऽी क छैथ?

पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)

ह रुगवान..! ञ्ली ठीक चान छैथ।

Umesh Mandal

....

Gaurinath:

नीक। ओरुन चान कन दखान कनव जनूनी

यंकज यनाभन (जल यांगन उयन्यास)

उाकन ग लखकीय जीवन चानी यन टिकल छै आ गकना यश्रय दव'नाला सन्ना मैथिली म कम नहि।

....

ओरुन चान लाक सरु मैथिली आन मिथिला क अहिगा कनय म सदैव आगु नरैग छथि

JhaPrasanna

....

ओकना कार्ट म ल्s जवाक चाही

यागेन्द्र याठक नियागी

+91 98310 37532

....

SubhashChandraYadav: I condemn it. The thief must be exposed.

....

अगि दूखद, निन्दनीय

Manoj Pathak

....

सादन आगान।

काटि कऽ सकैत छथि। परंतु एहन लोक के चर्चा करनाई आवश्यक छल। ई त साहित्यिक चोरी मानल जायत।

RamanandMandal

....

धन्यवाद।

VidehaKeshavBhardwaj Delhi

....

Nabo Narayan Mishra

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति

....

Mukund Mayank

Oh

....

प्रदीप पुष्प

बहुत सुन्दर बात।

....

Abhilash Thakur ·

घृणित कार्य! लज्जा जनक

....

Ajit Kumar Jha

एना नहि लाजो नहि लगैत छन्हि एहन प्रवृत्ति वाला महानुभाव सब कँ। एहन लोक सब कँ लेल सेहो अलग सँ पुरस्कारक घोषणा होयबाक चाही। एहिप्रकारक करबाक लेल अपने कँ साधुवाद ।

....

Ranesh Kumar Sharma

यूनस्कान यावे क जल्वाजी हगे

....

Kunal

उयन्यास आ गकन लखकक नाम घाषिग कन्

....

Ashish Anchinhar

Kunal जी, ऊँ काना समान्य याठक ऽऽी प्रश्न यूछन नहिगथि गखन हमना नीक लागेग।

प्रबुद्ध याठक उा लखक वर्गसँ ऽऽी प्रश्न ओवाक मगलव छै ज स्थिगि गंर्रीन रऽs गेल छै। उाना जखन यूछिय दलहूँ अछि गखन ओकन उत्तन अछि- याथी, जलप्रांगन, यंकज यनाशन। ओहि याथीक गदगदी आलाचक, कमलानंद सा।

....

Kunal

Ashish Anchinhar धन्यवाद ।

ओना सार्वरौम जकां छऽऽ ज वस गंर्रीन आनाय लगाउाल जाऽऽ छऽऽ मृदा नाम नऽऽ लल जाऽऽ छऽऽ। ओना हमना हाऽऽयाक्रासी क चनम लगऽऽओ। ऽऽी अनसाहाग छी ।.........

आव नाम ल गेल छऽऽ। ग हमना लगऽऽओ ज यंकज यनासन (उयन्यासकान) आ कमलानंद सा (आलाचक) क वाजक चाही ।

....

Lakshman Jha Sagar

ओहन चानक सामाजिक वहिस्कान हवाक चाही। आगि यानि ढाऽऽ0

देबाक चाही। मुँह म कारी चून लगि क गदहा पर सवारी घुमबाक चाही। एहन कुदशा कय देबाक चाही जे फेर क्यो एहन घृणित काज नै करय।

....

Chitragupta Chitragupta

अरविन्द दूबे

....

जगदानन्द झा 'मनु' ·

मिथिला मैथिलीम साहित्यक चोरी जगजाहिर अछि। मुदा आब साहित्य अकादमी आ डाकर लोकक द्वारा.... बहुत निंदनीय काज, एहन एहन लोककेँ अवश्य दण्डित करबा चाही

....

श्रीधरम

ओ पंकज परासर, हम त' पढबाक आवश्यकता नहि बूझलहुँ। प्रतिरोधक नाम पर मात्र इएह छनि हिनका लग।

....

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). http://videha.co.in/ अंक २६-३० क रिपोर्ट एवं टिप्पणी

....

kellner@ucla.edu"

Dear Gajendra, thanks for the detective work. was there a response? best regards,

Douglas Kellner, Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education, University of California-Los Angeles, Box 951521, 3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax 310 206 6293, Phone 310 825 0977 http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

....

dear Gajendraji, apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam

kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.- **Rajiv K Verma**

…………………………

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country. Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar's duplicay. Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the

article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more. - **VIJAY DEO JHA**

....

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi. -**shridharam**

....

अहां कं सूचनार्थ य(0न छी (किछ घृणित काज यंकज यनाशनक) ज यंकज यदिनहा ॅॅ सव काज कनैत नहय छलैण। - **aavinash**

....

Dear Gajendra g, You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm the article published through the videha. Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head. jai Maithili jai Mthila- **Sunil Mallick**, President, MINAP, Janakpur

....

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.- **shyamanand choudhary**

....

Namaskar. Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.- **Dr. Ramanand Jha' Raman'**

....

प्रिय गजेन्द्र जी , चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहिं | यद्यपि हमहु चेतना क स्थायी सदस्य | ओ डा. मुदा निंदास्पद घटना गं यी थिक गं दुखी कयलक | कतियय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यांकनक हमर अपन संग्रही संस्थान, ओहि दुर्घटनाक बाद गं आब चिंता म ध' देलकय| दुखी, हम अपन निश्चित देलहुँ| बहुत दु:खद दृश्य | सृजन निकुञ्ज साहित्यिक सन्दर्भ म यी घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कुत्सित प्रसंग क' क' स्मरणीय कैल जायत- सस्नेह,- **गंगेश गुंजन.**

....

PRIYA MAITHILJAN, APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA. ESWAR KE SAKCHI MANI - DIL

PAR HATH RAKHI AA KULDEVI KE ASMARAN K-K YAD KARU KI SACHHAI KE KATEK KARI B CHHI .NI K BATAK LEL MANCH KE UPYOG KARI TA UTTAM DHANYABAD.SAPREM- **PK CHOUDHARY**

....

Gajendra babu, pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.- **subhash Chandra Yadav**

....

प्रिय 0ाकुनजी! (माननीय संयादक), "विदह ई-यत्रिका" [मैथिली], एखन धनिक उयलब्ध साइटक आधान यन हम अयनहिक संग आगव यसिन्न कनब। - **शंभु कुमान सिंह**

....

Dear Gajendraji,

I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.

हाँ अपन मल मँ लिखन छी ज निदह आर्काइन स संबंधित लखक'क सवटा नचना हटा लल जायत। अदि स आर्काइन सं ई प्रसंग सहो, ओकन साक्ष सहो मटा जायत। हमन मत ई जा साक्षव नहवाक चाही निक आ अधलाह दून् गनहक काज'क। अहाँ अयसन कामंट आ निंभय सहो आर्काइन म जा क संबंधित नचना क यास्रा-सिद्धायहन क न्यू म रनिध्या'क या0क'क लल सूनजित नाखि सकौत छियहि। ई दाहनवाक वहुत औचियक नहि ज निदह निक लागि नहल अछि आ अहांक यनिश्रम ओकदम दखा नहल अछि। ईति,सदन। - **Sadan Jha**

....

Thank you.- **Nishikant Thakur**

....

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole. I feel proud for the person like you who shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea

clean. Thanx for enlightening me on the subject. Regards- **Bhalchandra Jha.**

....

पंकज पराशरजीक एहन कार्य पर स्मरण अबैत अछि करीब बीस-पचीस साल पहिलुक घटना, जहिया आकाशवाणी दरभंगासँ म.म.डॉ. सर गंगानाथ झाक एकमात्र मैथिलीक कानूनिक पदकेँ एक गोट कवि द्वारा अपन कहि प्रसारित कए देल गेल छल, जे बादमे (सजग श्रोता द्वारा सूचना देलाक बाद) आजन्म बैन कए देल गेलाह। कहबाक तात्पर्य जे ऊँ हम मैथिल दरभंगा- मधुबनीमे गंगानाथ बाबूक पदकेँ अपन कहि सकैत छी गँ ऽऽ कान बचा गया। निश्चय एहन रचनाकारनिक सङ्ग कड़गर डेग उठाएब आवश्यक।- **ajit mishra**

....

Dear Gajendrajee, We should take strong step to prevent such intellectual cheats. My support is always with you.- **K N Jha**

....

This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything

from such authors. Regards,- **Prof. Udaya Narayana Singh**

....

प्रियरंजन ठाकुर जी, मैथिल साहित्यकार आर साहित्य क्षेत्रम सेहो क रहल छथि, हुनी जानि अपार प्रसन्नता हएल | पंकज पराशर क नकारात्मक वृद्धिक पूर्ण उपयोग करबाक लेल हम नोबेल प्राइज सा सम्मानित कराय चाहैत छी |- **वृद्धिनाथ मिश्र**

....

Sampadak Mahoday, Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi, Sadar- **SHIV KUMAR JHA**

....

गजेन्द्र ठाकुर जी, नमस्कार ! मैथिली म ओहि तरहक काज लगातार क' रहल अछि । किछु व्यक्ति ओहि धंधा म अग्रसर छथि । मैथिलीक सम्पादक लोकनिक अनदेखीक फायदा कतेक अंग्रेजी पढ़निहार तथाकथित साहित्यकार लोकनि उठा रहल छथि । पंकज जीक पहल म छपल लेख क हम सेहो पढ़ने छी आ किछुए दिनक बाद हम नेट पर मूल लेखकक आलेख क सेहो पढ़लहुँ । हमरा त' आश्चर्य लागल छल जे पंकज जी आलेखक कम स कम शीर्षक त' बदलि

लेखथि मुदा हुनका एतेक स्थान नहिनि एखन की छल । एतेक नहि , हिनक बड्ड नाम कनिगा अंग्रेजी साहित्य स' हुन-हुन कयल गेल अछि । खैर ! ई करथि ... । मुदा एहि बन कहावत ठीक बैसैत छाहे " सौ सोनार के त' एक लोहार के " । प्रकाशन म ई रो किया बाकि गेली क' नहल छथि हुनका गंरीन क्रिमिनल बुझवाक चाही । धन्यवाद एहि लेल अहाँ के ई एतेक जानकारी देबाक स' एहि गप्प के उठेलहु ।- अहाँक- प्रकाश चन्द्र (**प्रकाश झा**, मैलानंग)

....

pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal. - **kamini**

....

[illegible], [illegible] [illegible]. हमर मनेव एतेक, ई एक बन अहाँ देखान क देलहुँ, आब छाति हल जाउ. हिन्दीया म एहिना र नहल छै. बन बन आ खनाव भाषा म लिखल मान क दुखी करैत अछि. हुन लागैत अछि ई अहि म समय कियेक नष्ट करी? हिन्दुस्तान म जाति आ सबहा मैथिली स जाति नयि जाएत. हम एकरा नयि मानैत छलहुँ मुदा आब 30 बरख स मैथिली म लिखनाक बाद आब देखल ई एक ठान 1 मैथिली साहित्य म लिली जी, उषा जी आ शेफालिका जी क बाद यदि किउ नाम लेत अछि

त हमर. 2 एखनो कोनो पत्रिका मे छै त हमरा लेल रचनाक आग्रह होइत छै. 3 एखनो हम ओतब सक्रिय छी आ निरंतर लिखि रहल छी. 4 दूसर ई हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन के हम अपन गुनिया बुझै छी) के बाद एहन कोनो समकक्ष कोन, महिला लेखन नहि आएल. 5 ई स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पाबै छी ई हमरा पर, हमर रचना यात्रा अथवा हमर रचना पर किछु नहि लिखल गेल, चाहे ओ मोहन भारद्वाज रहथु अथवा आन किओ. जहन हमर दशकक कोन चर्चा होइत छै, तीन चारिटा नाम पर सविस्तार चर्चा होइत छै, जाहि मे हमर नाम नहि रहैत छै. हमर नाम मात्र सन्दर्भ लेल जोडि देल जाइत छै. 6 एक दिन मे मात्र रमण जी हमरा पर एक गोट लेख लिखलन्हि. हम ओकरा पुनः टाइप करबा के अहां लग पठायब. 7 जाति पाति धर्म आ क्षेत्र पर कहियो ध्यान नहि देलाक कारणे त कही हमर ई स्थिति नहि छै, आब हमरा ई सोचबा मे आबि रहल अछि. 8 हमर पिताक, ई स्वयं हिन्दी के ख्यातिलब्ध कथाकार छथि, हमरा बूझल रहलाह ई हम मैथिली मे लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) स नहि छी, तैं हमर लेखन के कहियो मैथिल सभ नहि स्वीकार करताह, कहियो किछु नहि करता.. अपन भाषाक प्रति प्रेम के आग्रह कारणे हम हुनकर बात नहि मानलियै, लिखैत गेलहुं, मुदा आब लागि रहलअछि ई हुनकर कहबी सही छलन्हि की? 9 एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखिया. ओकरा विरुद्ध किछु करियु. मैथिली मे ई बड बड संस्था बाड़, बाना समिति सभक, सभ बन निर्णायक पद मे रहैत छथि. लाखो खर्च करै छथि, मुदा नीक लेखक

कन याथी सए वन 5-7 टा निकालैथ, स नयि हावैत छहि. 10 हमना एटल जानकानी क माणविक निश्चायणि हॉल किनाया यन चढै छै. एकना म काला आयपि नयि, यद्य डाकना स किछु आय हावै. मूदा डाकना मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लल मांगल जाएत, ए; नयि एटै छै. यदि डाकन शुल्क चूका दी, एहन ए किनायाक नुय म किछ ल' सकि छै. एकना सए क उजागन कनी. 11 व्यक्ति स संस्था येघ हाएल छै. जाक संस्था सए छै, एकना यन लिखी, साहित्य अकादमीक मैथिली विएग सहित. 12 लिली नक सएटा नवनाक अनूवाद अधिकान हमना दन छथि. हूनक साहित्य अकादमी यूनस्कान प्राप्त याथी 'मनीचिका' कन हिन्दी अनूवाद लल यिछला 2-3 साल स हम लिखि नहल छी. साहित्य अकादमीक यत्रिका 'समकालीन एानतीय साहित्य" म हम यिछला 25 साल स अनूवाद सहित छयि नहल छी. मूदा हमना स अनूवादक नमूना मांगल गेल. डाहि कूर्सी यन ज सूनाम धन्य वैसल छथि, हूनका हमना माद नयि वूमल ए काला मैथिल साहित्यकान स यूछि सकैत छलाह. एली गहिन एलै, जना एक वन एक गाट चैनल मृषिकश मूखर्जी स हूनकन वायाडाटा मंगन छल आ एखनि यढल समाचानक अनूसान आ. जानकी वल्लए शूस्त्री स हूनकन वायाडाटा यद्मश्री लल मांअगल गेलैय. 13 अयन विनम्रता दर्शावैत हम लिली जीक दु गीन टा कथाक हिन्दी अनूवाद हम यठा दलियहि. गैया अएली यन काला विचान नयि. लिखला क वाद हमना कहल गेल ज हम लिली जी स साहित्य अकादमी क अनूवादक अधिकान दियाव म मददि कनी. आन एाएली, अहां क अनूवाद स मतलव अछि न, आ जहन हम अनूवाद क; क दव' लल गैयान छी एहन अकादमी क

किअयेक अधिकान चाही? अ्ॐ लल ज अकादमी अयन यसीनक आदमी क अनूवाद लल द; सकय. ओखनि धनि ठाकना यन नियटाना नयि रलैय. अकादमी स रून काना यत्र नयि आओल अछ. अनूवाद गैयान नाखल छै. लिली जी आव वहुन वूझगं र; (गल छथि. हुनक माप्र ॐयेद ॐबा छै (आ वहुन स्नारानिक) ज हुनकान याथी सर हुनका सामा म प्रकाशित र; जाओ. 14 लिली जी क याथी दिल्ली म आनवाक (श्रय हमन अछि, ॐ मनिाहूं ठाकना नकॉति कनाओ मैथिल समीऊक आवश्यक नयि वूसैन छथि. ओकना यन लतू. 15 मैथिली क रानीय स्नानयी0 स यूस्तक प्रकाशन लल हमही आगां ओलहूं आ प्रयास जी आ लिली जी क याथी वहान रलै.रानीय स्नानयी0 स मैथिली यूस्तक प्रकाशन क (श्रय हमन छहि, ॐीहा मनैन ठाकना नकॉति कनाओ मैथिल समीऊक आवश्यक नयि वूसैन छथि. ओकना यन लतू. गजह्र जी, मैथिलीक ॐ सर मानसिकता यन आश्वलन कनी जाहि स नचनाकान आ वनिष्ठ नचनाकान सर क अयमानित नयि हाव' यउ. अहां चाही त' ओकना विनदह यन द' सकै छी. हम दासन वात सहा लिखि क य0ायव. मूदा हम रून कहव, ज हम व्यक्ति क नयि संस्था आ व्यक्ति क मानसिकता क दाष दवहि. लाक यढथ् आ यूचाथ् ॐ स्नानामधन्य सर स ज जकना स अहां क (गालौसी अछ, नकना यन अहां लिखव आ जकना स नयि अछ, ज मौन राव लिखि नहलओ काना विनिआद म यतल वगैन, हुनका लल ॐ व्यवहान?

-**निरा नानी**.

....

Shri gajendraji, good work. Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat. chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi. Saadhuvaad.- **manoj pathak.**

…………………………………………………

We should be greatful to Pankaj Parashar that he did not lay claim on the magnum opus of Kavi Vidyapati. I know him very well and his group as well. They have no love for Maithili in fact they are the moles planted by vested Hindi writers to damage maithili. Parashar and likes are the distructive lots and they are the culprits for agonising senior writers of Maithili those who dedicated their life for Maithili language and literature. I have no sympathy for him I cant say, even, God bless them - **Chitra Mishra**

…………………………………………………

गंगानन्द नियोगी: (मिथिला सृजन: जून-जुलाई २०१०, वर्ष-१, अंक-२): हुनक (पंकज पराशरक) अनेक रचना एहनो छनि जकर जन्म दोसरक काव्य रचना पढ़लाक अनन्तर भेलनि अछि। कविता

ओ परिपूर्णतः हुनक थिकनि मुदा किछु लोककेँ ई करबाक अवसर भेटि गेलनि जे ओ पंकज चोर-कवि थिकाह। हम देखैत छी जे चोर समीक्षक भेल ओ हाथु, चोर-कवि ओ कदापि नहि छथि। मुदा एना किएक भेल? एहि दुआरे भेल जे आनक रचना पढ़ि कs अपन अनुभूतिम उगैत काल ओ आनक आरोमंतलसँ एना आक्रान्त छलाह जे एकर छाप कविताक दृश्यम देखार पड़ि गेल। ई वस्तुतः सिद्धान्तक कमी थिक, जकरा श्री रचनाकार नविन-नविन सिद्ध कs सकैत अछि।

....

गौरीनाथ (अनलकान्त)- सम्पादकीय अंतिका अक्टूबर-दिसंबर, 2009- जनवरी-मार्च, 2010- पंकज पराशर प्रसंगम- हुँ, दंद-फंद करैबला किछु लोक सब ठाम पहुँचि जाइ छै आ गलत लोक एहेन अपन धूर्तता आ चालि कला देखबै छथि। मुदा एकरा असलियत उजागर करब असंभव नहि रहल। "विदेह"क गजेन्द्र ठाकुर एहेन एक "चुना" (पंकज झा उर्फ पंकज पराशर) क असली चेहरा हाल मे देखालनि।

....

ई पंकज झा पराशर पहिनहियेसँ एहि सभम संलग्न अछि, हुनकहु माक कविताकेँ हिन्दीम, बिना अनुमतिक, छपबै छथि; ई गप आन पृष्ठ हाइम अछि कारण विद्वानहु मा ठीक कविता सेहो ई पंकज झा पराशर एकटा हिन्दी पत्रिकाम बिना अनुमतिक छपबओलक (ई

सूचना हेमकृष्ण झा जी द्वारा प्राप्त भेल, जे निवेदन छपलाक बाद पंकज झा पराशर हुनका ध्यान कऽ कए टॉर्चर कएलकन्हि जखन ओ बीमार रहथि। हेमकृष्ण झा जी ध्यान द्वारा सभ सूचित कएलन्हि, हम कहलियन्हि जे की ई सूचना निवेदनमे देल जाए? तँ **हेमकृष्ण झा** जी कहलन्हि, नहि दियौ, सत्य जे छै, से ई लोकनि छथि- सम्पादक)। (ई पंकज झा पराशर कएलक चोरि, कएलक मुदा ओ चोरि तँ ओ अपन नाम दोसराक रचना छपबा लेलक, अनुवादक सुयश नै। -सम्पादक)

नचिकेता आलेख-बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक- एत किछु पाठकक विचार:

SHIV KUMAR JHA TILLOO JAMSHEDPUR said...

Ramesh jee ken dhanyavad,satya gapp bajwak saahas "MITHILA" me aabi rahal achhi neek laagal,chhadma lokpriyatak khatir lok kichu ka sakait achhi..Pankaj Parasharak..aab charch karab seho nahi sohay laagi rahal..jatek ninda kayal jay kum parat.Muda RAMESH BABU HU APNE SABH NINDA KARAY CHHEE AA KICHU LOK KAHAIT CHHATHI PANKAJ JEE JUG-JUG JIWATHU,ONA HAMHU HUNAK DIRGHA JEEVANAK KAAMNA KARAIT CHHEE,PARANCH SABHAK JE JUG-JUG JIWAK KAAMNA KAYAL JAY MATRA PANKAJ PARASHARAK

LEL NAHI.."SARBE BHAWANTU SUKHINAH", RAMESH BABU APAN LEKHANI KEN GATI NIRANTAR RAKHAL JAY...

Rama Jha said...

ehi vyakti pankaj parasharak ekta ehane ghrinit message ekta mahila je hamar mitra chathi, ke bhetal chhai, etek ghrinit je etay nai likhi sakai chhi, apan rachna ke dosar bhasha me mool kahi prakashit kaenai chori te nai bhelai, muda okara svayam dvara anoodit kahi prakashit karebak chahe, mool maithili se dosar bhasha (hindi aadi me), va dosar bhasha (hindi aadi se) maithili me.

आशीष अनचिन्हार said...

जहाँ धरि प्रकाशन- घटना अछि ओहि ठामक विश्लेषण कएल जाए तखन कहब। मुदा हमरा ध्यान निरंतरताक कोन भाषा मे समीक्षा कएल जाए हिंदी मे की मैथिली मे। रचना हिसाबे एके रचना के दू- तीन भाषा मे मूल कहि प्रकाशित करब सही बात नहि भेल। एहू पर ध्यान देल जाए।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

नमश

वरुस-यंकज यनाशनक साहित्यिक चानि मैथिली साहित्यक कानी अध्याय थिक

निदरु-सदरु २ (२००९-१०) सँ यंकज यनाशनक साहित्यिक चानि आ साङ्खवन अयनाधक यायक घैलक मरा-निश्चाट रुल अछि। ङ्खी येघ (थ्रय यत्रिकाक सम्यादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकँ जाङ्खा छनि। रुनकान अयनाध यकञवाक चाना कान जाक प्रशंसा कयल जाय, कम रुायत। "निदरु"क मैथिली प्रवन्ध-समालाचना- अंक, अङ्खु याल-खाल लल कञक युग धनि निलम्बित रुs कs निवद्ध नरुत, स "समय कँ अकानैत" करुव काठिन अछि।

साहित्यम चौर्यकलाक उदारुनध यरिनरुँ अवैत नरुल अछि (गाटयगना। मुदा ञक वनक चानि यकञ (गलाक वाद प्रायः चानिक आनायी साहित्यकान मौन-व्रत धानध कनैत नरुलारु अछि आ मामिला ठंढाङ्खा नरुल अछि।

मुदा गाहि यनम्यनाक नियनीत अङ्खु वनक चान 'सिद्धा चान' निकलल अछि आ निगत ञक दशकसँ निनन्दन चानि कनैत जा नरुल अछि- सद्द काटिकs। आ गरुन महाचानकँ मैथिलीक साहित्यकान आ संस्था सरु गनरुक्षीयन उठा-उठा कs यूनस्कृत कलक अछि आ समीक्षाक चासनीम चानायल कनिता सवकँ वानि रुल (गल अछि।

निदरु-सदरु-२ प्रमाध-यूनस्मन अरियाग टा नहि ल(गौलक, अयितु ञरुन मरुत्वाकांक्षी असामाजिक गन्नक निन्द्व साहित्यिक दण्ड आनायित

कऽ अपन “बाहुबल” सेहो प्रदर्शित कएलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल बाद प्रायः “उपन उरिल” होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग कएने अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पएर सँ ओही सीढ़ीकेँ निचाँ खसा दैत अछि। हुन ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे तानिक निकृष्टतमे फेरपर उतरऽ मे कनियां देरी नहि होइत छै। ओ नाम बदलि-बदलि कऽ तानि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे.एन.यू.क छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखबामे अपस्याँत रहऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक कतेक बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित कएने अछि। एहन प्रवृत्ति कएटा आओर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ-पैघ नामक माला जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तुरकेँ हिन्दीक पैघ-पैघ नामक बैसाखीक एतेक जरूरति किएक होइत छनि?

“विदेहक” “इन्द्रायनीक विवरण” पढ़ि कऽ नाइयाँ ठाढ़ रहऽ जाइत अछि। पहिल-८६ आ आनन्द-२३ मे जे पोल खुजल छल, अइमे तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बाद मैथिली साहित्यसँ बारि देल जएबाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक। “मैथिल ब्राह्मण समाज”, रहिका (मधुबनी) सन आँखिगर संस्थाकेँ चकबाही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा “विनोद” आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन अछि जे पुरस्कृत कएबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण

भूमिका रहल हैत। "निवेदन" द्वारा रहस्योद्घाटन कएलाक बादहु एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाँ अपन पुरस्कार आपस करबाक वा आन कोनो कार्रवाई करबाक बतारा नहि बूझा रहल छै आ सभ गुम्मी लधने अछि। एहन "जड़-संस्था" सँ मैथिली साहित्यक उपकार कतेक अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय जे पहल-८६ वा आरम्भ-२३ अइ दूनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कतेटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। "विलम्बित कतेक युग मे निबद्ध" क भूमिकामे अपना विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता केँ विश्वसनीय प्रमाणित करबाक लेल आँखिगर चोर एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस कलनन जकाँ उर्दू सँ कविक रचनाक पृष्ठभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एही काव्य-पोथीमे भेटि जाय। अंततः मि. [illegible] कार केकर? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। तकर नाजायज फायदा कोना ब्लैकमेलर किएक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पालिटिक्स की थिक- टेकनिकल पालिटिक्स थिक, सैह किने? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानक यात्रा कयल जा सकैत अछि। "टेक्नो-पालिटिक्सक" बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सिंह "महेश" पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत

अछि। डा. अनुप कमलक “नव इलाक मे” संधमानी कऽ कऽ “समय के अकानल” जा सकैत अछि। आन त आन, अइ टकनिकल पॉलिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महानतम साहित्यकारसँ “विलम्बित कइक युग...” पोथीक समीक्षा लिखबा कऽ “मिथिला दर्शन” (ग) सन पत्रिकामे छपबा कऽ स्थापित आ अमर भऽ जा सकैत छथि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल औजार थिक “टका पॉलिटिक्स”!

इहो मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आनन्द-२३ आ पहल-८६ कालखण्डमे नहि भेटल हेतन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने होथु से मानबामे असोकर्ज भऽ रहल अछि। जीवकान्तजी त प्रयाग शुक्लक “वह्नरागा मे सूर्योदय” आ एही शीर्षकक नानायक्षजीक कविता (वह्नरागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने होथु जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समूहसँ असंख्य प्रश्न पुछऽबला कविताक शब्दार्थ किएक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करऽ पड़लनि? एकरा “प्रायोजित समीक्षा” किएक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नानायक्षजीक समूह विषयक कवितासँ बेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटलनि जीवकान्तजीकेँ? उएह सभ कविताक कवियोँ “छाया”क शंका नहि भेलनि समीक्षककेँ? “सत्ताक सरोकार मर्मान्तक पुकार”क नोटिस लेबऽबला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असत्य आ मर्मान्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक “पारिश्रमिक फॉर्म” भऽ जानि से अन्दाज त मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियेँ रहनि, उदय चन्द्र झा “विनोद” के सेहो नहि रहनि। इहो अनिश्चितता त

यंकज यनाशन टाकँ नहल हगनि? वचान "यनाशन" मूनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हगनि आ यंकसँ जनमल जाक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना कनैत हगाह। यनाशन गोत्री हऽ कऽ गीन वन चानि कनाऽ "यनाशन" महाकाव्यक नचयिता स्व. किनणजीकेँ सहो कनवैत हगनि। आखिन जीनकान्तजी साहित्यिक चानिक नाटिस किए न ललनि, जखनकि हुनका विचारेँ "मैथिलीक समीऊक प्रायः मूर्खता यीविकऽ विषवमन कनैत अछि"(विदह-सदह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साऊात्कान आ जीनकान्तजी स्वयं यंकज यनाशनक चानिनला कविता-याथीक समीऊक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घान प्रशंसक छथि। तखन अऽ समीऊा-आलखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांऊ-या0ककेँ "विष-वमन" कोना न लगैक? हुनका सन "यढाकू" समीऊक-या0ककेँ "हॉल्स याजीशन"मे अननिहान "उक्कयर्ट आ हैविचूउरत" साहित्य-चानसँ प्रशंसा आ यूनस्कान दूनू यावि जाय तँ मैथिली-काव्यक ऽी उत्कर्ष थिक वा दुर्गति? अंततः विदह-सदह टा किएक निन्दा कलक उहि घटनाक? आन कोना यत्रिका किएक नहि कलक? डॉ. नमानन्द मा "नमण" ऽहूनननटयन निन्दा कनैत छथि तँ घन-वाहन यत्रिकामे किएक नहि जकन ओ सम्यादक छथि? चतना समिति, यटना सम्मानित कनैत अछि उहन-उहन साहित्यकानकेँ तखन अयन यत्रिकामे कोना निन्दा कनत, जखनकि यूनस्कान आयसामे नहि लैत अछि, जानकानी हलाक वा साकांऊ साहित्यकानक अनुनाध प्राप्त हलाक वादो? नचिकताजी नटयन निन्दा कनताह आ "विदह"मे छयत तँ "मिथिला दर्शन"मे किएक नहि निन्दा वा सूचना छयल? कानण स्यष्ट अछि- जीनकान्तक समीऊा यंकज यनाशनक काव्य-याथीयन छयत, तखन ओही याथीक

चोरि कयल कविताक निष्ठा कोना छपत? चोर् रोग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ा रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समक्ष आ (अनजान मे सही) हुनका लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना आ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीमे अन्धा: कोन अन्धन अछि वा रहल? ओहन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक चेतना किएक नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय करैक उचित, जखन कि ई चोरि एसन चनक चोरि थिक आ से छपि-कऽ हस्ताक्षरित भेल अछि। ओकरा नवध्य आ नवीय साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जायब किएक नहि मानल जाय, जखनकि आनन्द, मैथिल-जन, पटल आ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? ओहन सम्माननायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन टा प्रश्न चिह्न लागल होइक? की पाठीक आकर्षक तन्धा देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? ऊँ स भेल हो तँ सब किछु “ठीक छै राउ”?

अइ सभसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। तगलस कलनक “एक्सायलिटिक्स” तँ छपि गेल “पटल”मे चोरा कऽ। आब जीवकान्तजी, स्नान रंजनजी अथवा

हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पुछथु जे नाम चामत्कारिता नवना कायम गेल, की हएल, कोन नाममे छपल? पंकज पराशरक नाममे कि पदीय विहानीजीक सुपुत्रक नामँ (अनुवाद नुपम)। ओही निसर्व ओखन नहि हएल गँ हनियम पुनः ओकरा साहित्यिक चानिक पाल खुजा? अंगाः ओकरा माँछकँ कओटा पाखनिकँ प्रदूषित कनओ दल जाय आ स कओ वन? उदय-कान्द वनि कS गानि पढनाक आदति गँ पूनान छनि डॉ. महावान कँ। ककना "सनीसृप" कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ कोना पनिवानम घाँसिया कS निष नमन कS सकैत छथि। ज्ञायसक सरह गुणसँ पनिपूर्ण डॉ. पॉल वावाकँ चानिक हनिथनाक्षी कननाक वओका गुण छनि गँ हिनका नामी फूटवॉल टीम द्वारा पासल जाइत अछि, जाहिसँ "निश्चिन-कय"कँ दौनान अहूँ "अमोघ अस्त्रक" उपयाग अपना हिसावँ कयल जा सकय।

सहनसा-कथागोष्ठीम पठित हिनकन पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी। ओही उद्घाषणा कननाक की वगनता नहैक- स आओ लाककँ वूझा नहल छैक। अविनाश आ पंकज पराशरक मामाजी गहिया हिनकन कथाकँ "टियरशीक"क्रमम मैथिली-कथाक "टर्निंग प्वाइन्ट" मानन छलाह। आओ डा "टर्निंग प्वाइन्ट" ठीक ओक हिसावँ "टर्निंग प्वाइन्ट" प्रमाणित हएल, कानण कथाक डाहि शीर्षकम सँ "नहि" हटि गेल अछि, हिनकन गवाना चानिसँ हिनकन पहिल चानि (अनुभव कमलक कविता- नओ ओलाक मे) क निष्ठा प्रस्थानम "मामाजी" आ डॉ. महेन्द्रकँ छाडि, सहनसाक शेष सरह साहित्यकान हस्ताक्षन कS "आनम्भ"कँ पठौने छलाह। आओ डा हस्ताक्षन नहि कनिहान सरह कट्ठी कारि कS नाम-दहिन गाक-

माँक करबाक लेल बाध्य छथि। स्वैर-चरित्र आ शङ्का मानदण्डक परिणाम सेहो देखबामे अछि। अविनाश तखन तँ देखार भऽ गेल छथि जखन ओ विदेह-सदेह-२ मे लिखने छथि जे "एकरा सार्वजनिक नहि करबै"। हुनका कऽ सूचना देबाक कोन प्रयोजन? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब होयबाक डर वा कोनो "ठक्कायालिटिक्स"(?) केर चिन्ता?

विदेह-सदेह-२ क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ देने अछि। जेना राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.के.चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द्र झा, अजित मिश्र, के.एन.झा, प्रो.नचिकेता, बुद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि एहन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा कएलनि अछि, ताहि अविनाश, डॉ. रमानन्द झा "रमण", विद्यानन्दीक साँपल-पाएल शब्द आश्चर्य-भावक उद्धक कएने अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक "प्रबल भाव-रंगिमा" साहित्यकारक "मंहायल आवाज"क कोनो चिन्ता नहि कएने अछि। विद्यानन्दी तँ कमाल कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनबाक उचित स्थान नहि छल। ई उनाठ काल खनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगनी भऽ गेल। कोना चान वन-वन एहन कु-कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बूझा रहल छनि आ चानकेँ देखार कएलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ एहन प्रतिक्रियामे कतेक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त कएलनि अछि से एहन पत्र एहन ठाठ भऽ कऽ पढि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयामे एहिना भऽ रहल अछि,

गँ मैथिलीम मारु कS दल जाय? आव दिल्लीसँ युठि-युठि कS मैथिलीम काना काज हायग? निरानानी ग्रामना वङ्कमकँ ग्रामना मिलन कना करैग छथि? हुनकन उयजा काना मानल जाय? डा सर साहित्यिक कार्यक्रमम नागल जाऽऽग छथि, सम्मान आ पुनस्कान यवैग छथि, याOक द्वाना यOिग आ चर्चिग हाऽऽग छथि। समीजाक शिकाऽऽग की उद्धनर्णीय (?) साहित्यकानकँ मैथिलीम नहि छनि? समीजाक दुःस्थिगि सर जागिक मैथिली साहित्यकान लल ७क नंग निषम अछि। डाऽऽ म जागिगग निरद ७ना रल७ ज व्राह्मण-समीजक, आनजणक दृष्टिकाणेँ निम्न जागि (?)क साहित्यकानक किछु वर्णी७ समीजा (सहा सकानाग्मक नुयँ) कलनि अछि। समीजा आ आलाचनाक निषम स्थिगिक कानणं जँ नैनाथ्यक शिकान रS जाय लखक, गँ लखकीय ग्रगिवद्धगाक की अर्थ नहि जायग? निराजीकँ वूसल नहि छनि ज हुनका लाकनिक वाद मैथिली महिला लखनम कामिनी, नूगन वङ्क मा, नहना मा, माला मा आदि अयन गननक संग यदार्यण कS चुकल छथि। हुनका न कामिनीक कनिगा संग्रह यठल छनि आ न "ऽऽजाOयाक अङ्कOी मा७"। हुनका अयन गुनूदनक वाग मानि दिल्लीम जाऽऽसँ क कहिया नाकलकनि? डा गेला छथि दिल्लीम। मागृराषाक ग्रनणा अद्विगीय हाऽऽग छै। मैथिलीक ज७ संस्था अथना समीजक सरयन ग्रदान कनवाम हमना काना आयण्ि नहि, मुद्रा अर्थलार गँ ७गय नगथ्र अछि७। सामाजिक सम्मान निराजीकँ अनथ्र रटलनि अछि। समाजम "ज७"लाक छै गँ "चगन" लाक सहा छैक। हुनकासँ मैथिली राषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकँ येघ आशा छै, हीनराव ना आग्मश्लाघासँ जयन उOि काज कननाक वगनग छैक। सजम छथि डा। हुनका श्रेय लनाक हा७सँ वँचनाक

चाही। अन्यथा साहित्य अकादमी प्रतिनिधि, दिल्लीवासी कार शिकार ज्ञानीगण आ मैथिलीक सजग साहित्यकारसभ की की अन्हर नहि जायत? निरालाजीक निचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लिखैत छथि, सभक रचना कहलनि अछि, आइयो ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठबायत बाध्य हैब करताह। समीक्षकक कर्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक शृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरियर सार्थक प्रतिक्रिया देब कारण साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कारणसँ साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति उत्कर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेबाको चाही आ तकरा देखार करबाक "चाल्तरसा" हेबाक चाही। "चाही"बला यऊ साहित्यम वर्षों होइत अछि। एहन-एहन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक "बुद्धि" एहन घटनाकेँ प्रमाणित करैत अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम सेहो कयने अछि। जाधरि पंकज पराशरक चोरि-कार्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, निरालाजीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझैक? निरालाजी अपने सेहो समीक्षा प्रायोजित नहि करताह? सजग लेखकक व्यवहारक अपन स्वर होइत छै। ई संगठित रूप चोरिक दर्शना हेबाक चाही।

राजकमल चौधरी आ आन लेखकक रचनाक चोरि पंकज पराशर प्रसंग

पंकज पराशर उर्फ अनुभव कमल उर्फ उगलस कलरन उर्फ उदयकान्त उर्फ ▯▯▯ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 ,

220.227.174.243 उर्फ.....

ParasharsIntellectualTheft

पाठकक सूचनाक बाद ई-पत्र चलल अछि (आ ओकर सत्यापन कएल गेल) जे ओहि लेखकक ई ओहि पत्रक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो [illegible] [illegible] क [illegible] क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक बिनु नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे धोखासँ छपबौलक। ओकर पता चललाक बाद "पहल"मे ओहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द भऽ गेल। ओहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगिला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२.ओहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकेँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइक युगमे निबद्ध" पोथीकेँ हटाओल जा रहल अछि आ ओकरा ई-पब्लिशर द्वारा ओहि पोथीक (डगलस केलनर वला घटनाक्रमक बाद) जाँच किछु चुनल लेखक-पाठक द्वारा कएल जएबा धरि रहत। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) लेल ओहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि।

३.पाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल [illegible]@[illegible].[illegible].[illegible] पर "पहल" पत्रिका वा ओकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ [illegible].[illegible]@[illegible].[illegible], [illegible]@[illegible].[illegible].[illegible] वा info@d[illegible].[illegible] पर आ दैनिक जागरणसँ [illegible]@[illegible].[illegible], [illegible]@[illegible].[illegible],

□□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□@□□□.□□□□□□.□□□ पर सम्पर्क कऽ विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। उगलस कलननक आर्टिकल गूगल सर्चमे □□□□□□□□□□□□□□□ टाइप कऽ पाबि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहिल पत्रिकाक वेबसाइट □□□.□□□□□□□□□.□□□ पर सेहो पहिल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रावधान भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। हनियम सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हुअए ताहि लेल अहाँक पानखी नजनिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमरा ई-पत्र □□□□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर अवश्य पठावी।

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

अन्तर्जालपर ब्लैकमेलिंग विरुद्ध गूगल, विडाउन आ ब्लागवालीकेँ सूचित करू, साइबर क्राइम आ ब्लैकमेलिंग रोकबा लेल सेहो कठोर नाम प्रावधान छै, विशेष जानकारी □□□□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर सम्पर्क करू। अहाँसँ पत्रकार, बुद्धिजीवि, पत्रिका आ हिन्दीक गणमान्य लेखकगण/ प्रकाशन/ विश्वविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल □□□□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर सूचित करू।

Reply 01/26/2010 at 01:56 PM

2

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

you may also brought this episode before sanjay@jagran.com

Thanks readers.

Reply 01/26/2010 at 12:25 AM

3

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com

Reply 01/25/2010 at 09:48 PM

4

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP ISP address 220.227.163.105 , 164.100.8.3 aa 220.227.174.243 and has been forwarded for taking Police action immediately.

Reply 01/25/2010 at 09:45 PM

5

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

Professor Kellner has thanked me for this detective work, but it all your efforts dear reader.

Reply 01/25/2010 at 08:21 PM

6

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

pahal=- 86, aarambh -23 aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad pathakgan.

Reply 01/25/2010 at 08:16 PM

7

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed253a/newDK/intell.htm ehi link par douglas kellner ke lekhak

anuvad pahal-86 ke page 125-131 par achhi-soochnak lel dhanyad pathakgan.

Reply 01/24/2010 at 08:16 PM

8

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake Me" hoinh aa Aarambh (ank 23, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March 2000) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.

Reply 01/24/2010 at 08:02 PM

9

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.

Reply 01/23/2010 at 11:40 PM

10

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

विदेहक पाठकक सूचनाक बाद ई पता चलल अछि (आ डाकेन सत्यापन कएल गेल) जे एहि लेखकक ई एहि रचनाक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो [illegible] [illegible] क [illegible] क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक नुपम नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे धोखासँ छपबओलक, प्रदीप बिहारीक बेटा प्रभात बिहारीसँ अनुवाद करबओलक आ कहलकै जे अनुवाद छपबा देब मुदा अपना नामसँ छपबा लेलक, प्रभातकेँ कहलकै जे अनुवाद निरस्त भऽ गेल आ हन हना गेल। एकरा पता चललाक बाद "पहल"मे एहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगिला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२.एहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकेँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइक युगमे निबद्ध" पोथीकेँ हटाओल जा रहल अछि आ एकरा ईनल्लायनी द्वारा एहि पोथीक (उपरोक्त वर्णन बला घटनाक्रमक बाद) जाँच किछु चूनल लेखक-पाठक द्वारा कएल जएबा धरि रहत। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक होअए तँ) लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि।

३.पाठक उपरोक्त वर्णनसँ ई-मेल [illegible]@[illegible].[illegible].[illegible] पर "पहल" पत्रिका वा एकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ [illegible].[illegible]@[illegible].[illegible], [illegible]@[illegible].[illegible].[illegible]

ना info@deshka□□.□□□ यन आ दैनिक जागनधर्सँ □□□□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□□□@□□□□□□.□□□, □□□□□@□□□.□□□□□□.□□□ यन सम्यर्क कо निस्पृ जानकानी लs सकैग छथि। तगलस कलननक आर्टिकल गूगल सर्वयन □□□□□□□□□□□□□□□ टा००य कо गाकि सकै छी आ यढि सकै छी। यस्ल यत्रिकाक नवसा००ट w□□.□□□□□□□□□.□□□ यन सस्त यस्ल यत्रिकाक यूनान अंक सर आस्फ-आस्फ स्वाक प्रानस्र स्ल अछि।

निस्पृ जानकानीक लल सुधी या०कगध अस्वाँक धन्यनाद। स्निधम सस्त ओहि घटनाक यूननानृफि नहि हूअо गाहि लल अस्वाँक यानखी नजनिक आस आगाँ सस्त नस्गा। ओहि गनस्क काना घटनाक जानकानी स्मन ००ी-यत्र □□□□□□□□□@□□□□□.□□□ यन अनथ्य य०ावी।

Reply 01/22/2010 at 12:03 PM

11

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and addresses pparasharjnu@gmail.com and

pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.

Reply 01/21/2010 at 10:00 PM

12

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

the htpps host matches reliance communications and the corresponding email gangghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com

Reply 01/21/2010 at 08:50 PM

13

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, Process to file complaint against Cyber Crime Act is being initiated and the organisation being taken into

confidence.

Reply 01/21/2010 at 06:13 PM

14

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

maithil, mithila aa subodhkant namse abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address 220.227.163.105 , 164.100.8.3 aa 220.227.174.243 aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.

Reply 01/18/2010 at 11:19 PM

15

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi

Reply 01/18/2010 at 09:27 PM

16

सुबोधकांत said...

अविनाशकेँ सेहो 220.227.174.243 आइ.एस.पी.सँ एहि

प्रकानक स्त्री-यत्र अबैत नहि मृदा ऊा मामिला खगम क□ दन नहथिन। ऊा टियथी सरु ओगक घृथिग छैक गैया ओगओ दल जा नहल अछि।

यंकज यनाशन उर्फ.....तगलस कलनन उर्फ अनूथ कमल उर्फ...

तगलस कलननक नीचाँक आलखकक यंकज यनाशन द्वाना चानि सिद्ध कओलक ज ओक दशक यहिन ओहि लखक द्वाना अनूथ कमलक चानि सँ आर्ह्न थनि हूनकाम काना गनहक यनिवर्गन नहि आओल छन्हि। हँ, आव ऊा यटना विश्वविद्यालयक प्राहसनक नवना चानवासँ आगाँ वढि गेल छथि आ कैलिफोर्निया वि.वि.क प्राहसनक नवना चानावओ लागल छथि। ओहि सद्दर्भ हमना ओकटा खिस्सा मान यडैग अछि। २०-२२ वनख यूनान सय कथा। दनरंगाम नहैग नही, छगयन हम आ हमन ओकटा यिसियौग राह्न साँमम ०१८ नही। सामाँम सनननजीक घनक वाअठीम खुव लगाम हठल छलन्हि। हमन यिसियौग राह्न हूनका ह्नशाना दS कहलखिन्ह ज दस टा लगाम आनू। ऊा ववान दसटा लगाम गाठलन्हि आ आवि नहल छलाह आकि नस्काम हमसरु दखलहुँ ज ओकटा छाट वव्वा संग हूनका किछु गय स्लन्हि आ ऊा याँचटा लगाम ऊहि वव्वाकँ दS दलखिन्ह। जखन सननन जी अओलाह गँ कहलन्हि ज ऊा वव्वा हूनका स्लैया कहि सम्बाधिग कओलकन्हि आ याँचटा लगाम मँगलकन्हि- स काना नओ दिगियैक- सनननजीक कहव छलन्हि। आव यंकज यनाशन प्रसंगम की स्ल स दखी। प्रदीय विहानीजीक वटा प्रश्नकँ यंकज यनाशन नाम चामर्की आ तगलस कलननक नवना दैग छथिन्ह आ गकन अनूनाद कनवा लल कहै छथिन्ह। ववाना जान लगा कS अनूनाद कS दैग छन्हि, स्त्री साचि ज जिनका ऊा वव्वा कहै छथि-

ञ क्रान्तिकानी निचानक ङथि (मार्क्सनादी!!!) स काना नीक यत्रिकाम ऊ्ी अनूनाद ङयवा दथिङ्क। मूदा ङरु मासक वाद चङ्गाजी कडे ङथिङ्क ञ नाम चामस्की वला नवना रुना (गल आ उगलस कलनन वला नवनाक अनूनाद नञि नीक नरुञ स निजक्त दs (गल। मूदा क्रान्तिकानी कनि (चानूक्का सरु निननध नीचाँम अङि) दूनू नवना यरुल यत्रिकाम यO। दै ङथि- यरुल-६६ म उगलस कलनन वला नवना ङयिग ङङ्कि (आ स अनूनादक नूयम नदि ननन् मूल लखकक नूयम) आ ञा वैन सरु कs दल जाङ्ग ङथि। रुमन सननन जी ञकटा वङ्गा ङ्गाना रैया करुलायन याँचटा लगाम ञाकना दs दै ङथिङ्क मूदा रुमन यनागनजी रागिजाक याँचटा लगाम निर्लज्जतासँ ङीनि लैग ङथि।

आ रुम रुनकन खिजवीन गखन कनै ङी जखन ञा निदरुम आङ्गतनिटी वदलि रुमना गानि यङैग ङथि- रुनकन नियल आङ्गतन्नीटी नाढट कनै ङी। रुन सरुसँ गय कनै ङी आ याOकक सरुयागसँ आनस्न, यरुल क यूनान अंक रुरि जाङ्गग अङि जाञ रुनिकन कूकृत्य ङङ्कि।।

Douglas Kellner

Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education

University of California-Los Angeles, Box 951521, 3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax

310 206 6293

Phone 310 825 0977,
http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life. ....

अरुण कमल

Arun lives in Patna where he teaches English at the Science College of Patna University.

नये इलाके में

जहाँ रोज बन रहे नये नये मकान

मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़

खोजता हूँ ढहा हुआ घर

और जमीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें

मुड़ना था मुझे

फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का

घर था इकमंजिला

चल देता हूँ

या दो घर आगे ठकमकाता

रोज कुछ घट रहा है

यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं

एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया

जैसे बसंत का गया पावस का लौटा हूँ

जैसे बैसाख का गया भादो का लौटा हूँ

मैंने पूछा -

क्या यही है वो घर?

आ चला पानी ढहा आ नहा अकास

शायद मकान ने काफी पहचाना उसने से देख कर

मैथिली भाषा-साहित्य क पाठक आ लेखक वर्ग केँ की एहि प्रश्न सबहक उत्तर अवश्य जानबाक चाही। पंकज झा पराशर उर्फ पंकज पराशर उर्फ अनूप कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... नामक एहि व्यक्तिक वएह नाम कथा चिट्ठा —जेना एम.ए.म प्रथम श्रेणीम सर्वोच्च स्थान?? पत्रकारिताक कार्स?? ओ सरु नटवरलालक गर्जियन!! जे.एन.यू.क लड़कीसँ

हिन्दी अनुवाद कनाओव ज ओहिसँ नाकनी एटि जओौक आ हुन गकना अयना नामसँ छयवा लव, प्रधनसँ तगलस कलननक आ नाम वाम्मीक अनुवाद कनवाओव आ अयना नामसँ छयवा लव, अनुध कमल, श्रीकान्द नर्मा, ॐलानानी सिंह, गजेन्द्र 0कुन आदिक नवना वानि कनव। ॐी सव लखक सहसँ हुनकन यनिवानजनसँ कहै छथि ज अनुवाद लल कथा-कनिता दिअ आ हुन गकना वाना कs अयना नामसँ छयवा लौग अछि। हिन्दीम वैन एलाक वाद मैथिलीक सना! (गोनीनाथकँ यहिन गानि यठै छथि आ हुन लिखिग मारुी मँगे अछि। यंकज मा यनाशन उर्फ यंकज यनाशन क ॐी हाल छै ज नमध कुमान सिंहकँ डाकनायन कनिता लिखै यउ छथि ..ककनासँ की वासन छी ज अनिद्ध यैसि (गल? अनिनाश कँ गानि , श्रीधनम आ अनलकान्द कँ गानि , नामदन मा कँ गानि , नाजमाहुन मा आ नाजनहुन लाल दास कँ गानि , सुगाषवद्ध्यादन-कदान कानन-गानानह मा गनुध- प्राहुसन महुद्ध- नमश सहकँ गानि- मैथिली सर्जनाम नामदन माकँ गानि यठैग सहुनसा चिठी आ सहुनसा सहक साहित्यकानकँ गानि यठैग नामदन माकँ चिठी, ॐी दुनु चिठी संगे छयल!! वानक सीना जाओवाक ओहिसँ नीक उदाहनध एटव माश्विला

यंकज मा यनाशन उर्फ यंकज यनाशन उर्फ अनुध कमल उर्फ तगलस कलनन उर्फ उदयकान्द उर्फ ▯▯▯ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....क यथार्थी # आखिनी सहुन यन निकलन गक / # यूनस्वानासुकी आभाॐ / # वउ वागान # मनध जल / # नाग्रि स नाग्रि गक # साला सव हँसकन निकल जाना है अयुन का अकला चीखना छाउकन /

दक्ष विह्व / उर्फ श्यान नूप संसार है ईंकन द मख मान उर्फ कृष्ण कृष्ठ चाहिए ...की नौनक क लिए उर्फ गायत्री उर्फ कामल चायक उर्फ अयन कानी मूँह उर्फ माहल्ला लाऽऽन उर्फ परानूकान उर्फ उदय प्रकाश उर्फ पहल उर्फ नवि दूखम उर्फ निनाला उर्फ नवनूतन थम।

पंकज पराशर उर्फ अनुप कमल उर्फ उगलस कलनन उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... हिनकर नियल आऽऽउनिटी हम नाटक करै छी आ ओ आब अहिंसक छथि अयन शेष जीवन मिश्रन हाऽऽत नहि अयन कुकृत्यक सजा भुगताक लल।

एहि ब्लैकमेलरक डॉ. शकील आ मिश्रन हाऽऽत बला चरित्र मैथिल सर्जनाक निरोधम मैथिल-जन पत्रिकाम एक दशक पहिने उजागर भऽ गेल छल मुदा लोक हिनका पासौं नहल।

आनन्दम सहा ओ एकटा विटी मैथिलीक सम्पादकक निरोधम दलन्हि ज छथि गेल आ ठाकन घृणित खाधाक कारण राऽऽ साहेब नाजमाहन माफ़ मारी माँगए पठलन्हि आ हुन ओ मिश्रन हाऽऽत सहा ठाहि सम्पादकसँ लिखितम माफी मँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुरेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिश्रन हाऽऽतक ब्लैकमेलिंग आ एब्यूजक ह्वारा अहाँ सबकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पायक घोला रनि गेलाक बाद ओ आब अहिंसक छथि अयन शेष जीवन मिश्रन हाऽऽत नहि अयन कुकृत्यक सजा भुगताक

लल।

ज.एन.यू.म छात्र-छात्रा सरसँ पाठकार्ति पन साहित्न लऽ उत्रियन अपन नवना लल प्रशंसा-पत्र प0वैत घूमैत अपयाँत कथित गोल्ड मतलिस(!!!)। यहिल कथा गोष्ठीम जखन ओ सहनसाम सरसँ पूछल रिनै छथि ज साहित्यकान वनवासँ की-की सर रहलदा छै तखन ओ एकटा पाठ आ पूनस्थानक लल अपयाँत मैथिल पूना-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व कनै छथि, ज नाजमारुन मा जीक शब्दम मैथिलीसँ प्रम नञि कनैत अछि। ओ मिसन हाइत सहा उहि सम्पादकसँ लिखितम मारही मँगलन्हि आ जखन उा मारु कऽ दलखिन्ह तखन हुन हुनका गानि पढव शुनू कऽ दलन्हि। हमनासँ लिखित मल-मारही अस्वीकान होलाक वाद मिसन हाइतक माथ नावव स्नातनिक। ज सनकानी नाकनी ना ओ्रधम-टैक्स, कसमम ओ ब्लैकमलन नहिताए गँ दश जनुन वचि दैत।

पंकज पनाशन उर्फ अनुध कमल उर्फ तगलस कलनन उर्फ उदयकान्त उर्फ ▯▯▯ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ नाजकमल चौधनी.....उर्फ...

कतक उर्फ एहि लखकक वनत नहि जानि... नाजकमल चौधनीक अप्रकाशित पद्य (आव निदह मैथिली पद्य २००९-१० म प्रकाशित पृ.३९-४०) "वही-खाता"क एहि धूर्ता, चानि कला आ दंद-फंद कनैवला पंकज पनाशन..उर्फ..उर्फ.. [(गौनीनाथ (अनलकान्त)क एहि चान लखकक लल प्रयुक्त शब्द- सम्पादकीय अंतिका अक्टूवन-दिसंवन, 2009- जनवनी-मार्च, 2010- पंकज पनाशन प्रसंगम-] द्वाना

“हिसाब” नामसँ छपबाओल गेल- देखू

राजकमल चौधरी

बही-खाता

ओहि खातापत्र हम घसैत छी

संसारक सभटा हिसाब

...

...

हमर सभटा अपराध, स्नान...सँ लीपल पातल

अछि एकर सभटा पाता

ओ हमर लालबही थिक जीवन-खाता

जीवन-खाता

पंकज पराशर उर्फ अनूप कमल उर्फ डगलस कलनन उर्फ उदयकान्त उर्फ □□□ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ राजकमल चौधरी.....उर्फ...

द्वारा एकरा अपना नामसँ ओहि पत्रहँ छपाओल गेल

हिसाब

हिसाब कहिया देबी रोज पर

उगाहल रहल नहि अछि

किताब

ओ इनि जिनगी लगबैत छथि

नाप-नाप क हिसाब-

दुनिया-जहान सँ हटाक बनल

अंतः बनि कऽ नहि जाइत छथि

हिसाबक किताब।

२००६

एहि लेखकक खोँसा कऽ अपशब्दक प्रयोग बन्न नहि रहल अछि आ ई नाम बदलि-बदलि एखनो एहि सभ कार्यमे लिप्त अछि, आब ई अपन धंधा-चाकरी सेहो बदलि लेन अछि। स्पष्ट अछि जे एकरा निरुद्ध कएबाक उग उठाओल जएबाक आवश्यकता अछि। उपनका समक्ष जानकारी अहाँ गूगल, विद्या जगतकेँ दी स आग्रह आ एकरा नीचाँ ई-पत्रयन सेहो अग्रसारित करी सेहो अनुरोध।

vc.appointments@amu.ac.in, bisaria.ajay@gmail.com,
vedprakas_s@yahoo.co.in, tasneemSuhail@gmail.com,
rajivshukla_hindi@yahoo.co.in, merajhindi@gmail.com,
ashutosh_1966@yahoo.co.in, ashiqbalaut@yahoo.in,
abdulalim_dr@rediffmail.com, zubairifarah@gmail.com,
RameshHindi@gmail.com

पंकज पराशर उर्फ अमृत कमल उर्फ अगलस कलनन उर्फ उदयकान्त

<u>उर्हि □□□ 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्हि.....</u>

DO YOU KNOW "Fake Sahityakar" PANKAJ KUMAR JHA ALIAS PANKAJ PARASHAR.DO YOU KNOW WHAT THIS FAKE GOLD MEDALIST DID AT VASANT MAHILA COLLEGE, KADAMBINI, DAINIK BHASKAR AND DAINIK JAGRAN ? DO YOU KNOW WHAT HE DID WITH HIS FAMILY, FRINDS AND COLLEAGUES.

READ the following to believe it. this mentally corrupt should be treated in the same manner...

pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and <u>pkjppster@gmail.com</u> besides other fake emails used by Pankaj Parashar on ISP ***220.227.174.243"***

See his level.

अह्वां कँ सूचनार्थ य(0न ठ्ठी ञ यंकज यद्दिनह्ना ॐ सव काञ कनेंग नह्य ठ्ठलैञ। - **aavinash**

<u>**ओहि चान लखक यंकज यनाशनक दिमागी ह्वालिक असली नुय ओIs सह्ना रुटा ञाञ ङा नाम वदलि-वदलि अयन यूनना मालिकक**</u>

कम्प्यूटरसँ घृणित पाप करै छल (सारांश-अविनाश)।

Search Comments *220.227.174.243*

All

- Pending (0)
- Approved
- Spam (0)

Search Comments: 220.227.174.243 [Search Comments]

[Apply] [Filter]

	Author	Comment	In Response To
☐	**ranvijay** ranvijay@rediff.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/09/02 at 5:07pm धूँ व मादनवाद, नंठी की ऊौलाद जिसका gauravshaali इतिहास होगा नहीं (श्रेष्ठ की बात करेगा न मादनवाद....तू साल आदिवासी मादनवाद क्या बात करेगा (श्रेष्ठ की, साल vanmaanush अपनी शकल देखि है कितनी कुरूप लगती है गन सुजन साथी अविनाश की गनह, मादनवाद....bhaunkna वंद कन....	In Response To
☐	**ranvijay** ranvijay@rediff.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/09/02 at 5:11pm अव मादनवाद jagdeeshsvar चतुर्वेदी, उर्फ नंठी की ऊौलाद, मादवाद किस naali में पैदा हुआ था सिवाय आलोचना ऊौन वकवादी के तुम कुछ आता है मक लौंड.....कुछ काम कन जिसस सबको रुला हो मादनवाद या गा नया नया कंप्यूटन चलाना सीखा है या अपन वलाकानी दास्ता avinaash के साथ milkar चूदाई का धंधा चला नहा है इसीलिए इतना रो नहा है माक लौंड...	जनसत्ता के बारे में अर्धसत्यों से बचो 22#

	Author	Comment	In Response To
	चार्वाक सत्य binnst@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/31 at 3:42pm जा आदमी ह्न मर्ज की दना जाति का ही समम्ता हा, जातिनाद क धंध मं ही गल-गल तक तुवा हा उसका क्या शेष कुछ वचा नह गया है क्या? ऊैस नंग सियानां का कम स कम प्रताष जाशी ऊौन आलाक तामन ऊैस सम्मानित ऊौन विद्वान यत्रकान की आलाचना कनन का काऊ्ी नैतिक अधिकान नहीं हा। नहना ऊौन जह्नवूमी ताषा स ऊ्स कथित लखक की मंशा समम्ी जा सकती हा।	आलाक तामन जी, कहां स आती है यह ताषा? 8#
	चार्वाक सत्य binnst@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/29 at 4:59pm प्रताष जी की आलाचना स या आलाक तामन की आलाचना स कुछ हासिल नहीं हाननाला है. ऊ्सस हिंदी समाज का क्या त्ला हा नहा है? ऊ्स तनह आनाय-प्रत्यानाय स याठकां का क्या लना-दना है? वहस का ञ्क मुकाम यन यहंुचाकन, अगली यात्रा यन निकल जाना चाहिञ.	कौन है य मनालियां की ताषा वालन नाला आलाक तामन? 21#
	Pankaj Parashar pkjpp@yahoo.co.in 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/28 at 6:21pm मृत्युंजय, कल लिखी मनी प्रतिक्रिया की अंतिम यंक्तियां हैं- हां, ञ्क तकनीकी वात यह हा सकती है कि ऊ्न लातां का सामान्य काट स वहाल किया तया हा। मैंन यह अनतिस्त्रता जाहिन की, कि हा सकता है उनकी नियुक्ति सामान्य श्रेणी मं हुऊ्ी हा, जिसकी काऊ्ी सूचना मुम्त नहीं है. ऊ्समं न ता किसी कथित ब्राह्मण शब्द का जिक्र कहीं है ऊौन न मन चातन या अनचातन मं नह वातं हैं, जा व्याख्या की यालिमिक्स क तहत आय कह नह हां। मनचाही व्याख्या ऊौन अनचाही सलाह स वचना चाहिञ. ऊ्स संदर्ट मं अनायास मनमानी व्याख्या का निनाध कनती सूसन सौंटत की 1966 मं प्रकाशित यूस्तक Against Interpretation and Other Essays. की याद आ तऊ्ी। खुदा खैन कन.	ऊञ्नयू का सच : हाता है शवा-नाज तमाशा मन आत 16#

	Author	Comment	In Response To
☐	Pankaj Parashar pkjpp@yahoo.co.in 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/27 at 6:34pm वाकी संटर्स ऊौन स्कूल की सूचनाऊां स हिलनक मं अयटट नहीं हूं, क्योंकि कैंयस गए हुए महीनां गुजन जाग हैं। यन राजनीय शाखा कंद्र स गा वाकिरु हूं. सूची मं दिखाया गया है कि अनूसूचित जाति स एक री एसाशिएट प्रारुसन नहीं हैं, जबकि यी-एच.ऊी मं मन (शाध निर्दशक नह ऊॉ.(गोविंद प्रसाद अनूसूचित जाति स हैं ऊौन व वाकायदा नीऊन हैं। दूसनी ऊान सूची मं दिखाया गया है कि एक री ऊावीसी असिस्टंट प्रारुसन नहीं हैं, जबकि नूसी कंद्र मं हमान एक साथी हैं। मना ख्याल है कि ऐस नाम ऊौन री कई हैं जा सूची की त्रुटियां का साह-साह उजागन कना हैं। हां, एक गकनीकी वाग यह हा सकती है कि इन लागां का सामान्य काट स वहाल किया गया हा।	जएनयू का सच : हाग है शवा-नाग गमाशा मन आगे 16#
☐	Rafugar jinita@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/25 at 5:35pm यान मामला व्यक्तिगग हाग जा नहा है . वहस कहाँ स कहाँ जा नही है? व्राह्मण(धां, हजामां, 0ाकुनां....यानी जागिवाद ही सग्य है...महज यही गा रानग का सग्य नहीं है.	प्रराष जी की मगि भ्रष्ट हा गयी है, आय सव नहम कनं 53#
☐	michal chandan chandan25s@gmail.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/20 at 4:18pm राइी लाग, आय सव मान या ना मान यनन्तु इस सग्य का आय एव स्वीकान कन की प्रराग जाशी नाम क नह महान यत्रकान-संयादक-चिंगक एव यूनी गनह स स0िया गए हैं। यूर्वाग्रह स ग्रसिग हाकन आजकल उनका उझल-हिझल लिखना, करी किसी अखवान ऊौन उनक मालिकां का टानगेट कन आलाचना कनना, करी मानखंत क एक अखवान क वान मं कसीद लिखना ऊौन एव अयन मनूवादी रुद्व वहन का सवक सामन यश कन चर्चा मं वन नहना इनक स0ियनन की निशानी नहीं है गा क्या हैं।	प्रराषजी क निचान माननगानिनाची हैं 30#

[▾] Apply

मैथिल आन मिथिला ब्लॉग मॉडनटन- ऊयनका सूचनाक अगिनिक्त चानिक नचना ऊ हम एकटा ब्लॉगम...म यकनलौ गकन वाद ऊ धूर्त

लेखक एडिट कय उकरा बदसूरत कविताक शब्द द देलक, सम्पादक हुमन प्रमाण क उना देलक आ अपन जातिवादी होवाक हुन प्रमाण देलक आ आब वशीन बन्धु के एकटा कविता जातिवादी लोकनि द्वारा चोरा कय अपना नाम करबाक सूचना आयल अछि, उ अपन गलति स्वीकार ना हुन अपन रचना एडिट करए देखा चाही हम होजिन होयब अहूंक समझ शीघ्र... जातिवादी साच के मानय टा यरए मिथिलाक विकास लल. जावशीन बन्धु के कविता जातिवादी लोकनि द्वारा चोरा कय अपना नाम करबाक सूचना आयल छल आ हम कहुन नही ज उ अपन गलति स्वीकार ना हुन अपन रचना एडिट करए देखा चाही हम होजिन हेल छी अहूंक समझ, चोर महाराजक टटका रचनायन चोर महाराजक मौसना [illegible]क कमेंट आयल अछि जाहि स [illegible] सिद्ध हेल ज उ [illegible]शाना वूमि गेल ज उकरा चोरि पकता गेलैक। एकर कहुए छै

चोर-चोर मौसना भाइ।- मैथिल आर मिथिला ब्लॉग सँ पंकज पराशरकेँ निकालल जा रहल अछि।- मैथिल आर मिथिला ब्लॉग मॉडरेटर

Recently Some Maithil Brahmin Samaj Organisation has started selling prizes in the name of Yatri (Vaidyanath Mishra, Nagarjun) and Kiran (Kanchinath Jha). There has been trend recently to grant these prizes to those intellectual thiefs who are basically opposed to the ideology's of Kiran and Yatri (Nagarjun). The caste based organisations are killing the spirit of Yatriji

and Kiranji, recently the fraud Pankaj Jha alias Pankaj Kumar Jha alias Pankaj Parashar alias Dr. Pankaj Parashar) was stage managed to get this casteist award, The lecturer of Hindi at Aligarh Muslim University, just appointed as adhoc staff, will teach now how to lift verbatim articles of [illegible] (समय कँ अकानैत) [illegible] (श्रीकान्त वर्मा- मगध) and his Vilambit Kaik Yug [illegible] (विलम्बित कइक युग म निबद्ध) [illegible].श्री संग्रह श्रीलालानी सिंह, श्रीकान्त वर्मा, गजेन्द्र ठाकुर, राजकमल चौधरी आदि कविक पंकज पराशर द्वारा चोराओल रचनाक कारणेँ चोर कऽ देल गेल। "रचना"पत्रिकाक कथित अतिथि सम्पादकक रूपमे पंकज पराशर द्वारा कवि-कहानीकार सभसँ रचना सभ मँगबाओल गेल आ ओकरा अपना नामसँ छपबाओल गेल। श्री छद्म साहित्यकार पराशर गोत्रक (!!)पंकज कुमार झा उर्फ पंकज पराशर बहुत लेखकक अप्रकाशित रचना अनुवाद करबा लेल सभ लेलक आ अपना नामेँ छपबा लेलक। पाठकक आग्रहपर आर्काइवमे श्री तथ्य राखल जा रहल अछि।— **सम्पादक, विदेह**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर**

गद्य

२.गद्य खण्ड

२.१.निना नवल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

२.२.निना नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

२.३.आशीष अनचिन्हार- निनयऊ-गुट-निनयऊ

२.४.प्रेमशंकर सिंह 'पवन'- मैथिली रचना (लोकोक्ति) संकलन

२.५.कुमार मनोज कश्यप- वलिक छागन

२.६.आचार्य नामानंद मंडल- मैथिली साहित्य म घोटाला

२.७.आचार्य नामानंद मंडल- २ टा कथा

२.८.योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'- ॐ नम् सम् एकम् एव अद्वितीयम्

२.९.संतोष कुमार राय 'बटोही'- मंगनौना (उपन्यास- खंड १०)

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल- रंगनाद कवि

२.११.जगदीश प्रसाद मण्डल- माठयन (धारावाहिक उपन्यास आठम यठान)

२.१२.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २० म खण्ड

२.१३.डॉ किशन कारीगर- मैथिली साहित्य मे सालकर साहित्यकार सब के असलियत

२.१४.दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा- कथा-१ जऽऽयन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१५.दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा- कथा-२ जऽऽयन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१६.दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा- कथा-३ जऽऽयन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१७.दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा- कथा-४ जऽऽयन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१८.दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा- कथा ७ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

२.१९.गजेन्द्र ठाकुर- लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ सम्पादक वा पुरस्कृतक अस्वाभाविक उत्तम ब्रह्माण्ड

२.१.निग नवल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

निग नवल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)



दिनेश कुमार मिश्र, मिथिलाक बाढ़ि, धार आ अध्ययन बनाओल छथिन/ बाढ़, संदर्भ हुनकर बन्दिनी महानन्दा, बागमतीक सद्गति!, दुइ पाटनक बीच.. (कोसी धारक कथा), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिलाक कमला धार, पुरही धार आ तकनीकी माछ-टूंकी।

मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा प्रसङ्ग

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सन्दर्भ उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जाइ ई सेहो जायत, आमजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि। ई अपन बायोडाटामे गलत सन्दर्भसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मनिटरसँ नै जोगिया टाइटिलसँ भेटल छन्हि, एही सभ किनदानीक उपजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडाटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच मे' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की

सङ्गति।, दूऽऽ पाटन क बीच मे.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घन, बगावन यन मजबून मिथिला की कमला नदी, गुरही नदी ऊौन गकनीकी साउ-टूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य यंकज मा यनाशन द्वाना हिनकन याथी सरसँ येनाक येना मैथिली अनुवाद कऽ अयना नाम उयन्यास छयवाउल गेल अछि, जकना छद्म समीक्षक कमलानन्द मा ओ चान लखकक निसर्व कहै छथि। ओना कऽ स्पष्ट कऽ दी ज ऽऽी चान लखक आ छद्म समीक्षक दूनू अलीगढ़ मुस्लिम विश्वालयक हिन्दी विभागम छथि। ऽऽी निसर्व दिनेश कुमान मिश्रक थीक, ज आऽऽ.आऽऽ.टी. खड़गपूनसँ सिविल ऽऽञ्जीनियनिढ म बी. एक. १९६८म आ स्ट्रक्चनल ऽऽञ्जीनियनिढम एम.एक. १९७०म कन छथि, आ डाऽऽ निसर्व लल क्वालिफाऽऽड छथि। जखन कोना विषयम नामांकन नै हाऽऽ छै गखन लाक हानि-थाकि हिन्दीम नामांकन लऽऽए, नै गँ कमलानन्द मा कँ बूमऽ म आवि जऽऽगाहि ज ऽऽी निसर्व कोना सिविल ऽऽञ्जीनियनक एऽ सकैत अछि, एऽ सकैए बूमला हाऽऽन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमान मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सर धानक कथा डा लिखन छथि, हम सर हूनका प्रति कृतज्ञ छी आ हूनकन सृष्टसँ मिथिलावासी कहियो उऋृण नै एऽ सकता, मुदा मूलधानाक यूनस्कान आ याऽऽ लालुय लाकसँ कृतघ्ना एटा स हून सिद्ध एला।

ऄ लखककँ दस वानरु वर्ख यरिुन सरुा गानानरु नियागी उद्धानक रुटल छलखिन्ह ज लिखन नरुथिह्न ज ऊा कनिगाम प्रगानिग रुs अनायास अयन नवनाम दासनक सामिग्री वानि कs लऽूऽ छथि, ओरुन सना आव ऄ कमलानन्द मा क आश्रय गकलह्नि मूदा दुर्गंथ्र! ज़ऽूऽ रुिसाव ब्राह्मधनादकँ आगाँ वढवैल कमलानन्द मा नामयंथक साढन यकउ छथि आ सामाजिक श्यायक वलि वढवs वारुै छथि, गकान प्रगि समानान्दन धाना सवग अछि। सीलिंगसँ ववता लल ज़मीन-ज़छावला लाक कम्युनिस्ट वनला आ आव ब्राह्मधनाद ववतालल नामयंथक शनध, ओरुन लाक सरुसँ कम्युनिस्टकँ वरुग नूकसान रुल छै।

दिनश कूमान मिश्रक सरुटा याथी आव रुूनकन अनूमगिसँ उयलब्ध अछि नियरु आर्काऽूऽनमः

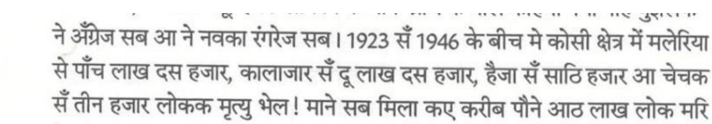
http://videha.co.in/pothi.htm

ओगs ओकटा गय मान याउ दी ज ज़खन विल (गझकँ यूछल (गलह्नि ज की ऊा ओम्म वॉम्म रुागगम याऽूऽनगीक उनसँ दनीसँ आनि नरुल छथि? गँ रुूनकन उन्दन नरुह्नि ज माऽूऽक्रासॉङ याऽूऽनगीक उग काना उयाद दनीसँ नै उगानन अछि। स नियरु यटानम रुम सरु ऄ गनरुक निष्क नरिुगा ओकना आन समृद्ध कनैग नरुव, कानध समानान्दन धानाम सउल माँछ द्वाग याखनिक सरु माँछ नै सउओ, ओगुका मलारु (गाट-(गाट कs सउल माँछ निकालैग नरुल छथि, निकालैग नरुगा।

सिद्धीकरत समीक्षायन अन्तिम प्रदान।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजे से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

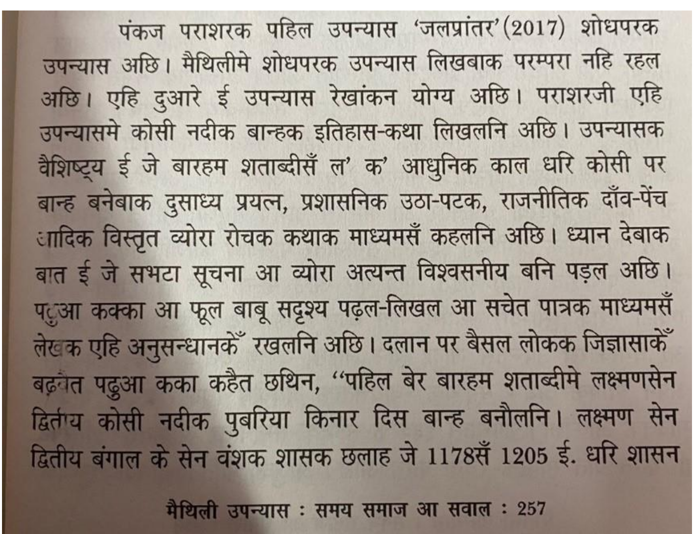
श्री पंकज झा पराशर (साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०३)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया
से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक
सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बाँधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बाँध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से करीब 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बाँध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बाँध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बाँध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इस किले की दीवार

नहीं माना और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। फिर भी जो आम धारणा बनी है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई पटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस पटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पी0 (0ाकव, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):


पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चान यंकज मा यनाशन (साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतन २०११ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुन्रियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनश कूमान मिश्र (दूइ याटन क वीच मं... २००६): कासी क

प्रवाह कि स्यानदगा की एक मलकरिहनाजशाह गुगलक की खोज क

सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह नदी हाजी शम्सुद्दीन (थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे साथ में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाय। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और चियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इन रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उसे इस बात का पता लगा कि सुल्तान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

श्री पंकज झा पराशर (साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रान्तर २०११ (पृ. १०७)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनें रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कें नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनें कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनें शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कें जतय नदी पार करब कनें आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कें ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनें छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कें पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र अन्य लिंकयन आन स्क्रीनशॉट अपडेट कएल जायत।)

मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ ग्रस्त रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका आब गाँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमे डूबल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९१८-१९ सन बादक छी। पहिने ई आब पूर्ण रूपसँ उपजाउ छल, मुदा रेलमार्ग बनबाक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव शुरू भऽ गेल। मुदा आइ एतयक बाढ़िक कोनो समाधान कहियो नै भेल अछि, कहियो अभियान रहल गाँ मात्र ई दुष्प्रभाव जे ई सड़क पानि निकालसँ रोकल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक अ एहन संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेला। हमरा मोन अछि ई दृश्य जखन

𑒏𑒳𑒬𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲 𑒅𑒑𑓂𑒩𑒞𑒰𑒩𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒋𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍𑒃 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒍𑒮𑒿 𑒑𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒮𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒄 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒴𑒐 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒐𑒞𑓂𑒞𑒰-𑒥𑒩𑒮𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒍 𑒢𑒻 𑒔𑒪𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑒛𑓃𑒏𑒏 𑒯𑒰𑒪 𑒞𑒿 𑒣𑒴𑒕𑒴 𑒖𑒳𑒢𑒱। 𑒋𑒯𑒱𑒪𑒹𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒫𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒦𑒹𑒪, 𑒧𑒞𑓂𑒮𑓂𑒨-𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒏𑓄 𑒄 𑒅𑒑𑓂𑒩 𑒖𑒥𑒩𑒠𑒮𑓂𑒞𑒲𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢-𑒏𑒪𑒰 𑒮𑒱𑒐𑒪𑒏। 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒏𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒢𑒲𑒏 𑓒𑓐𑓐𑓘 𑒄.𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒪𑒨 𑒍𑒃 𑒠𑒳𑒭𑓂𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒞𑒧 𑒏𑓄 𑒮𑒏𑒪। 𑒨𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒄 𑒠𑒹𑒐𑒲 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒬𑒲 𑒂 𑒑𑓀𑒛𑒏𑒣𑒩 𑒖𑒹 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒥𑒻𑒩𑒰𑒖 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒨𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒑 𑒁𑒕𑒱? 𑒄 𑒢𑒱𑒨𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒖𑒪 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒡𑒢 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒏 𑒪𑒑 𑒂 𑒋𑒞𑓄 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒨𑒢𑓂𑒞𑒰𑒑𑒝𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒨𑒰𑒢𑒱 𑒥𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒖𑒪 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒡𑒢 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒨𑒰𑒢𑒱 𑒥𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒹𑒞 𑒖𑒐𑒢 𑒍𑒞𑒳𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒂𑒢 𑒡𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯/ 𑒕𑒯𑒩 𑒥𑒢𑒞, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑓕𑓐 𑒮𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒯𑒧𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒻𑒞 𑒮𑒧𑒗𑒾𑒞𑒰 𑒢𑒻 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒪। 𑒏𑒱𑒋? 𑒏𑒼𑒬𑒲𑒣𑒩 𑒦𑒲𑒧𑒢𑒑𑒩 𑒥𑒻𑒩𑒰𑒖, 𑒏𑒳𑒬𑒯𑒰, 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑓑𑓙𑓕𑓘 𑒧𑒹 𑒥𑒢𑒪 𑒄 𑒕𑒯𑒩𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑓓𑓐 𑒥𑒩𑒐 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒕𑒪, 𑒖𑒹 𑓑𑓙𑓘𑓘 𑒧𑒹 𑒐𑒞𑒧 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒯𑒧𑒞𑒱 𑒏𑒱𑒋 𑒢𑒻 𑒥𑒢𑒱 𑒣𑒰𑒍𑒪? 𑒕𑒯𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒪𑒳 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒪 𑒯𑒙𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒄 𑒢𑒻 𑒏𑒋𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒍𑒏𑒩 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒆𑒿𑒔𑒰𑒃 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞, 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒏 𑒆𑒿𑒔𑒰𑒃 𑒥𑒜𑓃𑒰𑒥𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞। 𑒖𑒃 𑒮𑒰𑒪 𑒄 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒮𑒧𑒨𑒮𑒿 𑒢𑒻 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒍𑒃 𑒮𑒰𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒪𑒨 𑒁𑒥𑒻𑒞। 𑒮𑒋𑒯 𑒦𑒹𑒪 𑓒𑓐𑓐𑓘 𑒧𑒹, 𑒠𑒹𑒩 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑒹𑒪 𑒥𑒩𑒐𑒰, 𑓑𑓘 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒬𑒲 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒧𑒹 𑓒 𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒠𑒩𑒰𑒩𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪।

𑓑𑓙𑓘𑓑 𑒄.𑒏 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒲। 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩𑒣𑒴𑒩 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒪𑒑 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒏, 𑒋𑒩𑒢𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒉𑒏 𑒚𑒰𑒧𑒮𑒿, 𑒂 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒿 𑒯𑒧 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒾𑓀 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑓑 𑒧𑒲𑒙𑒩𑒏 𑒏𑒙𑒰𑒫 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑓒𑓑-𑓒𑓘 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓐𑓘 𑒡𑒩𑒱 𑒦𑒲𑒧𑒢𑒑𑒩 𑒥𑒻𑒩𑒹𑒖𑒏 𑒄 𑒏𑒙𑒰𑒫 𑓒 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒂 𑒄 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒼𑒬𑒲𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒡𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒯𑒙𑒱 𑒏𑓄 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒫 𑒡𑒰𑒩 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒂 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒯𑒮 𑒢𑒯𑒮 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏। 𑒢𑒰𑒮𑒰𑒏 𑓘 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓐𑓘 𑒂 𑓒𑓔 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓐𑓘 𑒏𑒹𑒩 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒾𑒬𑒱𑒏𑒲𑒏 𑒢𑒫 𑒂 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒡𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑓒𑓐𑓐 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩𑒏 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒦𑒲𑒧𑒢𑒑𑒩 𑒥𑒻𑒩𑒹𑒖 𑒂𑒥 𑒏𑒼𑒬𑒲𑒏 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒏 𑒡𑒰𑒩𑒏 𑒆𑒣𑒩 𑒥𑒢𑒪 𑒥𑒻𑒩𑒹𑒖 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨। 𑒖𑒃 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒧 𑒂𑒣𑒠𑒰 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒹 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒮𑒿 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒙𑒲𑒧 𑒋𑒃 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒱𑒣𑒼𑒩𑓂𑒙 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒙𑒲𑒧 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒂 𑒋 𑒙𑒲𑒧 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒄 𑒂𑒣𑒠𑒰 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒂𑒣𑒠𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒢𑒻। 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒖𑓂𑒘 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒔𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒢𑒱𑒯𑒪𑒞𑒰 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒖𑒐𑒢 𑒉𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰𑒏 𑒆𑒣𑒩 𑒂𑒩𑒼𑒣 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪𑒰, 𑒧𑒢𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒏𑓄 𑒉𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒂𑒣𑒠𑒰 𑒒𑒼𑒭𑒱𑒞 𑒏𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒄 𑒪𑒹𑒥𑒪-𑒞𑒩 𑒏𑒹𑒩 𑒂𑒣𑒠𑒰 𑒕𑒪 𑒂 𑒄 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒮𑒑𑒩- 𑒢𑒠𑒱𑒨 𑒩𑒱𑒮𑓂𑒏𑒏 𑒪𑒱𑒯𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒂 𑒢𑒠𑒱𑒨 𑒩𑒰𑒯𑒞𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒮𑒏𑓂𑒭𑒧𑒞𑒰𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒮𑒿- 𑒣𑒰𑒩 𑒣𑒰𑒨𑒥 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒻 𑒕𑒪। 𑒞𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒂𑒏𑒮𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒂𑒣𑒠𑒰 𑒏𑒼𑒭𑒮𑒿 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪, 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒇𑒝-𑒧𑒰𑒤𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪। 𑒏𑒳𑒬𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒂𑒣𑒠𑒰 𑒮𑒦-𑒮𑒰𑒪 𑒁𑒥𑒻𑒞, 𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱𑒨𑒹 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒑𑒹𑒪। 𑒠𑒰𑒧𑒼𑒠𑒩 𑒒𑒰𑒙𑒲𑒏 𑒂 𑒧𑒨𑒴𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒲

परियोजना जकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किए सम्भव नै भेल? विश्लेषणेयाक वृन्दावन प्रेम किए सफल अछि? नेपाल सरकारपर दोषारोपण कऽ हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब? एकर एकमात्र उपाय अछि बडका बान्हसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ह बान्हल गेल अछि तकरा काटि कऽ हटाउ आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण करू। नेपाल सरकारसँ वार्ता कऽ आ ओहिना समाधान हुअय। आ जाधरि से नै होइए ताधरि जे अल्पकालिक उपाय अछि से करब, जेना बरखा आबयसँ पहिने बान्हक बीचक माटिकेँ हटाउ, बरखा एबाक बाद पकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करू, आ ई सभ राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखू। कोशीकेँ पूरान पथपर अनबा हेतु कएकटा बान्ह बनाबऽ पड़त आ ई सभ एकर समाधान करिऐ नै बनि सकत। कमला धारक नहरिसँ भेल लाभ हानिसँ सीखू। एकर गँ कच्ची नहरि आ तकरापर मूलरूप तिजारतक समस्या, एकटा उदाहरण पर्याप्त हएत जेना-तेना बनाओल परियोजना सभक। कमलाक धारसँ निकालल पछबारी कातक मुख्य नहरि जयनगरसँ उमगाँव- पूर्बसँ पछबारी दिशामे अछि। मुदा ओतऽ धरतीक ढलान उत्तरसँ दक्षिण दिशामे अछि। बरखाक समयमे एकर परिणाम की हएत आकि की होइत अछि? ई बात बनि जाइत अछि आ एकर उत्तरमे पानि थकमका जाइत अछि। सभ साल ई नहर टूटी बान्हसँ पटौनी हुअय वा नै एकर उपनहरिया कातक हरियर निश्चिन्त टूट क्षमता टा कनैत अछि। हलना बालुक जमीन नहरिमे नै चलि जाय, से नहरिक दिशा बदलि देल जाइत अछि ! कमला नदीपर १९६० ई. मे

जयनगरसँ मंसानपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ ओसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भऽ गेल। मंसानपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ कुशेश्वरक दर्शनसँ स्पष्ट अछि। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया ओ सरेक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नै अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जगा-जगा भग होइत गेल, गाम कानिङँ ओ तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सब किछु तहस-नहस भऽ गेल। कमला धार जे बलानमे पिपराघाट लग १९६४ मे मिलि गेली, हिमालयसँ बहि कऽ आबि येये लहराक अवनाधक कारण। आब हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर ओ धारमे २ मीटरसँ बेसी बढि जाइत अछि। १९६७ ई.सँ बाढ़/ छहरक बीचमे माँ एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाई बढ़बाक आवश्यकता भऽ गेल आ ई माँग शुरू भऽ गेल जे बाढ़/ छहरकेँ पाटि देल जाय। कोशीक पानि माउन्ट एवरेस्ट, कंचनजंघा आ गौरी-शंकर शिखर आ मकालु पर्वतशृंखलासँ अबैत अछि। नेपालमे सप्तकोशीमे, जकरामे इन्द्रावती, सुनकोसी (भोट कोसी), तांबा कोसी, लिखू कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी आ तामर कोसी सम्मिलित अछि। ऐमे इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिखू कोसी आ दूध कोसी मिलि कऽ सुनकोसीक निर्माण करैत अछि आ ई मोटा-मोटी पश्चिमसँ पूर्व दिशामे बहैत अछि, एकर शाखा सभ मोटा-मोटी उत्तरसँ दक्षिण दिशामे बहैत अछि। ई पाँचू धार गौरी शंकर शिखर आ मकालु पर्वतशृंखलाक पानि अनैत अछि। अरुणकोसी माउन्ट एवरेस्ट (सगरमाथा) क्षेत्रसँ पानि ग्रहण करैत अछि। ई धार मोटा-मोटी उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत अछि। तामर कोसी मोटा-मोटी पूबसँ पश्चिम दिशामे बहैत अछि आ अपन पानि

कंचनजंघा पर्वत श्रृंखलासँ पबैत अछि। आब ई तीनू शाखा सुनकोसी, अरुणकोसी आ तामरकोसी धनकुट्टा जिलाक त्रिवेणी स्थानपर मिलि सप्तकोसी बनि जाइत छथि। एतऽसँ दस किलोमीटर बाद चतरा स्थान अबैत जतऽ महाकोसी, सप्तकोसी वा कोसी मैदानी धरातलपर अबैत छथि। आब उत्तर दक्षिण चलैत प्रायः पचास किलोमीटर नेपालमे रहला उत्तर कोसी हनुमाननगर-भीमनगर लग भारतमे प्रवेश करैत छथि आ करीब दक्षिण-पश्चिम मुहे चलाक बाद दक्षिण-पूर्व आ पश्चिम-पूर्व दिशा लैत अछि आ भारतमे लगभग एक सय तीस किमी. चललाक बाद कुरसेला लग गंगामे मिलि जाइ छथि। कोसीमे बागमती आ कमलाक धार सहरसा- दरभंगा- पूर्णिया जिलाक संगमपर मिलि जाइत अछि। कोसीपर पहिल बाह्र बारहम शताब्दीमे लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल वीर-बाँध छल जकर अवशेष भीमनगरक दक्षिणमे अखनो अछि। भीमनगर लग बैराजक निर्माणक संग पूर्वी कोसी नहर सेहो बनि गेल आ पूर्वी कोसी नहरि सेहो। कुँअर सेन आयोग १९६६ ई. मे कोसी नियन्त्रणक लेल भीमनगरसँ तीस किमी. नीचाँ डगमारा बैराजक योजनाक प्रस्ताव देलक जे वाद-विवाद आ राजनीतिमे ओझरा गेल। ओ बैराजसँ दुटा फायदा छल। एक तँ भीमनगर बैराजक जीवन-कालावधि समाप्त भेलापर ई बैराज काज करितय, दोसर ऐसँ उत्तर-प्रदेशसँ अधिक धार जल पश्चिमी नहरि निकालि कऽ जाइत जइसँ उत्तर बिहारकेँ बड़ फायदा होइतय। मुदा ओ बैराज निर्माण लेल पाइ आवंटन केन्द्रीय सिंचाइ मंत्री डॉ. के.एल.राव नै देलखिन्ह। पश्चिमी कोसी नहरि एकर विकल्प रूपमे जता गता मन्थर गतिसँ शुरू भेल मुदा अखनो धरि ओइमे काज होइये रहल अछि। कोसी

लऽ किछु नै भऽ सकल। निदान आयल जे योजना अस्वीकृत भऽ गेल। एकर दिनमे कार्य पूरा हेबाक छल तकर दिन विवाद शुरू भेल, तथापि वैकल्पिक योजनाक बदलामे सम्पूर्ण योजनाकेँ स्वीकृति भेटल मुदा सभटा पूर्ण हेबाक बाद तकैत भेल। एनामे विश्वेश्वरैया पठाओल छथि मान। हैदराबादसँ बिनासी माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बाँध बनाओल गेल आ नगरसँ 6.5 माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे गरबन्ह बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बाँध, हुनकर प्रस्तावित 130 फूट ऊँच बनबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल जे वायसराय हार्डिंग ओकरा घटा कऽ 80 फीट कऽ देलन्हि। विश्वेश्वरैया निचुलका भागक बीचमे बढ़ा कऽ ईहो कमी पूरा कऽ लेलन्हि। बीचमे बाढ़ि आबि गेल जे अगिनिक मजदूर लगा कऽ आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाजक ठीकसँ बहाली कऽ, राति भरि चारिगोटा सैन्य लगा कऽ आ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा समयक उपयोग कएलन्हि। दूरस्थ गाम छला जे सीमेन्ट आयात नै कएलन्हि ततए बालु, कैल्सियम, पाथर आ पाकल ईंटाक चूर्णसँ मिला कऽ निर्मित सुरखीसँ ओ बाँधक निर्माण कएलन्हि। बाँध निर्माणसँ पहिनहि विश्वसनीय नहरिक निर्माण कऽ लेल गेल। प्रधानमंत्री आयरा काल आ मुख्यमंत्री आयरा कालक खराब नै हुअय से जरूरी अछि, संगहि सरकारपर दबाव बनाए जे स्कूल कॉलेजमे गर्मी मासिक बदलामे बाढ़िक समयमे छुट्टी दिअय। सी.बी.एस.ई. आ आइ.सी.एस.ई. जे छात्र विज्ञान बाढ़ि धनि ई नै कऽ सकल अछि। एखनमे तथापि वैकल्पिक योजनाक प्रारम्भ कयल जाय, कारण दीमकगण वैसल अपन जीवन-कालावधि पूर्ण कऽ लेन अछि।

ओना ईहो नहर आ सड़क दुनू मंत्रालयसँ लेल जाय कारण ओतए नहर आ सड़क सेहो बनि सकैत आ से बनबाक चाही। बैरेज बनबाक कालनिर्णयमे एकरा नहि धराएलक स्थानक अनुसार बनाओल जाय। कतेको बान्ह सभकेँ पाटि कऽ ऊँचा कएल जाय आ एकरा बान्हकेँ मोटरेबल बनाओल जाय, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाय। बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य हुअब सन देखा रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कऽ, युद्ध-स्तरपर ई समापन काज शुरू कएल जाय। १२म शताब्दीमे शुरू कएल बान्ह जखन पूर्ण हएत तखन धारसभ मनुक्खक सेविका बनि सकत।

आब प्रस्तुत अछि दिनेश कुमार मिश्र जीक निबन्धक सारांश मैथिलीमे, बन्ना-बनी बहिनी महानन्दा, बागमतीक सद्गति!, दुइ पाटनक बीच.. (कोसी धारक कथा), न घाट न घर, बगाहा एक मजबूर मिथिलाक कमला धार, गण्डकी धार आ तकनीकी माथा-हूँकी।

बहिनी महानन्दा

जखन कखनो देशक गौरवशाली अतीतक चर्चा होइत अछि तँ पहिने बिहारक नाम लेल जाइत अछि। जखन देव-दानव मिलि कऽ सागर मथने छला, तखन सागर मथबामे मन्दार पहाड़क उपयोग होइ छल। ई स्थान वर्तमान भागलपुर जिलामे पड़ैत, रहऽ सकैत समुद्रक सीमा ओहि समय भऽ तक छल। ई ऊपरक कथा

राजा जनकक समयसँ सुनल जाइत अछि । विदेह प्राचीन काल सँ याज्ञवल्क्य, गौतम, च्यवन, श्रृंग, विश्वामित्र, अष्टावक्र, कात्यायन, पतंजलि, वर्ष, उपवर्ष, पाणिनी, अश्वघोष, वात्स्यायन, आर्यभट्ट आ वराहमिहिरा सन विद्वान आ कवीगन पर गर्व करैत रहल अछि । मिथिला प्राचीन कालमे संस्कृति, शिक्षा, कला आ साहित्यक एकटा पैघ केंद्र छल जे देशक विभिन्न भागक विद्वानकेँ आकर्षित करैत छल । भगवान महावीर ओ बुद्ध सँ समस्त संसारकेँ प्रेम, करुणा, सौहार्द आ सहिष्णुताक उपदेश देलनि । एतहिये राजकुमार सिद्धार्थ भगवान बुद्ध बनला, जिनकर वचनामृत सम्पूर्ण विश्वमे भेल । वाल्मीकि रामायणमे भगवान् राम अपन भाइ लक्ष्मण, भरत आ शत्रुघ्न संग विवाहक उद्देश्य सँ जनकपुर गेला। ओ यात्रामे ओ बक्सर लग ताड़काकेँ मारि सिद्धाश्रम, अहिल्या-आश्रम, गौतम आश्रम आ वैशाली होइत जनकपुर गेला । महाभारतक काल जरासंधक राजधानी वर्तमानमे राजगृह आ कर्णक अंग देशक राजधानी चम्पानगरी (भागलपुर) छल । पाण्डवक निर्वासन आ गुप्त निवासक बहुत समय पूर्णियाक जंगलमे बीतल । भीम कहिया मादागिरी (वर्तमान मुंगेर) पर विजय प्राप्त कए छला आ खड़गपुर हवेलीक समीप अवस्थित भीम बांध भीम सँ संबंधित मानल जाइछ । सानपुर (छपरा) लग हरिहर क्षेत्रक संबंधमे कहल जाइछ जे भगवान विष्णु एक बेर पशुपति नदीक तटमे एतऽ बहुत रास गाय अपन छला । जखन ओ स्थानक नाम हरिहर क्षेत्र राखल गेल । ओ स्थान पर गज आ ग्राहक बीच झगड़ा भेल, भगवान विष्णुकेँ स्वयं खसि पड़ल, बिना गरुड़क सवारीक गजक रक्षा लेल आबय पड़लनि। ऐतिहासिक कालमे विदेहक दर्शन संभवतः मगधक बिम्बसार (काॅमन

ईसा पूर्व छठम शताब्दी) सँ शुरू होइत आ मानल जाइत जे भगवान वर्धमान महावीर आ भगवान बुद्धक उदय ऐ कालमे भेल। ऐ कालक आसपास वैशालीमे लिच्छवी राज्य अपन सिद्धि प्राप्त कऽ नेने छल। नन्द वंशक पतनक संग मगधमे चंद्रगुप्त मौर्यक साम्राज्यक स्थापना ३२१ कॉमन ईसा.पू.भेल। चन्द्र गुप्त मौर्यक उदयमे चाणक्य (कौटिल्य) क भूमिका महत्वपूर्ण छल। चाणक्य स्वयं कोन स्थानक निवासी छल ऐ मे किछु मतभेद अछि। किछु लोक हुनका तक्षशिलाक निवासी मानै छथि जखनकि दोसर मान्यताक अनुसार चाणक्य वर्तमान पश्चिम चंपारणक निवासी छला। मौर्य वंशक एकटा आर महत्वपूर्ण राजा सम्राट अशोक अछि जे २७२-२३२ कॉमन ईसा पू. कलिंग विजयक बाद युद्ध आ बर्बरतासँ दुखी भऽ गेल आ ओ अपन शेष जीवन बौद्ध धर्मक प्रचारमे बिता देलक। मौर्यवंशक अंतिम सम्राट बृहद्रथक वध कऽ पुष्यमित्र १८१ कॉमन ईसा पू. आ तकर बाद यूनानी, शक, कुशान आदि सन् ३२० धरि मगध पर शासन केलनि, जखन धरि चन्द्रगुप्त पाटलिपुत्रमे गुप्त साम्राज्यकेँ सुदृढ नै कऽ केलनि। गुप्त वंशक राजा चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य आदि एक बेर फेर मगधकेँ अपन पुरान वैभव वापस दियेलनि। मुदा पाँचम शताब्दीक अन्तमे हुन सभक आक्रमणसँ एक बेर फेर मगधक समृद्धि अवरुद्ध भेल आ हुन लोकनि सातम शताब्दीक मध्य धरि एतऽ ओतऽ रहला, जखन पाटलिपुत्रपर हर्षवर्धन सन् ६४१ मे कब्जा क लेलनि। मुदा ई स्थायी नै भऽ सकल। आठम शताब्दी धरि ई शासनमे रहल आ गुप्त वंशक बाद बारहम शताब्दीक आरम्भ धरि पाल वंशक शासन पाटलिपुत्रपर बनल रहल। इन्द्रद्युम्न ऐ वंशक अंतिम राजा छल। बख्तियार खिलजी अपन समयमे

अध्ययन हमला कए छल। बिहारक कोनो चर्चा नालंदा आ विक्रमशिला विश्वविद्यालयक चर्चा कए बिना पूरा नै भऽ सकैए। सन् ४०५-४११ क बीच भारतमे रहयवला चीनी यात्री फा-हियान अपन लेखनीमे नालंदा बौद्ध विहारक वर्णन कएने छथि मुदा ई विश्वविद्यालयक विषयमे चुप छथि। लेकिन ह्वेन-सांग (भारतमे निवास सन् ६३०-६४३) नालंदाक शैक्षिक वैभवक प्रशंसा लिखित रूप सँ कएल छथि। देशक विभिन्न शैक्षिक वैभवसँ ई विश्वविद्यालयक बहुत प्रशंसा भेल अछि। ई विश्वविद्यालयमे देश-विदेशक विभिन्न कोन-कोनसँ करीब दस हजार विद्यार्थी आबिकय रहै छला आ शिक्षा प्राप्त करै छला। ओतऽ व्याकरण, विधि, साहित्य, दर्शन आदि अनेक विषयक पढ़ाइ होइ छल। विश्वविद्यालयमे प्रवेश लेल कोनो विद्यार्थीकेँ दरबज्जापर परीक्षा देमऽ पड़ै छलै आ संतुष्टिक बाद विद्यार्थीक प्रवेश होइ छलै। ई विश्वविद्यालय गुप्त वंशक राजा सभ द्वारा पाँचम शताब्दीमे स्थापित कएल गेल छल आ एकरा राजाश्रयक अधीन राखल गेल छल। किंवदंती अछि जे नालंदा विश्वविद्यालयक निर्माण सम्राट अशोक द्वारा कएल गेल, मुदा एकर कोनो प्रमाण नै अछि। विक्रमशिला विश्वविद्यालयक स्थापना पाल वंशक राजा सभ द्वारा आठम शताब्दीमे वर्तमान भागलपुरसँ लगभग ४० किलोमीटर दक्षिण-पूर्वमे पाथरघाट पर्वतमे भेल। ई विश्वविद्यालयक मुख्य आचार्य आतिश श्रीज्ञान दीपंकर बहुत प्रसिद्ध भेला जे एगारहम शताब्दीमे तिब्बतक राजा द्वारा धर्म प्रचार लेल तिब्बत बजाओल गेल छला। ई विश्वविद्यालयमे १०८ टा आचार्य काज करै छला आ आठ हजार लोक एक संग बैसि कऽ एकर हॉलमे धार्मिक चर्चा सुनि सकै छला। एतऽ वेद, वेदांत, सांख्ययोग, मीमांसा, बौद्ध दर्शन आदि विषयक

पढ़ाइ होइ छल। मुदा सन् १२०६ मे जखन तिब्बती बौद्ध-यात्री धर्मस्वामी ओ ठाम आयल छला तखन हुनका ओ विश्वविद्यालयक खंडहर मात्र देखबामे अएलन्हि। ओ दुनू विश्वविद्यालयक अलाव उदंतपुरी विहार (वर्तमान बिहार शरीफ) नालंदा लग छल। ई विहार नवम शताब्दीमे पाल वंशक राजा लोकनि द्वारा स्थापित कएल गेल, मुदा ई कहियो नालंदा वा विक्रमशिलासँ प्रतिस्पर्धा नै कऽ सकल। तहिना आठम शताब्दीमे महिषी (वर्तमान सहरसा) मे आदिशंकराचार्य आ मंडन मिश्रक बीच बहस भेल छल। जकर मध्यस्थता मंडन मिश्रक विदुषी पत्नी भारती कने छली। मंडन मिश्र ओ बहसमे हारल छला, मुदा भारती स्वयं शंकराचार्यसँ शंकराचार्य सँ बहस कऽ हुनका अनिनिक अध्ययन लेल समय मांगय लेल बाध्य कऽ देलखिन्ह। ओना विवाद अछि जे ई महिषी वएह महिष्मती अछि जतय शंकराचार्य आ मंडन मिश्रक शास्त्रार्थ भेल छल वा नै। विद्वान जनमानस मिथिलाक भानुदत्त मिश्र, वर्द्धमान, ज्योतिरीश्वर, भागदत्त, पृथ्विधर आचार्य, गंगेश उपाध्याय, जगधर, विद्यापति, शंकर मिश्र, वाचस्पति मिश्र आ प्रभाकर मिश्र आदि प्रमुख छथि। विद्यापति मिथिलाक घर-घर बसि गेल छथि। ओ सम्पूर्ण हिन्दी आ बंगला साहित्यकेँ दिशा देबाक काज सेहो कयलनि अछि। मिथिलाक विद्वान महिला कोना अर्थमे पुरुषसँ पाछू नै रहल छथि। ऋषि मैत्रेयी आ गार्गीक अलाव १७ मे शताब्दीमे लछिमा देवी, लखिमा देवी, विश्वास देवी आ चंद्रकला देवी आदि साहित्य आ दर्शनक क्षेत्रमे अद्भुतपूर्व काज कलनि। बारहम शताब्दीक अंतमे अफगान आ तुर्कक हमला विहारपर शुरू भऽ गेल। बख्तियार खिलजी पाल वंशक राजा लोकनिसँ हुनकर क्षेत्र छीन लेलनि आ ओ सँ प्रशासनिक अस्थिरताक

काल शुरू भेल। शासन दिल्लीक सुल्तानक, कखनो आगराक, कखनो जौनपुर वा गौर (बंगाल) क हाथमे रहल। मुदा पूरा तिरहुतपर हुनका सभक हाथ नै लागि सकल आ अलग-अलग भागमे हुनकर शासन जारी रहल। ओ क्रममे कुतुबुद्दीन ऐबक, सुल्तान घियासुद्दीन, फिरोज शाह, सिकंदर लोधी आदि बहुत नाम सम्राट आबि गेला। शेरशाह (सन १५४०-१५४५) एकमात्र शासक छल जे अपन साम्राज्यकेँ व्यवस्थित रूपसँ स्थापित करबाक प्रयास कयलक। शेरशाह पटनाकेँ अपन पुरान वैभवमे वापस आनs चहै छल आ ओ दिशामे काज करs लागल। बख्तियार खिलजीक समयसँ चलि रहल राजधानी बिहार शरीफकेँ पटना अनलक आ नव किला बनौलक। ओ अपन राज्यक सीमाक विस्तार जौनपुर, ग्वालियर, मालवा आ रणथम्भौर आदि कयलक आ एकटा सुशासन प्रणालीक पुनर्स्थापना कयलक। बंगालसँ पंजाब आदि सड़क बनबाक श्रेय शेरशाहकेँ छै। मुदा मुगलक बढ़ैत सत्ता शेरशाहक उत्तराधिकारी नै सम्हारि सकल आ अकबरक समयमे बिहार मुगलक हाथमे चलि गेल। बिहारक राजा/ जागीरदार लोकनि एहन बाहरी शक्तिकेँ सामान्य रूपेँ स्वीकार नै कयलनि। औरंगजेबक पोता अजीम-उश्शानक शासन कालमे अजीमाबादक महिमा (ई शहर अजीम-उश्शान द्वारा बनाओल गेल छल आ वर्तमान पटना शहरक इलाका कहल जाइत अछि) घूरल आ पटना आ बंगालक व्यापार बढ़ल। मुर्शिद कुली खान १७०४ मे बंगालक शासक बनल आ १७०७ मे औरंगजेबक मृत्युक बाद अजीमाबाद ओकर नियंत्रणमे आबि गेलै। १७४० मे अलीवर्दी खान मुर्शिदाबादमे शासन सम्हारलक आ ओ क्रममे शासनक बागडोर जैनुद्दीन अहमद आ सिराजुद्दौलाक हाथमे चलि गेलै, जे अंग्रेज

द्वारा मारल गेल। एकर बाद मीर जाफर आ मीर कासिम अली शासक बनि गेल। ओहि सँ समय मे रहल आ अंग्रेज सन् १७६५ मे अपन साम्राज्यक जड़ि मजगूत कऽ लेलक। बिहारमे ने अफगान, तुर्क आ ने मुगल शासक आसानीसँ रहला, आ ने अंग्रेजकेँ रहय देलनि। सन् १८५७ मे जगदीशपुरक बाबू कुंवर सिंह आ बाबू अमर सिंह अंग्रेजक विरोध कएलनि। ओ क्रमशः बाबू कुंवर सिंहकेँ एक बेर आजमगढ़ भागय पड़लनि, मुदा ओ बहादुरीसँ वापस आबि गेला आ अप्रैल सन् १८५८ मे गुलामीक बदला मृत्युकेँ स्वीकार कएलनि। बादमे बाबू अमर सिंह सेहो संघर्ष कएलनि। दोसर दिस संथाल परगनाक सिद्धू, कान्हू, चाँद आ भैरव भाइ १८५५-५७ क बीचमे दक्षिण बिहारमे अंग्रेज शासनक खिलाफ विद्रोहक मशाल फहरा देलखिन, फेर बिरसा भगवान १८९५-२००० क बीच छोटानागपुरक जंगलमे अशांतिक आगि जरौने रहल। हिनका सभक संग तिलका मांझीक नाम सेहो बड्ड श्रद्धापूर्वक लेल जाइत अछि। सन् १९०८ मे खुदीराम बोस आ प्रफुल्ल

चाकी बंगालक दुर्नाम कलक्टर किंग्सफोर्ड पर मुजफ्फरपुरमे बम फेंकलथि। कलक्टर बचि गेल मुदा प्रफुल्ला चाकी पकड़ाइसँ पहिने आत्महत्या कऽ लेलनि आ किशोर खुदी राम बोसकेँ फाँसीपर लटका देल गेल। अप्रैल १९१७ मे चंपारणक किसान राजकुमार शुक्लाक आग्रहपर महात्मा गांधी चंपारण आबि पहिल बेर गोराक अत्याचारक खिलाफ आवाज उठौलनि। एकर बाद स्वतंत्रता आन्दोलनमे बिहारमे बड्ड रास नामी नेता जेना सर्व श्री ब्रज किशोर

प्रसाद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, श्री कृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, वैद्यनाथ झा, जयप्रकाश नारायण आ बाबू जगजीवन राम आदिक शृंखलाक अबैत अछि। बहुत रास विद्वान/स्वतंत्रता सेनानी बिहारकेँ अपन कार्यस्थल बनौलनि, जेना आचार्य कृपलानी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, श्री काशी प्रसाद जायसवाल आ स्वामी सहजानंद सरस्वतीक नाम उल्लेख योग्य अछि। जखन बिहारमे विदेशी गुलामीसँ मुक्ति पएबाक लेल बहुत आन्दोलन भेल छल, साहित्यक रसपान वाला बहुविद्वान कृतवीन सेहो समय-समय पर ऐ धरतीपर जन्म लेने छलाह। राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, आचार्य शिवपूजन सहाय, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, श्री फणीश्वर नाथ 'रेणु', राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', नागार्जुन आ शाद अजीमाबादीक रचनामे देशक माटिक गंध आ चिंतन भेटत। बिहार (पटना) श्री गुरु गोविंद सिंह जी क जन्मभूमि अछि । अंग्रेजक आगमनक बादसँ बिहारमे कलकत्तासँ प्रशासनिक शासन होइत छल । सन् १९११ क विभाजनक समयसँ लोकमे बिहारकेँ अलग प्रांतक रूपमे देखबाक इच्छा छल। श्री सच्चिदानंद सिन्हा, बाबू शालीग्राम सिंह आ बाबू विशेश्वर सिंहक नेतृत्वमे आन्दोलनक फलस्वरूप अप्रैल १९१२ मे बिहार आ उड़ीसा अलग राज्य बनल । उड़ीसा सेहो अप्रैल १९३६ मे बिहारसँ अलग भऽ गेल। पचासक दशकमे राज्य पुनर्गठन आयोगक सिफारिशक अनुसार बिहारक वर्तमान भौगोलिक रूप सामाँ आयल अछि। पूर्वमे पश्चिम बंगाल, पश्चिममे उत्तर प्रदेश, दक्षिणमे मध्य प्रदेश आ उड़ीसा आ उत्तरमे नेपालसँ घेरल अछि। राज्य पश्चिमसँ पूर्व दिस बहैत गंगा नदीसँ विभाजित अछि।

भौगोलिक दृष्टिएँ बिहार तीन भागमे विभाजित अछि।

पहिल अछि उत्तर बिहारक गंगा ऊपर। बिहारक बीस टा जिला बिहारक ई मैदानी ऊपर अबैत अछि, जे नेपालक तराई आ गंडकक उत्तरी तटक बीच स्थित अछि। एकरा अलावा भागलपुर जिलाक नवगछिया उपमंडल उत्तर बिहारमे पड़ैत छै। ई पूरा इलाका उत्तर बिहारक नामसँ प्रसिद्ध अछि। मैदान आ नदीसँ भरल होवाक कारणे उत्तर बिहार कृषिक दृष्टिकोणसँ बहुत समृद्ध बनल अछि।

(अगिला अंकमे जारी)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.नित नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

नित नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)



सुशीलक रचना संसार: हुनकर रचना संसार छन्हि- घराड़ी (उपन्यास) (१९७३), गामवाली (उपन्यास) (१९८२), रामणी (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३) आ अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६) आ श्री चानू पाथी हुनकर अनुमतिसँ विदेह पेटारमे उपलब्ध अछि लिंक www.videha.co.in/pothi.htm पर।

मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा प्रसंग

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक नामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारनपर किछु सिम्हिकरैत कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हाटेबाटेमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकैए, जाऽ ई सेहो जायत, अपनजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ओमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि। ई अपन बापातापामे गठन सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेन्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेन्ट हिनका मन्दिरसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किछ दानीक ओनजम भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बापातेटाक ओकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

कमलानन्द झाकेँ हम किएक छद्म समीक्षक कहलियनि? कारण ओ छद्म समीक्षक छथि। ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।" तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरो चढ़ा सकै छी आ ककरो उतारि सकै छी- केर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण? चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द

मा कत स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादुवला साहित्यक निश्छल दुनियाँमे। अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियाँमे। प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर। पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि- "विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।" आ उपन्यास आरम्भ। *गामवालीक मृत्यु आ रखल ममता, गामवालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि यादव समाज?*

मुदा आइ पहिने हुनकर पहिल उपन्यास घनाठीक चर्चा करी।

घनाठी (उपन्यास) (१९७३)

ई उपन्यास अखिल राष्ट्रीय मिथिला संघ (बाबू साहेब चौधरी) द्वारा छापल गेल छल। बाबू साहेब चौधरीक समस्या नामसँ आमुख सेहो छन्हि। आ सुशील ई उपन्यास अपन मायकेँ समर्पित करै छथि। छोट-छीन लखकीय वक्तव्यमे ओ अपनाकेँ मनुष्यमिक यात्रा लेल चलैल कहै छथि, मुदा मनुष्यान सेहो छै, खड़ान यानि जग्ध रहै छै।

पाठक जीक दलानपर उपन्यास प्रारम्भ होइत अछि, दुटा सहुक एकटा चौकी, दुटा लगहरि महींस, एकटा गाय, आ एक जोड़ा बड़द। बाँसी घुरमे सिंघुड़ा हैत अछि, सुखायल जाड़निसँ बनी ई सजीव बाँसी जड़ै छै, प्रकृतिक लीला!

आ उपन्यासकार सभटा सरंजाम केलाक बाद नायक प्रवेश उपन्यासमे करबै छथि। मिलिट्रीमैन नायक।

तेँ भाषायी शिल्प सहज रहल। अनावश्यक 'क' आ 'ए' केर प्रयोग सुशील १९७३ मे सहज नै करै छला, पी.टी.आर.मे जाऽ शुरूमे होइ आयल छै एकरा ओ पनसँ काटि देने छथि, बादक रूपो ठीक छै। ओ उपन्यासमे मलाहक लड़की आ ब्राह्मणक बेटाक प्रेम सम्बन्ध सहज रहल। तेँ की होइ सिद्ध होइछै जे, जे भाषायी रूपसँ घनिष्ठ अछि ओ आगाँक सहज सोचैत, ओकर विषय-वस्तु सहज आगाँ दिसुका सोच लेल होइछै। मूलधारामे होइ दुनू नियन्त्रा रहल। से दुल्हा गामक उदयचन्द्र झा 'विनोद' जे कि मतियाकर छथि आ प्रतिक्रियावादी विचारधाराक छथि (विदेहक शरदिन्दु चौधरी विशेषांक आ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक दुनूमे हुनकर छल-छद्म शरदिन्दु आ प्रेमलता जी अभिलिखित केने छथि), से मूलधारामे स्वीकृत रहलथि मुदा ओही दुल्हा गामक सुशील जे भाषा, विचार, रचनाक विषय आ रचनाक रूप सभमे हुनकासँ बढ़ल आगाँ छथि, हुनक जातिक छथि से कतिआ देल गेला, मूलधारामे ओ अस्वीकृत किया नै होइतथि? छद्म समीक्षक सभकेँ तेँ हुनकर नामो नै सुनल छन्हि वा ओ सभ ओ तरहक स्वांग करै छथि।

नायक घराड़ी जोति लेल गेल छै, लालबाबू जोति लेने छथिन्ह। ओकर छोटका भाय अपन हिस्सा न लिखत, नायक हिस्सा कोना लालबाबू लिखबा लेलन्हि? लालबाबू बदलल करैत गेयान छथि (आगाँ जा कऽ कानूनी नाम केस कऽ देने छै) मुदा नायककेँ रहबाक घराड़ी बाड़ी,

दासन ०।म उयरि कऽ कि७ जायत? मुदा ॐ्री सूचना ऊीयन्यासिक निष्कासम आगाँ जा कऽ खुजै७। ॐ्रीक ज नान, यिताक मृत्युक वाद, मिलिट्रीम चलि गेल आ गामसँ नियन्दा रऽ गेल जखन आ सहो जखन ऊा यछ्रह वर्खक नहुया। दह दशा वीस वर्खक लागे, स ऊा अयन उमन वीस वर्ख वालकेँ, स मिलिट्री रुर्णी लऽ ललकेँ। यछ्रह साल काना यण नै। ऊाकन राय महादन काहूना लालवावूक कृयायन अछि, यट यासि नहल अछि। माय आ कानयाछुआ वहीन वाढिम वहि गेलै। ऊाकन नाव स्नारानिका। मुदा या०कजी कँ अयन गाटी खलवाक छहि, अरिनाम मा कन हनिछायल गय कहै छथि। वूद्वन, या०क जीक व७का वटा। वूद्वन सनऊं खला॰॰न अछि, सामागिया अछि, कान वाँसक दाहा वनौ स आव लालवावू वूमथिह, स वजै७। या०क जी जकाँ गाटी सट कनय नै अवे छै, स या०कजीसँ मगान्दन सहो छै। या०कजीक यौत्री कृमकुमक प्रवश कनवे छथि उयन्यासकान। कृमकुमक वउ यैघ नाल आगाँ आवैवला छै, अखन गँ ऊा कानि नहल अछि, ऊाकन टनलिनक क्राकम आगि ४ऽ ललकेँ, याकि गेल। या०क जी विदा हा॰॰ छथि अस्पताल। यहिल खण्ड समाप्त।

वागमती कानक अस्पताल, लालवावू (ललितश्वन चौधनी)क प्रयाय, याँच वीघा सानक टुकडी हूनक दल। या०का जीक यागदान, या॰॰सँ नै दहसँ। वूद्वन आ ऊाकन यूना सना धूनि कऽ श्रमदान दलक। आ ऊे यनायकानक कानछ? हूनकन वटा ऊ॰॰ काल दनरंगाम ताछनी यढि नहल छला, आ ऊा आव अही अस्पतालम छथि। दुनक साव! आ कृमकुम कँ या०कजी लऽ जा॰॰ छथि, अही अस्पताल

ज्ञाऽ मलाह जागिक कनूधा नर्स छै, आ लालवावूक वटा व्राह्मध जागिक डॉ. विनायक उाऽ जाक्टन छै। आ लाल वावू सङ्ग अस्पताल पहुँचि जाऽ छथि। हुनका ओ सए गयम मान नै लगै छन्हि, हुनकान मान टाळल छनि उाऽ गयपन, नान ज शनम ठेल नहन्हि याOकजीक उाऽOाम। दासन खण्ड समाप्त।

गसन खण्डक प्रानम्भ, ननू पाखिजयन गय्य सञक्का चलि नहल छै। यंवेरी छै, नान आ लालवावूक वीच सूलह हगै आकि नै? याOक जीक छाटका वटा मलय, नजह ज कूमकूमल टस्लीनक क्राक अनन नहै, आ लालवावूक छाटका वटा अजीग, दुनू वञ दिनक गागिलम मूजङ्कनयून कडालजसँ गाम आयल छै, डाह्मा दुनू उाफऽ छै। विविध शानगीसँ वहीदा नहमान जयमाला प्राग्राम प्रस्तुग कऽ नहल छथि। यी.डी.जरु.म सूशील जी यनसँ कारि कऽ अमीन सयानी कन छथि, मूदा अमीन सयानी विनाका-सिवाका प्राग्राम कनै छला सीलान नतियासँ, सैनिक शाऽ लल जयमाला विश्लि कलाकान विविध शानगीयन हाऽज, अमीना सयानी गकना कऽ सकै छथि आ वहीदा नहमान सङ्ग, स हम प्रिंयुवला नर्सन लऽ कऽ चलि नहल छी। यंवेरी ठवोग यनीजा विजगा सूडुन मा कन नामसँ स्थायिग पूस्कालययन छै, ननू पाखिजयन। लालवावू वदलन कनैल गैयान छथि वनू दु कङ्गा वसी दगा मूदा नानकँ नजह घनाजी चाही, डा गमसा जाऽज। आ खण्ड समाप्त।

चानिम खण्ड प्रानम्भ, नानक छाटका शाऽ महादवक हआ! नानयन आनाय छै। डा शागि जाऽज। मूदा वूद्धन डाकना पडाम थानाम

बाजैत जे जखन ओ ४-५ दिनसँ गाममे नहि नै कतय गेँ ओ हुनका कता कता? ओकरा संग ४-५ टा छौंडा छै, हुनक १०-१५ टा। पाठकजी अवाक छथि। लाल बाबू सन्न छथि। आ फागुन बाबू सबहक मुखाकृति देखि रहल छथि। फागुन बाबू नानक पढ़ बूझनसँ सुनन नहथि, आ फागुन बाबूक करहला हिसाब बूझन बयान देने अछि। पंचायत पंच। खण्ड समाप्त।

पाँचम खण्ड। ब्राह्मण डॉ. विनायक आ मलाह नर्स कनूप्रा। कनूप्रा कहैत, श्री विवाह असम्भव अछि, ओ नीच जातिक अछि, मलाहक बेटी अछि आ विनायक पेंघ लोक। विनायक नै मानैत। आ... (अगिला अंकमे जारी)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.आशीष अनचिन्हार- निनपढ़-गुर-निनपढ़



आशीष अनचिन्हार

निनयउ-गुट-निनयउ

(हमन ॐी व्यंग्य निवंध विदह कन १६८म अंकम प्रकाशित हल छल मुदा एक वन हन हम अही व्यंग्य दऽ नहल छी कानध हमना लगैत एखन ॐी विषय पाठक लग हनसँ पहुँचवाक चाही-लखक)

सहकँ सर गनहँक निसाँ होऽऽत छै हमना अछि। वहुत लाकक निसाँ दखान होऽऽत छै मुदा हमन रिगनिया अछि। किनका याऽऽकँ निसाँ छनि गँ किनका जमीनक गँ किनका नौकनीक गँ किनका किछु मुदा हमना सर समय युनिक चीज नखवाक आदति अछि गँए हमन निसाँ सहा युनिक अछि। हमना गुट-निनयउ वनवाक निसाँ अछि। हम सदिखन निनयउ-गुट-निनयउ वनवाक प्रयासम नहैत छी।।

सर गनहँक निसाँ सूलर छै मुदा हमन निसाँ वउ कष्ट साध्य। वउ-वउ कनाव कनऽ यउ छै एमा। मानकँ अनका गनहसँ असहल नुयं मनवऽ यउ छै। असहल नुयम ए दूआन ज संसानक गँ नियम छै ज जँ हम अपना आयकँ "निष्यउ" कहै छिए गाहिसँ स्पष्ट हऽ जाऽऽत छै ज हम "ककना" यउम छिए। नष्मा: विनु ककना यउ लन हम "निष्यउ" हैए न सकै छी।। उाना संसानम वउका-वउका हुय सर छथि। मानि लिअ ज हम कहलहुँ ज "हम सयक संगम छी" आव एहीसँ स्पष्ट हऽ जाऽऽत छै ज हम "सयक यउम छी"

एखन हुन हम निष्पक्ष कोना रहलहुँ ?
हँ कहलहुँ जे ई निसाँ बड कष्ट साध्य छै। बड कठिन करऽ
पड़ै छै। नील-हिमालय रङ धोती पहीरि कऽ मंचपर बैसि कऽ
हम "निष्पक्ष" बनि जाइत छी आ अपना आपकेँ भरमम राखि
लैत छी। उदाहरण दए हमरा अभीष्ट नै मुदा ई जग-जाहिर
अछि जे कोना महापुरुष वा क्रांतिकारी वा युग-प्रणेता अपना
आपकेँ निरपेक्ष नै कहला अछि। महात्मा गाँधी की सुभाष चंद्र
बोस की नेहरू की भगत सिंह। ओ लोकनि सभ दिन अपन पक्ष
प्रस्तुत कऽ उद्बोधन अपन रखला। यद्यपि बाहर नेल्सन मंडेलाक हो
की मार्टिन लूथर किंग कान ईहो सभ कहिया अपनाकेँ निरपेक्ष नै
कहला। ओँ मध्ययुगम चली तँ न भगवान महावीर आ न भगवान
बुद्ध अपनाकेँ निरपेक्ष कहला आ न हुनक शिष्यो। एतेसँ पाछू
चली तँ भगवान कृष्ण तँ साफ-साफ अपनाकेँ "निरपेक्ष" मानवासँ
मना कऽ देने छथि। ओँ गीता कान शिवाउ देखी तँ ई साफ बुझाएत
जे " निरपेक्ष" आ "नपुंसक" एकेँ थिक। राम की परशुराम की
आन सभ अपन-अपन पक्ष संसारक सामने रखला। एहऽ बनि जे
रावण, कौरव, बुद्ध-महावीर युगीन कर्मकांडी आ अंग्रेजसँ लोकस
बनि सभहुँक अपन पक्ष छलै। मुदा ई सभ देखिता हम अपनाकेँ
"निरपेक्ष" कहि रहल छी एकर कारण छै आ ओकरा ओतँ देव
जनुनी नै।
ओना हम ई कहि दी जे हम अपना मान ई निसाँ नै चुनलहुँ।
हमरा संसारक बड अनुभव अछि आ हम देखलहुँ जे शिक्षित
करबो तँ किछु नै होएत आ बकबक करबो एखन सभ दुखा तँ
बहुत मंथन कान बाद हम निरपेक्षताक चद्दरि ओढ़ि ललहुँ। मन बुझ्नु

हाथमे लेलौं। विरोधो ने करबै आ ने समर्थन करबै से मानल अछि। एहन हमर नाम महापुरुष वा क्रांतिकारी वा युग-प्रवर्तक पुरुष ने आबए वाला कालमे हम राजा-महराजा सन छी हमरा लेल सबहक बहुत अछि। हम आशीष अनचिन्हार, पिता श्री कृष्ण चंद्र मिश्र, गाम रटना-घाट, थाना विस्फी, जिला मधुबनी, प्रांत-बिहार, गोत्र-शांडिल्य,मूल सोदरपुरिये-सरिसब,एखन धरि अविवाहित पूरा हारलो-हरासल घोषणा करै छी जे हम "निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष" छी। हमरा काका बम्बईसँ आबि कऽ ने देखल जाए। आब हम विआह किए ने कऽ रहल छी से ने पूछू। हमरा डर अछि जे लोक कहीं हमरो ने पूछए जे सरकार बाल बच्चाक समयमे "निरपेक्ष" रहलौं की नै? ओना एहेन उत्तराक कोनो प्रश्न ने छै। जमीन पलटि जाइ छै. आकास पलटि जाइ छै बसात पुरवा-पछवाक बदला उतरा-दछिना भऽ जाइ छै तखन बाल-बच्चाक समय जँ निरपेक्षता छोड़ि हम "पक्षी" बनब तँ कोन अपराध। लोक कतबो प्रगतिशील बनि अपन बेटीक प्रेम-विआहक विरोध करैए। पुनस्थान प्रतिनिधिक विचारक विरोध कऽ हुन उपर हाथसँ पुनस्थान लैए आ जखन हमरो सभ अपराध ने छै तखन हमहीं जँ पलटि जाएब तँ कोन अपराध। ओना पलटि गेलाह अपराध तँ ने छै मुदा हम हमरो बूझै छी जे एहन मिनट-दु मिनट लेल हम कुदि-फानि ली मुदा हमरो निसाँ पूरा जीवन ने चलत। नंगल सियानक नंग सदा एक दिन उतरल रहै आ हमहूँ तँ नंगल मनुख छी ने? मुदा जा धरि चलै छै चलऽ दियौ। जहिया निसाँ उतरतै देखल जेतै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.४.प्रेमशंकर सिंह 'यतन'- मैथिली रचना (लोकोक्ति) संकलन



प्रेम शंकर झा 'पवन'

मैथिली रचना (लोकोक्ति) संकलन

१. चलय न आवय त अंगना टेढ़

२. राज नै राग रुन-रुन गीत

३. चानक मूँह चान सन

४. खीरा खाकँ पनी पीत

५. अनन धूनन कँ नाम नखनाऊलिया

६. पीन पिनहुलिया पनह पाक

७. धोबीकँ कुत्ता नै घरकँ नै घाटकँ

८. वहिना नाच अपन गाल

९. दखय म लिख सन वाजय म वीख सन

१०. वरुय वनद रुकमय कूकुर

११. अन्हरा गाम म कन्हा राजा

१२.ऊसा लंख गाम वाारु गामक लंखे ऊसा

१३. नाजा दुखी प्रजा दुखी यागीकं दुख दुना

१४. यहिनन उाढन कनिया नन, नियन यागन अंगना घन

१७. सस्फा (गहुम घन घन युजा

१६. वाय जनमल अन्ननिया म वटाक नाम यानन हाउस

१७. दिदगनी कनियाकं रैसून लाकनिया

१८. घनक रदिया लंका जाहय

१९. ङाट खिखिनकं मांट नांगनि

२०.चलनी दूसलनि सूयकं जिनका वहफन टा ङद

२१. यंट विगाउ मूनही घन विगाउ वूनही

२२. घन आंगन रोजीकं ङल ङल कनथि नद्या

23. हनवनी नियाह कनयङी सनून

२४. वतियाक मानि लागय कूOाम

२७. ज हन वहव स खन खाय वकनी खाय आचान

अयन मंगव editorial.staff.videha@gmail.com **यन पOाउ।**

२.७.कुमार मनोज कश्यप- बलिक छागर



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

बलिक छागर

रजवाड़ परिवार छै धर्मशबाबू क........एखनो धन-संपत्ति अथाह छै। पढ़ाई-लिखाई, पद-प्रतिष्ठा मे सब समाँग एक-स-एक! आ यैह कारण छै जे सामंतवादी सोचक बाबा ई परिवार परायछ

म ओखना नामी-गामी बनल छी। स जखन ओहि धनिकान क बालक ज स्विट्जनलेंत म सी० ओ० छी, क मादँ नियार क प्रस्ताव प्रणायबाबू क रखलनि त' लगलनि जना संसारक अलभ्य वस्तु अनचोक म रख गेल..... ओहुना धनाढ्य, प्रतिष्ठित धनिकान आ ग' धन लड़का विदेश म सी० ओ० आ एकरा नियारक प्रस्ताव अनायास रख जायव! प्रणायबाबू क रगनान धन आँखि विश्वास आन बसी गहींन र' गेलनि। बटी सुन्दर छनि, सुशील छनि ताहि म त' काना दु नाय नहिं; मुदा सुंदरता मात्र नियारक कसौटी रहो स कहिया सयना म नहिं साबन छलाह। उ त' निन चिंता म नहोत छलाह ज काना बटी क जातिक काना लड़का क अंक लगा दथि। उत' आँखि लड़क दिस स' आ उाहू म ओहुना यैघ घन स' कथा जेब ...... काना दैवीय चमत्कार स' ओका मिसिया कम नहिं बूझा नहल छलनि! उ धखाँलीत घटक क कहुन नहथिन- 'कथा त' हमरा सालहो आना मंजूर अछि; मुदा हमरा रगनान सामर्थ कहाँ दन छथि ज ओहुना यैघ घनक वन-वनियारी क सत्कार क' सकी।' 'आहाँ चिंता जुनि करू। खाली आहाँ 'हँ' कहि दियौ एकरा बाद कान म तून-तल द' निश्चिन्त नहू। बाकी सख्टा रान लड़का बला क छैना।' प्रणायबाबू क लगलनि जना उ स्वप्न-लोक म विचरैत क' नहल छथि।

शुरु-शुरु क' नियार-दुनागमन सुरु र' गेलै। मुदा लड़का ज स्विट्जनलेंत गेले स आँखि दु बनख बीतलाक बादो गाम घूमि नहिं ओलै........ रहाना बंद ! कनटूसकी क वजान गर्म ..... जत लोक

गप गप्पक बात ! ओहन प्रगतिवादी कोना अनिष्टक आशंका सँ दिनानुदिन व्यग्र ओहन धर्मभीरुबाबूक परिवार पूर्ववत हँसी-खुशी मे!

-**कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति**: राज्य सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाईप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.आचार्य रामानंद मंडल- मैथिली साहित्य मे घोटाला



आचार्य रामानंद मंडल

मैथिली साहित्य मे घोटाला

मिथिला -मैथिली मे दूटा विद्यापति भेलन। ज्योतिरीश्वर ठाकुर (१२९०-१३७०) स पूर्व सालकन राउत जाति मे विद्यापति भेलन। वो अपना साहित्य मे बिदापत नाच शुरू कैलन। वो नाच संपूर्ण मिथिला मे लोक प्रिय कयने रहे। जकर चर्चा ज्योतिरीश्वर कैल छथिन। दोसर विद्यापति (१३७२-१४४८) ज्योतिरीश्वर के बाद मे भेलन। ऊ जाति के ब्राह्मण रहलन। वो संस्कृत आ अवहट्ठ मे साहित्य रचना कैलन।

परंतु मैथिली साहित्य मे राउत विद्यापति के कृति के ब्राह्मण विद्यापति के कैल जा रहल छय।

आगा दैनिक अखबार मे लेखक प्रवीण नारायण चौधरी लिखैत छथि- विरोध, निंदा आ आलोचनाक बावजूद विद्यापति कवि कोकिल, महाकवि, जनकवि बनि गेलाह। लोक हुनकर संदेश के हाथोंहाथ स्वीकार कयलक। अपन सहज -सुंदर मैथिली रचना सब ठीक जनसुलभ छल जे लोक ओकरा हृदयंगम कय लेलक। जन-जन के कंठ मे अपन देसिल बयना (मातृभाषा) रचनाक कारण पहुँचि

गेलाह विद्यापति। हुनकर नचारी,महेसवानी,नाथ -विनय ,गांक गांक आदि अनेकां महत्वपूर्ण रचना सं समाज मे साहित्यिक धारा बहुत बदल जे विद्यापतिक पदावलि पर नाच परम्परा -विदापत नाच केर प्रचलन मे आबि गेल।

विदित हो कि जनवर्गीय समाज मे एहि विद्यापति नाच क सहारे शिक्षाक सम्चित प्रसार होबय लागल मिथिलाक लोक समाज मे।

उल्लेखनीय हय कि ज्योतिरीश्वर पूर्व स विदापति नाच मे विद्यापति पदावली क नृत्य अभिनय होइत रहे। अइ विद्यापति क बाद मे कश्मीर अभिनव गुप्त (दशम शताब्दी क अंत आ एगारहम शताब्दी क प्रारंभ) -ईश्वर प्रत्यभिज्ञा -विमर्शिनी ग्रंथ मे लिखल हय।

श्रीधर दास क सदुक्तिकर्णामृत (रचना ११हनवी १२०६ मध्यकालीन मिथिला लेखक विजय कुमार ठाकुर)

श्रीधर दास विद्यापति क पांचटा पद उद्धृत कैलै हगन जे विद्यापति क पदावली क रासा हय।

जाव न मालती कर परगास पाव न पाहि मधुकर विलासा। आ मूंदला मुकुल मकरंद,ज्योतिरीश्वर (१२१७-१३७०)षष्ठ कल्लोल। अथ विद्यावर्ण वर्णना।।

अष्टम कल्लोलक।।अथ नायक वर्णना।।मे विदापतक उल्लेख कैल हगन। से विद्यापति पाक प्रसिद्ध ए गेल रहे जे ज्योतिरीश्वर एकर उल्लेख नायक रूप मे कैलै रहलन। (स्रोत -विदेह)

उपर्युक्त कथन स स्पष्ट होय की विद्यापति नाव नाह्ह विद्यापति क होय। परंतु आबि साहित्यिक घाटाला क क चारुन विद्यापति क कृति बनायल आ बताउल जा रहल होय।

हालांकि कुछ लोग एक विद्यापति क नाह्ह त कुछ लोग चारुन बताबैत होय। परंतु उपर्युक्त तथ्य क आधार पर दुटा विद्यापति रहलन। एगो नाह्ह आ एगो चारुन। परंतु मैथिली साहित्य म विद्यापति क लक घाटाला कैल गेल होय।

वर्तमान भौगोलिक स्थिति म जैह्ह बिसौरी तीर क चारुन विद्यापति क जन्म स्थान बतायल जाह्ह होय ताकर पांच वर्ग किलोमीटर क्षेत्र म चारुन बस्ती न होय। परंतु नाह्ह बहुल होय। चारुन विद्यापति क जन्म अन्य क्षेत्र म रहल रहा। बिस्फी तीर म चारुन महाकवि विद्यापति समारोह न मनायल जाह्हत होय। अह्ह प्रकार मैथिली साहित्य म घाटाला होय।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजवंश मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रासा क न बांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, पत्र -वाहन आ अपूर्वा (भोसाम)। अखबार -दैनिक*

मैथिल पुनर्जागनध प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिऊक संघ, रुमना, सीतामढी। स्थायी यता- ग्राम-यियना विशनयून थाना-यनिहान जिला-सीतामढी। वर्तमान यता- यियना सदन,मूनलियाचक वार्ड-04 सीतामढी यास्ट-चकमहिला जिला-सीतामढी नाग्र-विहान यिन-843302

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१.आचार्य नामानंद मंडल- २ टा कथा



आचार्य रामानंद मंडल

२ टा कथा

१

जैविक पिता

सारा गांव-जवार जनै कि छौड़ाका मालिक खवास क जनमल छैय। लेकिन छौड़ाका मालिक अपन बाप स अंजान नइ। आखिर अंजान करा न रहयत। ककरा मं उ हिम्मत रहयत,उ बाप छौड़ाका मालिक क बाब का। लेकिन एगो अप्रत्याशित घटना स पता चल गेल कि हम खवास स जनमल छी। हमर जैविक बाप खवास छैय।

घटना ॐ एल कि खवास छाटका मालिक क चाय यीय लल लवोग नरु कि टवूल यन धन क वन हाथ स कय छूट गेल आ चाय गिन क छाटका मालिक क नयका सूट यन गिन गेल। छाटका मालिक आग ववूला हा क विगड लन। खवासी कनग कनग वूढा गेल, लकिन अव गक अकिल न एल हैया। मान ला हाथ उठैलन। खवास वाल लागल, मालिक मालिक...! ॐ शान क छाटका मालिक क माय सूनग, दौडल आयल आ हाथ यकड क जान स वाललैन- ॐ कि कैला वौआ। ॐ गारुन वाय छथुन। ॐ गारुन जैनिक यिगा छथुन। ॐनकान गु जनमल छा। ॐ माय,गु कि वाल छी। हां वौआ रुम सही कही छिउ। हां वौआ,ॐ वाग गारुन वावू जी रौ जनैग नरुलथुन रु। गाना जनम हाय स गीन महीना यहिल रुमना सव क छाड क दुनिया स चल गेलथुन। गारुन वावू जी क खवास जनुन नरुथुन, लकिन गारुन जन्मदागा वाय छथुन। चल जा ॐनका स गान ध क माही मांगा। छाटका मालिक आंख मं आसू ल क ,गान ध क वाललन, रुमना मारु क द वावू जी। छाटका मालिक,हुनकान माय आ खवास वावू, गीनां आदमी आयस मं खुशी स लियट गेलन।

कुछ दन वाद छाटका मालिक क माय अहिल्या दवी अयना कमना मं जाक यलंग यन यड नरुलन। आंखि मुंद ल अगीग क याद म खा गेलन। रगनी यून क यूर्व जमींदान क एकलौगा यूत्र नवीन्द्र प्रगाय स विआरु एल। नवीन्द्र प्रगाय यच्चीस वनख क वांका जवान नरुगन। गान गुनाक। वडका वडका आंख। कानी माछ। चौडा सीना। दखग मन मारु ललन।

अहिल्या नामपुर क पूर्व जमींदार क बेटी छल। गोरस बदन क अहिल्या गौर वर्ण क युवती छल। अंतःकरण सुन्दर। कुसुम आँखि। कमल सन लटकैत कारी केश। उन्नत ललाट क स्वामिनी अहिल्या क देखए नवीन्द्र प्रताप दिवाना भ' गेलन।

कुछ दिन बाद व्याह भेल। व्याह क दिन नवीन्द्र प्रताप चुपके चुपके पीछु स आबि अहिल्या क माँग में सेन ल लेल आ चेहरा में ललका रंग लगा देलन। आ हुन अबीर लगा देलन।

ओ अहिल्या चेहरा में हरियरका रंग लगाब क लेल नवींद्र प्रताप क लेल बढ़ल। नवीन्द्रनाथ प्रताप हरियरका रंग स बच लेल पीछु क ओर अपन डेग कैलन। कि एकाएक द रंग आ पानी स भीजल पक्का फर्श पर पीछुन गेलन। हुनका माथ क हड्डी में जबरदस्त चोट लगलैन। आ ओ धरती स अचेत भ गेलन।

अहिल्या आ नवीन्द्र प्रताप क खुशहाली दुःख दर्द में बदल गेल। एहन ओहि दुःख दर्द में सहारा भेल नवींद्र प्रताप क साथी आ खवास रामचरन महतो। रामचरन हट्ठा कट्ठा जवान छल। गेहुँआ रंग। ऊँचाई कद,कारी मोंछ। चौड़ा छाती। देख में आकर्षक पुरुष।

रामचरन महतोआ नवीन्द्र प्रताप क उमर एक छल। गाँव क स्कूल में पाँचमा तक साथे साथे पढ़ल साथे खेलल। गरीबी क कारण रामचरन आगा न पढ़ पायल। रामचरन अपन साथी आ पूर्व जमींदार नवींद्र प्रताप क हुनकर खवासी करए लागल। एहन नवीन्द्र प्रताप रामचरन क अपन साथी क तरह मानए। अहिल्या सेहो रामचरन क देवर जैसन

मान छा। परंच रामनन्दन रवीन्द्र प्रताप क मालिक आ अहिल्या क मालकिन मान।

रवीन्द्र प्रताप अहिल्या क दुख देख क बड दुखी होय। रवीन्द्र प्रताप अहिल्या क शारीरिक सुख देब मे अक्षम भ गेल रहे। परंच अहिल्या त जवान रहे।

एकटा दिन अहिल्या क सामने रवीन्द्र प्रताप रामनन्दन क कहलक- देखा रामनन्दन तू हमर खवास न हमर साथी छा। अहिल्या तोरा देवर लेखा मानै छैय। हम आब शारीरिक रूप स असक्त छी। आब अहिल्या क खुश राख आ पुत्र सुख देब क राज हम तोहरा दै छिया। अहिल्या क डर देख क रवीन्द्र प्रताप कहलक- अहिल्या आबि तू रामनन्दन क स्वीकार करा। अपन वंश क चलाब क लेल एगो पुत्र त चाही। एहन घटना महाभारत काल मे भी होयल रहे। धृतराष्ट्र पांडु आ विदुर क जनम अपन पिता स अपन पिता स न भेल रहे वरना ऋषि वेदव्यास स भेल रहे। ऋषि वेदव्यास धृतराष्ट्र पाण्डु आ विदुर क जैविक पिता रहे। अपन पुत्र क जैविक पिता रामनन्दन होयत त कोनो हरज ना। दुनू गोटे क स्वीकार त करे क पड़तैय। अधिक संकोच न करा। अहिल्या सिर झुका क मौन सहमति दे देलक। रामनन्दन सिर झुका क मौन स्वीकृति दे देलक।

आब अहिल्या आ रामनन्दन मे प्रेम अंकुरित भ गेल। अहिल्या आ रामनन्दन रवीन्द्र प्रताप क खूब सेवा करा। एहि बीच अहिल्या गर्भवती भ गेल। रवीन्द्र प्रताप अचानक एहि दुनिया स विदा भ

गेलन। तीन महिना क बाद छौड़का मालिक पैदा भेल। खबास नामबला छौड़का मालिक क जैविक बाप बन गेल।

ई सब घटना चल चित्र जेका अखिया देखा रहल कि छौड़का मालिक क आवाज-भाव भाव स सम्मान निर्धारित भ गेल।

२

मित्राई

सियाराम आइ ई दुनिया में न छैथ। एखन ओ अकेला में रहि छी। त बड़ याद आबैया। हम दुनू गोटे संगी रही। स्कूल में साथे पढ़ी। मिडिल स्कूल में त एक साइकिल सं स्कूल जाइ। ओ बैक सीट क ल जाय। ओ हमरा कस आ हम सकैत करी।

हं। सियाराम क सब दर्द क बीमारी रहय। कहियो कहियो देखिए कि ओ गमछा स माथा क खुब कस क बांध लेथ। खुब माथा में दिक्कत लगैत। आ खुब पढ़ै। बूझाय कि जेना सियाराम क पढ़ै क ही बीमारी छैथ। बीमारी रहला पर पढ़ाई न छोड़।

हाई स्कूल में हास्टल में एक रूम में रही। पढ़ै में दुनू गोटे क प्रतिस्पर्धा रहय। अयन लालटेन साझ रख म ही प्रतिस्पर्धा रहय। लालटेन क शीशा एकदम साफ रहय। खुब इंजोर दय छल। पढ़ाई क प्रतिस्पर्धा में दुइ बड़ नाम सं पढ़ाई शुरू क दय। जब जानय कि हम पढ़ब त ओ अयन लालटेन क लौ कम क सुत क ढंग ब लय। कि हम सुत रही। त हम देख क सुत रही। जब हम पढ़

ला उ0ी ग दखे छी ग सियानाम यढैग नहि। करी हम सकंत कनी ग उ थउे आ उ सकंत कनी ग हम थउे। गसन लेयका ननूध हमशा हस्र कत।

थानहवीं यानी मेंट्रिक क सहय यनीउा मं ७ग। चौथा लेयका किशोान सकंत कैलका। हम थउे आ सियानाम चौथा स्थान यन चल गेल। ननूध हस्र नहि। मेंट्रिक वाउे मं हम सकंत कैली आ सियानाम थउे। ननूध आ किशोान हस्र। ॐथुन मं हम सकंत आ सियानाम थउे।

अव सियानाम यढाॐी छाउ दलक आ नयाल क यहाउी उत्र क ७ग। स्कूल मं यढाव लागल। असल मं सियानाम क घन नयाल क गुलसीगामा मं नहि। ना हमना गांव मं अयना संवंधी क ॐहा नह क यहं। सियानाम क शादी हला। धिया यूगा हला। ७ग। वटा ॐजिनियन हैया। ना कवहू हमना गांव अयना कूटूंव ॐहा आव गा हमना स अनथ मिला। हम हूं वनाजगानी स हाणेग नहीं। हमना कहु दयानंद ,वला नयाल। नयाल मं साॐस टीचन क वउ कमी हैया। दुर्गम उत्र मं दुगुना दनमाहा मिलै हैया। हाना क वहूग लाग साॐस टीचन हैया। यनंच हम नयाल न गेली। हम यही ७ग। निफ नहिग ॐथुन महानिद्यालय मं यढाव लगली। कि आॐ न काल्हि सनकानी कालज हा जग। गनहु वनख वीग गेल कालज सनकानी न हला। यनंच हम प्राथमिक शिउक क लल हार्म हन ल नहीं। यीटी मं यास कैली। वाद मं मुख्य यनीउा हला। उाहू मं सहल ह क मध्य निद्यालय मं यागदान कैली। वीच-वीच मं सियानाम स हंट

होइत नहि। कुछ दिन स सियाराम स भेंट न होय। त हम हुनका कुटुंब स पुछली त कुटुंब बतौलक कि सियाराम बीमार छैथ। नेपाल क बड़का बड़का अस्पताल में चिकित्सा भेल परंच बीमारी क पता न चल सकल छैथ। आबि हुनकर चिकित्सा दिल्ली में मेदांता अस्पताल में चल रहल छैथ। मेदांता में सियाराम क भेटलौं। बड़का बिमारी ब्रेन ट्यूमर क पता चलल। कुछ दिन दवाइ स चिकित्सा भेल। अंत में ब्रेन क सर्जरी भेल। चिकित्सा सफल न भेल। सियाराम अइ दुनिया क छोड़ क सदा क लेल चल गेल। बुझाइ सियाराम क सिर दर्द ब्रेन ट्यूमर क कारण होय। परंच ई बात पहिले न जानी। लगभग दस बरख स गेल। हमहू अब सरकारी सेवा सं रिटायर्ड छी। परंच जब ई अकेला में होय छी सियाराम क मित्रता याद आबैय जे हमरा पढ़ाइ में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कैलक।

-आचार्य रामानंद मंडल, सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-बच्ची देवी, पिता-स्व0राजवंशी मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी 1960 योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रामा के न बांटिया। 2022 प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। 2022 पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैगजीन)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता-*

पियना सदन,मूनलियाचक नार्ड-04 सीतामढी पास्ट-चकमहिला जिला-सीतामढी नाथा-विहार पिन-843302

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.योगेन्द्र पाठक 'नियोगी'- ॐ तत् सत् एकम् एव अद्वितीयम्



योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

ॐ तत् सत् एकम् एव अद्वितीयम्

हम सब हिन्दू धर्म मे कतेक देवी-देवताक पूजा करैत छी ? प्रश्न कें दोसर तरहें पूछल जा सकैत छैक- कतेक देवी-देवता छथि? एकर विभिन्न उत्तर भेटत। पुराणक अनुसार तैंतीस कोटि देवी-देवता छथि। विद्वान लोकनि कोटिक दू अर्थ करैत छथि। एकटा भेल करोड़, माने तैंतीस करोड़ देवी-देवता छथि। आइ जतेक पृथ्वी पर मनुष्यक जनसंख्या अछि, हुनकर करीब छनि जे देवयोनि सेहो मनुष्ययोनि जकाँ दोसर योनि छियैक आ मनुष्यलोक जकाँ देवलोक छैक। किछु अन्य विद्वान मानैत छथि जे कोटि माने भेल प्रकार, अर्थात तैंतीस प्रकारक देवी-देवता छथि। वृहदारण्यक उपनिषद मे

याज्ञवल्क्यक उक्तिक अनुसार एहि मे आठ वसु, एगारह रुद्र, बारह आदित्य, इन्द्र आ प्रजापति (ब्रह्मा) केँ राखल गेल अछि। आन ग्रन्थ सभ मे छोट-मोट भिन्नता रहि सकैत अछि।

एहि सभ बहुत केँ छोड़ि व्यवहारक धरातल पर आउ आ देखू जे मिथिला मे हम सभ एकटा छोट-छीन सत्यनारायण पूजा करैत छी तखन ककर देवी-देवता केँ पूजैत छी ? गणेशजी तँ शुरू मे रहबे करताह, तखन ब्रह्मा, विष्णु, महेश छथिए (आगू पाछू जे होइनि), लक्ष्मी आ सरस्वती केँ निश्चित पूजा करबनि, सीता-राम-लक्ष्मण किएक छुटताह ? एतबे नहि, नवग्रह, इन्द्र, दशदिक्पाल रहबे करैत छथि, आदिपुरुष, अनादिपुरुष संगहि छथि, आ वीर हनुमान केँ कोना बिसरबनि यौ ? एतबे नहि, भगवान सत्यनारायण सेहो एकसर नहि, सआयुध, सवाहन, सपरिवार अपन पूजा करबैत छथि, एहि मे कोन कोन वाहन आ परिवारक ककर सदस्य छनि से नहि बूझल।

घरक कुलदेवी काली अपन विशिष्ट रूप मे अलग सँ छथि। समय भेला पर दुर्गाक पूजा, कार्तिक क पूजा सेहो धूमधाम सँ करैत छी। छठिक सूर्यदेव, चौठचन्द्रक चन्द्रमा तँ रहिते छथि, महिला लोकनिक लेल गौरी पूजा विशेष महत्व रखैत छनि। आ गिरिधर सँ मुरलीधर तक बहुरूपिया बनल ओहि रासरचैया आदियोगेश्वर श्रीकृष्ण केँ कोना छोड़ल जाए ? हुनक वैदिक युगक अग्निदेव, वायुदेव एखनहु देवरूप मे छथिए। ताहु सँ आन नहि भेल तँ आधुनिक युगक भगवान सभ, जेना संतोषी माता, साईं बाबा आ अन्य कतेको छथि जिनका भक्त लोकनि पूजैत छनि।

ओहि सभ केँ मिला कए देखला पर एहन हिन्दू धर्म बहु-ईश्वरवादी बनि जाइत अछि। विश्व मे आन धर्मावलम्बी मे मुख्यतः एकेश्वरवादक प्रचलन अछि- ईसाइ, आ मुसलमान, जिनक जनसंख्या मिला कए विश्व मे करीब साठि प्रतिशत भऽ जाइछ, एक ईश्वर (ईशा मसीह आकि अल्लाह) केँ मानैत छथि। बौद्ध धर्म मे बुद्ध केँ ईश्वर मानि लेल गेलनि, ओना गौतम बुद्ध स्वयं अपना केँ ईश्वरक अवतार नहि मानलनि, यद्यपि एक लोकनि हुनका पद-प्रतिष्ठा दऽ देलखिन। एतहु एकेश्वरवाद भेल।

यदि किओ आन धर्मावलम्बी पूछि दिअए "एतेक किएक ?" तखन की कहबैक ? आ यदि ओ कहए, "अच्छा, यदि कोनो एकटा चुनबाक होअए तऽ किनका राखब से कहू।" तखन अपना पूजाक मन्दिर मे जे अनेको देवता सभ अछि ताहि मे सँ कोन राखब आ कोन हटाएब से निर्णय करब सम्भव छैक की ? किछु सम्प्रदाय विशेष, जेना शैव, वैष्णव आदि मे कोनो एक देवता केँ विशेषाधिकार भेटैत छनि मुदा ओतहु पूर्ण रूपें एकेश्वरवादक स्थिति नहिए अबैत छैक। यदि एहन अवसर उपस्थित भऽ जाए जे एकटा केँ नहि चुनि सकलाक स्थिति मे सरकार कहए जे अहाँक नागरिक अधिकार स्थगित भऽ जाएत अथवा राशन कार्ड आओर आधार कार्ड नहि भेटत, तखन ?

एहन प्रश्न काल्पनिक नहि अछि। जेना छिऐक एकटा एहन देश छैक जतए हिन्दू धर्मावलम्बीक जनसंख्या अपन आर्यावर्त क तीन देश (वर्तमान भारत, नेपाल आ बांग्लादेश) क बाद सबसँ बेसी छैक

आ सेहो कोना सौ-पचास साल पुरान नहि, जेना कि इंगलैंड-अमेरिका मे बसल हिन्दू छथि। हम जाहि देशक खिस्सा कहि रहल छी ओतय हिन्दू धर्म प्राय: दू हजार साल पुरान छैक। अनुमान लागल ओहि देशक नाम ?

एशियाक सुदूर पूर्व भाग मे स्थित ई देश थिक इन्डोनेसिया। जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, बाली आदि अनेको छोट-पैघ द्वीपक समूह ई वर्तमान मे जनसंख्याक हिसाबें विश्वक सबसँ पैघ मुस्लिम देश अछि। प्राय: १५ हजार साल तक, बुझियौ ई पहिल शताब्दी सँ पन्द्रहम शताब्दी तक हिसाबें हिन्दू-बहुल देश छल। हिन्दू आ बौद्ध धर्मक अनुयायी बहुमत मे छलाह आ अपना मे सामञ्जस्यक संग रहैत छलाह। एहि समय मे ओतय भारतक पल्लव, गुप्त, पाल एवम् चोल वंशीय राजा लोकनिक आधिपत्य रहल। कतेको स्थानीय हिन्दू आ बौद्ध राजवंश ओतय अपन प्रताप सँ शासन कयलनि जाहि मे मातारम आ माजापहित बड़ी प्रसिद्ध भेल। बहुतो रास हिन्दू आ बौद्ध मन्दिर आदि बनाओल गेल।

पन्द्रहम शताब्दी बितैत बितैत ओतय मुस्लिम प्रभाव बढ़ए लगलैक आ यूरोपीय उपनिवेशवादक आगमन भेलैक। विभिन्न यूरोपीय देश मे अपना मे किछु उठापटक क बाद ई देश चल गेल डच शासन क अधीन। यद्यपि वर्तमान इन्डोनेसियाक आन द्वीपवासी अधिसंख्य मुस्लिम धर्म अथवा ईसाई धर्म स्वीकार कऽ लेलनि, बाली द्वीप मे हिन्दू लोकनि अपन धर्म कें बचौने रखलनि।

जखन 1945 म डच लोकनि सँ इन्डोनेसिया कें स्वतंत्रता भेटलैक तखन मुस्लिम बहुल समाजक दबाब म सरकार धर्मक रूप म मात्र एकेश्वरवाद कें मान्यता देलकैक आ पूर्ण नागरिकताक अधिकार लेल कोनो धर्म सँ सम्बद्ध होएब सेहो आवश्यक बना देलकै। फल भेलैक जे हिन्दू लोकनि पूर्ण नागरिकता सँ वंचित भऽ गेलाह। बाली द्वीप म एकर पुरजोर विरोध भेलैक, ओ सब अपना कें स्वतंत्र घोषित कऽ लेलनि। बालीक विद्वान सरकार हॉलैंड आ भारत सँ राजनयिक सहायताक अनुरोध कलनि। ओहि समय भारत आ बालीक बीच छात्र लोकनिक आओन बहुत किछु सांस्कृतिक आदान-प्रदान भेलैक। एहि सँ हुनका लोकनि कें हिन्दू धर्मक नव व्याख्या सिखबाक अवसर भेटलनि।

आब घुरि आउ मूल प्रश्न पर। सामाजिक स्तर पर बहु-ईश्वरवादक पूजक होइतहुँ की हमसब दार्शनिक स्तर पर एहिना छी ? एहि गूढ़ प्रश्नक उत्तर भेटैत अछि वेद म, उपनिषद म आ सबसँ बेसी गीता म। अथर्ववेदक काण्ड 13, सूक्त 4, श्लोक 16-18 म कहल छैक, "न द्वितीयो, न तृतीयश्चतुर्थो।।" अर्थात् परमेश्वर एक छथि, हुनका सँ इतर दोसर, तेसर, चारिम आदि कतहु किया नहि। एहि लेख क शीर्षक "ॐ तत् सत् एकम् एव अद्वितीयम्" छान्दोग्य उपनिषद क अध्याय छओ, खण्ड दू क प्रथम सूत्रक अंश अछि। स्थूल रूप सँ एकर व्याख्या भेल जे ब्रह्म एक छथि, दोसर नहि। ओएह एक ब्रह्म सँ सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक उत्पत्ति भेल अछि। ब्रह्म अनादि आ अनन्त छथि। एही बात कें गीता म भगवान कृष्ण अर्जुन कें बेर बेर बुझबैत छथिन। ललित छन्दक प्रयोग करैत

राष्ट्रकवि दिनकरक पाँती सभ - "।।। मुझमे सारा ब्रह्माण्ड देख, ।।।। शत कोटि सूर्य, शत कोटि चन्द्र, शत कोटि सरित, सर, सिन्धु मन्द्र; शत कोटि विष्णु, ब्रह्मा, महेश; शत कोटि जिष्णु, जलपति, धनेश; शत कोटि रुद्र, शत कोटि काल; शत कोटि दण्डधर लोकपाल।।।" स्मरण होएब करत।

बालीक हिन्दू लोकनि एही मूल मंत्रकेँ अपन धर्मक मुख्य तत्त्व बना लेलनि, स्थानीय भाषा मे "साङ्ग ह्याङ्ग विधि वासा" केँ मानैत परमात्माक नव कल्पना सँ एकटा मूर्ति बनाओल गेल। अपना केँ संगठित करबाक लेल बनौलनि संस्था "Parishad Hindu Dharma Bali" आ हुनि एहि नव व्याख्याक पक्ष मे अनेको प्राचीन ग्रन्थक उद्धरण दैत मूलमंत्रक अंग्रेजी अनुवाद "Om, thus is the essence of the all pervading, infinite, undivided one" क संग इन्डोनेसिया सरकार सँ मुख्य धारा मे सम्मिलित हेबाक अपन माँग रखलनि। तखन 1959 मे राष्ट्रपति सुकर्णो मानि गेलखिन। मुदा किछु राजनीतिक अस्थिरताक कारण ई मान्यता अन्ततः 1962 सँ प्रभावी भेलैक। जखन एहि प्रकारेँ हिन्दू धर्म केँ एकेश्वरवादक मान्यता भेटि गेलैक तखन ओहि देशक कतेको टापू सभहक जनजातीय निवासी सभ, जे मूलतः प्रकृति आ पूर्वजक आत्माक उपासक छल आ पूर्ण नागरिकता सँ वंचित छल, अपना केँ हिन्दू धर्म मे घोसिया लेलक। एहि धर्मक विस्तृत आयामक कारणेँ ओकरा लोकनि केँ अपन पारम्परिक पूजा अर्चना करैत रहबा मे कोनो बाधा नहि छलैक। हिन्दूक जनसंख्या बढ़ए लगलैक। अन्य द्वीपक हिन्दू सभ जखन मान्यताप्राप्त नागरिक बनि गेलाह तखन

परिषदक नाम बदलि कए "Parishad Hindu Dharma Indonesia" बना देल गेल। वर्तमान मे करीब पौने दु करोड़ हिन्दू इन्डोनेसियाक विभिन्न द्वीपमे छथि आ बालीक 85% जनसंख्या हिन्दू छैक।

मुस्लिम बहुल समाज किछु समयक लेल जरूर हिन्दू लोकनि कें कष्ट मे दऽ देलकनि मुदा सम्पूर्ण इन्डोनेसिया मे हिन्दू रीति-रिवाज एतेक गहींर रचल-बसल छैक जे एखनहु कतेको मुस्लिम आ ईसाई परिवार मे मुख्य पारिवारिक कार्यक समय हिन्दू रीतिएँ पूजा-पाठ आदि देल जाइत छैक। योग्यकार्ताक नवम सुल्तान क हवेली मे प्रतिदिन भोर मे सूर्योदय क समय एहि तरहक पठौआक व्यवस्था एखनहु छैक। रामायण आ महाभारतक खिस्सा सँ सम्बन्धित अभिनय आ नृत्य मे मुसलमान होइतो कलाकार लोकनि भाग लैत छथि। उतबे नहि, जावा द्वीप मे केजावेन (Kejawen) अर्थात अगम जावा नामक एकटा धार्मिक परम्परा चालु रहलैक जे हिन्दू, बौद्ध आ प्रकृति-पूजन क मिश्रित रूप छिऐक। यद्यपि एकरा कोनो धर्मक नाम नहि देल गेल छैक तथापि सामाजिक परम्पराक रूप मे सरकार सँ मान्यता भेटल छैक।

राजधानी जकार्ताक केन्द्रीय स्कूल मे मीलक कछेर मे कृष्ण आ अर्जुन कें रथ पर सवार देखबैत प्रसिद्ध अर्जुन विजय मूर्ति छैक। ठाट-माट बात तऽ जाए दियौक, सरकारो अपन रुपैयाक नोट पर गणेशजीकें छापि देलकनि। 1998 मे 20000 रुपिया क एहन नोट छपल छलैक जे आब भेटबो नहि करत (इन्डोनेसिया मे एहि

नाम छैक जकना अंग्रजी म संजय म I DR लिखल जाऽ्ऽ्ा छैक, ओखन हानाक ओक रूपैया, I NR, हल करीब 183 रुपिया, I DR)। ओहि माद जखन ओकटा विदेशी पत्रकार तत्कालीन राष्ट्रपति सँ प्रश्न कने छलखिन तs हुनकर गर्वोक्ति छलनि, "हम सब अपन धर्म जरूर वदलि ललहुँ मुदा संस्कृति नहि वदललहुँ"। ओकर उदार विचारक मुस्लिम समाज छैक डाटओ। स्वान्द्र ऽ्ऽ्न्डोनसियाक राष्ट्रचिह्न छिओक गरुड, हगवान विष्णुक वाहन। राष्ट्रीय हवाऽ्ऽ्जहाज कम्पनीक नाम छिओक गरुड ओयनलाऽ्ऽ्न्स। नव धर्म आ प्राचीन संस्कृतिक ओहन सम्मिलन विश्वक आन देश म कतहु नहि हेटत। डाना दुर्हाग्य ज शनै: शनै: किछु नवयुवक मुस्लिम सब अरव देश सँ प्रहावित हs कओ कट्टरपंथी ऽ्ऽ्स्लामक प्रहाव म आवि नहल छथि।

कष्ट सहिया कओ अपन धर्म कँ सुरक्षित राखब किया ऽ्ऽ्न्डोनसियाक हिन्दू लोकनि सँ सीखथि। ओही कारण हमरा ऽ्ऽ्न्डोनसिया ग्रमणक तीव्र ऽ्ऽ्च्छा छल।

तैयारी

पर्यटन लल हम अपन प्रिय ट्रेहल ओजन्ट वंगलानक वियान्डन सँ सम्पर्क कओल आ ओकटा छाटछीन प्रोग्राम वनवओ कहलिओनि। ऽ्ऽ्न्डोनसिया म पर्यटक लल कतेका आकर्षण छैक। वाली द्वीप युवा पर्यटक आ नव विवाहित दम्पतिक हनीमून लल प्रसिद्ध छैक, संगहि समुद्र म साहसिक खल जनाकि स्कूवा डाऽ्ऽ्हिंग, स्नार्कलिंग आदि लल सहो उत्तम स्थल सब छैक। वियान्डन म नवक वहाल हल

पर्यटन कर्मचारी, एकटा मैथिल ललना, हमरा डाल्हन प्रोग्राम पठा देलनि जेना कोनो नवयुवक लेल बनबैत छलखिन।

मुदा हमरा अपन लक्ष्य छल हिन्दू सभ्यता सम्बन्धी स्थान विशेष क भ्रमण आ वर्तमान मे हिन्दू समाजक रीति रेवाज, परम्परा आदिक प्रथमदृष्टया किछु जानकारी प्राप्त करब आ रामायणक ओ नृत्य नाटिका देखब जे ओतए प्रसिद्ध छैक। इन्डोनेसियाक आओर एकटा विशेषता छैक बहुत रास सक्रिय ज्वालामुखी पहाड़। माउन्ट समेरू (ऐतिहासिक सुमेरू पर्वत) एखनहु मुह खोलि गर्म छाउर (lava) उगलि रहलैक अछि।

करीब हफ्ता-हफ्ताक बाद हमर ई कार्यक्रम बनल जाहि मे हमरा दु दिन योग्यकर्ता शहर क आसपास आ अढ़ाइ दिन बाली द्वीप मे घुमबाक छल। ज्वालामुखी लेल सुमेरू कँ गऽ नहि, अन्य ज्वालामुखी, माउन्ट मरापी, जे योग्यकर्ता शहरक पड़ोस मे छैक, देखबाक प्रोग्राम अपना लिस्ट मे जोड़ल। प्रोग्राम लेल नियान्तन जे चार्ज कएलनि ताहि मे पाँच रातिक चारि-सितारा होटल, जाहि मे जलपान शामिल, एकटा गाइड, ड्राइवर, पीबाक जल, आ हुनक लिस्ट मे देल सबटा पर्यटन स्थल लेल प्रवेश टिकट जोड़ल छल।

पर्यटन पर काज करबा काल मौसमक खियाल राखहि पड़ैत छैक। सदा जखन दूर क अन्य देश मे जाएब। इन्डोनेसिया भ्रमणक लेल नीक समय अप्रिल सँ सितम्बर तक मानल जाइत छैक। अक्टूबर सँ मार्च तक ओतए मानसूनक बरखा होइत रहैत छैक। किछु अन्य व्यस्तताक कारण 2022 क दुर्गापूजाक अवधि मे हम ई यात्रा

कएल एहि आशाक संग जे सितम्बरक अन्त आ अक्टूबरक शुरू मे ओतक मुसलाधार वर्षा नहि होएत जे भ्रमण मे बाधा करत।

यात्राक तैयारी मे सबसँ मुख्य छल शाकाहारी भोजनक जानकारी। इंटरनेट सँ एहि सम्बन्ध मे किछु सूचना एकत्रित कएल, ओहि भोजन सबक स्थानीय भाषा मे नाम सेहो नोट कएल आ ओकरा कागत पर छापि लेल जे काज पड़ला पर देखा कए ओहि मे सँ कोनो व्यञ्जन चुनि कS सकब।

पहिल दिन, बृहस्पति, 29 सितम्बर 2022

बंगलोर सँ बैंकॉक आ इन्डोनेसियाक राजधानी जकार्ता होइत हमरा याग्यकार्ता जेबाक छल। अप्रैल सितम्बरक नाति मुदा गाडीखक हिसाबें 29 सितम्बर कँ हम बंगलोर मे थाइ एयरलाइन्सक विमान सँ विदा भेलहुँ। बैंकॉक मे जकार्ताक फ्लाइट लेल दुइ घंटाक प्रतीक्षा छल, जकर अधिकांश समय सिक्युरिटी आदिक बाद निर्धारित गेट तक पहुँचबा मे लागि गेल। तेँ प्रतीक्षा अखरल नहि। बैंकॉक सँ जकार्ता बला फ्लाइट मे जलपान देल गेल। हम पूरा यात्रा लेल एयरलाइन्सकेँ शाकाहारी भोजनक विकल्प देने छलियैक। फ्लाइट मे इडली-बड़ा-साम्भर क नीक जलपान भेटल, बूझना गेल जे ई जलपान हमरा संगहिं बंगलोर सँ आएल छल। जे नहोक, मोन प्रसन्न भेल।

करीब एगारह बजे जकार्ता उतरलहुँ। इन्डोनेसिया मे प्रवेश करबाक लेल लेल बीजा पहिने लेबाक कोनो सुविधा नहि, ओहि देश मे

यहुँचला यन हुनाऽ्‍ अउा यन वीजा स्टैग ठैक किन्तु गाहि लल किछु समय चाही। ऽ्‍ी सव साचि क‍ेँ हमन ड्रेस्ल ओजय जकार्ता म चानि घंटाक समय नाखि याथकर्ता लल अगिला ऋाऽ्‍टक वूकिंग कर्नैन छलाह। ऽ्‍मिग्रेशन ऽ्‍लाका म दखल 'Vi sa on arri val'क वार्त लागल। क‍ेकटा काउन्टन, गं लाऽ्‍न वसी येघ नहि। ओक OIम यहिन येँसि अमनिकन डॉलन रुीस जमा कनओ यउल, ओकटा नसीद स्टल, गखन दासन खिउकी यन लाऽ्‍न लगा किछु हार्म रुनि वीजा दल (गल। हमन अगिला ऋाऽ्‍ट दासन टर्मिनल सँ छल, डागओ जवाक लल स्वाऽ्‍ ड्रन लवाक छल। यूछैग यूछैग स्वाऽ्‍ ड्रनक स्रसन (गलहुँ। ड्रन म वैसि दासन टर्मिनल यहुँचि (गलहुँ। हमन सव ऋाऽ्‍टक अग्रिम वन-चक-ऽ्‍न कओल छल आ डाकन छयाडाल प्रगि सहा संग म छल। गथायि अयनिचिग जगह नहुला सँ चक-ऽ्‍न काउन्टन यन जा कओ यूछओ यउल ज हमना की कनवाक चाही। डा लाकनि सीधे सिक्यूनिटी क लाऽ्‍न म लागि जवाक लल कहलनि। वन वस। ऽ्‍ी कलाक वाद समय दु वाजि (गल छलैक। दुख सहा लागल छल। तियार्वन ऽ्‍लाका म ओकटा नस्नाँ म जा कओ शाकाहानी रोजनक वान म यूछलियैक आ अयन कागग सहा दखा दलियैक। ओकटा व्रअुन, ज असल म सलाद प्लट छलैक, स डाकना लग छलैक। डाओह □उेन कओल। डाकना संग ओक प्रकानक चटनी दल (गल। छलैक गs डा चिनियावदामक मूदा मिठ आ किछु विचित्र स्वाद क, स नहि अघनल। काना वाग नहि, नान ठीटि कओ छुछ्ठ सलाद खवा म हमना काना समस्या नहि रुल। यूनायक दीर्घ प्रवास म कगका वन ओना कओन छी।

जकार्ताक ओहि टर्मिनल क व्यवस्था अन्यत्र सब ठाम सँ भिन्न देखल। ओतऽ दिल्लीक टर्मिनल-3 क विपरीत प्रस्थान गेट सब हटि हटि कऽ हस्त कौशल सँ स्थानीय वास्तुकला सँ निर्मित भेटल।

योग्यकर्ता हवाइ अड्डा पर हमर टूर गाइड श्रीमान इन्नान संतोषाइन्नान प्रतीक्षा कऽ रहल छलाह। मुस्लिम धर्मावलम्बी इन्नान महोदय विदेश म अनका ठाम काज करैत पचासक वयस म घर आबि टूर गाइडक व्यवसाय म प्रविष्ट भेलाह। हुनका नाम म संतोष शब्द देखि अहाँ आश्चर्यचकित नहि होइ, इन्डोनेसिया म, कोनो धर्मावलम्बी होथु, लोकक नाम म संस्कृत शब्दक व्यवहार बहुत छैक। ईहो उनुका दीर्घ हिन्दू संस्कृतिक प्रभाव आ उनुका लोकक उदार स्वभावक द्योतक छिऐक। मुस्लिम बहुल स्वतंत्र इन्डोनेसियाक प्रथम राष्ट्रपतिक नाम सुकर्ण छलनि, तकर बाद सुहर्तो, मेगावती सुकर्णपुत्री, सुशील युधयोनो आदि नामधारी राष्ट्रपति भेल छथि।

योग्यकर्ता म हमरा हवाइ अड्डा शहर सँ बहुत दूर छैक आ होटल अबैत अबैत सूर्यास्त साँझ भऽ गेल। रस्ता भरि गाइड महोदय योग्यकर्ताक इतिहास बतबैत रहलाह। ओखनुक सुल्तान क महलक बगल सँ हम सब होटल गेलहुँ। यद्यपि वियान्तुन हमरा प्रोग्राम म आजुक लेल किछु स्थानीय हिन्दू मन्दिर, आवास, वारांग, कालासान आदि देखब लिखल छल, थाकल रहला सँ आ साँझ भऽ गेला सँ ओहि बाद हम गाइड सँ कोनो चर्चा नहि कएल।

अगिला दिनक प्रोग्राम छल सबेर जलयानक बाद ज्वालामुखी देखब। ओहि सन्ध्या ओही होटल के रेस्तराँ मे जिज्ञासा कऽ कए एकटा शाकाहारी भोजन ऑर्डर कएल आ राति विश्राम कएल।

दोसर दिन, शुक्र, 30 सितम्बर 2022

हम सबेर जलयान कएलाक बाद आगाँ लेल तैयार छलहुँ। समय पर गाइड हाजिर भेलाह आ हम सब विदा भेलहुँ। एकटा घंटाक बाद एक जगह पर देखल बहुत रास जीव सब लागल जे पहाड़ी इलाका मे प्रयुक्त होइत छैक। एतऽ गाड़ी छोड़ि देल आ हम गाइडक संग पहिने सँ आनल एकटा खुला जीप मे सवार भेलहुँ। हम सब मनायी ज्वालामुखीक नजदीक जा रहल छलहुँ, पहाड़ी इलाकाक छोटछोट गाम सब, रस्ता पड़िना। ई ज्वालामुखी 2010 मे फूटल छलैक आ बहुत तबाही भेल छलैक ओहि समय। आसपासक करीब चालीस किलोमीटरक इलाका मे ओकर गर्म छाउर पसरि गेल छलैक, किना रेयो (Ki nah Reyo) नामक एकटा गाम पूर्णतः नष्ट भऽ गेलैक आ प्रायः तीन सौ व्यक्ति मारल गेलाह।

पहिल पड़ाव भेल ओ जगह जतऽ ओहि कालक दृश्य सबहिक संकलन कएल छैक एकटा स्मारक सदृश भवन मे। किछु पशु जे मारल गेलैक, ओकर कंकाल सेहो संरक्षित छैक एतऽ। किछु समय बिताए हम सब आगू बढ़लहुँ तऽ गाइड महोदय देखौलनि एकटा विचित्र आकारक विशाल शिलाखण्ड (boul der) जे ओही ज्वालामुखी सँ निकलल छलैक। एकर नाम एरन छैक जे स्थानीय लोक एकरा

एलाइन्ही (alien) मानि बैसल। ओतऽ भिलायछ एन एकर दर्शन छैक ज जावा द्वीपक स्थानीय लिपि म लिखल छैक। गाइडक अनुसार एहि लिपि कँ पढ़निहार आब बहुत कम लोक छथि कारण इण्डोनेसिया म आधिकारिक रूपें अंग्रेजी लिपिक व्यवहार होइत छैक। आधिकारिक भाषा बहासा छैक किन्तु ई अंग्रेजीक अक्षर म लिखल जाइत छैक।

एहि जगह सँ मेरापीक शिखर देखाइत छैक, करीब पाँच किलोमीटर दूर। मुदा आकाश कए मेघोन्मुख होएबाक कारणें शिखरक ठामक स्पष्ट दर्शन नहि भऽ सकल। पहाड़ी इलाका म आकाश मेघाच्छन्न रहब साधारण बात छैक। ओतऽ एक महिला छैथ म कटहरक माछि सदृश किन्तु लाल-करिक्का रंगक सत-सन्तालाक आकारक फल बेचैत छथि। गाइड ओकर नाम बुआ सलक (Buah Salak) बतौलक छथि। नव जगहक नव फल चिखबाक हेतु हम कीनि लेल छी। गाइड ओकरा खाइबा छाउ हमरा खबाक लेल देल छथि। फलक गुद्दा कए सक्कत, बीच म एक-दूटा आँठी, अम्ल मीठ, स्वाद गहनाह सन, जेना बुझु अधपाकल कटहरक कोआ, अनठीया लेल थूकनि कए फेकऽ बला नहि देखन बहुत नीक नहि।

फेर हम सब निचा उतरलहुँ पहाड़क आर नजदीक ठाम जगह एन जाएत धर्मगुरु (Juru Kunci) स्वर्गीय म्बा मारिद्जान (Mbah Maridjan) के म्यूजियम छनि। ओतऽ अनसन विशेष एन नीचाक ग्रामीण लोकनि जुटैत छथि आ प्रार्थना आदि होइत छैक।

धर्मगुरु श्रीमान मारिज्जान मरायी ज्वालामुखीक समीप मे रहैत छलाह। हुनकर काज छलनि ज्वालामुखीक विस्फोट भेला पर आसपासक ग्रामीण जनताक रक्षा करनाइ। ई काज हुनका योग्यकर्ताक सुल्तान देने छलखिन। ओ सुल्तानक प्रति एतेक वचनबद्ध छलाह जे 2010 मे जखन विस्फोट भेलैक तखन अपन परिवारक अन्य सदस्य सबकें लऽ नीचा सुरक्षित जगह पर पठा देलखिन मुदा अपने ओतहि रहि गेलाह। एहि घटना कें टीवी पर देखबा लेल जे दुटा रिपोर्टर गेलाह सेहो हुनका संग जान गमौलनि। मारिज्जानक पत्नी, पुत्र आदि एखन जीवित छथि।

एहि स्थल पर किछु फोटो आदि लैत हम सब नीचा उतरलहुँ जतए हमर गाडी ठाढ़ छल। फेर अपन ओहि सवारी मे बिदा भेलहुँ बोराबुदुर, आइक खास पर्यटन स्थल। बोरो शब्दक अर्थ भेल पैघ (बंगला भाषाक बड़ा सँ मिलैत) आ बुदुर भेल बुद्धक विकृत रूप। बोराबुदुर अर्थात् पैघ बुद्ध, से बोराबुदुर वास्तव मे विश्व मे सबसँ पैघ बुद्ध मन्दिर अछि। मात्र स्तूपक आकार कें देखबैक लऽ श्रीलंकाक स्तूप पैघ छैक मुदा परिसरक आकार, ओहि मे बुद्धक विभिन्न रूप, वास्तुकला आ सबसँ विचित्र बात जे ई मन्दिर कोनो एक पैघ परिसर मे छैक नहि, अपितु तीन ठामक मन्दिर मिला कऽ बनल छैक। मुख्य मन्दिर सँ किछु किलोमीटर क दूरी पर छैक पाओन आ एहु सँ किछु किलोमीटर हटि कऽ छैक मेन्दुत। ई तीनू एक सीध मे छैक। मान्यता छैक जे बौद्ध ब्रह्माण्डविज्ञानक त्रैलोक्य क कामधातु (the world of desire), रूपधातु (the world of forms) आ अरूपधातु (the world of

formlessness) तीनू लोक कें निरूपित करैत छैक ई तीनू मन्दिर। बौद्ध तीर्थयात्री पहिने मन्दुत जाइत छथि, तखन पौउन आ अन्त मे मुख्य मन्दिर बोरोबुदुर।

पार्किंग मे गाडी छोडि हम सभ जखन मन्दिर परिसर मे प्रवेश कएलहुँ तखन टिकट घर कटलाक बाद सभ कें आधा लीटर पानिक बोतल देल गेल। हम सभ पैघ परिसर मे सुन्दर बाग बगीचाक बीच चलैत मुख्य स्तूपक लग पहुँचलहुँ।

मुख्य मन्दिर स्वयं एक के ऊपर एक नौ स्तर पर बनल छैक जाहि मे निचाक छौ स्तर वर्गाकार आ ऊपर के तीन स्तर वृत्ताकार छैक। छोट छोट स्तूप, जाहि मे अनेको छिद्र बनल छैक, तीनू स्तर कें सजौने छैक। सबसँ ऊपर एकटा स्तूप छैक। गाइड बतौलनि जे ई मन्दिर नवम् शताब्दी मे शैलेन्द्र वंशक शासनकाल मे बनाओल गेल छलैक। मन्दिरक वास्तुकला पर भारतक गुप्त वंशक समयक प्रभाव देखल जा सकैत छैक किन्तु स्थानीय वास्तुकला, जाहि मे अपन पूर्वजक उपासना आ बौद्ध धर्म मे निर्वाण प्राप्त करबाक अवधारणा, दुनू सन्निहित छैक। तीर्थयात्री नीचाक आधार (जे कामधातुक निरूपण छिऐक) सँ होइत ऊपर चढैत छथि आ तीन स्तर पर रूपधातुक आ अगिला तीन स्तर पर अरूपधातुक निरूपण बला स्थल पर पहुँचैत छथि।

किछु सीढी ऊपर चढलाक बाद पहिल स्तर पर देखल जे पुनरुद्धारक कार्य चलि रहल छलैक, सभ तरि घेरा बनाओल छैक आ पर्यटक कें ऊपर चढब बन्द कS देल गेल छलैक। बहुत पर्यटक निराश

रहल नीचा म टहलि रहल छलाह। आब ओहि यनिसन म करबाक किछु नहि छल। किछु काल गेला छाहरि म बैसि सुस्ता ललहुँ कारण। ओखन एक ग्रमध कनिए छलहुँ। एकर बाद निदा रहलहुँ नक्शा म यौउान आ महत्व महिन देखवा लल। ओ दुनु अयउाकृत छार जगह छैक, दस मिनट समय लागल चारू कात घूमवा म, किछु फोटो आदि लवा म। आब दु बाजि गेल छलैक, भूख सेहो लागि गेल छल।

आइ आउान किछु नहि देखवाक छल। गाइड कँ कहलिअनि कारहु रोजन करवा लल चलथि। नक्शा म एकटा रेस्तराँ म गेलहुँ। गाइडक सहायता सँ शाकाहारी व्यञ्जन, इटालियन पास्ता, □र्डर कएल। रोजन करवा काल बरखा होमए लगलैक, यद्दपि कम किन्तु बाद म बस जान सँ। गुप्तक ज रोजन समाप्त होइत होइत बरखा बन्द भऽ गेल। हम सब करीब साढ़े चारि बजे एक होटल घूरि एलहुँ। शहर क मुख्य इलाका मालियावाना स्ट्रीट, ज हमरा होटल सँ टहलि कए जाएल जा सकैत छलैक, म कएका नक्शा। गाइड महोदय होटल म जा कए ओहि सडक यत यएत एवाक नक्शा बना देलनि। हम हुनका अनुरोध कलिअनि ज 20000 रुपिया क उा नोट, जाहि म गणेशजीक फोटो छपल छनि, कारा एनहुँ जागान करथि।

साँझ म अयनहि टहलैत टहलैत ओहि इलाकाक सौन्दर्यपान कएल आ गाइडक बताउल नक्शाँ म रोजन कएल।

एसन दिन, शनि 1 अक्टूबर 2022।

आइक प्रोग्राम एती सँ शुरू होवाक छल। यद्यपि नियान्त्रण क बनाओल प्रोग्रामक अनुसार हमरा सबकें प्राचीन मन्दिरक भ्रमण करबाक छल आ साँझ मे ओही इलाका मे नामायक ठाम देखबाक छल, गाइड कहलनि जे ओतक दुइ जगह टा बड़ जाएब, नीक रहत जे काल्हि एती सँ हम सब निकलब, दुपहरिया मे प्राचीन मन्दिर देखब आ ओतहि कल मिलि क' कए साढ़े सात बजे संध्या नामायक ठाम देखि लेब। ई विचार हमरहु पसिन्न पड़ल। असल मे रातिए मे बैसल ठाम दुइ सब ओतक नीक सँ प्रोग्राम नहि बना पबैत छथि से हमरा एना बुझाएल। सबहक मे जलपान कएलाक बाद किछु काल कमरा मे बैसि उपन्यास पढ़ैत बिताओल। दस बजे गाइड होटल पहुँचि गेलाह, ओ गणेशजी बला नाट लए आएल छलाह। कहलनि जे ई नाट आब यूनान वस्तु (ग्रीक) क बजार मे हटैत छैक, मुदा एकरा लेल ठीस देखान देब पड़ल। हम बुझलहुँ सत्य रहल, हुनक सहायता सँ ओहि नाटक संग अपन होटा लेल जे संलग्न क' देल अछि। तकर बाद ओ कहलनि, चलू आसपासक इलाका घूमि लेल जाए। ई त' बानस रहल, कारण हमरा प्रोग्राम मे लीखल नहि छल। हम त' नहाल भ' गेलहुँ।

होटलक पछुआर हाइट बहलहुँ आ इलाकाक बाइनीज बजार देखल। सत्य वस्तुजातक अनेका छोट पैघ दोकान, कलकत्ताक काली मुनिसिपैलिटी बजार सदृश, एखन भीड़ बसी नहि तखन स्थानीय लोक अपन बगनागा लेल चीज वस्तु किनैत छल।

मालियाबोरो स्ट्रीट सँ आबि गाड़ी हमरा सभकेँ दूनू कात घुमा घुरिकेँ देखौलनि, एकटा ई इन्डोनेसियाक स्वतंत्रताक समय किछु वरखक लेल ओकर राजधानी रहल छलैक आ शासन डच लोकनि द्वारा स्थापित मिलिट्री किला जाहि मे एखन व्रेडेबर्ग (Vredeburg) म्यूजियम छैक। समय छल, हम म्यूजियम देखबाक इच्छा प्रकट कयलिएनि, गाड़ी गैयार भेलाह, मात्र टिकट हमरा अपनहि कीनए पड़ल कारण ई पैकेज मे शामिल नहि छल। कोनो बेसी महग नहि मात्र 10000 रुपिया, माने करीब 50 टाका। गाइडक प्रवेश निःशुल्क।

म्यूजियमक भीतर गेला पर बहुत खुसी भेल, समय एक-डेढ़ घंटा ई नीक सँ बीतल, किछु इतिहास सँ सेहो परिचित भेलहुँ। एतए इन्डोनेसियाक स्वतंत्रता संग्रामक इतिहास विविध रूपेँ चित्रित कएल छैक।

म्यूजियम क बाद हम सब प्राम्बनन दिस भेलहुँ। रस्ता मे गाड़ी एकटा विशेष रस्ता मे लऽ गेलाह जतए हुनकर चुनल शाकाहारी व्यञ्जन भोजन कएलहुँ। अनेक तरहक तरुआ, टमाटरक चटनी, भात आ रसम सदृश खट्टा साउ। नीक स्वाद आ दाम बहुत कम। दूना भोजन मात्र 25000 रुपिया मे भऽ गेल जखन कि होटल-कढ़ी आ भात 60000 रुपिया सँ कम मे कतहु नहि भेटैत छलैक।

तकर बाद आधा घंटा मे हम सब पहुँचलहुँ पहिल हिन्दू मन्दिर, सम्बिसारी। ई मन्दिर पहिल शताब्दी मे अकस्मात एकटा किसान द्वारा खोजल गेल। पूरा पहिसन करीब 5 मीटर माटि माटिक तह

मे दबल छलैक जे बहुत सम्भव मेरापी ज्वालामुखीक एगारहम शताब्दीक विस्फोट सँ आएल छाउरक अवशेष छलैक।

मन्दिर आब खंडहर भेल छैक, तैयो किछु पुनरुद्धारक बाद देखबा योग्य बनि गेल छैक। पूरा मन्दिर परिसर सतहजमीन सँ करीब दश फुट नीचा छैक। बहुत सम्भव जे एहू कारणेँ छाउर सँ झाँपल मन्दिर सब लोक केँ पता नहि चलैत छलैक। एकर मूल नाम की रहल हेतैक से नहि बूझल छैक, एखन ई सम्बिसारी गाम मे अवस्थित छैक तेँ सम्बिसारी मन्दिर के रूप मे जानल जाइत छैक। मन्दिर के मुख्य भाग मे शिवलिंग छैक, आ तीन कात दुर्गा, गणेश आ अगस्त्य मुनिक दिव्य मूर्ति बनल छैक।

एतए सँ करीब पन्द्रह मिनट के ड्राइविंग रस्ता छैक प्राम्बनन मन्दिर। एहि मन्दिरक निर्माण सँ सम्बन्धित अभिलेख सब भेटल छैक तेँ एकर काल निर्धारण आसान भेलैक। अभिलेखक अनुसार एहि मन्दिरक निर्माण नवम शताब्दी मे भेलैक आ 856 ईस्वी मे एकर उद्घाटन भेल छलैक। एकर निर्माण मातारम राजवंशक हिन्दू राजा महाराज संजय द्वारा कराओल गेल छलैक जे बौद्ध राजा शैलेन्द्रक समकालीन छलाह। मन्दिरक प्रत्येक पाथर पर भारतीय वास्तुकलाक प्रभाव देखल जा सकैत छैक। मातारम राजवंश लेल ई मन्दिर राजकीय मन्दिरक काज करैत छलैक आ राजमहलक सबटा धार्मिक कार्य एतहि सम्पादित होइत छलैक।

ईहो मन्दिर खंडहर बनि गेल छलैक, आ स्थानीय लोक एकरा बिसरि गेल छलैक। ताकल गेल अठारहम शताब्दी मे तब लोकनि

𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰। 𑒋𑒐𑒢 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒳𑒢𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒖 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 𑒂 𑒏𑒰𑒖 𑒍𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒔𑒪𑒱𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒧𑓂𑒥𑒢𑒢 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒃𑒝𑓂𑒛𑒼𑒢𑒹𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒣𑒻𑒒 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒮𑒩 𑒕𑒱𑒌𑒏। 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒨𑒴𑒢𑒹𑒮𑓂𑒏𑒼 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫 𑒡𑒩𑒼𑒯𑒩𑒏 𑒮𑒴𑒔𑒲 𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒕𑒻𑒏।

𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒂𑒏𑒩𑓂𑒭𑒝 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 (𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰, 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒂 𑒬𑒱𑒫) 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞 𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒕𑒻𑒏। 𑒥𑒲𑒔 𑒏 𑒮𑒥 𑒮𑒿 𑒆𑒿𑒔 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩, 𑒆𑒿𑒔𑒰𑒃 47 𑒧𑒲𑒙𑒩 (𑒏𑒩𑒲𑒥 15 𑒧𑒘𑓂𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒮𑒢), 𑒧𑒹 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒬𑒱𑒫 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞, 𑒂 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒏𑒰𑒞 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰 𑒂 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳, 𑒏𑒢 𑒕𑒼𑒙 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒧𑒹। 𑒍𑒯𑒱 𑒞𑒲𑒢𑒳 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒧𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒏𑒢 𑒂𑒩 𑒕𑒼𑒙 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒳 𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒫𑒰𑒯𑒢 𑒯𑓀𑒮, 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒲 𑒂 𑒑𑒩𑒳𑒛 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒮𑒥 𑒏 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒏𑒰𑒞, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒒𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒣𑒯𑒩𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒁, 𑒠𑒳𑒙𑒰 𑒕𑒼𑒙 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒕𑒻𑒏, 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩, 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒂 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒏 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒍𑒯𑒱 𑒣𑒩𑒱𑒮𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒮𑒥 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒣𑒴𑒢𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒠 2019 𑒧𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒥𑒹𑒩 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒥 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫 𑒏 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒨𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒴𑒣𑓀 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒪𑒼𑒏 𑒍𑒞𑒋 𑒣𑒴𑒖𑒰-𑒁𑒩𑓂𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒏𑒩𑒲𑒥 𑒞𑒲𑒢 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒋𑒏 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒙𑒏 𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒕𑒪𑒻𑒏, 𑒂𑒥 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒑𑒹𑒙 𑒮𑒥 𑒣𑒩 𑒧𑒼𑒙𑒑𑒩 𑒜𑒰0 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪। 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒳 𑒏𑒰𑒞 𑒒𑒴𑒧𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒞𑓄 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒥 𑒣𑒩 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝 𑒂 𑒧𑒯𑒰𑒦𑒰𑒩𑒞𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏।

यद्यपि मन्दिर कें मुख्यतः शिव मन्दिरक रूप मे बनाओल गेल छलैक आ एकर प्राचीन नाम सेहो शिवालय आ शिवगृह छलैक, तथापि मन्दिर मे शिवलिंग नहि छैक। गाइड बतबैत छथि, एकटा मूर्ति छैक जकर मुखड़ा राजा बालिंग सँ मिलैत बनाओल गेल छैक। मान पड़ैत अछि कम्बोडिया क 'प्रिया को' मन्दिर जकाँ छओटा मन्दिर मे एहिना राजा लोकनिक मूर्ति छनि। सब मे नामकरण ईश्वर जानि कए कएल, जेना मिथिलाक गामघर मे सिद्धेश्वर, कपिलेश्वर, जागेश्वर आदि नाम देल गेल छैक।

मन्दिर परिसर मे एखनहु पाथरक अम्बार देखी लागल। पुनर्निर्माणक काज मे चुनि चुनि कए पाथर सब के मूड़ मिला कए जोड़ल जाइत छैक। ई काज यूनेस्का क देखरेख मे भऽ रहल छैक।

प्राम्बनन मन्दिर ओपाक नदीक कछेर मे बनल छैक। नदीक ओहि कात त्रिमूर्ति स्थल मे रामायण नृत्यक आयोजन होइत छैक से गाइड देखा देलनि। नदी पर यदि पुल रहितैक तऽ ओहि प्राङ्गण जेबा मे पाँचो मिनट समय नहि लगैत मुदा से छैक नहि, घुमि कए सड़क सँ जाए पड़ैत छैक।

स्थानीय भाषा मे मन्दिरक नाम छियैक रारा जोंग्रांग मन्दिर आ एहि नाम सँ जुड़ल छैक एकटा दन्तकथा। रारा जोंग्रांग कोनो राजकुमारी छलीह जिनका प्रेम मे बगल क नायक राजकुमार, जिनका दैत्य आ अलौकिक आत्मा सब पर काबू करबाक शक्ति छलनि, विशाल मन्दिर बनौलनि। मुदा राजकुमारीक मांग बढ़ैत गेलनि आ अन्त मे हुनका शाप भेटलनि जे ओ एहि मन्दिर मे

पाथर बनि कऽ रहलीह। दन्तकथाक अनुसार शिव मन्दिर के उपरवलिया कक्षा मे जे महिषासुरमर्दिनी दुर्गाक मूर्ति छनि से ओही राजकुमारी कें अंकित कएने छैक।

प्राम्बनन मे हिन्दू मन्दिर परिसर सँ कनि हटि कऽ बौद्ध मन्दिरक विशाल परिसर सेहो छैक जाहि मे तीन टा मन्दिर संकुल छैक बूबनाइ, लुम्बुन आ सेवु। ई तीनू सेहो बौद्ध ब्रह्माण्डशास्त्रक त्रैलोक्य क तीन लोक, कामधातु (the world of desire), रूपधातु (the world of forms) आ अरूपधातु (the world of formlessness) कें निरूपित कएने छैक आ बौद्ध लोकनि एहि तीनू मन्दिर मे ओही क्रमें एक क बाद दोसर आ तेसर मे जाइत छथि। सेवु मन्दिर मे सेहो बहुत रास पाथरक ढेरी लागल। एतहु कतेक छोट-छोट मन्दिर खंडहर अवस्था मे पड़ल छैक। सेवु मन्दिरक दोसर प्रसिद्धि छैक ओही रानी जोङ्गरांग राजकुमारी क दन्त कथा सँ सम्बन्धित, कारण स्थानीय भाषा मे सेवु माने होइत छैक लगभग हजार। कहल जाइत छैक जे एक हजार (अथवा करीब करीब हजार) मन्दिर रहल होएत जे ओकर प्रेमी राजकुमार बनौने छलैक।

ई सभ देखलाक बाद परिसर मे कनि हटि कऽ एकटा म्यूजियम देखबा लेल गेलहुँ। म्यूजियम मे मुख्यत: बुद्धक अनेक मूर्ति, सभ खंडहर अवस्था मे। एहि सभ दृश्यावलोकन मे पाँच बाजि गेल। आब थाकि सेहो गेल छलहुँ। रामायण प्रोग्राम सात बजे साँझ मे शुरू होइत छैक। तावत एही इलाका मे प्रतीक्षा करबाक छल।

यार्किंग दिस घूमल अबैत नहि कि वर्षा आबि गेल। छाता त' छल मुदा किछुए काल मे वर्षा ताक जान भ' गेलैक जे छाता काजो काजक नहि। यनिसन बहुत येष छैक तँ लोक लेल किछु बेंचनी बला गाछी कखनहुँ कँ बसैत छैक आ एकटा लेल जगह जगह यन छाहरि दल शेड बनाओल छैक। कहुना दौड़ि क' ओहने एकटा शेड मे शरण लेल। वर्षा ताक भेलैक जे सड़क यन यानि लागि गेलैक। गाइड कहलनि जे सीजनक पहिल यहिल येष वर्षा छलैक। खैर, घूमब समाप्त भ' गेल छल तँ ओहि शेड मे प्रतीक्षा करैत अखनल नहि। वर्षा कम कम भेलैक, नीक जकाँ छुटलैक नहि, तखन हम सब कहुना प्लास्टिक ओढ़ने गाछी तक यहुँचलहुँ। एखन दु घंटा सँ बेसी समय छल, सावल जे किछु हल्का-फुल्का टिफिन क' लेल जाए, कारण नामायण बेल खाम भेलाक बाद हाटल घूमैत बहुत लेट भ' जाएत आ कतहु नस्तनाँ मे बैसि भोजन करब सम्भव नहि होएत। अगिला भान मे याथकर्ता छात्रावास छल।

गाइड लन गेलाह एकटा नस्तनाँ मे जाए हुनक □ठैन यन गनम गनम यनीन यकौड़ा भेटल, बाद सहो भेटल, दु प्लेट यकौड़ा खा लेलहुँ, बस काज भ' गेल। गाइड आ ड्राइवन सहो अयना नुचिएँ टिफिन करैत गेलाह। सब गोटक बिल हमहीं देलियैक, सब किछु सस्त लागल।

बुन्नी यड़िए नहल छलैक। हम सब नामायण बेल बला यनिसन मे यहुँचलहुँ त' देखल जे कलाकान लोकनि तैयान भेल टहलि नहल छथि। सीता-नाम-हनूमानक संग एकटा फोटो लेल।

साधारणत: नामायण वैलक आयाजन खुला जगह म हाइत छैक जाहि म ग्रामजन क मण्डिन, ज नागि म सुहन नुयं आलाकित कएल नहैत छैक, पृष्ठभूमि म दखाइत नहैत छैक आ नृत्यक दृश्य कं वसी जीवंतता प्रदान कनैत छैक। साँस म एहि काग सँ मण्डिनक छट अलग छलैक। दर्शक लल ऊँच नीच खाढी म वनल सीट सव। मान यएल मिस्र ग्रमध म गीजाक लाइट एण्ड साउन्ड शा प्राग्राम। डाहा एहिना जाहि जगह यन आयाजित हाइत छलैक डागए नागि म रिंक्स आ नीनु यिनामिड पृष्ठभूमिम आलाकित नहैत छलैक आ डाकन नंगक संगहि आलाकित हागक छटा सहा समय समय यन खिस्साक अनुसान वदलैत नहैत छलैक। मिस्र म वनखाक डन नहि मुदा इन्डानसिया म अङ्कुवनक प्रथम दिन वर्षा स्पृतु प्रानम्भ हs गेल छलैक।

कार्यक्रमक प्रवन्धक लाकनि अन्त समय तक प्रयास कनैत नहलाह ज कहुना वाहन प्राग्राम कनाउल जाए। मुदा इन्द्र भगवान खिसिआएल छलाह, वर्षा छूटलैक नहि, आ हानि कए अन्त म प्राग्राम हॉल म कनाउल गेलैक।

आयाजक लाकनि वहुत तनहं क्षमायाचना कलनि ज वाहनक दृश्य प्रभाव अहूँन म डा लाकनि नहि वना सकताह। तथापि रीतता म वहुत तनहक इन्तजाम कएल छलैक, स्टेज तs वसु युना हॉल छलैक, लाक कं वैसै वला इन्लाका आ गवैया लाकनिक लल किछु जगह छाडि कलाकान कातह जा सकैत छलाह। युना प्राग्राम वहुत आकर्षक छलैक, एकदम माँजल कानियाग्राफन क निर्देशन म चलैत, हॉल क

भीतर दुनू कात पैघ एलइडी बाति लागल जाहि मे शीर्षक अंग्रेजी आ स्थानीय भाषा मे लिखाएल छलैक। कलाकार मूक प्रदर्शन करैत, वाद्य यंत्र पर संगीतक संग एक छोट संवाद मे डायलग सदृश किछु बजैत (सेहो मात्र स्थानीय भाषा मे)। दर्शक लोकनि मंत्रमुग्ध भेल, मुदा आधुनिक युगक टेक्नॉलाजीक फलस्वरूप कलाकारक अभिनय देखबा सँ बेसी मोबाइल अथवा अन्य कैमरा पर वीडियो बनबा मे व्यस्त।

खिस्सा शुरू होइत छैक धनुषयज्ञ सँ आ अन्त होइत छैक राम-रावण युद्धक बाद सीता आ रामक मिलन सँ। एकाध शब्द (जेना लंकाक नाम) कँ छोड़ि खिस्सा मे कोनो तरहक तोड़-मरोड़ हमरा नहि देखबा मे आएल। से आश्चर्य जखन कि ओतुका लोककँ भारत सँ सम्पर्क टूटना हजारो वर्ष भऽ गेलैक।

कोनो कलाकार कँ उचल चाल नहि, बानर सेना लेल पाँच-सात बरखक छोट-छोट बच्चा सब लगाओल, जाहि सँ सबहिक देह पर ओकरा लोकनिक कुदब-फानब बहुत चित्ताकर्षक छलैक। एहि खेल मे कुल 200 कलाकार काज करैत छथि। महिला-पुरुष सब मुसलमान।

प्रोग्राम समाप्त भेलाक बाद हम सब होटल आबि गेलहुँ तैयार पहुँचैत-पहुँचैत एगारह बाजि गेल। अगिला दिन सबेर आ0 बजे हमरा पाथकर्ता सँ बालीक फ्लाइट लेबाक छल। गाइड महोदय कहलनि चारिए बजे तैयार रहबाक लेल (कारण एयरपोर्ट दूर

छलैक) आ ओतहि होटल मे तिब्बा वएह जलपानक व्यवस्था करबा देलनि।

अन्तिम दिन, शनि 2 अक्टूबर 2022।

सबेर चारि बजे तैयार होबाक लेल हमरा प्राय: राति जागि जगल रहए पड़ल। आश्चर्य लागल जे गाइड बाला कए ओतेक दूर अपन घर गेल छला आ फेर ओ कोना सबेर विदा भेला जे ठीक चारि बजे होटल मे हाजिर छला। अस्तु, हम चेकआउट कएल, जलपानक पैकेट लेल आ विदा भेलहुँ हुनका संग पोर्टब्लेयर एयरपोर्ट। सबेर रस्ता खाली, ओ गाड़ी नीक स्पीड मे चलि रहल छलैक। हमसब एक घंटा मे एयरपोर्ट पहुँचि गेलहुँ। गाइड आ ड्राइवर दूनू लेल बख्शिस हम एकटा लिफाफ मे पहिनहि पैक कए लेने छलहुँ, ओ लिफाफ गाइड कें दैत यथोचित अभिवादनक संग हुनका सँ विदा लेल।

हमर वेब-चेक-इन कएल छल, बोर्डिंग पास सेहो छापल छल, चेक-इन लेल कोनो सामान सेहो नहि छल। बस मात्र सिक्योरिटी चेकिंग करबैत गेट पहुँचि गेलहुँ। ओना भोर एक कप चाह होटल मे पिबने छलहुँ, तैयो अपना कें फ्रेस रखबाक लेल एयरपोर्ट पर सेहो फेर एक कप चाह पीलहुँ। तिब्बाक जलपान खोलल, किछु खा लेल आ किछु फेर हवाइ जहाज मे खेबाक हेतु राखि लेल।

याथकर्ता ञा वालीक वीच ७क घंटाक समय क ञन्दन, ञलग टाञ्ञ्म जान। वाली युव गँ समय ञगुञा७ल। समय यन वाली म उञनलहुँ ञा वाहन ञावि गाकs लगलहुँ ञयन नामक प्लट लन काना ध्यक्ति काँ। सामन ७कटा ननयुवती हटलीह, कहलनि हमहीं ञयनक गाञ्ञ्ड छी ७हि गीनू दिनक लल। काना वाग नहि, हुनका संग जा७ गाडी म वैसलहुँ।

टूनक प्राग्राम वनवे म वियान्तन वालीक लल किछु ग७व७ कs हन छल। ७कटा दर्शनीय स्थल, गाना लाट, ज कि लाक सूर्यास्तक समय हखवाक लल जाञ्ञ्ग ञछि, हमना प्राग्राम म सवसक सूर्यादयक समय वना हन छल। हम ७कना वहल७ चाहैग छलहुँ। मुदा गाञ्ञ्ड कँ प्राग्राम म हमन काना यनिवर्तनक सुझाव यसिन्न नहि य७लनि, सव निकल्प म ७कटा वाग- ड्रैफिक वहुग छैक ञा जगह सव दुन-दुन छैक स सम्भव नहि हा७ग। हानि क७ हुनक ञनुसान चल७ य७ल।

हम सव गेलहुँ उवूद ञ्ञलाका म मंकी हानस्त हखवा लल। ७यनयार्ट सँ ७ग७ ञवै म प्राय: दु घंटा सँ वसी समय लागि गेल। वाली म वहुग Oाम सौन्दर्यीकनण क काज चलि नहल छलैक कानण किछु७ दिन वाद ञाग७ जी-20 क ञन्तिम मीटिंग हाम७ वला छलैक।

हमन गाञ्ञ्ड हिन्दु धर्मावलम्बी ञा हुनक ञनुसान शुद्र नर्णक कुमानि कन्या छलीह, नाम निति (Widhi , ञसल म ञ्ञी निधि नहल हगैक ज समयक चक्र म उच्चानण दाष सँ निति वनि गेलैक)। यनिवान म जO हा७, ञैजी, माता-यिता। यहिन हिनक हाञ्ञ्या टून

गाइडक काज करैत छलखिन, आब ओ गाम मे रहैत छथिन, खेतीबारी देखैत छथिन आ एकटा दोकान चलबैत छथिन।

आब हमरा लए ई भेल जे हिनकहिं सँ इन्डोनेसियाक हिन्दू लोकनिक सामाजिक व्यवहार आदि जनबाक नीक अवसर भेटि गेल। गाड़ी मे चलैत हम हिनका प्रश्न पूछैत जाइनि आ ई उत्तर दैत जाथि।

मंकी फॉरेस्ट नाम शुद्ध नहि लागल। ने बेसी बानर, ने तेक पैघ फॉरेस्ट, तीनटा छोट-छोट मन्दिर, मुदा ठेठ बन नाला लागल आ मन्दिरक कपाट सेहो बन्द। गाइड कहलनि जे सबसँ पैघ मन्दिर दालम आगुंग के छिऐक। जनश्रुति छैक जे बानर सब एहि मन्दिरक रक्षक छिऐक। स्थानीय लोक सब जखन कोनो उत्सव मे एतए अबैत छथि तखन कपाट खोलल जाइत छैक। एकटा नाला बहैत, किछु माछ सब जल मे खेलाइत।

सब किछु आधा घंटा मे आराम सँ घूमि लेलहुँ। एहि लेल बियान्तन दू घंटाक प्रोग्राम बना कए रखने छल। आब हमरा किछु करबाक नहि छल। हम बियान्तन कें पिकाएलिक एकटा ब्लाइन्डक मसाज पढ़। देलिऐक। ओहिमन सँ जे किछु कहल गेलैक से प्राय: एतुका स्थानीय पार्टनर कें स्वीकार नहि भेलैक।

गाइड कें आजुक कार्यक्रम मे एकटा आन स्थल छलनि- हिन्दू यनिहारक घर देखाएब। मंकी फॉरेस्ट मे किछु आन समय बिताए हम सब चलि पहुँचलहुँ ओहि इलाका कें जाए ओ हमरा एकटा

हिन्दु यनिवानक घन दखोणीह। नम्मा म लंब लवाक लल एकटा नम्मनाँ म नूकलहुँ। एहि यात्रा म ग्राऽऽहन हमन उाणक सहयागी नहि वूमाएला। नम्मा म काणका Oाम दर्शनीय स्थल सव छलैक, मन्दिन समुहक ग्S काथ कान, वाली म जना सूनल छल, मन्दिन वहूण, मूदा ग्राऽऽहन उाहि सव जगह यन नाकवाक लल गैयान नहि। एक वन हमना गामसा चढल, णखन एकटा मन्दिन यन उा नाकलक आ हम मन्दिनक दर्शन कालहुँ। हम्य मन्दिन, येघ यनिसन, आ णहिना येघ वनामदा। गाऽऽत वर्गलनि ज उमनक अनसन यन एणए ग्रामीण लाकनि वैसैण छथि।

हम स्थानीय लाक नहि छलहुँ णं हमना मन्दिनक हीणन प्रवश वर्जिण छल। यनिसन म घूमलहुँ, नाम्फुकलाक आनन्द ललहुँ। उाहूना मन्दिन म प्रवश लल ग्रसकाउ छैक, विना साणाङ्क यहिनन किया मन्दिन म प्रवश नहि कS सकैण अछि।

एणुका मन्दिन म लाक ज प्रसाद अथवा किछु चढवैण छैक स साधानणण: नानिकलक याण अथवा णानक याण क दाना म, उाकना लाक मन्दिन म एक काण म छाउि दैण छैक। ढनक ढन एहन दाना हम उाहि मन्दिनक गेट यन नाखल दखल। गाऽऽत मिस निवी वर्गलनि ज ऽऽएह प्रथा छैक, छाटछीन सामान लाक उाहिना छाउि दैण छैक, येघ नम्फ घन लS जाऽऽण अछि।

हम जखन उाहि हिन्दु यनिवानक घन यहुँचलहुँ णS गेट यन गणेशजीक मूर्णि नाखल दखल। नीक वाण। आढन म उाणुका प्रथाक अनूसान खन सँ छाउल एकटा घन, उाहि छाटका घन म गुरु

कार्य लेल आयोजन होइत छैक। एकटा साधारण पक्का घर, जे घरवासी अपना रहबाक हेतु व्यवहार करैत छलाह। आङन मे फूल-फूलक गाछ, जेना अपना गामघर मे रहैत अछि। ओहि परिवार पेशा सँ मूर्तिकार, पाथरक मूर्ति बनबैत। सामने आङनक एक कात तीन-चारि फूट वर्गाकार आधार आ करीब सात-आठ फूट ऊँच तीनटा मन्दिर एक कतार मे बनल जाहि मे बिचला कने पैघ। एहि मे हुनक कुलदेवताक अतिरिक्त पूर्वज लोकनिक मन्दिर छलनि। ओहि प्रथा इन्डोनेसिया मे हिन्दू परिवार मे अनिवार्य छैक। एतुका हिन्दू लोकनि स्थानीय रीति-रिवाज, जाहि मे पूर्वजक उपासना अनिवार्य छैक, केँ मानैत आबि रहल छथि।

सब मन्दिर के गेट उज्जर कपड़ा सँ झाँपल। हमरा कहल गेल जे उत्सव पर कपड़ा हटाओल जाइत छैक जखन पूजा कएल जाइत छैक मन्दिर सबमे कोनो मूर्ति नहि छलैक, मात्र पाथरक एकटा चबूतरा जकरा पद्मासन कहल जाइत छैक।

इन्डोनेसियाक हिन्दू समाज मे भारत जकाँ जाति-प्रथा नहि छैक मुदा वर्ण-व्यवस्था छैक। समाज चारि वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र मे विभाजित छैक। एहू मे बहुत कठोर नियम सब नहि छैक, समाज मे माता-पिता द्वारा आयोजित विवाह बहुत कम होइत छैक। शूद्र वर्ण कुल हिन्दू समाजक प्राय: 90% जनसंख्या छथि कारण किसान एही वर्ण मे अबैत छथि। किया अछूत नहि होइत छथि। बाल-विवाह एकदम नहि छैक। स्थानीय हिन्दू समाजक नियमीत एतए सब ठाम त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) केँ पूजा कएल जाइत

छनि। एकर अतिरिक्त पार्वती, गणेश, अर्जुन, शक्ति आदिक पूजा सेहो होइत छनि। समाज मे वेद, उपनिषद, पुराण आ इतिहास (रामायण आ महाभारत) मूल ग्रन्थ मानल जाइत छैक। चारि मार्ग (भक्ति, ज्ञान, कर्म, राज) आ चारि पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) क मार्ग पर लोक चलबाक प्रयास करैत अछि। कोनो वर्णक रहओ, सब परिवार मे तीन बेर संध्यावंदन कएल जाइत छैक। भोर मे बैसल हम गाइड कँ आग्रह कलिएनि त' ओ करीब दु मिनट तक बहुत रास मंत्रक संग गायत्री पाठ कलनि जकर हम भीडियो बनाओल।

किछु निती बतौलनि ज कोनो शुभ कार्य मे बलि देल जाइत छैक आ लोक मासु खब करैत अछि। यदि छोटछीन कार्य रहलैक आ खनिहारक संख्या कम रहलैक त' मुर्गीक बलि देल जा सकैत छैक अथवा छागर-पाठी क, किन्तु यदि पूरा गाम कँ खुएबाक होइक तखन गायक बलि सेहो देल जाइत छैक। ओना हिन्दू लोकनि गोमांस भक्षण कँ निषिद्ध नहि मानैत छथि। किन्तु साधारणत: ब्राह्मण लोकनि मासु नहि खाइत छथि।

जीवन क्रम मे व्यक्ति कँ चारिटा महत्वपूर्ण संस्कार होइत छैक- जन्म, अन्नप्राशन, किशोरावस्था आ विवाह। बच्चाक जन्मक 105 दिनक बाद ओकर पहिल संस्कार कोनो मन्दिर मे होइत छैक। ओहि दिन तक ओकरा धरती पर नहि राखल जाइत छैक कारण विश्वास छैक ज ओकरा मे ईश्वरक अंश रहैत छैक। किन्तु जन्मक 42 दिन तक माता कँ अपवित्र मानल जाइत छनि आ हुनका कोनो मन्दिर मे

प्रवेश वर्जित छनि। एहिना मासिकधर्मक समय सेहो महिला लोकनि केँ मन्दिर मे प्रवेश वर्जित छनि।

मृत्युक बाद तुरत दाह संस्कार करबाक नियम क्लिष्ट छैक। तत्काल दाह संस्कार नहि कएल जाइत छैक। मान्यता छैक जे मृत्युक बाद आत्मा पुनर्जन्मक लेल मुक्त भऽ गेलैक। तँ दाह संस्कारक विधि दिन तकाइए कए होइत छैक। साधारणत: दस-पन्द्रह दिनक अन्दर आबित जाइत छैक तँ तात्कालिक रूपेँ लोक मृत शव केँ गाड़ि दैत छैक आ उचित समय एला पर फेर ओकरा उखाड़ि नियमत: दाह संस्कार कए अस्थि केँ समुद्र मे प्रवाह कएल जाइत छैक।

गाम-घर मे मन्दिरक पुजारी वंशानुगत होइत छथि आ ई पुजारी साधारणत: बेसी पढ़ल-लिखल नहि होइत छथि। किछु लोक बेसी पढ़ि-लीखि कए विद्वान पंडित बनैत छथि जे शिक्षक आ पैघ मन्दिरक पुजारी होइत छथि।

स्कूल मे साल मे दु बेर सरस्वती पूजा होइत छैक। यदि स्कूल मे मुसलमान बच्चा छैक तऽ ओकरा इच्छा पर छैक जे ई उत्सव मे भाग लिअए अथवा नहि। सब स्कूल मे सरस्वतीक मूर्ति राखल रहैत छैक। रस्ता मे जाइत काल हम कतेका ठाम मूर्ति सबहक स्थान देखल, जहिना सरस्वती पूजाक अवसर पर अपना देशा मे छलगोनिया टोल मे देखि सकैत छी। माटिक मूर्तिक प्रचलन नहि छैक। मूर्ति स्थायी रूपेँ सब दिनक लेल रहैत छैक तँ पाथर सँ बनल मूर्तिक व्यवहार कएल जाइत छैक, नीक बात। उबूद इलाका मे

दर्शनीय स्थल मे एकटा सनसनी मन्दिर छैक मुदा ओ हमरा पैकेज मे नहि छल तँ हम नहि देखि सकलहुँ। दुर्भाग्य।

आइक कार्यक्रम ढीलढाल छल, किछु खास दर्शनीय नहि बचल। हमरा वाली के स्थानीय चॉकलेट फैक्ट्री देखबाक छल। ओ बाद हम ऑकलैण्ड मे पढ़ैत छलहुँ जे ओतए लोक चॉकलेटक पैघ ढेर (250 ग्राम, 500 ग्राम आदि) कीन सकैत छल। मुदा ओहि सभ सन जखन गेलहुँ तँ बताओल गेल जे फैक्ट्री ओ0 कए ऐपनपार्टेक इलाका मे चलि गेल छैक, ढेर नहि बिकाइत छैक आ फैक्ट्री देखबाक लेल 1 लाख रुपिया टिकट छैक। अस्तु, ओ जिज्ञासा एतहि शेष रहल। वियानुनक बनाओल प्रोग्रामक अनुसार आइ हमरा होटल मे बर्कैक कलाक बाद साँझ मे कसाक नृत्य, जे महाराजाक खिस्सा सन आधारित होइत छैक, देखबाक छल। मुदा गाइड एहू लेल अपन असमर्थता व्यक्त कएलनि, ओ कहि जे ओ जगह होटल सँ बहुत दूर छैक।

हम करीब साढ़े चारि बजे आबि गेलहुँ होटल जे कि समुद्रक किनार मे छल। इलाका होटल सभ सँ भरल आ गहिना नाक दुनू कात छोट पैघ अनेक नक्शाँ बनल। चेक इन कएलहुँ, मिस निती अगिला दिनक प्रोग्राम बता देलनि जे आ0 बजे तैयार रहबाक छल, अनेक मन्दिर दर्शन करबाक हेतु।

एहि होटल (नजर्ट) मे दुपहरिया मे चाह आ हल्का स्नैक्स देल जाइत छलैक, समय तीन सँ पाँच तक। हमरा लग एखन समय छल। गेलहुँ अपन हिस्सा चाह आ स्नैक्स लेल कए समुद्रक कात

एकटा आराम कुर्सी पर पसरि गेलहुँ। राजनक खाना निक नहि छल। आब शाकाहारी रोज-रोटी आ दाल ततेन कखन सीखिए लेन छलहुँ।

पाँचम दिन, सोम, 3 अक्टूबर 2022।

आइ हमरा प्लान मे लीखल छल 'Temple Run' अर्थात मन्दिर सबहिक दर्शन। गाइड कें अपन बुझल रूट आ प्रोग्राम छलनि, हुनका बियाहुतक लिखलाहा प्रोग्राम सँ खाना समाधान नहि। तीनटा मन्दिर आ एकटा अन्य दर्शनीय स्थल तीर्थ गंगा हमरा हिसाबें आइ देखबाक छल मुदा गाइड कहलनि तीर्थगंगा नहि जा पौतीह कारण। एक तऽ ओ बहुत दूर छैक, नक्शा सँ हटि कए आ दोसर देखबाक किछु खास छैक नहि, ओ मात्र एकटा पिकनिक स्थल छिऐक।

हम सब करीब अढ़ाइ घंटा ड्राइव कलाक बाद पहुँचलहुँ पुरा बसाकिह मन्दिर, जे बाली मे सबसँ पैघ मन्दिर छैक आ एकरा एक हिसाबें mother temple सेहो कहल जाइत छैक। गाइडक अनुसार आठम शताब्दी मे भारत ऋषि मार्कण्डेय भारत सँ आएल गेल छलखिन आ हुनक प्रयासें बालीक पैघ-पैघ मन्दिरक निर्माण भेल छलैक। मुदा विकीपीडियाक विद्वानलोकनिक अनुसार बालीक ई मन्दिर प्रायः 2000 वर्ष अथवा ओहु सँ बेसी पुरान छैक। हम एहि बात पर गाइड कें प्रश्न नहि कलिऐनि।

मन्दिर मे प्रवेश करबा सँ पहिने एकटा महिला लुंगी सदृश एकटा वस्त्र लेने अएलीह आ कहलनि अपना पैंटक ऊपर लपेटि लेबा लेल। उचित होइतैक जे हम सारोंग पहिरने रहितहुँ मुदा हजारो विदेशी पर्यटक से नहि कऽ पबैत अछि तँ मन्दिर प्रशासन ई व्यवस्था कएलक। एहि लेल कोनो फीस नहि छलैक। एहि नाटक मे आ अपना देश मे दक्षिण भारतक किछु मन्दिर मे प्रवेशक एहेन व्यवस्था देखि हमरा लगैत अछि जे सब ठाम एक कथा छैक।

मन्दिरक भीतर हमर प्रवेश सम्भव नहि, बाहरे कात घूमि घुमैत छी कि प्रदक्षिणा करैत छी। गाइड आइ अपन 'अपवित्रता'क कारणे बाहरे मन्दिर मे प्रवेश नहि करैत छथि। गाइड बतबैत छथि जे एतए छोट-पैघ सब मिला कए पचासटा मन्दिर छैक जाहि मे मुख्य आ सब सँ विशाल छैक पूरा पनातरन आगुंग। पहाड़ीक ढलान पर एक-क-ऊपर-एक छओ स्तर पर बनल एहि मन्दिर मे सबसँ ऊपर पैघ आङन छैक। मन्दिरक वास्तुकला स्थानीय आ इन्डोनेसियन स्थानीय कलाक मिश्रण छियैक। गर्भगृह मे पद्मासन छैक। एकरा मन्दिरक विशेषता जे गर्भगृह बेसी काल बन्द रहैत छैक, मात्र जखन कोनो ग्रुप पूजा आदि लेल अबैत अछि तखन ओकरा खोलल जाइत छैक।

मन्दिर कँ नजदीक सँ देखला पर हमरा स्थानीय वास्तुकलाक कोनो प्रभाव नहि बुझना जाइछ। मन्दिरक ऊपरका डिजाइन पिरामिडक सदृश, जाहि मे छत्र सब बनल, जेना जेना ऊपर उठैत छैक, छत्र सब क्रमशः छोट होइत जाइत छैक। एहि डिजाइन कँ मेरू टावर

𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒣𑒱𑒩𑒰𑒧𑒱𑒛𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒩𑒲𑒞 𑒕𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒥 𑒋𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒙𑒪 𑒢𑒯𑒱, 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒏𑒢𑒹 𑒯𑒙𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒥𑒮𑒰𑒏𑒱𑒯 𑒏 23 𑒙𑒰 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒳𑒪 𑒧𑒹 𑒕𑒼𑒙-𑒣𑒻𑒒 𑒮𑒥 𑒕𑒻𑒏 𑒂 𑒧𑒹𑒩𑒳 𑒙𑒰𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒕𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒣𑒰𑒿𑒔-𑒕𑒍 𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑒋 𑒥𑒲𑒮-𑒣𑒔𑒲𑒮 𑒞𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒧𑒱𑒪𑒻𑒞 𑒖𑒳𑒪𑒻𑒞 𑒛𑒱𑒖𑒰𑒃𑒢 𑒠𑒹𑒫𑒩𑓀𑒑। 𑒧𑒹 𑒠𑒼𑒢𑒰𑒢𑒱 𑒔𑒾𑒏 𑒣𑒩 𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒻𑒏। 𑒄 𑒛𑒱𑒖𑒰𑒃𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒧𑓂𑒥𑒢𑒢 𑒏 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒁𑒪𑒑 𑒕𑒻𑒏। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒩𑒲𑒞, 𑒋𑒞𑒋 𑒠𑒹𑒫𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑓂𑒮𑒩𑒰, 𑒠𑒹𑒫𑒲-𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒏𑓂𑒏𑒰𑒬𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒋𑒪।

𑒥𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒮𑒥 𑒧𑒹 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹𑓀 𑒥𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒮𑒿 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒳𑒖𑒪 𑒏𑒣𑒰𑒙𑒏 𑒥𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑓁 𑒐𑒰𑒪𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒼𑒋। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒏𑒹𑒞 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒰𑒞 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒦𑒫𑓂𑒨 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒛𑒰𑒿𑒩 𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒔𑒰 𑒩𑓀𑒑𑒲𑒢 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒕𑒲𑓀𑒙 𑒏𑒣𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒿 𑒗𑒰𑒿𑒣𑒪। 𑒋𑒯𑒢 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒏𑒰𑒞 𑒥𑒢𑒪।

𑒑𑒰𑒃𑒛 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒔𑒧𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒥𑒞𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 1963 𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒅𑒢𑓂𑒙 𑒂𑒑𑒳𑓀𑒑 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏 𑒂 𑒮𑒑𑒩 𑒪𑒰𑒫𑒰 𑒣𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒪𑒑 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒞𑒲𑒢 𑒧𑒲𑒙𑒩𑒏 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒁𑒏𑒮𑓂𑒧𑒰𑒞 𑒪𑒰𑒫𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒚𑒧𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒪𑒼𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒔𑒧𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒴𑒗𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱, 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱𑓀 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒭𑓂𑒙 𑒯𑒼𑒋𑒥𑒰 𑒮𑒿 𑒥𑒔𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢।

मन्दिर मे एखन स्थानीय लोकक एक मुण्ड यथोचित नष्ट पहिलन माथ पर छिड़ा मे देवक प्रसाद लेने पहुँचैत अछि आ सीढ़ी सँ उपर चढ़ि जाइत अछि। हम दोसर कातक द्वार सँ ओकरा लोकनिक पूजा विधि देखैत छी। किछु रीतिया सेहो बनबैत छी। एहि तरहेँ मन्दिर भ्रमण समाप्त भेल। आब करब बुद्धी पेट लगलैक अछि। कोना बात नहि, गाड़ी मे खेब कि ना।

एकर बाद हम सब चलैत छी अगिला मन्दिर, पूना लम्पूयांग। एहि मन्दिर माउन्ट लम्पूयांग पहाड़ी पर छैक, जे बाली मे आस्थाक प्रतीक छैक। पार्किंग कर नीचे मे बनल छैक आ स्थानीय मिनिबस द्वारा पर्यटक कें उपर मन्दिर तक पहुँचाओल जाइत छैक। मन्दिरक गेट पर सुवनायड़ पर पेंघ आकारक ॐ लिखल देखैत छी, हिन्दू पूजास्थल होवाक लेल एहि सँ बेसी प्रमाण की होयत ? निर्माणकालक हिसाबेँ एहो बहुत प्राचीन छैक आ एतहु स्थानीय वास्तुकलाक प्रभाव नहिए। एही एकटा प्रश्न नहिए जाइत अछि जे पहिने मन्दिर सब स्थानीय लोकनिक आगमन सँ पहिनहि बनि गेल छलैक एखन एकरा हिन्दू मन्दिर कोना मानल गेलैक। बहुत सम्भव जे मूल जनजाति, जे पूर्व मे प्रकृति आ पूर्वजक आत्माक उपासक छलाह, ओएह सब एहन मन्दिर बनौने होथि जे बाद मे हिन्दू धर्मक कुछ बना देल गेलैक।

नीचा सँ उपर तक मन्दिर तीन स्तर पर बनल छैक, तीनू स्तर पर अपन अपन खुजल द्वार छैक। मध्य स्थलक स्वर्गद्वार पर लोक कें फोटो आदि लेवाक छूट छैक। फोटो आदि लेबा लेल टिकट लगैत

छैक जे हमरा पैकेज मे जोड़ल अछि। गाइड टिकट कीनैत छथि तऽ संगहि एकटा कूपन देल जाइत छनि जे कतार मे हमर संख्या बतबैत अछि कारण ओहि स्थान पर फोटो लेबाक लेल भीड़ छैक, प्रत्येक व्यक्ति अथवा ग्रूप के कम सँ कम पाँच मिनट तऽ लागिए जाइत छैक। ओहि स्थान पर जेबाक लेल लोक नीचा सँ बनल सीढ़ीक प्रयोग सेहो कऽ सकैत अछि आ बगल बाट सड़क पर हल्का चढ़ाइ चढ़ैत पहिनसनक पैघ आङन मे सेहो जा सकैत अछि। हम कात बाट आङन मे प्रवेश करैत छी। ओतए एकटा खूला दलान जकाँ पैघ स्थल, जतए फोटो लेनिहार सब अपन अपन नम्बरक प्रतीक्षा कऽ रहल छथि। हमरा पता लगैत अछि जे हमर नम्बर एक सौ व्यक्तिक बाद आओत। मान भेल जे एक मिनट कें यदि प्रति व्यक्ति लगैक तऽ दू घंटाक बाद। हम ओकर निदान खोजि रहल छी, कारण समय स भेल जा रहल छैक, भूख लागल अछि आ एतए दू घंटा बिताएब कतऽ सेहो समस्या अछि। अपरिचितक संग कतेक गप करत लोक ?

सामने ऊँच स्थल पर तीनटा मन्दिर स्थित छैक। एहि मन्दिर सब के सीढ़ी सब पर ढाठ लागल छैक, मान पर्यटक ओतए नहि जा सकैत छथि। नीचा सँ फोटो आदि मात्र लोक लऽ सकैत अछि। हमरा दुगोट स्थानीय पर्यटक एतए भेटलाह, एकटा दिल्ली आ दोसर कलकत्ता सँ। हुनक सहायता सँ ओहि मन्दिरक पृष्ठभूमि मे हम अपन किछु फोटो लैत घूरि अबैत छी पार्किंग मे। एहि मन्दिर मे आओर किछु करबाक नहि, खाली वास्तुकलाकें निहारू आ प्राचीन लूरिक प्रशंसा करू।

रस्ता मे एक ठाम भोजन लेल रुकलौं हम सब करीब चारि बजे तसन मन्दिर पर पहुँचलौं छी। ई समुद्रक कछेर मे बनल छैक। गुआ (गोआ लावा (Goa Lawah) नामक ई मन्दिर बालीक छओटा मुख्य मन्दिर मे एक मानल जाइत छैक। एतए एक कारी पैघ वरक गाछक छाँहि मे बादुरक झुण्ड रहल। एहि गाछ आ बादुरक पूजा सेहो होइत छैक। मन्दिर परिसर मे हम टहलैत छी, गाइड बाहर रहै छथि। एतहु स्थानीय लोकक एक दल पूजा लेल पहुँचल अछि, तखन ढोल सदृश एकटा बाजा बजाओल जाइत छैक। ओ सब आङन मे नीचा मे बैसि जाइत अछि, पुजारी आगू मे बैसल छथि आ सबकेँ पूजा करबैत छथि। ई एहेन दृश्य हम किछु निकट सँ देखि पौलहुँ। मन्दिर परिसर मे एकटा खुजल घर मे बहुत रास वाद्ययंत्र (गेनुआ रंगक कपड़ा सँ झाँपल राखल। एकर व्यवहार वार्षिक उत्सवक समय कएल जाइत छैक।

आजुक मन्दिर भ्रमण एहि ठाम शेष भेल। होटल घुरैत छओ बाजि जाइत छैक, थाकिओ गेल छी तँ दिनक अन्त मानल। अगिला दिन लेल हमरा दूटा काज बचल अछि- ताना लोट मन्दिर आ सनस कीनब। ताना लोट मन्दिर लोक सूर्यास्तक समय जाइत अछि, मुदा हमरा लेल ई सम्भव नहि। यद्यपि विग्रानुन हमरा सूर्योदयक समय एहि मन्दिर केँ देखबा लेल लिखने अछि, हम ओहि विचार केँ छोड़ि देने छी कारण ई अव्यावहारिक लगैत अछि। दोसर गप जे आकाश कखनहु कए मेघाच्छन्न रहए जाइत छैक तखन की सूर्योदय आ की सूर्यास्त ? कन्याकुमारी यात्राक अनुभव आ एहि

मनायी देखवा म मधीन समयक कारनेँ हेल बाधा मान यतेँ अछि। गाइड कें कहने छथिन नअ बजे आबथि।

छठम दिन, मंगल, 4 अक्टूबर 2022

होटल सँ चेकआउट कैए कए बेदनाइए छी कारनेँ गाना लाटक बाद हमरा सीधे एयरपोर्ट जबाक अछि। बाली म पछिला दु दिन राती वर्षा नहि भेल छलैक। आइ होटल छोडिते खुब जोर क वर्षा होमए लगलैक। किछुए काल म सड़क सब पर पानि लागि गेलैक। गुनक ज गाना लाट पहुँचैत पहुँचैत वर्षा छुटि गेलैक मुदा आकाश मेघाछन्न बनल रहलैक। पहिने गाइड हमरा लगे म एकटा स्थान म लऽ गेलीह जतए हम चॉकलेट आदि किनलहुँ। तकर बाद गाना लाट मन्दिर।

गाना लाटक अर्थ स्थानीय भाषा म होइत छैक समुद्र म स्थित जमीन। ई मन्दिर समुद्रक कछेर म चट्टान पर बनल छैक। मन्दिरक प्रवेशद्वार उदेश्य खुजल कवाटक पड़ा, स्वर्ग म अपन कें आमंत्रित करैत। एखन ज्वारक समय छैक तें कछेर म पानि नहि छैक। एतए किछु दृश्य अनुपम अछि, खास कऽ कए एकटा चट्टान जे पुल बनि गेल छैक लोक कें बसी आकर्षित करैत छैक। ई मन्दिर हमरा एखन तक क देखल मन्दिर सब म सबसँ नव अछि, सालहम शताब्दी म बनाओल गेल। बालीक हिन्दू लोकनि लेल ई समुद्री देवताक मन्दिर छैक, एतए वरुण देवक पूजा होइत छनि। एहि चट्टान पर मन्दिर कें प्रायः सँपन बहुत नास येघ गाछ सब, तथापि

मन्दिरक वास्तुकला देखबा मे आबि जाइत छैक जे कालि देखल अथवा मन्दिर सँ मिलैत-जुलैत छैक।

मन्दिर मे एकटा झरना छैक जाहि सँ लगातार नीक पेयजल खसैत रहैत छैक। एतुका लोक सब एहि जल कें बोतल मे भरि कऽ लऽ जाइत अछि, एकरा पवित्र मानल जाइत छैक, बुझु हमरा मे गंगाजल। पर्यटक लोकनि ओहि झरनाक जल चिखबाक लेल लाइन लगौने। हमहुँ लाइन मे लागि जाइत छी। जल स्वाद नीक छैक। प्रश्न छैक समुद्रक कछेर मे मी0 जलक स्रोत कोना सँ एलैक ? एना तऽ समुद्री खारापनयुक्त जल हेबाक चाहियैक। मुदा धरतीक गर्भ मे बहुत एहन आश्चर्य छैक, सबसँ पैघ आश्चर्य तऽ मानसरोवर झीलक पठार मे राक्षस ताल छैक जकर जल खारापनयुक्त छैक।

मन्दिर मे प्रवेश करबाक कोनो प्रयास किया नहि करैत अछि, पर्यटक लेल मन्दिर स्थल पूजाक लेल नहि, प्राकृतिक सुन्दरताक दृश्यावलोकन लेल छैक। विश्वास छैक जे समुद्री विषधर सब एहि मन्दिरक रक्षा करैत छैक। एखनहु चट्टानक एकटा छोट गुफा मे एकटा साप राखल छैक। गाइड कहैत छथि ई साप एतऽ सैकड़ा साल सँ छैक आ मान्यता छैक जे ई नाग लोक मन्दिरक रक्षक छियैक। हमरा आश्चर्य लगैत अछि जे जीवित साप एतेक पुरान कोना जखन कि सापक औसत आयु मात्र 25-30 वर्ष होइत छैक ? एहि मे ढोंग छैक से गाइड स्वीकार करैत छथि। पैसा लोक ओकरा देखबा लेल जाइत अछि आ किछु चढ़ौआ चढ़बैत अछि। साप कुण्डली मारने, लगैत नहि करैत जे जीवित छैक आ कि प्लास्टिक क

बनाओल। दुटा व्यक्ति, जे स्थानीय पुजारी बुझाइत छथि, सारंग पहिरन ओतए बैसल ओकरा ओगरने। ई हजार रुपिया हमहूँ हकल ओहि साय लेल।

एतहु एकटा बंगाली परिवार रहैत छथि। दुर्गापूजाक समय आ बंगाली लोकनि घूमबा लेल नहि बहराइथि से कोना होएत ? आ किछु तऽ बाली दर्शन लेल सेहो एब करताह किने ?

आकाश मेघौन छैक तँ सूर्यक दर्शन नहिये होइत अछि। एक हिसाबेँ नीक नहि तऽ एतावह बड़ प्रखर रौद मे खुला आकाशक तर तावा लाट घूमब प्रियगर नहिए होइत।

हमर इन्डोनेसिया टूर समाप्त होइत अछि। एयरपोर्टक रस्ता मे हम विचारैत पाँच दिनक लेखा-जोखा करैत छी तऽ लगैत अछि जे दर्शनीय स्थल कें नजदीक सँ देखबा-बुझबाक हिसाबेँ योग्यकर्ता बालीक तुलना मे नीक रहल। ओतए गाइड सेहो बेसी सहयोग केलनि, जे किछु हमरा प्रोग्राम मे लीखल छल ताहि सँ बेसिए अपनहि मोन देखा देलनि। बाली मे गाइड अपन महिला-जनित 'अपवित्रता'क कारणेँ (हम ई मानि लैत छी जे ओ मु० नहि बजलीह) मन्दिरक भीतर नहि गेलीह आ विदेशी पर्यटक कें मन्दिरक गर्भगृह मे प्रवेश वर्जित रहला सँ क्रमशः ओतक आनन्ददायक नहि रहल। बाली मे एकटा लाभ भेल जे हिन्दु गाइड गाड़ी मे यात्रा करैत हमरा हिन्दु समाजक रीति-नीतिक बारे मे बहुत किछु बतबैत गेलीह, अपना मुँहेँ गायत्री पा० सुना देलनि आ किछु स्थानीय मधुर चिखा देलनि। एकर विपरीत जोगक हमरा प्रोग्राम मे लीखल

छल जाहि मे किछु स्कूल छात्रो रहलनि आ सबसँ मुख्य बात जे ओ कोना पत्नी अथवा पुत्रवधू सँ भेंट नहि करौलनि जाहि बातक लेल हम विपासना सँ ओकर आभार करैत छलहुँ।

एहि छोट यात्रा मे भैया सुदूर पूर्व मे बसल हिन्दू समाजक बारे मे बहुत किछु बुझबा मे आएल। खुशी भेल जे विषम परिस्थितिओ मे कोना ओ लोकनि अपन धार्मिक आ सांस्कृतिक व्यवहार बचा कऽ रखबा मे सक्षम भेलाह आ कोना आन समाज केँ आकर्षित कऽ अपना मे सन्निहित करबा मे सफल भेलाह।

एखनधरि पहुँचि हम गाइड केँ बख्शिसक एकटा लिफाफ पकड़ा देल आ हुनका बहुत धन्यवाद दऽ अपना होटलक चेक-आउट लाउन्ज मे लागि गेलहुँ।

-सम्पर्क- ब्लॉक 8, फ्लैट 2बी, डायमण्ड सिटी नॉर्थ, कोलकाता 700055, मोबाइल 9831037532

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.संतोष कुमार राय 'बटोही'- मंगनौना (उपन्यास- खण्ड १०)



संतोष कुमार राय 'बटोही'

मंगनौना (उपन्यास- दसम खण्ड)

"ॐ पाहुन वयौपी (थाउ छियौ। ॐ हम यनिछन सँ किनन छी। यँपीस वनख र (गलै ।"

"हँ यौ कक्का ,ॐ अह्राँ किनन छी। यनञ्ञ हमन पँ यू(श्नेनी छियैय। मंगनौना गाम जह्रिया वसलै पह्रिय सँ ॐ नक्षा छी।"

"पँ पाहुन की मान हम अयन जमीन छाति दियैउ ?"

"अह्राँ कँ हम जमीन छाउ लल (थाउ कहैप छी। नक्षा पँ जनुन छाति दियौ। ॐ नक्षा सरहक छियैउ। सर किया अॐ नक्षा धनि चलैप छथि।"

अपक गय रलाक वाद्य वटूक काका नक्षा नह्रि छाउलकिहीन। उा

एक कठौ बड़ा क' नम्ह पर पिलन गाछि नहुल छथिन्ह। ओहू सँ पहिने तीलन काका नम्हा पर बड़कौ दीनान जाति दलथिन्ह। सब किया निनाध कलन्हि ज नम्हा बन्न नहि कनियौ। ओ नम्हा आहू बनि नहि छौ। छह-सात पुत्र मे ओ नम्हा छौ। ओहू नम्हा कँ उम्हन स्वर्गीय रुनवानी बाबा कँ दालान छलन्हि। ओही दालान पर रुनि गाम कँ लोकनि जमल नहैत छलाह। कृष्णी-पहलवानी कँ नछनीति ओही दालान पर बनैत छल।

गाम म दू रुाँठ रुल छलैह। एकटा गुट क नेता लखन बाबा छलथिन्ह, मुदा दोसर गुट क नेता युग नाथ छलथिन्ह। गाम म अशान्ति नहैत छल। मसोमात क जमीन हनपे लेल बड़-बड़ धंधा होइत छलैह। मसोमात कँ अपन बेटा नहि छलैह मुदा हुनकर जमीन हनपबे आउर आसान छलैह। मसोमात कँ बेटी क अपन रुाँस म हँसा लिअ। ओकरा सँ बलजोरी ब्याह क' लिअ।
आब मसोमात क जमीन-जायदाद अहाँ कँ ह जाएत। ओ आम गप छल।

लखन बाबा बस यैघ कद-काठी क पहलवान छलाह। कुश्ती म हुनका सँ आगाँ सिर्फ युगेसन छलाह। कहना पहलवान क पटखनी दबा म ओ आगाँ छलाह। बबिगिया कँ घननाला हेजा म मनि गेलै। ओ मसोमात ह गेलीह। ओकरा एकटा बेटी छलैह - 'मननी'।

मननी क जनम बाप कँ मुइला बाद हल छलैह, मुदा ओकर नाम मननी नाखल गेल। गाम म घटना आउर पनिघटना कँ हिसाब

सँ नाम नाखे कँ यनंयना छलैन्ह । जना ज नना काOी दाग। म वसी नूकायग छलान्ह , गँ लाकनि न्हूनकन नाम 'मूसाय' नेख देग छलथिन्ह। जकन ढांढी वढल न्हाजग छल गँ न्हूनकन नाम ' ढानवा' यठि जैग छल। मंगल क जनमल मंगला नगेनन्ह-नगेनन्ह...।

लखन मननी कँ अयन यनमक जाल म न्हँसौंलथि। न्हून् कँ चूमौन न्हलन्हि । मननी सुन्हागिन न्हलीन्ह। मननी कन संयगि यन लखन कँ कन्नाा न्हलन्हि । संयगि वढवे कँ ळ्ळी नीक झगाठ छल। गाम म अळ्ळ सँ येघ-येघ कनम-कांत न्ह जाजग छल , यनंव गाम म किया वेज नन्हि सकैग छलान्ह ज ळ्ळी काज नीक नन्हि छियेया। गाम म न्हिटलनगान्ही छलैन्ह।

आझ विजली कन खंरा नन्हि गाठ देग छै गाम म लाकनि । न्हम ळ्ळजाग म नन्हव , गँ अनन्हान म नन्ह। ळ्ळ नीक निवान नन्हि कन्हल जा सकैग अछि। सन्ह किया अमनीग नन्हि यीन छथि। ळ्ळ मृग लाक छियेया। जक दिन छाठ यठान्हि सन्ह किया कँ ळ्ळी धनाधाम। गँ न्हन अगक गुमान कान गय कन ? माटिक दन्ह माटि म मिल जैग। सन्ह माया मान्ह छुटि जैन्ह अन्ही Oाम।

((शेष अंश अगिला खय म)

अयन मंगव editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल- रंगदार कनि



<u>जगदीश प्रसाद मण्डल</u>

रंगनाद कवि

रंगनाद कविक माने भेल शास्त्रीजी। भाय, साहित्य जगत छी माने साहित्यकारक समाज छी, जे बीच शास्त्री, उपशास्त्री, आचार्य, उपाचार्य इत्यादिक सम्मान अछिये आ नवका चालू कवी। अपना गाममे माने किसानपुर गाममे सन गोटि-पंगना साहित्यकार साहित्यसँ जुड़ल छथि। भाय, ओठाम एहन धोखा नहि हएत जे एहना-एहना गाम सभ अछि जाहिमे छहो माने सोल्होअना साहित्यकार छथि आकि सोल्होअना प्रोफेसर वा डॉक्टर छथि। गोटि-पंगना साहित्यकार, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, डॉक्टर गाम-गाम आबए नहि, सभ दिनसँ रहैत आबि रहल अछि। किसानपुर गाममे माने अपना गाममे नविकान्त राय सन साहित्यसँ जुड़ल छथि। नविकान्त रायक संग चारि-पाँच आओर साहित्यकार उहिना काँखम सात रंगन नहि छथि जहिना रात-किनाया याबि सीतानाम सीतानाम करैवला मंडली सभ अछि। एकर माने इहो नहि बूझब जे हम

हुनकर खिदमतिस करै छथिन। हुनकर एकनिष्ठता छैन। जखन समाजमे ताहुन वस्तुक माँग बढ़ल तखन ओ ओहुन-ओहुन मंडलीक माल तैयार करए लगला। आइयो जे राज-पाट अछि, से ओ प्राचीन पद्धतिक समाजसँ चलैत, गाँ गाम-गाममे रहनिहार करैवला श्रमिक वर्ग बनि कतऽ पहुँचत? जे अखनो रहनि दिन चूल्हिक आगि लग अपन देह सेकैत। ताँए नहि, राष्ट्र-विन्यासक संकेत नव युग गढ़ैक लेल सदा तत्पर अछि। मुदा ताकल मतलबता कतऽ रहैत? खातिर तैयार स नहि। वस एहन जे नविकान्त राय साहित्य सनाम लगल छथि।

नविकान्त राय एक उमतिया छथि। ताला, अपन जीवनकेँ ढंगसँ पकैत नविकान्त रायक सीमा धनि जवाहर पहुँच गेल छथि मुदा यहिना जवाहरलाल नेहरूजी जकाँ चाचा बनैमे रहल अछि। नहि तँ विज्ञान पढ़निहार कतौ इतिहास लिखैथ। अपन जीवन जकाँ जँ बूझबैन, तखन हुनकर जीवन नीक जकाँ नहि ने बूझि सकब, मुदा जखन हुनकर जीवन-साधनाक बाट पकैत देखब, तखन हुनकर वास्तविक नुपक स्वरूप जवाहर देख लब।

साहित्य मंचसँ जुड़ल जहिना शास्त्रीजी छथि तहिना नविकान्त राय सदा छथि। ताला, दुनू स्थानीय जहिना राय-रायक स्थानीक सम्बाधनसँ रहैत, तहिना दुनू गोटेक बीच सदा रहए छैन। अपन आ नविकान्त रायक एक गाँ एकठाम घर नहर दिनमे गीत बन रहैत रहल छथि। आ दासन, अपना जिज्ञासा नहैत जे गामसँ बाहर गाँ नवहु बसीकाल निकलै छथि, अपन गाँ रहनि दिन पनिनामम ताकनातल नहै छी। गाँत, साँसूपहुन-क बतबैन रहैत कनिए छथिन। राय, पाखनिक महानयन जे नट सट बसल अछि ता सट जहिना

साँझुपहरमे अपन परिवारकेँ माने पत्नीकेँ, ताड़ी पीला पछाति लठियबा करैए आ भरि राति सुता नहि करबैए सेहो कहा नहि कहल जाए। कारण मानि-जानि किए ने सुनए मुदा अंगरेज जकाँ तलाक नहि ने देत।

शास्त्रीजी आ रविकान्त भायमे बहुताक रंग विचित्र रहितो एकचित्र बनल छथि। माने ई जे जीवनमे, आयुक हिसाबसँ, रविकान्त भाय जेठ छथि। माने बीस बरख जेठ छथि आ शास्त्रीजी छोट छथि। मुदा साहित्यिक जीवनसँ देखल जाए तँ शास्त्रीजी जेठ छथि। माने जेठाम रविकान्त भाइक साहित्यिक जीवन बीस बरखक छनि, तेठाम शास्त्रीजीक जीवन पैंतीस-चालीस बरखक छनि। साहित्यसँ माने सम्पूर्ण साहित्यसँ जतेक रुचि शास्त्रीजीकेँ जे रहल होनि, मुदा कवितासँ रुचि शुरुहेसँ रहलनि, तँए पैंतीस-चालीस बरखक कवि शास्त्रीजी भऽ गेलाह। तैसंग कखनो-काल मंचक अनुकूल आन-आन साहित्यिक विधामे सेहो वक्तव्य दैत छथिन। शास्त्रीजीक अपन मनक बात छिअनि जे अपन विचार अनका खूब सुनबए चाहै छथि आकि अनका बात सुनए चाहै छथि। भाय एहन विचार शास्त्रीएजी ठाम छनि सेहो बात नहियेँ अछि। अपनोमे अछिए। माने ई जे सदिकाल मनमे रहैए जे अपन बात आन सुनबटा नहि मानबो करए, मुदा अनकर बात सुनैत, मानैक तँ कोनो गप्प नहि, अपना छुट्टीए ने अछि।

पैंतीस-चालिस बरखसँ शास्त्रीजी साहित्यिक विधामे किछु-ने-किछु लिखैत आबि रहल छथि, मुदा स्वभावसँ भंगतराह रहने कोनो लिखित रचनाक ठेकान नहि छनि। कहब जे भंगतराह किनका कहबैन? भाँग पीबि किया शिव-दरबारमे माने महादेवक दरबारमे शिव-भक्ति वा महादेव भक्ति करै छथि आ किया बौक-बौनाहायन भाँगक

दोकानसँ भाँग कीनिकऽ पीबि रक्स-पर अर्र-दर्र करै छैथ।
ओना, शास्त्रीजी केँ साधारणता रंगनाइ नहि करइबैन। परिवारक जे अर्थ-व्यवस्था छैन, ओ शास्त्रीजी केँ एकाग्र हुअ' ए न दइ छैन, जइसँ कलहो श्रम हरा-ढरा जाइ छैन। एक तँ श्रम अपन-आपमे अनमोल रत्न छीहे मुदा ओकरा परखब आ ग्राह्य करब तँ आरो, मात्र जखन कुशल परखनिहार आ ग्राह्यकर्ता रहता तखन ने होइ सकै छैन।
शुरूमे मात्र हाइ स्कूलमे जखन साइंस, आर्ट, वाणिज्य इत्यादि विषयक पढ़ाइ हुऐत, तइ समयमे शास्त्रीजी साइंसक विद्यार्थी छला, जे कौलेजमे आबि बी.एस-सी.क क्लासमे नाओ लिखौलैन आ साइंस पढ़ब छोड़ि संस्कृत विषय पढ़ब शुरू केलाह। विश्वविद्यालयसँ 'शास्त्री'क उपाधि पौलेन। ओना, लगनशील एहन जे वैदिक साहित्यकेँ घोंटि देलैन। मुदा काज नुपमे घँगलैन, से वएह बुझै छैथ।
तीन भाँइक भैयारीक बीच माझिल छैथ शास्त्रीजी। पाँच बीघा जमीन परिवारमे। शास्त्रीजी घुमन्तू रहैए गेला। इलाकाक हिसाबसँ शास्त्रीजीक विवाह सबेरे भेलैन। इलाकाक हिसाबक मान हल जे भौगोलिक बनाबटक कारणेँ कोना इलाकामे श्रमशील मानव शरीरसँ श्रम करैवला मनुक्खक निर्माण होइए आ कोना इलाकामे श्रमक बदलल स्वरूप रहने बौद्धिक मनुक्खक निर्माण होइत अछि। विवाह सबेरे इहो भेलैन जे पढ़ल-लिखल पत्नी रहने परिवारक भार ऊपर उठौलैन, मुदा आर्थिक संकटसँ खसैत रहलैन। किसान परिवार शास्त्रीजीक छिऐ। आ तैयो शास्त्रीजी घुमन्तू रहैए गेल छैथ। कविता पाठ, भागवत-पुराणक प्रवचन, गीता प्रवचन इत्यादिमे अपन साधारणता समय लगबैत छैथ।

जेठ राय आ छोटा राय, मात्र तीन साँझक बीच शास्त्रीजी सामिल छथि, गामक खेत हथिया ललकैन। ताबत एक छोट परिवार शास्त्रीजीक रहलैन ताबे तँ कोनो समस्या नहि बुझि पड़लैन, मुदा जखन अपन दूनू बेटा छौँड़ापन भेलैन, परिवारमे खेत-पथारक विवाद शुरू भेलैन, तखन अपन आमदनी कमलैन आ खर्च बढ़लैन।

अखन एकर ई जीवन शास्त्रीजीक रहलैन ओ परिवारक बनहारक अनुकूल नहि रहलैन। परिवार बुझि शास्त्रीजी अपन पत्नियोँ आ बच्चा सहकेँ राखयत ओंगठौल रहला मुदा अपन कमाइक कोनो हिसाब नै रहलैन। सह बुझिऐ छी ई लोकन प्राइमरीक बच्चाक पढ़ाइमे की खर्च अछि। तेहेन साहित्यकार सन गुणाइलक की खर्च हुएत। ओना, साहित्य जगतक बीच शास्त्रीजीक एहेन बढ़ादारी छैन्हि ई जेहनेसँ हुनका हकार पठै छैन, तेहेन ओ जनुन पहुँचै छथि। साइठ बर्खसँ ऊपरक उमेर भेला पछाइत शास्त्रीजी पएन वा साहित्यिक सवारीसँ जीवन चला रहला अछि।

परिवारक विवादक एहेन स्वरूप बनि गेल छैन ई कोर्ट-कचहरीक काज दिनो-दिन बढ़िते जा रहल छैन जइसँ दिन-राति बीच एक्को पल चैन रहब कठिन भऽ गेल छैन। गामजनक हँसियतसँ शास्त्रीजी जवाबदेह छथिए। अपन ई जीवन छलैन, मात्र केस-मुकदमासँ हटल, एहिमे काफी बदलाव आबि गेलैन। एक दिस आमदनीक कमी हुअए लगलैन, दोसर दिस यत्र-तत्र खर्चो बढ़ि गेल छैन। खाइत किछु छैन मुदा मनुक्ख बनि अखन एक गोँ शास्त्रीजी ठाढ़ छथिए। नहि सह कार्यक्रमम, मात्र साहित्यिक कार्यक्रमम, राति लऽ पबै छथि, तँए नहियेँ लइ छथि सदा नहियेँ करल जा सकैए।

स्वरूपसँ शास्त्रीजी साहित्यकारक ठाठ-बाठक लोक छथिए।

अर्थशास्त्रसँ कहियो हटि नहि सकलैन से बुझि पड़ैत, शासनलोकक अर्थनीति की अछि आ जनलोकक अर्थनीति की अछि। एखन शास्त्रीजीक अपन मन गवाही दैत छैन जे दानी बनि दान देब महादान छी, तँए मानवकेँ मानि लेबा चाही।

साहित्यिक कार्यक्रमक जे परिदृश्य बदैल गेल अछि तेकरा अनुकूल शास्त्रीजीक विचारक परिमार्जन नहि भऽ सकलैन। अपना संयोजकत्वमे शास्त्रीजी साहित्यिक कार्यक्रम करैक निश्चय केलैन। तिथि निर्धारित कऽ लेलैन। साहित्य संसारमे बिरले किओ बाँचल हएत जिनकासँ शास्त्रीजीक सम्बन्ध नहि छैन। बहुआयामी बुद्धिक शास्त्रीजी छथिए, तँए सम्बन्ध स्थापित होइमे देरी लगिते ने छैन। परिवारोसँ सेहो छथिए। आइयुक परिदृश्यमे महिलाक हाथ-मुट्ठीमे की सभ छैन। दोसर बात अछिए जे महिलाक अधिकार दिआबैले सभ प्रयासियो छी, मुदा काज घर एखन छूटल अछि जइसँ घरमे महिला शासक नहि छथि।

निर्धारित समयपर रविकान्त राय अपन संगीक संग शास्त्रीजीक डेरापर पहुँचला। जहिना सत्युगमे ऋषि-मुनि गाछक निच्चाँमे आश्रम छाड़ैनमे अपन कला-संस्कृति प्रदर्शन करैत छला तहिना शास्त्रीजीक दरबज्जाक आगूमे तीनटा आमक गाछ छैन्हि।

रविकान्त राय, गामक एकटा छनबा बच्चाकेँ पुछलखिन-

"बौआ, आँगन जा कऽ शास्त्रीजीकेँ सोर लगा दहक ने।"

जेना उ बच्चाकेँ बुझल रहै तहिना टपैक बाजल-

"दछिनबारि टोलमे छैथ।"

"कते दूरपर टोल अछि?"

"सटल-सटल टोल सभ अछि।"

अपन पाँचा-सात संगीकेँ संग कए शास्त्रीजीक भाँज लगबैत दच्छिनवारि टोल पहुँचत रविकान्त भाय देखलैन जे शास्त्रीजी धूनमे कविता बाँचि रहला अछि आ दस-बारहटा श्रोता हुँहकारी दऽ रहल छैन। मन-मगन शास्त्रीजी, हाथक इशारासँ रविकान्त भाय सभकेँ बइसैल कहलखिन आ अपन कविताक अन्तिम चौपाइमे हाथ लगौलैन।

सामंजस करैत रविकान्त भाय, शास्त्रीजीक मनानुकूल अपनाकेँ निरमित करैत शास्त्रीजीक कविताक विराम होइत देख मूड़ी उठ। शास्त्रीजी पर पड़लैन तँ शास्त्रीजीकेँ भक्क खुजलैन। भक्क खुजिते मनमे उठलैन, व्यवहारानुकूल अपना बूते तँ अतिथि लोकनिकेँ समयपर ठंढा-गरम आकि चाह-पान नहि करा सकलयैन..! गामक तरक तह पकैत शास्त्रीजी बाहरी सभ साहित्यकारकेँ संगोर कए गाम दिस विदा भेला, मनमे पढ़ैत शुरुहे इच्छा रहैन जे समाजो दुनियाँक समाजसँ परिचित होअ आ बाहरियो समाज कर्मीक समाजसँ परिचित होअ। चारिये डेग जखन आगु बढ़ला, कि एकटा सुयस्तगर परिवारक गारजन सामने पड़लैन। हुनका देखते शास्त्रीजी बजला-

"हौ जगन्नाथ, आइ अपना गामक सौभाग्य जगल। इलाकाक नामी-गरामी साहित्यकार सभक पदार्पण भऽ रहल छैन से करा पान लगबह।"

शास्त्रीजीक विचारक मर्मकेँ जेना जगन्नाथ बूझि गेला तहिना बजला-

"हम अहाँ कि कोना बाँटल छी, ईहो दरवाजा तँ ओही गामक छी ने, जइ गाममे साहित्यकार सभकेँ बजौलिऐन हेन। सभ खर्च हम करब। तखन तँ कनी-विलम्ब हेब करत।"

-

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क उपाधि पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रुढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हिनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पनिगर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे बितौने छथि। 2001 ईस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्षेत्रमे एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअए लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साउन दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धाड़ैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योगदान लेल एस.एन.एस.

ग्लोबल समिति द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु श्रात्मा-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32.

आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. झाड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहनि कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखरि, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. एकझाड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. भूमियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दाहनी हाक, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार, 87. चौरस खेतक चौरस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. भौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल चेहरा जीतल रूप, 94. नहि जाकर पहिचान, 95. कर्णक रंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97. अन्तिम परीक्षा, 98. धनक खर्च, 99. नीक ठकान ठकलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संचरण, 102. एहि मन काज, 103. आएल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान तथा 105.

अयन सानी- लघू कथा संग्रह।

ऊनवनायन **अयन**

मंगव editorial.staff.videha@gmail.com**यन यOाउ।**

२.११.जगदीश प्रसाद मण्डल- माOयन (धानानाव्कि उयन्यास आOम यOान)



जगदीश प्रसाद मण्डल

मा७यन (धारावाहिक उपन्यास)

आ।०म य७ान

याँच वर्खक यछाति, कामसनक मन मानि गेलैन जे ओ अपन हाथक ऊँजान दुनूक नहि गँ जीवन चलब किछु न छी। मान आसानीसँ जीवनक गाडीकेँ खींच सकै छी।

न खाति-पीबैक अभाव आ न नोकरीक दनमाहा-नानसँ काम आमदनी यथिकेँ दख सुरक्षा सहा मन-मन आनन्दित जीवनक अनुभव कति य नहल छली। मात्र राजन बनाउवटाकेँ अपन काज सुरक्षा बुझै छैथ। उकटा गहन दाति नखि नन छैथ, जिनकन संस्थान घनक गानजनीसँ रनल छैन मान यनिवानक मुँहयुनुखीसँ। जतिक चलैत चंचलिया अपन वटा-युाहूसँ मगाउ कनि नोकनी कनै छैथ। उना, दनमाहाक नामयन जीवन-यायनटा छैन, मुदा स कामसन बुझि

नहुला अछि जे अनुमानित जेँ लगन दाऽऽकँ हुवा चाही गेँ दिनका नामयन मास-मास जमा कर्गे नहुव गँ सालम ओकवन जे दशाटन कनव गऽऽम हुनका गीर्थाटन कना दर्वेना जऽऽसँ ओगे गँ कहेल हुव कनग जे वटा-युगाहू छाति दलकैन गेया उा अयना कमाऽऽसँ अन्तिमा समयम साग गंगाक स्नान सालम ओकवन कनिग छैथा गऽऽसंग ऽऽीहा हुओग जे धर्मक नामयन कओल खर्च वऽऽमानी नहि हाऽऽओ।

सारानम जे गानजनी चंचलियाक छलैन गऽऽम वटा-युगाहूसँ मगउा रुला यछाऽऽग किछु माउ ललकैना माउक कानघ रुलैन जे अयन यनिवान आ दासन यनिवानक वीचक मानसिक दुनी, चंचलियाक मनारानकँ कामसन नीक जकाँ नहि वूझि सकला मुदा सुरेखा गह गक आँकि लली। जऽऽसँ अयन वच्चाक सना आ यनिवानक कयउा-लगा खींचवसँ लऽ कऽ चूल्हि लगक जनना-काठी धनिक सर काजक साधाअना रान चंचलियाक माथयन लादि दलैना जऽऽसँ चंचलियाकँ कखना न छुट्टी रटैन आ न अयन गानजनीक संस्कान जान मार्नेना अयन वटी जकाँ सुरेखा चंचलियाक वनि अयन रान उगानि लली। उाना, वटीक ग्रगि चंचलियाक मनम अखना ओहन धानघा वनल छैन जे कमाऽऽ-खटाऽऽवाली जखन वटी हाऽऽओ गखन यनघन (गन उा यनधन छी, गँओ जेँ सम्हन हुअओ गेँ कम सनाक उपयाग माना-यिगाकँ कनक चाही। मुदा उOाम ऽऽीहा ग्रश्न गँ अछिओ जे जन्मसँ विआह धनिक जे वीचक समय अछि, नओह समय वटीक निर्माणक सहा छी। माऽऽय न वटीकँ रानस कर्नैक लुनि सिखौथीन आकि यिगा। हँ, उाहुन स्त्रिगिम यिगा जनुन सिखौथीन, जखन मागृहीन वटी रऽ जाऽऽओ। उाना, यनिवानक महजालक जाल उाहुन अछिओ जे जगह वर्दैल यिगा सहा वटीक सना कनिग छैथ आ सासुन वसला

पछाति बेटी सङ्ग माता-पिताक सेवा करैत छथि।

ओना, चंचलियाक मनमे सदिकाल बनल रहैत छैन जे जकरा अन-पानि खाइ-पीबै छैक तकरा जँ ओकरा नीक चालि नहि करबै सङ्ग करैत रहत। तेँए बरीकाल चंचलिया सुरेन्द्राकेँ कहल करथिन-

"कनियाँ, जिनगीमे आशा की अछि, सुख-भोगसँ जिनगी जीब ली, यएह ने हएल मनुक्खक जिनगी।"

ओना, अपना बुनिमे चंचलिया बड़ी छली, मुदा सुरेन्द्राक देहमे तकर प्रभाव नइ पड़ै छलैन, ओना कनकनी-मनमनी नहि अबै छलैन, सङ्ग बाप नहियेँ अछि। तथापि सेवाकेँ हृदयसँ सेवा करबैक खियालसँ सुरेन्द्रा नकछाइऐन करब करैथ-

"दादी, सभसँ पैघ कुकर्म छी बाल-बच्चा हएब।"

'बाल-बच्चा' सुनि चंचलियाक मन दहेल जाइन। दहलाइत बाजैथ-

"कनियाँ, जेँ से लोक बुझि कऽ मानत तँ जेँ दुनियाँ चलत। जे दुनियाँ देखै छी से दुनियाँ नहि रहलेँ सकैए मुदा चालि तँ धरत मनुक्ख बुत। अहाँकेँ कोन दुख अछि, भगवान तेहेन कमासुत पति देलैन जे दिन दुना राति चौगुना। हाइए, पैयर बाल-बच्चाक सेवा-टहल करैल हमहूँ छीहे तखनो जँ सुख-भोग नहि करब तँ जीवन की हएत।"

सुरेन्द्रा अपन पी0एच0 बना मनसँ मनमे नापि चंचलियाकेँ तेना नाखए लगली जे चंचलिया साँस-रास अपन बेटा-पुताहुकेँ देसटा गानिक असीनवाद प्रति दिन दइ छली। संजोग बनल, पाँच बर्खक बीच सुरेन्द्राकेँ तीन सन्तान, तीनू बेटीए, भऽ गेलैन। सरकारक सुविधा रहने सुरेन्द्राकेँ अशरती महिलासँ सन्तान जन्मक पीड़ा कम होइ छलैन।

बेटी जन्मक प्रति कामसनक मनमे कहियो ई नहि उठलैन जे समाजक बीच पढ़ल-लिखल नौजवान युवक हमहूँ छी तँए किए ने नव पीढ़ीकेँ बुझा बेटा-बिआहक लेन-देनक प्रथाकेँ समाप्त करी। नीक कमाइओ रहन बेटी बिआहकेँ घरक सामान्य प्रक्रिया कामसन बुझै छैथ। तँए ई बुझैक खगता की छैन जे सभ कालमे शास्त्र-पुराणक विधान सभ बुझै छिऐ मुदा बिआह आ बिआहक दान-दहेज लइओ घटीमे सभ किछु बिसैर जाइ छी। जइ समाजमे बेटाक प्रति दहेज लेल पिताक मुँहपर दुकानदारी होइ छला, तही समाजमे उठल लोक मान दुकानदारी, अपन अखन मुठी भीति सठकपर सुटका गनए लगल अछि। पएह छी आइक समाज। अपन काजमे कामसन तेना मगन भऽ गेला, मान नमि गेला जे समाजक संग अपन पनिवारकेँ बिसैर गेला।

समाजक बीच दान-दहेजक बनहान देख कामसन दान-दहेजकेँ समाज चलैक प्रक्रिया, मान सामाजिक चलैन बुझि नहल छैथ। अखन तक कामसनक जानकारीमे दुटा ठीकानक जे आमदनी छलैन तइसँ उढ़िया-बावन आमदनी होअ लगलैन। उढ़िया-बावन आमदनी होइक प्रक्रियामे किछु खास-खास परिस्थिति रहलैन। पहिल ई रहलैन जे गाम-समाजमे जते काज अछि उइ काजकेँ सम्हारन बिना समाज कना ठाढ़ होएत। मुदा समाजो तँ समाज छी। बकता-बकती समस्या अछि आ समाधान करैक रस्ता अछिए। जते काज करैक मान ठीकानसँ काज लइक, शक्ति कामसनकेँ छलैन, आठ घन्टाक, तइसँ आगू बढ़ि पनह-चौदह घन्टा काज लिअ लगला।

दासन परिस्थिति कामसनकेँ ईहो संग दलकैन जे जानकार लोक जकाँ लेन-देन नहि नहलैन। गमैया लोक, भौआँ बुझि आँखि मुनि

विसवास कऎेा नहलेन। गड़्सँ व्राड़्नक माध्यमसँ किछु ऊयनी आमदनी सहा राड़्य जाड़् छैन। गसन ड़्हा यनिम्छिगि कामसनकँ संग दलकेन ज ड़्लाकाक जगक द्रकुनवला छैथ, सरक संग लन-दनक सम्बन्ध सहा वनि गेलैन, जड़्सँ नव समाजक नुयम ओकरा नव समाजक निर्माण सहा रलैन। जड़्सँ ओगला-येछला कमाड़्क आशाम लन-दन सहा सहयागी रलैन। घनसँ सटल, मान कामसनक घनक सटल, उछ कट्ठाक चौमास, ज वासभूमि सहा छी, ताकयन वढा कीनि ललैन। गैसंग गामक वीचम ज चौवट्टी अछि, गैठाम सहा कट्ठा रनि जमीन कीनलैन। ऊाना, कामसनक मनम ड़्हा नचिय नहल छलैन ज मकान वनैन कानावान कs सकै छी, नहैयाल गँ मकान वाहो, गैसंग ड़्हा गँ छलैह ज वैंकक नुयैआक आमदनी जकाँ आमदनी सहा अयन डैग। खाओन ज किछु कामसनक मनम नहल हानि मुदा ड़्हा गँ वलिहानी दल जा सकैत ज घन लगसँ गामक चौक हाड़्ग, गीन कास हटल वाजानम सहा उछ कट्ठा घनाओ कीनि लला। गैसंग हूसिघन किछ न हाड़्, मुदा घन वना कामसन अयन यनिवानकँ वजानु जीवन गक सहा यहूँचव कलैन।

याँच सालक वीच जहिना कामसनक जीवनम आर्थिक वाढि ओलैन तहिना नघुनीना आ मूनसनाकँ रव कओल। गव नहि, गामक लाकक वीच श्रमक प्रति आकर्षण सहा जगव कओल।

-

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाइ 1947 ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अहर्ता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हुनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे बीतेल केलाह। 2001 ईस्वीक पछाति साहित्य लेखन-क्रममे एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हुनक रचना प्रकाशित हुअ लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हुनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़ आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता ओ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा "गामक जिनगी" लघु कथा संग्रह लेल "विदेह सम्मान- 2011", "गामक जिनगी" व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- "टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011", मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साउन दरभंगा द्वारा- "वैदेह सम्मान-2012", विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा "नै धारैए" उपन्यास लेल "विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014", साहित्यमे समग्र योगदान

लेल एस.एन.एस. ग्लोबल समिनरी द्वारा "कौशिकी साहित्य सम्मान-2015", मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- "वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" सम्मान-2016", रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ग्राम्या-मण्डल द्वारा- "कौमुदी सम्मान- 2017", मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा "स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018", चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध "यात्री चेतना पुरस्कार- 2020", मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा "राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020", भारत सरकार द्वारा "साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021" तथा साहित्य ओ संस्कृति महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा "अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022"

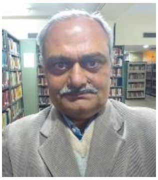
रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32.

आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. माउयन, 35. संकल्प, 36. अन्तिम ऊध, 37. कुष्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रवन्ध-निवन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सगमाउ, 41. समभौता, 42. गामक गमघैल, 43. वीनांगना- एकांकी। 44. गनगन, 45. वजन्ता-वुसन्ता- वीहैन कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. नटनी खड- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सगरैया पारोन, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समनथाॡक रूग, 54. अप्पन-वीरान, 55. वाल गोपाल, 56. एकमाउ, 57. उलवा चाउन, 58. पतमाउ, 59. गहैनगन हाथ, 60. लजविजी, 61. उकरू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसनाक धनम, 64. गुउ-खुट्टीक नाटी, 65. रूलहान, 66. खसैत गाछ, 67. एगहा आमक गाछ, 68. शुरविन्तक, 69. गाछयन सँ खसला, 70. उरियाउल गाम, 71. गुलनी दास, 72. मूउियाउल घन, 73. वीनांगना, 74. स्मृति शेष, 75. वटीक पैन्ख, 76. ब्रान्तियाग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दाहनी हाक, 80. सुहिमानी जिनगी, 81. दखल दिन, 82. गपक पियाहुल लाक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलगाउ रुमि, 86. चितवनक शिकार, 87. चौनस खगक चौनस उपज, 88. समयसँ पहिन चन किसान, 89. रौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. पसनाक माल, 92. कृषियाग, 93. हानल चहना जीगल नुप, 94. नहै जाकन पनिवान, 95. कर्गाक नंग कर्मक संग, 96. गामक सूनग वदैल गेल, 97. अन्तिम पनीआ, 98. घनक खर्च, 99. नीक Oकान Oकलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संचनध, 102. रनि मन काज,

103. आतल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान तथा 105. अयन साती- लघु कथा संग्रह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २० म खण्ड



नवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- २० म खण्ड

२०

प्रात एक संयोगसँ नागबाबा घूमैत-फिरैत उतनिबानिटोल पहुँचलाह। उतनिबानिटोल हुनकर जन्मस्थान अछि। गाँ गाह-बगाह ओ ओतए अबैत रहैथ छथि। ओहुठामसँ कोकिलगाछ हुनकर आश्रमम जानकीधाम जाइत रहैत अछि। गाम ओलाक बाद ओ अपन पैतृक घरम नहि रहैत छथि। याकठीक गाछसँ सटल नागबाबाक सहयोगसँ ओतए मंदिर बनाओल गेल। दक्षिनबानिटोल लोकसभ ओहि समयम नागबाबाक सहयोग नहि कएने रहथि। संभवतः हुनकर सभक अहं बाधक भए गेल रहए। मुदा नागबाबा ककरासँ किछु नहि लेलथि। कहाँदनि नागबाबाक ओकरा एका सरटा खर्च दलकैक। गाम अएलाक बाद नागबाबा ओही मंदिरमे रहैत छलाह। नागबाबाक अविवाहि ओहिठाम लोकक कनमान लागि गेल। लग-

पासम जे कओ हुनका अबैत देखलक,हुनकर पाछु-पाछु मंदिर धरि चलि आएल । नागबाबा मंदिरपर एलाक बाद लोकसभसँ हालचाल लैत रहथि कि जयन्त ओतए पहुँचि गेलाह। ओ हुनका साष्टांग प्रणाम कलनि । नागबाबाकेँ जयन्तक सभटा समाचार पता रहनि ।

"कालीकान्त अहाँक समाचार सुनि बहुत चिंतामे पड़ि गेल छथि । हुनक कहलापर हम गाम एलहुँ अछि । ओना हमरा केदारनाथ -बद्रीनाथ जएबाक कार्यक्रम छल। मुदा कालीकान्त अड़ि गेलाह । कहए लगलाह-

"जयन्त गाममे बहुत संकटमे पड़ि गेल छथि। हुनका लए अबिअनु । जानकीधाममे हुनकर बहुत आवश्यकता अछि ।"

नागबाबाक बात सुनि जयन्त गुनंग करैत छथि-

"हम अहाँक उपकारकेँ नहि बिसरि सकैत छी । मुदा जन्मभूमिक ऋण के उतारत? पाठशालाक काज जाधरि आगू नहि बढ़त हमरा शांति नहि भेटि सकैत अछि ।"-जयन्त बजलाह ।

"अहाँक विचार मे बहुत उत्तम अछि । मुदा एहिमे सभसँ बाधक मे अहाँक अपन समाज कए रहल छथि।"-नागबाबा बजलाह ।

"आब अहाँ आबि गेल छी । सभटा सलटि जैत । हम मे निर्णय लए चुकल छी । हमर जीवन मे एही पाठशालाक हेतु समर्पित अछि आ रहत । आगू ईश्वरक इच्छा ।"-जयन्त बजलाह।

"हमसभ जयन्तकेँ संग छी । पाठशाला अवश्य बनि कए रहत । एहि हेतु हमसभ सर्वस्व त्याग करबाक हेतु तैयार छी।"- ओनिबानि टोलक लोकसभ बाजल ।

"अहाँ लोकनिक उत्साह प्रशंसनीय थिक । परंतु पाठशाला कोनो एकदिनक चीज नहि अछि । एहि हेतु पाइ, शिक्षक चाही, प्रतिभाशाली विद्यार्थी चाही आ सरकारसँ बेसी शांति चाही जाहिसँ शिक्षाक हेतु उचित आ आवश्यक वातावरण बनैक । संस्कार-प्रसाद कलासँ तँ पाठशाला नहि चलि सकैत अछि । -नागबाबा बजलाह।
सोझाँ पाठशालापर दूनू टोलक लोक जमा रहए । नागबाबा संगे आबि गेल रहथि । उत्तरबारिटोलक बच्चासँ बूढ़ धरि पहुँचि गेल रहए । गोविंद आ माधव नागबाबासँ सटल बैसल रहथि। दछिनबारिटोलक लोकसभ संग बनाबटी आबि रहल छलाह। सुधाकर अपन लठैतसभक संग अविराहि बाजए लगलाह-
"नागबाबा एहिना अपन पाप धोअ लथि तखन पाठशाला बनबितथि ।
"की बाजि रहल छह आ ककरा कहि रहल छहक ई बात छह?"-कउ गोना बाजल ।
"तोरा सभकेँ किछु नहि बूझल छह तँ किएक बजैत छह? कोनो जरूरी अछि जे सभ बातमे टाँग दए करी ।"-सुधाकर बाजल।
"हूँ अंट-संट बजैत रहबह आ लोक सुनैत रहत, ई जमाना गेलैक । आब जँ नहि सुधरबह तँ तोहर लठैतक बल कैक दिन चलतह?"-दासन गोना बाजल ।
"खबरदार! बिना बूझने-सुझने एहि तरहक बात बजबाक परिणाम भोगबाक हेतु सदा तैयार रहह । कतबा किछु बदलि गेलैक अछि ,मुदा तोहरसँ की?-सुधाकर बाजल ।
"अहाँ कहए की चाहैत छी, ई साफ-साफ किएक नहि बजैत छी जे जिलेबी जकाँ बातकेँ घुमा रहल छी।"

"नागबाबायन हुनाक आश्रय नहेक। ज्ञान बँचाबक हेतु गहिआसँ गामसँ भागि कऽ बबाजी भऽ गेल अछि आ सभकेँ ठकैत फिरि रहल अछि। "-सुधाकर बाजल।

"सत्य कहि रहल छथि, सुधाकर।"-हुनकर समर्थन करैत लटोर सभ गरजल।

"तूँ कोना थानदार नहि छह जे नागबाबाक करक जाँच करबह। नागबाबा एहिगामक प्रतिष्ठित संत छथि आ हुनका लोकनिकेँ ओ निरंतर कल्याण कएलनि अछि। हमसभ हुनकर खिलाफ एकोशब्द नहि सुनि सकैत छी।-गोविंद बाजल।

बाद-विवाद बढैत देखि नागबाबा हस्तक्षेप करैत बजलाह-

"हम जे छी, नहि छी ताहि लेल ककरो परसाद रहबाक प्रयोजन नहि अछि, ने हमरा ककरो प्रमाणपत्र चाही। मुदा ई स्पष्ट कहू जे अहाँ जयन्तक पाछू किएक पड़ल रहैत छिअनि। ओ अपन पैतृक जगह पर पाठशाला बनाबऽ चाहैत छथि तँ अहाँकेँ एहिमे की परसानी अछि? शासन बाप जे जागिर अहाँक लटोरसभ हुनका लग की करऽ गेल रहऽ? एतब नहि -जानकीधामम सन्त श्रद्धासभ पहुँचल रहथि आ हुनकर शोधग्रंथकेँ चानबऽम लागल रहथि। जँ हम कालीकान्तकेँ नहि मनबितिअनि तँ एकरासभकेँ फाँसी हएल रहैत।"-नागबाबा बजलाह।

"ओकरासभकेँ जखन जे होइक नहि होइक, मुदा ताना तँ अखन थानाम बंद कएल जाए। देखहक सामने दिस। पुलिस आबि रहल अछि।"-सुधाकर बजलाह। बात सही रहैक। एक दर्जन पुलिस जीपमे पाठशाला दिस आबि रहल छल। पुलिसकेँ अबैत देखितहि ओतऽ पड़ाहि लागि गेल। दछिनबारिटोलक लोकसभ

ऊँघए-ल ठाढ़ए-ल लागल । मुदा उपरबारि टोलक लोकसभ टस सँ मस नहि भेल ।

पुलिस आएल जरूर, मुदा ओ तँ अबितहि नागबाबाकेँ दंडवत प्रणाम केलक । बाबू लखेत आ सुधाकरकेँ गट्टा धेलक आ अपना संगे जीपपर बैसा कए थाना लए चलि गेल ।

बैसारमे जोरसँ नारा लागल-

"नागबाबाक जय!"

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अतर डीह, मातृक: सिम्रिआ घाटी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), रेलवे मन्त्रालयमे मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. प्रसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.ऊँघए थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि गेल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल

समय(उपन्यास) २०.प्रतिविम्ब(उपन्यास) २१.बदलि गेल अछि सबकिछु(उपन्यास) २२.नाष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि गेल छलि वसुधा(उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.डॉ किशन कारीगर- मैथिली साहित्य मे सालकन साहित्यकार सब क असलियत



डॉ. किशन कारीगर

मैथिली साहित्य म सालकन साहित्यकार सब क असलियत

मैथिली साहित्य म सालकन साहित्यकार सब क माजन की ह्ुी? कुछो न. नै काना सम्मान वाग आ नै दै जाुी ह्ुु काना साहित्यिक आयाजन सब म हकान. हं ज सालकन सब वारहन लाॅवी क यिछलगुआ हनिया वनल नहलै आ असनीया छवा करै गकना अनु क ग वलु हकान हकान नहै ह्ुु. आ उद यिछलगुआ हाहकानी सब करी मैथिली साहित्यक गिमाहनादी दलाल सवहक विनाध नै कनग. उाकना अनु क काना साहित्यिक मंच वनवे ल कहियो ग ओगक न वहन्ना वाला ज हमना छुट्टी नै ये ग क अुु हन सब म यउग कनी (धेनज नाखु यूनुस्कानक विनाध नै कनियो नाना प्रकान मनावल गाउवाक प्रयास कनग जहिना वाहननाद लाॅवी नला सब सालकन साहित्यकान क याजना वना आगु नै वढै दग उाहिना ुु यिछलगुआ सालकन साहित्यकान सब सालकन क आगु नै वढाउग आ न वढअ दग. हँ यिछलगुआयनी क जी हझनी मानक रैज क ओकना अनु क अयन यट हनक चाही.

मैथिली साहित्य म दु गनहक साहित्यकान सब यै.

यहिलुका

1. अयन माुी क वाली छाउ मैथिली मानक रजै गवै म वहाल. किओ ग गव नाहन लाॅवी म0ाधीश सब कनी मनी ओकना सवक

माजन दगै.

2. साहित्यिक आयाजन सव म हकान रटै लार आ कनि मनी नचना छये लार मैथिल म०ाधीश सवहक गुलामी कनव. किञ ग सवटा साहित्यिक मंच संस्था वारल सव वनौन छै आ सव ०ाम ठाकन कञा हऽऽी.

3. कहिया मैथिली साहित्य क कुकृत्यक विनाध नै कनै जगै. ञना कनला यन ग मैथिली मंच ञकना सवक वाऽऽीन दगै आ नक्षा नाकन नहगै.

4. यूनुस्थान याग लार मैथिली लौवी क वनधनंदन कनग ठाहिना जना वाघ सवटा माउस खा (थाञवू हञी गुञी माउस ननहिया लै छाञ दलक.

5.करीया सालकन साहित्यकान क मंच निर्माध कनै लै नै साचग.

6. काना साहित्यिक आयाजन ना लौवी विनाध वन म चाननूकवा वनल नियग्मा नहै जाञग आ उनट उयदश दग ज मैथिली साहित्य म ठाहिना हाऽऽग आवि नहलै. की कनवै लै.

7. सालकन साहित्यकान सवक माजन दियावै लै काना प्रयास जगन नै कनग. हं यिछलगुआयनी अयन नाम माजन लै अवस्म हा हा म नहग.

8. ककना उयजा रला हाला यन काना अनाज नै उ०ाउग नै विनाध कला यन रून ठाकन नाम छंटा जगै.

9. याग मंच लार अयन मूल संस्कृति आ निध नवहान छाञ वरलौटी धानध क सालकन क नाम हंसानग कनग आ अयना क खुव काविल आ मातृभाषा प्रमी कहाउग.

10. मैथिली मानक रैज गाऽऽव दाउ सूगाऽऽन मैथिली ला॑वी क

चमवे कनव आ साहित्यकान हवाक गुमान चून नवह. किछ ग सालकन क अयन साहित्यिक मंच यत्र यत्रिका सव छै न सवटा वाग्नक अधीन.

दासन गनहक

1. सालकन साहित्यकान सव मं (थाउ वहुग संघर्ष कनै वला साहित्यकान सव यै ज मंच निर्माण कनै लै प्रयास ग कनैछ लकिन गहन मानसिक आर्थिक सहजाग नै गटलै. गझ्या वाग्न लाॅवी सवहक षयन्त्रक विनाध क गाझ्न हजिहग सवटा सहै लै ववश नहैछ.

2. छकना सवक मान सम्मान क हिकीन नहै छै आ काना लौवी मOाधीशक चक्कान चाझ्ल म नै हंसैछ.

3.सालकन साहित्यकान सवक जागवाक प्रयास कनैय लकिन सहलता नै मिललै.

4. झ्ी संघर्षशील सालकन साहित्यकान सव समावशी मैथिली लै प्रयास कनै जाझ्ीछ लकिन यिछलगुआ सालकन आ अगुआ वाग्न (गेंग छकना सवक मनावल गाउे म नहैछ.

5. सुयग गय वजै आ मैथिली लौवी क वाजिव विनाध कानणे झ्ी सव हनदम वानल नहैझ्छ.

6. मिथिला मैथिली म नव सुधान नव विचान लै संघर्ष कनैग नहलै यै.

7. समावशी मैथिली लै कगका लाहा लछाझ्ी लछव वमगलवा उयहासक यात्र वनव गझ्या मैथिली साहित्य कार्यक्रम सवम जनुनी सुधान लै अनाज उOवैग नहल.

४. सालकेर साहित्य मंच क निर्माण लै जरूरी काज करै म लागल रहला. लेकिन सालकेर सहजागक ध्यान अरावन रहला.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा अध्ययन हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा

कथा १
लाल रौशी

येठला अऽगालिस वर्खक सरए नकाति घ्नस्फ कनेग ओ वनक जा७ याछाँ छाति दलक। कदवी छै जा७ मासम नृ००य आकि दु०००७ मृदा नृ०० गोक मदग ज वसादव काOना। ऊँ दाम यूठवे गँ मा(धा मास सौंस दद यसीनासँ ग्न-वम्न रS जा७गा। जदाँ धनि दु००यक स्र अवेग अछि गँ ००ी सुख प्रायः सवदक कयानम लिखल नै अछि। ऊँ किया कि(शानानस्नाक वालक-वालिका छैथ गँ नागि सयना००ग विर्णग छैन, आ वृ७दा-वृ७द्दीक गँ का(थ नै यृछ्ठ कि७क गँ आ००न ऊा वृ८ एलाइँ मृदा ७दन कागका जा७ काS ऊा लाकैन दखन छैथ आ खयन छैथा। गँ७ दलक नृयम कनाक घा७ जकाँ द(थ्ठ-दछाक असथानयन गन्ताक-गन्ता धिया-यृता सादनल छैना। वाल-वव्राक समर्थ नदवाक कान(ध ऊाकना सदकँ गँ अयन खा७-खला७सँ यलखेग नदि। गदूयन सँ ऊँ काना यादून-यनख चल आवैथ

ऐ घरक सर्वथा अभाव। सभ घरकेँ बेटा-पुतोहु अलगे छलन। एँड़ बूढ़ा- बूढ़ी लेल ऐ माघ मासक जाड़ प्राणक हान बनल रहैत छैन।

काना गहन अवसर नै रहए पबै छैन जे समय सँ उठि कहबीसँ किछु लाभ उठबैथ। एँड़ डामहुन बूढ़ी काना कान म ध्वाकनी लगा पुआर मे धँसिआएल रहैत छैथ। आ ओमहुन बूढ़ा दलानक काना कानम पाना पानीक संग जाड़सँ संघर्ष करैत रहैत छैथ। काना गरहुँ दुनू परानी (बूढ़ा-बूढ़ी) नाति खयक लेल मजबूर। मुदा स का दिन धनि?

एक दिन मौका पाबि बूढ़ा बूढ़ीकेँ हाक दैत छथिन- "सुनै छी हाथ-पएर जाड़ ठिठुरि रहल अछि, कनी काना मालीस लहसुन तेल पका कऽ लने आबा ने। बूढ़ी आँगनसँ उताना दैत छथिन हुँ हुँ सुनै छिऐ एत जानसँ किए हाक दैत छी, काना की हम बहीर छी? लने आबै छिऐ। ताब माल घरम आगि तापा। बूढ़ा पुनः बाजि उठैत छैथ-

"हँ जल्दी सँ औत हम माल घरम छी।"

बूढ़ी करीब दस मिनटक बाद मालीस लहसुन तेल पका दुनूख सँ हाक दैत छथिन-

"काएड छी हुनैया लौ।"

बूढ़ा हनि बाजि उठैत छैथ-

"एम्हर लने आबा ने हुनैया छिऐ।"

बूढ़ी लग अबैत बाजि उठैत छैथ-

"ऐठी किछा नै बूझै छी? जे बटी-पुतोहुवला आँगना-घर रहलैत। सुनौ तेल लगा दैत छिऐ।"

बूढ़ा पुआरक बिछौनपर ओंघरा जाइ छथि आ बूढ़ी तरक मालीश करए लगै छथिन। कनी कालक बाद बूढ़ा तर लगबैत तरमा जाइ छथि। एम्हरसँ बूढ़ीकेँ पुछै छथिन-

"हारल हारम रही छै की? बच्चा सभकेँ अँगना दऽ आबौ आ ई कऽ सुतैत नहोए आ ई ओइ आगि तापा।"

बूढ़ी आँगन जा धिया-पुताकेँ पुताह सभकेँ दए अपन बूढ़ा लग आबि जाइ छथि आ मालक घरमे पजरल घूरा लग बैस आगि तापए लगैत छथि। दुनू परानीक तर-ऊपर करैत बूढ़ा हाथ-पएर सुन-बुनबए लगैत छथि। आ अपन दहिना हाथ बूढ़ीक माथा... हाथ दए बाजि उठैत छथि एकरा एक्को नहि काला बातक धियान नै रहै छइ। कहलो तँ ताकक जाए हाइत छै... कहैत बूढ़ीकेँ पाँजमे ऊ। आ पुआरक बिछौनपर ओंघरा जाइ छथि। कनीए जा कि लड्डा-पटी हाइत आकि तखन आँगनसँ पाता-पारी हा कऽ सुतैल बाबा किलाल करैत मालक घर दिस दौड़ पड़ैत अछि। बूढ़ी बाजि उठैत छथि-

"छाडौ ने, छाडौ धिया-पुता सभ आबि रहल छइ।"

आ दुनू परानी मात्र बूढ़ा-बूढ़ी एक-दासनासँ धराऊ कऽ अलग रऽ जाइ छथि।

रहल जवान-जआनक तर, जवानीक धार पाबि जाता तरमाउल रहैत अछि। बूढ़ो तँ दु परानी जवान-जआन हाथि आ ऊपरमे रजाइ पलल हा तँ जाताकेँ जाऊम पसीना छूटए लगैत छइ। मुदा प्रकृति तँ स्थिर रहल नहि। ऊ तँ अपना कालक्रम चलैत रहल।

बितल जाउ मास आएल सनसनी पूजा ऊऊए लगल तातानरधम रंग-अबीर चारू कात ताति-पातपर चीऊ-चुनमुनी चहकए लगल।

काल्हि धिया-पुताकेँ मुँह दुसब शुरू कऽ देलक। आमक गाछ मंजरसँ महमह करए लागल। मुनगा फूल झरए लागल, नाहि, गाछी, तीसी आ सरसोम पीअर-पीअर फूल सेहो लहलहाए लागल। बागबगैचा किछु दिनक नंगक भऽ गेल। बाबूकाग महमह करैत। कथा-कुटमैती शुरू भऽ गेल। कथकिया सभ गाम-गाम जाए-आबए लागल। कथा भनिछला उजर लाल-पीअर धोती आ पैघ लाठी हुनका लाल-लाल आँखि अपन मैथिल सभ्यताक परिचए दिअ लागल। नेना-भुटका सभ फगुआहट गीत गाबए लागल-

"ऐ बड़की भौजी, कनियाँ विदाह, का दिन रहबै आब हम कुमार देखैत देखैत हमरा ठाढ़ि भऽ गेलै अहाँ बहिनसँ हमरा लए भऽ गेलै..."।

हरवाहा-चरवाहा सभ फगुआसँ सम्बन्धित मैथिली आ राजपूती गीत गाबए लागल। बाध-बनमे माला-महींस चराबए आ घर-घसवहिनीकेँ देखैत ठाढ़ि गीत गाबए-

"पाहुन लहंगा उठा दुन नीमौटसँ...।"

घसवहिनी सभ सेहो उघाना देनाइ नै बिसराए उहो सभ गाबए ठाढ़ि गीत- "नउा छाउा बउान खसला...।"

बूढ़ो जा जाउक खमानी लोक सभ फागुनमे उगाए बाहैत। जिनका परिवारमे नव विआह भेल रहैन, बूढ़ो तँ हुनकर छउा आँगुर घीअमे आखिर ओ समयसँ भेला गोधनपुर गामक नामदेव बाबूक छोटका बउबा उगन किएक न लागि उठैबैथ। किएक तँ एहीबेर बाढ़ि दिसम्बर 2009 ईस्वीमे हुनक अग्रज दुर्गानन्दजीक विआह देनरंगा जिलाक बनुआना गाममे सम्पन्न भेल छलैन। तँए पैयासँ तँ उन जरूर रहैन मुदा नवकि कनियाँ अर्थात लाल भौजीसँ खूब नंग-

रभेस होइ छलैन।

उगरक भौजी सेहो कनीये एक्कैस बर्खक छली। बीस बसन्त तँ सूखल-साखल बितौलैन मुदा एक्कैसम बसन्त बुझु जे ओ तँ रससँ उपक्रम करै छली। बस पाँच हाथ रमहर-छरगर, देहो दशा बस भरल-पूरल गाल तँ बुझु होइ ब्रीत टमाटर जकाँ लाल टरैस आ बस गुदगर। आँखि एहेन करगर जे जकरा दिस एक बेर ताकि देथिन तँ बुझु सानि एक्को (ठाय नै खसैत मुदा ओ बचाए घाएल भऽ जाइत। हुनकर शरीर तँ बुझु सुब्बा गहुमन साँप जकाँ फुफकार छोड़ै छलैन। नव विवाहित भलोक कान(ल सदिखन भरि बाँहि चूड़ी आ भरि हाथ मेहदी, आनासँ रंगल पएर, भरि आँखि काजर आ भरि माङ सेनूर लाल टुहटुह करैत। किया जँ (धाखासँ देखैत तँ आँखि चोन्हा जाइत। सभसँ सुन्दर हुनक वस्त्राभूषणक पहिरब आ ओढ़ब छैन। एक तँ (गोरि-नारि तैपर सँ सुगा पंखी रंगक साड़ी आ बलाउज आ ओहीक तरम उज्जर धप-धप करैत ब्रेसियर जे पहिरैथ ओकर उज्जरका फिता, से देख उगरकँ तँ मोगरि भऽ जाइ छलैन। ओ मन-मन बिचारैथ जे एबर फगुआम लाल भौजीकँ सभ तरहेँ लाल कऽ कए देबैन। दिन बितैत कोना कि देरी लगैत छइ। संयोग एहेन जे एबर फगुओ पहिल मार्चम छल। जेना-जेना फगुआ लगिचाइल जाए उगरक मना तना-तना लाल भौजीक जुआनीसँ बौराइल जाइ छलैन।

फगुआसँ एक दिन पहिर उगर दरभंगा अपना ड्यूटीपर सँ गाम अबैत छैथ। किलो दुइ मधुर तत किलो एक अंगुर, आसन काजू आ दू पैकेट किशमीस आ चारि-चारि पैकेट हरियर लाल रंग सेहो हाथम रंगल आनल संग-संग दू शीशी तम सेहो तत आनल।

पी०एन एम.आर. बला बैग। तखन आँगनसँ सभैन डोलानपर जाइ छथि आ डाँरसँ हाक दै छथिन-

"भौजी, ई लाल भौजी कतए गेलौं, आउ-आउ लग आउ हम छी तखन।"

लाल भौजी पलंगपर सँ उठि बाहर अबै छथि। ताबे तखन पी०एनक बैग निचाँ राखि एक हाथे मधुरक पैकेट लाल भौजीक हाथमे दैत आ दहिना हाथमे पहिलसँ धोआल लाल रंग लाल भौजीक बामा गालपर लगबै आ दहिना गालमे चुम्मा लैत बाजि उठैत छथि-

"अधला नै मानब हगुआ छी। भौजी ई भौजी आब कहू मन करैत लगैए?"

लाल भौजी चौवनियाँ मुस्की दैत बाजलि-

"धुर जाउ, हमरा अहाँक ऐली चालि नै सोहाइए।" बाजि लाल भौजी अपना पलंगपर चलि जाइ छथि। आ तखन अपन कोठलीमा नागि रहि तखनक आँखिमे नीन नै रहल। सुतलियो राति नहि-नहि मान पड़ि उठैत छैन भौजी, लाल भौजी...।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१७.दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

<u>विदेह लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज</u>

ई अंकमे प्रस्तुत अछि दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा अध्ययन हेतु समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा

कथा २

तारुन कर्महीन

आइ रवि अछि 6 जून 2003। जहि दिन एक बजे छल जे राज्यक प्रधानमंत्री मिथिलांचलक धरती निर्मली (जे सएह एतहुँ, सएह दृष्टिकोणसँ सएह मामलामे किछु बेसीए पिछड़ल अछि) ऐला। आ कोसीपर बनs बला पुल पुलक शिलान्यास करता।

आठक दुपहरिया, सएकड़ो लोक सएह गर्मी-गुमारसँ अकुलियाएल, सबहक देह घाम-पसीना तर-बतर मुदा सएह किया मंत्रीजीकँ देखबाक लेल ठाढ़ रहा-रहान, ठाढ़ हिनिशान। ओहुना बुझना जाइ छल जे खेत-पथार, बाध-बोनसँ आगि उठि रहल अछि, सड़कपर धूरा-माटिक तूफ लौ, सन-सन सन-सन हवा आ लू बहैत। एखन ठाढ़ दिन पन्द्रहाक लोक सबहक उजाहि उठल, सगर बाजार, बाजारक चारूकात, जे पूर्णतृप्त अतिक्रमित छल, प्रशासनक चुस्ती-दुरुस्तीसँ एकदम साफ-सुथरा। ओना, जना ओना मक-मक करैत।

खूब प्रचार-प्रसार रहल, जगह-जगह पर्चा-पोस्टर साटल गेल, ताहूसँ अधिकसँ अधिक लोक आबि मंत्रीजीक स्वागतसँ लागि उठैथ। ठाढ़ दिनक रौदा ओहुना बुझना जाइ छल जना छाहरो रौद आ गर्मीसँ हिनिशान रहि कोनो छाहरि ताकि रहल अछि।

किछुए काल पछाति ओहुना बुझना गेल जे चारूकात नाट कोलाहलक हिल्लु दिस मुड़ि गेल हो जेना मंत्रीजीक आगमन नय छल। जखन ताकू मूड़ीए-मूड़ी, कपार-कपार, लोकहिपर लोक, लोकक मूड़ी छोड़ि आन किछु नहि। सएह एक दारोगाकँ धकियबैत, आगू बढ़बाक अथक प्रयास करैत, किछु सफल रहला, आ असफल बसी। साँझ

पाछाँ-पाछाँ लोकक लग गप्पशप्प भऽ लगला। ओ जौं नहि छथि से भौं नहि गेला। एकर मिमिया-आगू या पाछू हवाक साहस नै कऽ सकला। एतबामे सभहक आँखि आकाशमे हेलाइत किछुनयन पड़ल। किछु गोटे बढ़-बढ़िया नाओं छै भोकल। किछु गोटे कहै छै हुँ-हुँ मान पड़ल हली-कायल। सभसँ पहिने उगनला सनाक जनान पछाइत प्रधान मंत्रीजी, जान-जानसँ हल्ला हामय लगल-

"इन्कलाब जिन्दाबाद!"

"जिन्दाबाद-जिन्दाबाद। "

"आज का नया कैसा हो?"

... जैसा हो। "

तकराबाद शुरू भेल हाथल-हुथलक कार्यक्रम सभ किया कान पाति सुनऽ लगला- बीच-बीचमे हुनि नअरे नानानाजी। इन्कलाब-जिन्दाबाद। जिन्दाबाद-जिन्दाबाद।। ओ तनहुँ ओ सभहक मध्य हाथलक कर्यक्रम समाप्त भेल। सभ अपन-अपन घरक बाट धेलैन। हुनक सभहक संग हमहूँ अपन बासायन एलौं। हाथ-पैर धोइत जाकि खनसीयन बैसलौं देखै छी एकटा बकरी हमन आगा-पाछा पूछैत अबैत छैथ आ अपन पनिबए ओ तनहुँ देत छैथ- श्रीमान् सम्हनाः अपन हमना नै चिन्ह सकलौं! हम कनी अकबकाइत पूछलयैन, से की? अपन पहिने बैसल गोँ जाउ, सामने नाखल ब्रन्वयन बैसत भ बजला-

"हम छी कर्मनीन। "

एतब सुनितो कनेक सुप-सन चाकन भऽ गेला। हृदए आनन्दातिरेकसँ भूमि उठल। नै जानि किएक आँखिसँ दू ठोप नोन खसि पड़ल। भ बजला- "श्रीमान् अपन कनौत किएक छी?

हम कहलयैन-

"तो नै बूझबहक। तोना दखत हम अपन आयकँ नै नाकि सकलौं, आ ओही नान गँ खुशीक अछि। आओही ओहन सौराश्र ज याहून वनि ठाम ओलह, अहा राश्र हमना। ठा गँ अवाक। किछु नै वजला, वजला किछु कालक यश्चात ज-

"श्रीमान् हमना चनिवजिया ताठी छुटि गेल। हम आओ अपन ठाम नहव आ राजना कनवा। सुनित हर्ष रहल ज कर्मठीन काम ठमन म ओाक स्पष्टवादी, सर किछु खाँओलवा छाठा कऽ वजनिहान, ज वाह अहाँकँ कष्ट हूअत ना खुशी।

कनक काल यछाओत हमना लाकैन वाह-यान कनऽ लल चौक दिस निदा रहलौं। गामक चौक। वठकीटा याखनीक गाछ चानुकात चवूतनासँ घनल। गामक अधिकांश लाक वाह-यान धीवाक लल साँस-यनात ठात आवैथ। वगलम छल हूसियाही दुसाधक धान-गहूम यीसऽ वला मीशील, आ घाघना मियाँक काटाक दाकान। सटल छल मूनसनाक कनीयँटा नान-तलक दाकान। आ वगलम छल नामा मूखियाक मूनही, कवठी, मटन, घूघनी आ ओचना माछक चखना वला ओकचानी दल दाकान। दस ठग हटि कऽ छल अगहनियाँ यसीनीयाँक ताठीक दाकान, ठाम दर्जना घैल ताठीसँ रहल, यूव मूहँ नाखल आ घैलसँ वहना नहल छल ज वूलवूला, वूलवूला-वूलवूलाकँ ससैन घैलक यन तनम नाखल वीनवायन खसैत छल। किछु यीयाकक आगूम नाखल छलै दु वचाही ताठी, मूनही, कवठी आ ओचना माछक चखना। लाक सर ताठी यीव मूमय, मन मस्त छलै सवहक आ समवत स्वनम गवैत छल ओही गीत-

"ताठीवाली ताठी यी आ दऽ... ताठ वला ताठी दऽ खझन वला

कम... गाछीपाती गाछी पिआ दऽ। दृश्य छल लाजबाब!
सभ किछु देखैत हमरा लोकनि पहुँचलौं ओझा कक्काक घरक दलानपर। एकटा घरक दलान आ तीन नास लोक घर पीबिनिहार।
जामुनक गाछक चबूतरापर बैसल हम सोच रहल-
"ओझा काका दु कय घर हमरा सभकेँ दिहल.. करीब दस मिनटक बाद ओझा काका एकटा निकलि कय, ओ कानायन करी स्कूल छलै नव आएल घर। एह घर गाँ घर छल! महीसक दुधक अभाव घर, एका ठाय धानक छपि नहि, मीठगर भाव, ठानम ठान सटऽ बला घर। अर्थात् घरक घर।
घर पीब कँचा दऽ हमरा लोकनि बढलौं बौआ कक्काक धान दलान दिस। लग पहुँचैत कहलथिन-
"भोर लगै छी काका करी दु सौकी धान दव"।
कठघानाम बैसल बौआ काका पूछलैन-
"सोझ नीक छह किने? बहुत दिनक बाद देखलियह, कहह काना की हालचाल छह अनजिहुक आ घोलुक?"
पूछैत धान लगबए लगला।
"हँ काका सभ अहाँ सबहक असीनबाद छी। सभ किया नीक - सुख छी। "
बौआ काका धान लगा आगाँ बढौलैन। हमरा लोकनि धानक आनन्द लबए लगलौं। धाना भाव सुआदगर। किएक गाँ शुद्ध दधी धान छल। गरुम बनमा बनैवक। एक गाँ मिथिला दासन मैथिल ऊपनसँ बनमा बनैवक धान, बौआ कक्काक लगौल। अपूर्व!
गप-सप्पक क्रम लोक सभसँ सँट रहल, कुशल- छेम सभ एक-

दासनाक दाल चाल पूछैत सरसँ कर्मचीनक यनिचव कनौलयैन। नै जानि ज दिनकाम कान जदून गुम्र छलै ज जिनकासँ यनिचव कनवयैन सद दूनकासँ प्रदानित दS जाछ्थ। अकाछ्न नै सकलौं ज कर्मचीनक मनम कान कल्पना जन्म लS नदल छलछ्। उा गँ जकना दम कल्पना मात्र वूसै छलौं स गँ साकान कनक प्रवल सम्दानना लैत नाति खवाक काल वजला...।

दूनू (गाटाक आगुम दुटा थानी नाखल छल, जछ्म कनीयँटा कटानी, आ कटानीम घीउाक गीमन खउहीक दालि दल, दु दॉक यियाज आ नाह्यिटा टूकउी छल अचाउक, आन छल काँच मनचाछ्ी जक-जक प्रति, प्रति थाउीम। लाटा आ गिलास जलसँ दनल छल, आ दूनू (गान वैसल नदी खवाक लल, गावम अनविह्न आ घालु दूनू वौआ टीशन यठि कS आजला। कर्मचीनजीकँ (गाउ लागि असीननाद लS अयन-अयन छियलीम नाटी लS खैज लगला। दाजनक व्राम किछु काल धनि गुम्म-सुम्म नदला यछाछ्न कर्मचीनजी वजला- "श्रीमान् मन दाछ्न अछि ज जँ अयन आदश दी गँ दमहूँ जकटा क्लीनिक खालि प्रैक्टिस कनितौं। सुनि मन दर्ष दल ज दिनकाम किछु कनवाक उत्साद छैन। आ गामक प्रति जाक सिनद ज कतौ आन ठाम नै जा कज गामम सवा कनता। नै गँ प्रायः यनदश खटS वलाक गँ उजादि उठल छछ्। जदून सन वूसना जाछ्न ज सद सुख यनदशम छै! मुदा छ्ी गँ दमना लाकनक (धाखा छी (धाखा! दम कदज चादै छी ज जँ ददम खून अछि गँ गामाम किया गुख नै नदता। जक गँ साधानण मजूनी 80 टाकासँ 150 टाका धनि अछि, गदूयन जन-मजदूनक अदाव। दस दिन खुशामद कनियौ गखन जक दिन आवि काज कज दत। उावि नै माज-वाय, दाय-

होएताह, पर-परिवार बाल-बच्चाक संग रहबाक सुख कोना पओत गाममे ने? आकि परदेशमे? उत्तर एकटा होइत- गाममे, तखन अहीं सभ कहूँ जे परदेश खटबै कथी लेल? की ई लेल जे अबै काल सनेसमे ओझ्र लेने आएब।

हम तँ सपथ लऽ कहऽ चाहै छी, जे गामक माटि-पानि आ थाल-कादोमे सभ सुख अछि। कोना गामसँ भिन्न अपन गाम, आ कोना धामसँ भिन्न मिथिलाधाम। अहूँ सभ अपन-अपन करेजपर हाथ राखि कहू जे हम झूठ कहै छी? आब प्रश्न ई उठैत अछि जे जखन सभ कियो परदेशे खटबै तखन गामक विकास हएत कोना? मुदा कर्मवीरजीमे हमरा देखल जे ओ गाममे रहि गामक आ समाजक विकास करबाक भावना हुनका हृदयमे हिलकोर मारि रहल छल। मन गद-गद भऽ उठल। आर किछु काल गप-सप्प कएलाक हमरा लोकनि सूति रहलौं। प्रातः किछु गोटा (मेडिकल लाइनसँ जुड़ल) सँ भेँट करौलन्हि, तत्पश्चात एकटा नीक दिन तका हुनक क्लिनिकक उद्घाटन सम्पन्न भेल।

जीवनक बाटमे नव संघर्ष आबिते छइ। मुदा तइसँ कर्मवीरजी घबरेला नै बल्कि जीवनक लेल संघर्ष करए लगला। से तइ तरहेँ जे काल्हुक बारी सामए सूखल-साखल देह, पिचकल-पचकल गाल, धसल- धसल आँखि पर पाँजरमे सटल खपटासन, कोना पहिरलहुँ पैन्ट आ शर्ट पहिरि पुरान-धुरान झोरा आ चप्पलसँ समय खेपऽ बला, जीवनकेँ एक लगसँ देखऽ बला कर्मवीर, हमरा आइओ हुनक ई बात मोन पड़ैत अछि जे ओ पूछने रहथि-

"श्रीमान् की अपने कहिया नाति हुनि गुजल सुतल छी? माथमे नै घुसल ई बात जे हुनक प्रश्नक भाव की छैन? मुदा सत बात तँ

ई छल जे ओ कालूक राति उदास रहला, भुखल सूति रहला। हुनि राति धनि निन्न नै रहैन, कोना तरह कठमठा कँ राति बितौलैन। प्रातः हुँट हलायन हुनक धसल आँखि आ भुखल पेट हमरा किछु पूछि रहल छल। मुदा हम छलौं निःशब्द।

काल क्रम समैक संग महनत रंग देखौलक। नाती सभ आबए लगलैन, हुनकी जस लगवैत भेलखिन। भोजन-वसन करए लगला तँ पत्नियाकँ लए अनलैन आ आनन्दसँ रहए लगला। हाला बाबाक कृपासँ दिन दुना आ राति चौगुना आमदनी होमय लगलैन। आइ ओ दस धूर जमीन लए घर बना बाल-बच्चाक संग हँसी-खुशीसँ छैथ। एकटा सहल बकीलक पुयम आ सहल ताहूनक पुयम। ताहून कर्मठीन।

कहियो काल हमरा हुनका घरपर जेबाक मौका लगैत अछि। एक डिब्बा बटर-बेक बिस्कुटक संग। ताहून साहेबक दुनू बच्चा निछाह दौड़ल अबैत अछि जे अवाजक संग मम्मी-मम्मी अंकलजी आए-अंकलजी आए। तात घरसँ बहार होइ छैथ ताहून साहेबक पत्नी-पूनम, जहन नाओं-तहन पूनमक चाँन सन मुँह। आँखि चाहिआ जाइत अछि। बस पाँच हाथ ऊँच! देहो दशा खूब हरल-पुरल। कनक श्याम रंग, कलकतिया आमक हाना सन-सन आँखि, बादामी नाक, ठोढ़िया कश कानी सैन, दुनू कात झट्ठी गुहल आ तइ झट्ठीकेँ धूमा कऽ खोपा बन्हन, कसल-कसल नाढ़ि, आ पाकल मिलकानक हड़ सन दुनू ठोर। जाब देखऽ म सुहन, ताब मीठ-मीठ बाल। नमहर-नमहर हाथ आ दुनू हाथम रहैन हनि-हनि हाथ चूड़ी। हाथक आँगुरम बस कीमती पाथरक औंठी। सुगा पंखी रंगक ब्लाउज आ साड़ी पहिरने, माथपर साड़ी लेने, आँचर सम्हारि दुनू हाथ जोड़ि,

यएन छवि (गाउ लगेल छैथ। सीताश्वनी स्नः असीननाद देल आँखि नाउ जाञ्ज्ञ अछि। मान यऊल छैथ ताकृन कर्मनीन छह स्नीट छह ञ्ज्ञन्वी ऊँव, स्नल-युनल दह, मानी जकाँ मलकेल दाँत, क्लीन सट, कनक वह्नाउल यट आ हँसैत ञ्ञी अस्निादन-
"प्रणाम श्रीमान् कुशल छी किन? अन्दन स्पष्ट स्ज जाञ्ज्ञ अछि कौल्हुका कर्मनीन- आइक ताकृन कर्मनीन।

अयन मंगव editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१६.दुर्गानन्द मण्डलक ९ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

निदहक लखकक आमंत्रित नचना आ डाञ्ज्ञयन समीक्षा सीनीज

उ अंकम प्रस्तुत अछि दुर्गानन्द मण्डलक ९ टा कथा अध्ययन हमन समीक्षा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन अछि। - सम्पादक



दुर्गानन्द मण्डलक ९ टा कथा

कथा ३

किसनामूठी

मननी दिनसुनक पहुन बलानाही चौकीसँ एक गेलन काका ओ वीठि अनन नहुए। मला-ठोलाक समय नहि गँ, काठीसँ दु मूजला काटु निकालि अँगनाम सुखेल दलकै। ओकन वाद नहा-सानाह आ खाए कS सुतैल खड़ना लS ओढ़ियायन चल गेल। पूनवा हलही दैग छलै, निन्न टूटलै। आँखि मिओग ओठल आ हाँऽऽ-हाँऽऽ कS काँटु ओंगावए लगला। ओंगा-ठोा ललाक वाद सुपसँ रूटैक माएक गहुननम वान्हि माएसँ नूका कS धS आएल काठिक दागम। मल अन्हान रलै गँ रगवफा दाकानसँ वच अनलक। गीन सन रलऽऽ। आठ अन दनसँ ओछ गो टाका रलऽऽ। ओा रगवासँ कहि सुनि कS चानि गो चौवन्नी आ दु गो अठन्नी रजाखा लS चुप-चाप अँगन चल गेली। निहान रन मला छलै 'किसना मूठी'। मननी गन-गन हिसाव लगोान ओ चानि-चानि आना याऽऽ दूनु छाटकी वहिन अरलिया आ सुगियाकँ दवऽऽ। चानि आनाम वौआल एकटा कठपूतनी किन लव आ एकटा रूका। चानि आनाक कचौनी आ चय कीनि लव। ओकन गँ मन छलै चय-चय।

आठ आनाम एकटा अलगा आ रीगा लS लव। घूननी काल आठ आनाक जिलवी कीनि लव।

रान निहान रुन ओा अपन गेलन लS चलि गेल चौन आ वीठि ललक एक गेलन काँका ओ। अँगन आवि वकनी घनम गेलन

ताहि बाद नहेलक-सुनेलक चलि गेल आ नहा-सुना, खा-पी कऽ सुति रहल।

भोरहुन रहबा काल ओकरा माइयोँ पहुनक नै देखलै तँ ओना कऽ भोरहुन-ओमहुन तकलक तँ देखलक, ओ तँ गाछी दिस सुतल अछि- आ मनुआक किछु दाना लगल छलै। गाछीक मुन्ना सुतल। से देख ओकरा आगि लस देलकै। ओकरा सुनलै न सुनलै सुगलैम मनजीकेँ गप्पा पकैत लाम्ह-मुक्का धूनि देलकै। गारि पढि-पढि पूछए लगलै-

"बाज सौतीन बाज की कलही पाइ मनुआ बच कऽ?"

अवाक बच्चा कनैत बाजल-

"माए गेइ माए मला देखैल जवै बलवा पनतीयन मला।"

माए गामस अघाए रहब कनै सुन बाजलि-

"बाज सौतीन बाज कथीक मला।"

माए, गेइ माए, मला देखैल जवइ मला 'किसना मुठीक मला।'

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा अध्ययन एवम समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि।- सम्पादक



दुर्गानन्द मण्डलक ७ टा कथा

कथा ४

बकलेल

गर्मीक समय, जेठक दुपहरिया, प्रचण्ड रौद, बिजली लापता। पसेना चुबैत जाइ छल, जेना दाता-दीनानाथ आइ मनुखक परीक्षा लेमए चाहैत छथि। कतौसँ बसातक कोनो आस नहि। गाछ-गुटका सभ एम्हर सँए गँ उम्हर सँह, एम्हर कँ गँ उम्हर कँ करै छल। चुबैत जाइ छल जेना मरना गलीक पहुना हाअए। माल-जाल

गर्मी सँ परेशान भऽ एकरहक हाथ जीभ बबौने छला। लड़ु आ पड़ुक तँ तरहा करम भऽ गेल छला। कोना तरहँ चंतलबा नौद आ दुपहरिया मुकल, मन करक थिर भेल मुदा राति खन उड़ैह हाल, जाब गर्मीसँ परेशानी ताबक मच्छड़ आ उड़ीसक उपद्रव। ओकरा सभ एकटा ताक ऊँ हाँ-हाँ नै करियाक तँ साम उठोलक आ रर-रर सकरी बीनी मील लग रखि आउत। कतौ चैन नै...। भोजनोपरान्त दह-हाथ साफ करबाक लेल बिछाउनपर गेलौं, मुदा चैन नहि। कछमछ-कछमछ कऽ रहल छलौं। कती राति गुजरला पछाइत कनी जा कि आँखि लगल, आकि ध्यान किछु आन-आन विषय दिस चल गेल। आँखि यद्यपि बन्न मुदा चारूकात अनेकानेक तरहक बात घूमए लगैत अछि। पड़ल छी बिछौनपर मुदा मन जीनगीक चौबट्टीपर ठाढ़ वर्तमानक अधरपर सूतसँ भविष्यक, भविष्यकँ विषयमे सोचए लगैत अछि। सरकारी सेवामे रहबाक कारणेँ कम काल गाम जेबाक मौका लगैत अछि। याबैनियाँ तिहार जौं छी तँ करए पड़ैत अछि। तखना असी वर्खक बुढ़ही माए आ करीब सए वर्खक बूढ़ बाबूजीकेँ देखए लेल गाम जरूर चल जाइ छी। टोला-पड़ोसाक सरकँ भेँट कऽ सबहक कुशल-छेम जानि अपना कऽ धन्य बूझै छी।

ऐ प्रकारे विभिन्न प्रकारक लोकक चारित्रिक विश्लेषण करबाक सेहो मौका लागि जाइत अछि। सम्भवतः एहेन स्थितिमे मोन पड़ैत छैथ एकटा सज्जन समाज बाबू। ओ एहेन बकरी जेकाँ सूरतमे अपने कऽ किनकोसँ कम मानक लेल तैयार नै होइ छैथ। माए-बापक एक मात्र बेटा नाम्हियटा सँ पढ़ै-लिखैमे तेजगर मुदा तावक थोथनलाजीमे सेहो निपुण। विषय कोनो किएक ने हो मुदा एक

चाखैर छथथरलाजी जनूर करता। जना की ङा सर्वज्ञ ह्वाथि। तँए हुनकर किछु संगी-साथी हुनका 'मिस्टर ना □ल' सह्वा कहै छलैन। लाक सर वकलल सह्वा कहथिन।

यनूकँ साल अगहन मासम हुनकर विआह संभानयूनक वगल महनैल गामम सम्पनन भेल। विआहक माद एकाटा सर-कुटुम नै छुटैथ अइल ङा एकटा वही अलगसँ वना आ क्रमवद्ध सरकँ नत-लिऔर आ हकार यठाएव नै विसरला। विआहासनम सर उयस्थित भऽ वराती छेला। जइसँ एक वात स्पष्ट भऽ छेल ज लडका वाला नीक समाजसँ ग्रहल छैथ। छौंआँ-घरूआ आति प्रसन्न भऽ वढि-चढि कऽ वारातीक सुआगत-वात कलैन। ममिऔत-यियसिऔत सर एसँ प्रसन्न ज वर-आ कनियाँ हुनुक जाठी सीता-रामक जाठी लछेत अछि। भगवानक असीम कृयासँ अनूगृहित भऽ नीक कथा सम्यन्न भेल। असली कथा आव एठामसँ शुरू हाइत अछि। विआहायरान्त कनियाँ निदातनी भऽ सासुर एली। दाइ-माइ लाकैर अनैछ-यनैछ कनियाँ घर कलैन। आ अइहव-सुहव हाथू असीरवाद दैत अयन-अयन घर चल छेली। कनियाँ तँ कनीयँ दिनम अयन सासु-ननैदक दिल जीत ललैन। वर-कनियाँ समर्थ नहवाक कारछें निदातनी चौठारी दिन नै भऽ सौर-तादाम भेल। यहिल सौर-ताद्या नवकी कनियाँ नैहरम मनवैत छैथ, ए तरहक मिथिलाक आ मैथिलक एकटा मान्यता छइ। नीक दिन तका कनियाँ निदातनी भऽ सासुरसँ नैहर चल छेली। आव तँ भेल यहयैट। सनाज वावू ज एत दिन सदिखन घरम धूसल नहैथ आ सदिखन कनियकँ निंधानैत आ तवैत छला इ गीत-

'मन हाइए अहाँ कँ हम हरवत नहीं, किछु वाजी अहाँ हम सूनित

𑒢𑒯𑒱, 𑒧𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿...।
𑒂𑒚 𑒧𑒰𑒮 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒞𑒪 𑒮 𑒢𑒻 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒰 𑒂 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒂𑒚𑒹 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒯𑒪𑒰-𑒯𑒪𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧 𑒢𑒾 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑓄 𑒢𑒻𑒯𑒩 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒲। 𑒮 𑒞𑒿, 𑒋𑒏𑒰 𑒠𑒱𑒢, 𑒋𑒏𑒰 𑒣𑒯𑒩 𑒥𑒱𑒞𑒥 𑒮𑒩𑒼𑒖 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒯𑒰𑒛𑓃 𑒮𑒢 𑒥𑒴𑒗𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒮𑒳𑒡𑒋-𑒥𑒳𑒡𑒱𑒋 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒻𑒢। 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒥𑒏𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒩𑒻𑒟। 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒢 𑒥𑒴𑒗𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒖 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒧 𑒯𑒼𑒃𑒢 𑒂 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩𑒧। 𑒦𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒁𑒩𑒴𑒔𑒲 𑒖𑒰𑒑𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢। 𑒮𑒧𑒨𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢-𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒥 𑒮𑒯𑒼 𑒮𑒳𑒡𑒱-𑒥𑒴𑒡𑒱 𑒢𑒯𑒱। 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢𑒧 𑒥𑒰𑒖𑒻𑒟 𑒖 𑒮𑒩𑒼𑒖 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒟- 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒥𑒏𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒥𑒢𑒧𑒰𑒧 𑒮𑒩𑒼𑒖 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒢𑒻𑒯𑒩 𑒧𑒯𑒩𑒻𑒪𑒧 𑒮𑒩𑒼𑒖𑒢𑒲 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒥𑒏𑒞𑒲 𑒋𑒏 𑒠𑒰𑒮𑒢𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒯𑒰𑒑𑓂𑒢𑒱𑒧 𑒖𑒩𑒻𑒞।
𑒠𑒱𑒢𑒰-𑒠𑒱𑒢 𑒧𑒴𑒩𑒗𑒰𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒕𑒪𑒰। 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒥𑒩-𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒖 𑒅𑒚𑒾𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒟। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒣𑒞𑒱-𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧। 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒯𑒰𑒛𑓃 𑒦𑒪 𑒔𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒢𑒻 𑒞𑒿 𑒋𑒯𑒢 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒧 𑒢𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒂 𑒢 𑒍𑒯𑒢 𑒋𑒏𑒰 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒔𑒻𑒢। 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒛𑒩 𑒢𑒻 𑒞𑒿 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏𑒩𑒻𑒢 𑒂 𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲𑒏 𑒛𑒩 𑒮𑒩𑒼𑒖 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒮 𑒏𑓄 𑒣𑒥𑒻𑒟। 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒁𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒞𑒾-𑒏𑒞𑒾 𑒋𑒯𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒕 𑒖 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒢-𑒠𑒳𑒩𑒰𑒑𑒧𑒢𑒏 𑒥𑒩-𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒢𑒻 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒕𑒻𑒟। 𑒞𑒿𑒋 𑒮𑒩𑒼𑒖 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒛𑒑 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒖𑒃𑒪 𑒢𑒻 𑒅𑒚𑒻𑒢। 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒱𑒞𑒻𑒞 𑒠𑒩𑒲 𑒢𑒻 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞-𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒔𑒾𑒚-𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒣𑒰𑒥𑒻𑒢 𑒂𑒋𑒪... 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒱𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒱𑒞𑒪 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒂𑒮𑒲𑒢 𑒧𑒰𑒮... 𑒮𑒑𑒩𑒼 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒣𑒴𑒖𑒰𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒍𑒧𑒯𑒩 𑒮𑒩𑒼𑒖𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒻𑒯𑒩𑒧 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒏𑒢𑒱𑒂 𑒕𑒰𑒑𑒩 𑒥𑒪𑒱-𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒕𑒪। 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒍 𑒪𑒼𑒏𑒻𑒢 𑒐𑒴𑒥 𑒖𑒞𑒢𑒮𑒿 𑒠𑒰𑒢𑒰-𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒐𑒳𑒂𑒥𑒻𑒟-𑒣𑒱𑒂𑒥𑒻𑒟। 𑒠𑒹𑒐𑒰-𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒕𑒰𑒑𑒩, 𑒮𑒥𑒻𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒍𑒜𑓃𑒰

भऽ गेल। ओँ ओँ दुर्गापूजा लग आएल जाइत, समाज बाबू आ समाजनीक हृदैक धड़कन हृदयागंम हेबाक लेल मचलए लागल। देखा-देखी कलश स्थापन भेल। पहिल पूजा बीतल दोसर बीतल आबि गेल पंचमी। मुदा एखन धरि सासुरसँ समाज बाबूक लेल कोनो खाज-खबैर नै कएल गेल! एक दिन माए पूछलखिन-

'बौआ, कनियाँक खाज खबैर नै कहलहुँ? कोनो हाल-चाल नै अबै छहु?'

बचान की बजता अपन हालत आ बहुक मानल किया की बजै छै?

हारि-थाकि पंचमी राति फोन लगौलैन। घण्टी भेल, फोन उठौलखिन हुनकर सासु- कमलनी, ओमहरसँ अवाज अबैत अछि-

'हलो... हम मधुबनीसँ बजै छी?'

'हम छी समाज बनमासँ। कनी... दीदी... केँ फोन...।'

कमलनी माँ दिस ताकैत बाजि उठैत अछि-

'माए गे माए जीजाजी केँ फोन छिऐ।'

एमहरसँ हलो-हलो होइत रहैत अछि। कमलनी फोन लऽ कऽ दैत छै अपन दीदी समाजनीकेँ। समाजनी फोन लइते-

'परनाम करै छी। अहाँ नीक छी की नहि? माँ बाबूजी कोना छैथ? अपना धनीनयन धियान दइ छी की नहि? मन लगैए की न? मेला देखऽ कहिआ एबै? कमलनी आ अजय, विजय अहाँक विषयमे पूछैत रहैए। दीदी गइ दीदी, जीजाजी कहिया एतै?"

समाज बाबूक जबाब छल एका-नमी मन नै लगैत अछि। समयनाः दुर्गापूजामे नै आबि सकब। धिया-पुताकेँ मेला देखक लेल दस-दसटा टाका दऽ देबइ। गामसँ ठीक ०१८ कल फोन काटि दैत छैथ।

समाज बाबूक लेल असमंजसक स्थिति रहैन, जे ओकरा घरमे जाइ छागर बलि प्रदान होए, से अखन धरि ओकरा बन ओवाक लेल नै करैलैन। ओहुना कोन सासुर, कोन सासु आ ससुर, कतौ सारि आ सरहोजि। गामसँ मन अधोइ आ ठीक छैक। की करी आ की नै करी? एहो द्वन्द्वात्मक स्थिति बनल रहैन। किछु नै फुरैन। मुदा अष्टमी अबैत-अबैत-

य दिल है कि मानता नहीं
य बेकरारी क्यों हो रही है,
य जानता नहीं...।

अपना कऽ नै रोकि सकला। आ चलि गेला अपन सासुर महेलै। भगवती दर्शन कऽ जहाँ की पानक दोकानपर जाइ छैथ, पान खबाक लेल, आकि मला देखक लेल आएल सारि-सरहोजिक नजैर हुनकापर पड़ैत अछि आ ओ सभ पकड़ि लैत अछि हुनका गट्टा। जीजाजी, जीजाजी अहाँकेँ गाममे बजौत पड़त। दीदीओ कहने छल, सप्पत दऽ कऽ। मुदा सासु ससुरक आग्रह नै गेँए अखना धरि हुनका ठीक छैक।

अन्ततः थाकि-हारि एक दिन मधुर लऽ सारि-सरहोजिक संग चलला समाज बाबू सासुर। पहिल-पहिल बेर सासुर गेल छला गेँए सुआगत-बातमे कोनो कमी नै रहल। चाह-पान बढ़ियाँसँ भेल। मुदा खेबा काल ओ पसारलैन बड़का नाटक, जे हम नै खाएब। हम खाऽ आएल छी, भुख नै अछि। सासु आग्रह कलखिन कोनो असर नहि, ससुर हाथ पकड़लखिन, कोनो फरक नहि, बड़का सारि सेहो खुशामद कलखिन मुदा कोनो असर नहि। एक बेर जे हम खा कऽ आएल छी, भूख नै अछि। आ ओ भोजन नहियेँ कलैन।

ओम्हर दुनू छागर जे बनल ओकर सुगन्धसँ टोला-पड़ोसा गम-गम करैत। टोलाक निमंत्रित सज्जन सभ आबि मासु-भात अर्थात छागर नूनी प्रसाद पाबैथ आ ओकर स्वादक सविस्तार चर्चा करैथ। एहे छागर जे झआएल छल, चर्बी कहैत पनहकी सन छलै आ प्रसाद बनल कोनाक सुन्दर अछि! ताहे मन गँ रीतनसँ प्रसन्न भऽ गेल, चर्चा करैत बाँसक सीक्कीसँ खोनका करैत कुनुन कऽ पान खा ओ लोकैन पृथ्विक टकान लैत चल जाइ गेला।
एम्हर समाज बाबूक परम विलाति कूदऽ लगल। ओत सुख लहालाट। नाति खसल जाए, बहनवैआक बाद घनवैओ सभ खा कऽ सूतए गेला।
मुदा किछु लिऔननाली सभ अखना जगल, ओ लोकैन पाछाँ काल कऽ भाजन करैथ, फैलसँ पलथा मानि मासु आ भात, खाथि आ ओइ छागरक मासुक चर्चा करैथ। आग्रह अलग जे दीदी कलजी दु पीस लिअ। हे पे फेल्लाँ गामवाली हे ओइ चूस्ता लिअ। हे पे दाय, हे, ओइ हतनी बला दुटा पीस लिअ। आग्रहपन आग्रह। आ ओ लोकैन बड़ी काल धरि गप-सप्प करैत, भाजन करए गेली।
एम्हर समाज बाबू ज0नागनि आना नाज भल चल जा नहल छल। आब हाइ छलैन जे किया आबि आग्रह कनैथ गँ भनि परट मासु-भात खइतौं। मुदा स गँ आब सभ किया सूतए चल गेल छल। धिया-पूता मासु-भात खा हाहू करैत छल। आब गँ हिनका किदुन- जे अपन कननी गइ मूसहननीक पनि भऽ गेल छल। थाकि हानि किछु काल पछाइत हनलैन न फूनलैन समाज निदा भला भनसा घन दिस। आ अपन सँ मासु-भात भनि थारी निकालि आ चुप-चाप भाकसए लगला। किनका ओ बातक पता नहि।

जागल ओ सभ नहैथ स सभ हिनका खोजए लगल ओ पाहुन कागए, पाहुन कागए। आ पाहुन केँ देखबा घरकेँ केवाड़ तर नुका कऽ गुप-गुप मासु-भात दऽ रहल छथिन। भात गणेशजीक बाहन ओ काठीसँ ठाढ़ काठी जा कि छनयल आकि काठीपर नाखल खायते पाहुनक कयानयन खसल।

अवाज सुनि लोक सभ ठाढ़ घर दिस दौगल। देखलक ओ पाहुन केँ कबाड़क दागम नूका कऽ मासु-भात खाकेँ रहल छथि। एकर बड़का पिहुकारी, भानि-भनहाजि मानलक भाली खुब जोरसँ भोन-गुल सुनि सुतलहा लोक सभ जागि गेल। भाली आ पिहुकारी पति रहल अछि। पाहुन केँ लाज कठौर भऽ गेल।

नमि जखन सुतए घर गेला केँ कनियाँक कटू बेंग बाछक बर्खा होमए लगल। पाहुनक केँ मन भागल। किछु ने हुनेन। साबला ओ अनुहनाख गाम चल जाएब। निदाओ भेला, मुदा अहान बसी रहबाक कारणे कुकुर सभ भाँउ-भाँउ करए लगल।

लोक सभ जागि गेल देखलक ओ आगु-आगु पाहुन आ पाछु-पाछु कुकुर हिनका खिहारने जाइत अछि।

लोक सभ दौड़ल महिलाक हाथपर आबि हिनका पकड़लक। घुमि जबाक आगाह कलक। मुदा हिनकर मन केँ गामस अपमान छल। किनको बातक माजन नहि, हाक दैत दैत भागी पकड़लक स हुनकर ठका खुजि गेल, धड़फड़ा खसला, मुदा ओ गेया ने नुकि लटपटाइत भागी खालि हकैत गानि दैत पनाप हाइत-हाइत अपन घर पहुँचला।

कहु केँ एक पढ़ल-लिखल लोकक ई काज काना बकलल जकाँ काज कलैन। सनियोँ ओँ अधला ने लागए केँ हुनका बकलल न

करबैन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१८.दुर्गानन्द मण्डलक १ टा कथा- कथा १ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

<u>विदेह लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन समीक्षा सीरीज</u>

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि दुर्गानन्द मण्डलक १ टा कथा अध्ययन हेतु समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



दुर्गानन्द मण्डलक १ टा कथा

कथा १

विआहक पहिल साल गिरह

नाथा आ मालती दुनूक विआहक पहिल साल गिरह। दुनू परानीक मनमे उठैत खुशीक कोनो सीमा नहि। दुनूक बीच प्रेम एतेक जे साल कोना बीतल से बुझिए ने पड़लै। परिवार छोट रहने जीवन जगबए सुखमए गाबए सरस रहै। मालती बैंकक कर्मचारी। तँए पटनामे जमीन लऽ मकान बना, जेबा-एबा लेल नैनो गाड़ी सेहो कीनि लेलक। भिनसरसँ लऽ कऽ जाधरि ऑफिस जाइ छला ताधरि नाथाक मदमस्त जवानी देख समय कोना बिति जाइ छलैन से पता ने चलैन। मुदा दस बजे धरि तैयार भऽ ऑफिस जरूर चलि जाइ छला। दिन भरिमे ऑफिससँ एक-आध बेर नाथाकेँ फोन कऽ हालि-चालि जरूर पुछि लइ छलखिन। पाँच बजे ऑफिस बन्द भेला पछाइत किछु ने किछु सरस लऽ मालती घर चल अबै छला। नाथा ताधरि बाट तकैत रहै छली। जाधरि गाड़ीक हौरन नै बाजि उठै छलैन। ते तरहेँ दुनू परानी लेल सभ दिन होली आ राति दीवाली रहै छल। देखैत-देखैत साल बीति गेल आ आबि गेल विआहक पहिल साल गिरह।

दुनू परानी आपसमे विचारलैन जे विआहक पहिल साल गिरह छी, तँए ए शुभ अवसरपर अपना दोस्त सभकेँ एकटा शानदार पार्टी देल जाए। पार्टीमे खेबाक-पीबाक पूरकस इन्तजाम छल। रवि दिन रहलाक कारणे पार्टियो समैसँ शुरू भेल। ओइ दिन तँ नाथा आ मालतीक सुन्दरता अपूर्व छल। दुनू परानी फिल्मी हिरो-हिरोइन जकाँ लगै छला। साँझ पड़ैत दोस्त-दोस्तिनी सभ आबए लगलैन। सभसँ उपहार लऽ नाथा डैनिंग हॉलमे रखि-रखि आबैथ। पार्टीमे कोनो वस्तुक कमी नै छल। सभ कियो खूब खेलक-पीलक आ नाच-गान करए लगल। मालतीकेँ दोस्तक बीच रहैत-रहैत पीबैक चस्का

लगि गेल छलैन। गाँओ आइ माहना खूब पीलैन।

पीला पछाति बाबाकेँ उँनयन हाथ दऽ दासन हाथ पकड़ि उहो नाचए लगला। नाच-गान खतम भेला बाद सभ दास-दासिनी अपन-अपन घर गेल। मुदा उही दासक बीच माहनक एकटा अछिन्न दास अनुप्र जकरा पीबैक हिस्सक नहि, ओ जलखै मात्र कला पछाति अपन घर चलि गेल।

"बाबा हे बाबा, देखू अहाँक माहन कते बकनान अछि। आउ अहाँ गाँ हमर जान छी। हमर परान छी, आउ ना।"

कहैत माहन उठि काल पलंगसँ टकरा गेला। बाबा बैग एली देखली जे माहन गाँ किछु बसीए पीब लेन छैथ। माहन बजला-

"उहे बाबा, छाउ न इी गय-सय्या। पलीज एमहर आउ ना। हमरा आब अहाँ एना ज्ञानि गउपाउ। उहे बाबा, अहाँ कते सुन्दर छी। मन होइए अहाँकेँ हम देखते रही। किछु बाजी अहाँ हम सुनिते रही।"

गीत गबैत माहन बाबाकेँ अपना बाँहिम कसि पलंगपर उघना देलखिन। प्रेमक सागरम डूमए चाहलक। मुदा सागरम डूमैसँ पहिने एना भेलै, माहन ओक करए चाहलक। बाबा होँइ-होँइ माहनकेँ उठाबए चाहलक। गाबए गाँ माहन पलंगपर बाकैन-बाकैन भेलक। साँस घर गंधसँ भरि गेल। नाक न देल जाइ। शनाबक निशाँम माहन बसुधि। करीए कालक बाद माहनकेँ हुन मन भेलै जे ओक हएता। निशेम मातल माहन जाकि पलंगसँ उठल आकि पलंगपर खसि पड़ल, कपार फूटि गेलै, शोनितक टघार चलए लगलै। बाबा जना-तना माहनक माथसँ बहैत शोनितकेँ तुमालसँ पोछि-पोछि माथकेँ बान्हि देलक।

मुदा एतबायन मालिकक मन थीर नै रहलन्हि। परम दर्द उठलै। दिनक छअपटाए लगला। ओही अवस्थाम मालिक एकबेर खून ओकि कलका। मुदा ओकर खून कलका। समुद्रा घन खून-खूनाम रहऽ गेल। मालिक खून वाकैत नहल छला। पथाल्या ओकर दर्द कम नै रहऽ नहल छलन्हि। एमहर असगर नाधा की करती। नाधाकँ मान यएलैन अनुप। अनुप मालिकक दास छ शनाव नै पीव अपना घर चलि गेल छला। अनुप... अनुप... अनुप... हल्ला करैत नाधा अनुप दूनू पनानीकँ वजौलक। अनुप दूनू पनानी दौगल नाधा ओठाम आएला। मालिकक हाल देख दूनू पनानीकँ हाश उड़ि गेल। अनुप वाजल-

"सौजी, मालिक सैयाक हाल ठीक नै छैन। हम गाड़ी निकालै छी अहाँ दूनू गोरे सैयाकँ पकड़ि वाहर लाउ।"

गाड़ीक पैछला दरवज्जा खालि, सीटपर मालिककँ पाड़ि नाधा आ अपन पत्नीक संग अनुप अस्पताल दिस विदा रहला। अनुप तीव्र गतिसँ गाड़ी चला नहलए अपना धुनिमा। छ जल्दीसँ जल्दी अस्पताल पहुँच जाए। वारम मालिककँ वड़ी जाएसँ दर्द रहै आ हिचकी उठलै दर्दसँ छटपटाइ-कछमछाइत एकबेर खून खुव नमहर खूनक ओक रहलन्हि। किछुए कालक पछाइत मालिक कालकवलित रहऽ गेला। नाधाकँ शंका रहलन्हि। ओकर करेज हालनि जकाँ काँपि उठलै। जानसँ कानए लगला। अनुप वाल-रहास दैत अस्पताल पहुँचला। अनुप आ पूजा दूनू पनानी मालिककँ सुद्रबनायन लादि ताकन लगा लऽ गेला। ताकन साहेब आला लगा। नानी देख गजवीज करैत वजला-

"मालिक कनू, ओी आब नै छथि।"

सुनिते नाधा पछाड़ खा मालिकक मृत शरीरपर गाछ जकाँ खसली।

यूजा कनो नाधाकँ समहानो वजली- "दीदी, 3Q हाथ कनु। की कनवै (धेनज नाखव यठा। जिनगीकँ जीवव यठा।"
यूजा उ(Oलेन। नाधा 3Oली। मूदा रून यछा७ खा मारूनक थनीनयन खसि यठली। जान-जानसँ कनो नाधा मारूनक दरूकँ ठालवो वाजलि-
"स्नामी यौ स्नामी, अहाँ काव चलि (गलौं यौ स्नामी? 3Q न अहाँ गँ करूेा नही ज मान हा??व अहाँकँ रूम दखा नही। दखु न रूम छी अहाँक नाधा। 3Q ना 3Q ना दखु ना अहाँक नाधा...।"
अहूनिया करो नाधाकँ दख अनुध वाजल-
"रौजी, 3Q हाथ कनु। आव उा घूनि नै डौा।"
??ी करूेा अनुध वकवन नाधाकँ समहानि उ(Oलक। मूदा नाधा यून: यछा७ खा स्नामी-स्नामी करूेा मारूनक मूा थनीनयन खसि वहाथ रूs (गलि।
क... मारूनक नाधा...।
अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१९.गजेन्द्र ठाकुर- लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक वा पुनर्लेखनक [illegible]



गजेन्द्र ठाकुर

लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ सम्पादक वा पुनर्लेखनक अज्ञानतावश उत्पन्न छन्दभङ्ग

१

लालदासक रामायण चौपाइसँ सृजित अछि। दूसु ज ६७ प्रतिशत रहल चौपाइ, आ शेष बाँचल रहलमे नृत्यमाला छन्द आ गीतिका।

मुदा हम एतऽ कुण्डलियाक चर्चा करऽ चाहब छी, ई बहुत कम मात्रामे अछि मुदा हमरा ई बहुत प्रभावित करैत अछि। कुण्डलियाक प्रकृति दोहासँ मिलैत अछि आ ओँ अहाँ उत्तम स्वरूपक दोहा पढ़ब तँ कुण्डलियासँ प्रेम करऽ लागब।

कुण्डलिया अछि की? कुण्डलिया दूटा छल अहाँक दोहा आ रोला दूसऽ पढ़ू। लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलियाक अलाव रोला आ दोहा सहो अहाँक भेटत। मुदा एकर सम्मिलन अछि कुण्डलिया।

दोहा

𑒠𑒼𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒕𑒢𑓂𑒠 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒼𑒯𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒲 𑒂 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒔𑒩𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓓,𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓑,𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓓𑒂 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒧 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓑 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒂 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒔𑒩𑒝𑒏 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒖𑒑𑒝𑒮𑒿 (𑒖𑒑𑒝 ऽ। ऽ) 𑒢𑒻 𑒯𑒼𑒋𑒞 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒂 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒧 𑒔𑒩𑒝 𑒁𑒢𑓂𑒞 𑒯𑒼𑒋𑒞 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒-𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫𑒮𑒿।

𑒩𑒼𑒪𑒰

𑒩𑒼𑒪𑒰 𑒮𑒧 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒕𑒢𑓂𑒠 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒼𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒲 𑒂 𑒂𑒚 𑒔𑒩𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓑, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓓, 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓑 𑒂 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒧 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓓 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰, 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓑, 𑒕𑒚𑒧 𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑓑𑓓 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒲𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒔𑒩𑒝𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒-𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫, 𑒫𑒰 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫-𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫-𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒲𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒔𑒩𑒝𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒙𑒰 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫, 𑒫𑒰 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒, 𑒫𑒰 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒-𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫-𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫 (𑒦𑒑𑒝 । ऽ ऽ), 𑒫𑒰 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫-𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫-𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 (𑒮𑒑𑒝 ऽ ऽ ।) 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒼𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫-𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒-𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫𑒮𑒿 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒴।

𑒏𑒳𑒝𑓂𑒛𑒪𑒱𑒨𑒰

𑒠𑒼𑒯𑒰 𑒂 𑒩𑒼𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒳𑒝𑓂𑒛𑒪𑒲 (𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒝) 𑒩𑒴𑒣 𑒏𑒳𑒝𑓂𑒛𑒪𑒱𑒨𑒰। 𑒠𑒼𑒯𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒠𑒱𑒨𑒾, 𑒤𑒹𑒩 𑒠𑒼𑒯𑒰𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒔𑒩𑒝𑒏𑒹𑒿 (𑓑𑓑 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒥𑒪𑒰) 𑒩𑒼𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒔𑒩𑒝 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒨𑒾 (𑒣𑒳𑒢𑒩𑒰𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱) 𑒂 𑒤𑒹𑒩 𑒩𑒼𑒪𑒰 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒴। 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒩𑒰𑒐𑒴 𑒖𑒹 𑒠𑒼𑒯𑒰𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒔𑒩𑒝𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒂 𑒩𑒼𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒔𑒩𑒝𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒩𑒯𑒋। 𑒏𑒳𑒝𑓂𑒛𑒪𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪

शब्द आ अन्तिम शब्द एक्के होइत। कुण्डलियाक चारिम आ पाँचम चरण सेहो एक्के होइत।

२

आब सोझे पहुँचि जाउ मिथिला रामायणक सुन्दर काण्डक अन्तम जाऽ अहाँकेँ चारिटा कुण्डलिया भेटत।

कुण्डलिया दोहा (मैथिली अकादमी)**

रघुनायक करुणायतन देखि विभीषण दीन।

देल प्रमाणहिं नाथ पद रति पद रहु मन लीन॥

रति पद रहु मन लीन हीन दीनक प्रतिपालक।

शरणागत वत्सल दयाल लोकक दुख घालक॥

लोकपाल यमकाल डरथि लखि जनिक सुसायक।

सकल लोक निश्शोक करथि से विभु रघुनायक॥१॥

अघनाशिनी रघुपति कथा, सुनितहि हो दुख दून।

गनियन प्रभु अनुकूल नहि, कतथि मनानथ पुन॥

कतथि मनानथ पुन क्कुन सौं सदा वढावथि।

धन जन विजय विभूति क्षति सुख गनिक वढावथि॥

काम आदि सौं वचथि एकि यावथि अविनाशिनि।

यायगाय सरए गनिक हनथि गंगा अघयाशिनी॥२॥

विगवकान की चाख तनि, विषय विषम अंगान।

सीतानायक एजन एल, कतहल अमिय अहान॥

कतहल अमिय अहान एान संसानक छाती।

लल सकल यद ब्रह्म एक एन वचन गाती॥

यगिहुँ काँ गति जाय गाय नहि लहु सुख सम्पति।

हिग निश्चिग निज जानु अयन एन विषयक अनुचित॥३॥

मन निरुद्ध कति दुख सहए एनयिंजन म आवि।

गरुए लाल जौं सुख वरुय श्रीयद गतूनन यावि॥

श्रीयद गतूनन यावि गावि नहु नामकथा निग।

नहि तहि सँ अछि अपन युक्ति कल्याण प्राण हित॥

कत ताकि रत्न सिन्धु तहल नहि भेटल एक ऊण।

गाबि गाबि कहि कथा यथा मति लाबि एक मन॥४॥

उपनका या0 मैथिली अकादमीक पोथीसँ लेल गेल अछि।

३

मात्रिक गणना

मैथिलीक उच्चारण निर्देश आ ह्रस्व-दीर्घ निर्धारण आदि।

शास्त्रमे प्रयुक्त 'गुरु' आ 'लघु' छन्दक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ,इ,उ,ऋ,ऌ - ह्रस्व आर आ,ई,ऊ,ॠ,ए.ऐ,ओ,औ- दीर्घ स्वर अछि। ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुटि जाइत अछि तँ उच्चारणसँ 'गुणिताक्षर' बनैत अछि। क्+अ= क, क्+आ=का । एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहल जाइत अछि। खाली व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा । १. सबटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर

'𑒪𑒒𑒳' 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒔𑒱𑒯𑓂𑒢 □ 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒋𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒹𑒞 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑓒. 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒂𑒩 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒑𑒳𑒝𑒱𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 '𑒑𑒳𑒩𑒳' 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒂 𑒋𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒹𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒔𑒱𑒯𑓂𑒢𑒧 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒚𑒰𑒜𑓃 -। 𑓓. 𑒁𑒢𑒳𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒱𑓀𑒫𑒰 𑒫𑒱𑒮𑒩𑓂𑒑𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒮𑒦 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑓔. 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒏𑒱𑓀𑒫𑒰 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒖𑒢 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰- 𑒁𑒔𑓂, 𑒮𑒞𑓂। 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒁 𑒂 𑒮 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒁𑒕𑒱।

𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩 𑒂 𑒫𑒱𑒮𑒩𑓂𑒑𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒂𑒥 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒥𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳 𑒂 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫𑒏 𑒧𑒹𑒪 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫 𑒯𑒼𑒃𑒞।

𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒥𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳+𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫 𑒮𑓂𑒫𑒩= 𑒋𑒏 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰

𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩: 𑒋𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿:-

𑒏𑓂𑒩𑒱= 𑒏𑓂 + 𑒩𑓂 + ◌𑒱 = 𑓐+𑓐+𑓑= 𑓑

𑒏𑓂𑒩𑒲= 𑒏𑓂 + 𑒩𑓂 + ◌𑒲 = 𑓐+𑓐+𑓒= 𑓒

𑒏𑓂𑒭= 𑒏𑓂 + 𑒭= 𑓐+𑓑

𑒞𑓂𑒩= 𑒞𑓂 + 𑒩= 𑓐+𑓑

𑒖𑓂𑒘= 𑒖𑓂 + 𑒘= 𑓐+𑓑

𑒬𑓂𑒩= 𑒬𑓂 + 𑒩= 𑓐+𑓑

स्न= स् +न= ०+१

श्र =श् +र= ०+१

त्व= त् +व= ०+१

त्त्व= त् + त् + व= ० + ० + १

ह्रस्व + ऽ = १ + ०

अ वा दीर्घक बाद विकारीक प्रयोग नहि होइत अछि जेना दिअऽ आऽ ओऽ (दोषपूर्ण प्रयोग)। हँ व्यंजन+अ गुणिताक्षरक बाद विकारी दऽ सकै छी।

ह्रस्व + चन्द्रबिन्दु= १+०

दीर्घ+ चन्द्रबिन्दु= २+०

जेना हँसल= १+१+१

साँस= २+१

विकारी आ चन्द्रबिन्दुक गणना शून्य होएत।

जा कऽ = २+१

क् =०

क= क् +अ= ०+१

किएक तँ क कँ क् पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीमे आबि गेल तँ विकारी देबाक आवश्यकता पड़ल, दीर्घ सूत्रमे एकर आवश्यकता नहि अछि।

ऽ- ह्रस्वक चिह्न

।- दीर्घक चिह्न

एक दीर्घ । =दूटा ह्रस्व U

४

छन्दशास्त्र

आब लालदासक मिथिला रामायणक बात कुण्डलियायन आउ। अहाँकेँ स्पष्टतुँ छन्दशास्त्र देखि जायत। कवि लालदास सँ छन्दशास्त्र कऽ नै सकैत छथि। एतऽ टाइपिंग मिस्टक सँ स्पष्ट नुँ नै अछि। एखन ओ मात्रिक गणनासँ अनभिज्ञ मैथिली अकादमीक सम्पादक वा पुरस्कृतजनक काज देऽ सकैछ, जे वर्णनीक एकरूपता अनवा लल छन्दशास्त्र कएलन्हि। मुदा साहित्य अकादमीक लालादास रामायण (सम्पादक रामदेव झा)मे छन्दशास्त्र नै देखल, से रामदेव झा कते दाना छलन्हि आ हुनकायन मूलपाठकेँ परिवर्तित करबाक जे आग्रह लगाओल गेलन्हि आ जे आग्रह लऽगेलन्हि से मात्रिक गणनासँ अनभिज्ञ बुझाइत छथि, से हुनकर करब छलन्हि अपन उद्देश्यमे। मूलपाठसँ अन्यत्र छन्दशास्त्र ठीक करबाक उद्देश्यसँ उठा कलन्हि से

हुनकर दादा छलन्हि। मात्र कुण्डलिया छन्द जेँ लालदास लिखने छथि तेँ सम्पादककेँ ओकर तेँ स्थान हेबाक चाही जे ओ देखय जे खाली हेतैक कुण्डलिया देने काज नै चलत। आ रामदेव झा जीक निर्णय साहित्य अकादमीक लालदास रामायणकेँ अन्तिम पा0 मानबाक चाही। आब देखू साहित्य अकादमीक पा0।

**रामादेव झा द्वारा सम्पादित लालदासक कुण्डलिया (साहित्य अकादमी)

कुण्डलिया दोहा

रघुनायक करुणायतन देखि विभीषण दीन।

दल प्रमाणहिँ नाथ पद भनि पद रघु मन लीन॥

भनि पद रघु मन लीन हीन दीनक प्रतिपालक।

शरणागत वत्सल दयाल लालक दुख घालक॥

लोकपाल यम काल डरथि लखि जनिक सुसायक।

सकल लोक निश्शोक करथि से विभु रघुनायक॥१॥

अघनाशिनी रघुपति कथा, सुनितहि हो दुख दून।

जनियन प्रभु अनुकूल नहि, करथि मनोरथ पून॥

करथि मनोरथ पून कूरसौं सदा बचाबथि।

धन जन विजय विभूति शक्ति सुख नित बढ़ाबथि॥

काम आदिसौं बचथि भक्ति पाबथि अविनाशिनि।

पापनाश सब नित हरथि गंगा अघनाशिनी॥२॥

चितचकोर की चारु नित, विषय विषम अंगार।

सीतानाथक वदन शशि, कर सुख अमिय अहार॥

कर सुख अमिय अहार त्याग संसारक छाउ।

लख सकल यह ब्रह्म एक रव वचन गाउ॥

पतितहुँकाँ गति जाय पाय नहि लहु सुख सम्चित।

हित निश्चित निज जानु अयन रघुविषयक अनुचित॥३॥

मन विरुद्ध कति दुख सहह रघुपिंजनम आवि।

गरुड लाल जौं सुख चरय श्रीपद पंकज यावि॥

श्रीयदुनन्दन आबि गाबि नहु नामकथा निन।

नहि गहि सौं अछि अपन युक्ति कल्याण प्राण हित॥

कत याचकि रत्नसिन्धु तनल नहि नहल एक ऊण।

गावि गावि हनि कथा यथा मति लावि एक मन॥४॥

एना तँ मैथिली अकादमीक पाठ आ ओ पाठमे खास कोनो अन्तर नै अछि, मात्र विरक्ति आ दुटा शब्द केँ सटायल गेल अछि आ केँ एनाक कऽ देल गेल अछि। दोसर कुण्डलियाक अन्तिम शब्द अघयाशिनी केँ अघनाशिनी कऽ देल गेल अछि।

कर्णाटकक गोकर्ण गंगावली आ अघनाशिनी धारनए अछि आ 'पापनाश सरः तनिक हनथि गंगा' मान पापनाशिनी गंगा मान 'अघनाशिनी' प्रयोग समुचित अछि, 'अघनासिनी' नै, प्रायः टाइपिंग मिस्टेक अछि।

एना तँ छन्दशास्त्र ठीक करबाक दाता तँ दृष्टि नै रहल, मुदा शब्दक उचित प्रयोगक प्रयास रहल अछि से मैथिली अकादमीक पाठसँ साहित्य अकादमीक पाठ हमरा श्रेयस्कर लागि रहल अछि।

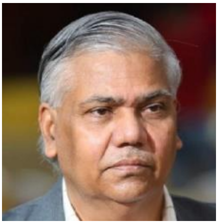
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र- बादर

३.२.कल्पना झा- मायक आँचर

३.१.राज किशोर मिश्र- बाबन



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (टेली), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,ग्राम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

बाबन

बहलि यसा नन कुटिल जाल,
छठि ति अउान अन्नक दा ना ,

का ग कना ट, ऄऽ८ म वैसल,
लगऄडान का ना वहा ना ।

किं कि ना गक नि स्कयट नना ,
डि नहल छल यट लल,
दा ना दखि डगनल ,गऽ हँसि (गल
डा ल म, वि नू वूमनहि खला

णि शु सूगा , नहि वूमलक, हलै की ,
ऄा ,डा वहलि क डा ल म,
नहि डनलक दूनि ऄा क हनव,
नि दी ष ,ऄाव ७हि हा ल मा

डा, ह७ह७ा नहल ऄछि याँ खि ,
गा कि नहल ऄछि ,चा नू का ग,
छटयटा नहल ऄछि ,नि कसऽ लल,
कि डा गऽ वूमऄडा डाकन वा गा

वा ट गकौग ऄछि मा ७ -वा य लल,
खग- हा खा म का नि नहल ऄछि ,
यछगा ७ नहल ऄछि ला हक दा ऄान,
'नना गलगी मा नि नहल ऄछि '।

नि॰ सहा य हल गा छ दि सि गा क७,

का ोन रल ोा क७ लन्धी ,
हा नल, था कल , नहलौ रना स न,
नि कलऽ क, ७क्का नन्धी ।

ोा कि नहल ठल ण्या ४ दि स,
कऽ दि ज७ मूक्र उा जा ल सँ,
दया कनय ;मूदा ब्यर्थ या चना
कनव रल ,कृया - कंगा ल साँ।

जयना रनि ,ोा गणि लगा नहल अछि ,
चा ोन सँ ऊ७ऽ क,
मा टगन -मा टगन सूा उाकन,
ो ॅं,वृथा प्रयन्न ोा ७ऽ का।

हा नि ोगल वंदी सूगा -णि शु,
गद्-गद् अछि उा णि का नी ,
वहलि आ कँ ोा कि नहल अछि ,
वनि कऽ दया -रि खा नी ।

यना धी न यंठी क वचलक,
वहलि आ का ना गहि की क हा थ,
धनि क मा लि क, चा नी -यि जना म,
वद्दी वना कऽ लऽ ोगल सा था।

स्ना मी क धी आयुना सरु,
देक खा ७ लल मधुनगन रूल,
कि छ्र -कि छ्र वा जि खलै डाकना संग,
घsन क नना -गुटका -दल।

आवेक दला न यन, मना ,यनवा ,
गs ,दखि क' लगेक सरुन्धा ,
'वका न रुलहुँ सुगा -वन्ना ,
चि श्ना नि , कठा ढकूल कि डा अनगा ?

यनि वर्या न चा दी , मा लि कक,
न मि 0-मि 0 आम, न अन्न,
यना धी न रुलहुँ जखन सँ,
७दि सुख सँ लगेग अछि गन्न।

जा ८-मा स मखमलक डा८ना सँ,
माँ यल ०गल रुमन यि जना ,
ला गल, नर्क म, सुख कि छ्र-कि छ्र क'
जना ,दल ०गल अछि मि मना ।

व७ का नेग दा ७ग मा ७ -वा य,
आ, गा कोग दा ७ग रुमन वा ट,
स्नझंदगा रुमन ,न जा नि का ना ,
वि का ०गल डा, का नदन दा ट।

आवऽ वला छैक रनदृगि आ,
वहि न गकेगि रहा ७गि ,रहमन वा ट,
ला ल (Oा य, उजन चा नन लल,
अनथ ,डा गा कगि ,रहमन लला टा।

नी क न लगेगि रगै वहि न क,
छूटि गेल सर संघगि आ,
की नी न रहा ७गि ना गि म ?
जा गल, यरुन नगि आ।

वि सनि गेलहुँ उ७ना ॐ आव,
यूना नर रहा ॐगि छल अयन रहा आनि ,
उउेगि नरेगि छलहुँ, जगय मा न रल,
डाहि लल का टै छी वयरहा नि।

मा न यउेगि अछि अयन घन डा,
गा छ -वि नि छ, नदी म सना न,
कनगि यनगन ॐी नजगि -यि जना ?
खाँ गा म राँ उेगि छलहुँ धा ना।

कृरस रुटैछ, जी नन अछि वहक,
नहि चा ही ॐी सर ,सुख आ सुनि धा ,
'दृक्षा नी क, स्नंप्र जि नगी क'

नहि हमना ७हि म कनि का दूनि धा ।

यनांग्रा क जि ज्ञि न सँ,
का ना कऽ लगा वू नह?
मा न -आमा उ॑ेग अछि नर म,
यि जना म कनल दह।

ह स्ना मी !अहाँ उँ वृषेग हा ॐॐक,
खग ला कनि क रा षा ,
कि ङ्क नहि चा ही अहाँ क दल,
दऽ दि अ् स्नांग्रा -आसा ?

चा ही न हमना ना ज -या ट,
वस, ङ्का ि७ दि अ् अहाँ हमन वा ट।

हा टौ पृथ्वी , खसौ नङ्ग,
उ(ओ वनंतन, वि ७ना , गुहा न,
खुजि जा ॐ यि जना क दा आन,
छ्टि जा ७ हमन ,का हना कऽ जा ना।

आव हम नहि नहव यि जना म,
ला गल हमना अछि उवा ट,
यना धी नगा सँ मुक्ति क,
का ना गऽ हव कनौ वा ट।

ङा ७व नहि रुम अयन उमद,
कहि उा ाऽ खुजौ चा नी क दा आन,
७हि का ना गृरु सँ , नर म उ७व ,
उाकना लल नहि रुम अनरा आन।

ा कि लव रुम अयन खाँ ा ,
रटा मा ७ -वा य -वहि नि ,
ाकन वा द ाऽ नहि लऽ जा ७ा,
रुमन स्नांप्रा क कि उा कि नि ?'

भि शु सूगा , कया ल -कल्यना म,
तुवल, यि जना म य७ल -य७ल,
टूटल मा न, आ दुनू आँखि म ,
खा ली ,ना न -ना न रनल।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

३.२.कल्यना मा- मायक आँचन



कल्पना झा

मायक आँचन

कत स्नहगन माय गाहन आंचन,

लाल ढवूस हनियन आंचन,

वांहि गिट0s मं किछु नहै नूकन,

लाक समाज आ सव सं वानान,

ढवनल नान हमन गां याछलें,

नहिं आगु किछु याछु वजलें,

माय विदा हलुं गिट0 खाल न,

कि नखन झें कनि दखा न,

अांचन क गिट0 क माल वद्गा छै,

माय क ग्रहु अनमाल हागि छै,

0हक्का मानि माय जहन हंसल,

हूजि गिट0 किछ्ठ कहि नहल,

मूधी वांहि हम ललूं नूकाय,

माय क सयना नहि विलेल ।

-कल्पना झा, वाकाना

अयन मंगाय editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

४. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

४. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

सूचना

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into

Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

१

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

विदेह अपन ३६९ म (०१ मइ २०२३) अंकमे मैथिली लेखक अशोक पर आ ३७० म (१५ मइ २०२३) अंकमे मैथिली लेखक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर विशेषांक निकालत। विशेषांक लेल रचनाकार/ कलाकर्मीक काज, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनात्मक कार्यपर सेहो प्रकाशक रचना (संस्मरण, आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) आमंत्रित अछि। अहाँ अपन रचना ३६९म अंकक विशेषांक लेल २४ अप्रैल २०२३ धरि आ ३७०म अंकक विशेषांक लेल ८ मइ २०२३ धरि एतऽ ई-मेलमे ई-पत्र

सम्पर्क □□□□□□□□□.□□□□□.□□□□□□@□□□□□.□□□ पर पठा सकै छी।

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक वनम काना एकटा संस्थाक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

विदेह अपन ३११ म (०१ जून २०२३) अंकमे "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" पर विशेषांक निकालत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.) पर निम्न लीखल विंदुपर मैथिलीमे आलेख आमंत्रित अछि।

१) एम.एस.यू. केर गठनक प्रमाणिक इतिहास,

२) एम.एस.यू. आ मिथिला केर नव रचना,

३) एम.एस.यू. आ विभिन्न जाति केर समन्वय,

४) एम.एस.यू. द्वारा चल विभिन्न आंदोलन आ ओकर लेखा-जोखा एवम् ओकर प्रभाव वा

५) एम.एस.यू. संदर्भित आन कोनो लेख।

३११म अंकक विशेषांक लेल अहाँ अपन रचना २५ मई २०२३ धरि नीचाँ देल ई-पत्र सङ्केत □□□□□□□□□□.□□□□□.□□□□□□□@□□□□□.□□□ पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह साक्षात्कार" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ (८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक निकालन अछि।

अही सन्दर्भमे आठो साहित्यकार पर "विदेह साक्षात्कार" शृंखला अन्तर्गत "साक्षात्कार" आमंत्रित कयल जा रहल अछि।

"विदेह साक्षात्कार" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:

(१) इच्छुक लेखक ऊपरक कोनो एक रचनाकार पर अपन साक्षात्कार लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर दऽ सकै छथि। साक्षात्कार लिखबाक अवधि सामान्यतः एक मास रहत।

(२) विदेह आठो रचनाकारपर आठो लेखकक नाम साक्षात्कार लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।

"विदेह साक्षात्कार" लिखबाक नियम:

(१) साक्षात्कार पूर्ण रूपेँ रचनाकारपर केन्द्रित हुअय। साहित्य अकादमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत रूपेँ लिखल साक्षात्कार/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जोड़ि कय रचनाकारक बदला अपन-आत्म-प्रशंसा लिखै छथि। "विदेह साक्षात्कार" हीरा चर्चा कय फुटबाल सन रहत। हीरा चर्चा कय फुटबाल एहन एकमात्र टूर्नामेण्ट अछि जाहि ठाम "डायविंग" वा "क्लाजिंग" सभीमभी नै होइत छै आ तकर कारण छै जे "डायविंग"

वा "ब्लॉगिंग" मे टूर्नामेण्टमे नै खेल रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइत छथि आ ओकर खिलाड़ी सँ दूर चलि जाइत अछि। हीरा मात्र आ मात्र फुटबाल खिलाड़ीयेक कहैत रहैत अछि से ओकर टूर्नामेण्ट "डायनिंग सेमीनार" मे ततेक सामे "डायनिंग मेज" सँ आनन्द होइत अछि आ ओकर समायल "ब्लॉगिंग सेमीनार"सँ नै ततेक "होइतरल मेज आ ग्रान्टी"सँ खराब होइत अछि आ ओकर मात्र आ मात्र खिलाड़ी रहैत छथि। तहिना "विदेह सम्मान" मात्र आ मात्र ई "साग रचनाकार"येक कहैत रहत आ कोनो संस्थानक आदि जाति कए ओकर रचनाकारसँ अपनायल कहैत करबाक अनुमति नै रहत।

(२) सम्मानित लोक "विदेह पटल"मे उपलब्ध सामग्रीक सन्दर्भ सहित उपयोग कयल जा सकैछ।

(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सेहो कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ई ई-पत्रिकामे कोनो रोयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।

(४) "विदेह सम्मान"क फॉर्मेट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवेचना सहित) आ रचनावली (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह सम्मान" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर सम्मान निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर

मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम शंकर मिश्र द्वारा लिखल जायत। मैथिली पुत्र प्रदीप पर "विदेह समानान्तर" लिखताह प्रेमशंकर झा "पवन"।
शेष ७ लेखकपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

घोषणा २: ओना तँ मैथिली पुत्र प्रदीप पर विदेह विशेषांक मे निकालल अछि, मुदा हुनकर अवदान कें देखैत प्रेमशंकर झा "पवन"क हुनका ऊपर "विदेह समानान्तर" लिखबाक विचार आयल तँ ओकरा स्वीकार कयल गेल।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (१)

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित भेल छै तकर संग विदेह ओहन लेखक-साहित्यकार सभक ध्यान सेहो केन्द्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। ई नव विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-
१) हम एकटा कोनो लेखक वा कलाकारपर एकाग्र आलोचना करब ओकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी रहत। ई पोथीक पहिल रूप ई-बुक कऽ रूपमे हेत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि परिस्थितिपर निर्भर करत।
२) ई शृंखलामे सुभाष चंद्र यादवपर केन्द्रित "नित नवल सुभाष

𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫" 𑒋𑒫𑓀 𑒩𑒰𑒖𑒠𑒹𑒫 𑒧𑓀𑒛𑒪𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 "□□□□□□ □□□□□□-□□□□□□□□ □□□□□□" 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒳 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒰𑒩𑓂𑒣𑒝 𑓓𑓑 𑒠𑒱𑒮𑒧𑓂𑒥𑒩 𑓒𑓐𑓒𑓒 𑒏𑒿 𑓑𑓑𑓑𑒧 𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒲𑒣 𑒖𑒩𑒨 𑒧𑒹 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪।

𑓓)𑒂𑒑𑒰𑒿𑒏 𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰

𑒪𑒹𑒪 http://videha.co.in/investigation.htm 𑒠𑒹𑒐𑒾 𑒢𑒯𑒲।

𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲 "𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮: 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒂 𑒮𑒫𑒰𑒪" (𑓒𑓐𑓒𑓑) 𑒏 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒦𑓂𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒃 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒱𑒝𑓂𑒛𑒱𑒏𑒹𑒙𑒹𑒛 𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒂𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒁𑒕𑒱, 𑓒𑓖𑓓 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰𑒏 𑒃 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒯𑒰𑒩𑓂𑒛𑒥𑒰𑒅𑒝𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒃𑒥𑓂𑒩𑒹𑒩𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒹𑒔𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒞, 𑒖𑒞𑓄 𑒃 𑒮𑒹𑒙 𑒖𑒰𑒨𑒞, 𑒂𑒧𑒖𑒢𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒃 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒨 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒢𑒪𑒾𑓀 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒧 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒼 𑒣𑒰𑒃𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒱𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱।

𑒋𑒞𑓄 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒦𑒴𑒪 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒋𑒩 𑒮𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 '𑒑𑒳𑒪𑒼'𑒏𑒿 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒍 𑒠𑒳 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒢𑒱𑒣𑒙𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒍 𑒯𑒳𑒢𑒳 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒯𑒧 𑒋𑒞𑓄 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒧𑒢𑒼𑒩𑓀𑒖𑒢𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒑𑒳𑒪𑒼 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹 𑒯𑒼𑒋𑒥, 𑒖𑒿 𑒢𑒻 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒪𑒱𑒁, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒋𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒧𑒢𑒼𑒩𑓀𑒖𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒯𑒼𑒋𑒞, 𑒑𑒳𑒪𑒼 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫 𑒖𑒲𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫𑒣𑒩 𑒋 http://videha.co.in/pothi.htm 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩।

"𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒑𑓂𑒩𑒯। 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒡𑒩𑒞𑒰 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।"

एहि उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै एतऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्न नै छै। राजनैतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधन धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'हाट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा एतहुँ सुभाषजीक रचना शैलीकेँ राजनैतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधनक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हुनकर पोथी 'बिन नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घंटी अछि। एहि हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक साधन पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन बाबाताराम गढ़न सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेन्टक गर्वसँ चर्चा करै छथि। आ ई असाइनमेन्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ खनदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बाबाताराक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

आब अहाँ पूछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा कोना कलक,

ऊा गँ कन्नागारुट नै कनै७, गँ गकन उग्दन अछि रुमन ३ टा याथी ज १११म सगन नागि दीय जनय म लाकार्यिग रुल ३१ दिसम्बन २०२२ कँ, नउरु सगन नागि दीय जनय जकना सारुिय अकादमी गग दस वर्खसँ गीति लवाक प्रयास कऽ नरुल अछि। अरुाँसँ उ गीनू याथीयन टियमी ई-यत्र सङ्कग editorial.staff.videha@gmail.comयन आमंत्रिग अछि। यरिुल दु याथी म नाजदन मण्डल आ सूरुाब चन्द्र यादनक सारुियक समीक्षा अछि ज रुमन गसन याथी मैथिली समीक्षाशास्त्रक सिद्धांगक आधानयन कउल गेल अछि।

गीनू याथीक लिंक नीचाँ दल गेल अछि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

निग नवल सूरुाब चन्द्र यादन

निग नवल सूरुाब चन्द्र यादन (मिथिलाऊन)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (गिनरुगा)

संगम यठ्ठ कमलानन्द मा क व्राह्मणनादयन प्रदान:

दुखद यञ्जी- The Black Book

दुखद यञ्जी- □□□ □□□□□ □□□□ (मिथिलाऊन)

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४(२)

निरा नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच में' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, गुम्ही नदी ओर पतनीकी माटी-हूक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पन्नाक पन्ना मैथिली अनुवाद कऽ अपना नाम उपन्यास छपवाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ऐ धार लेखकक निसर्ग कहै छथि। ऐ कऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई धार लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई निसर्ग दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इंजीनियरिंग मे बी. टक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंगमे एम.टक. १९७०मे कने छथि, आ ओइ निसर्ग लेल ब्रालिस्फोड

छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हानि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लैए, तेँ कमलानन्द झा केँ बूझऽ मे आबि जाइत छन्हि जे ई निसर्ग कोनो सिविल इन्जीनियरक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बूझला होइन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

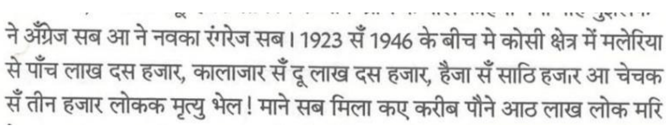
दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ थानक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर मृत्युसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकत, मुदा मूलस्थानक पुनस्थापन आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नता भेटत से हुन सिद्ध भेल। ओ लेखककेँ दस बारह वर्ष पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कविनाम प्रकाशित भऽ अनायास अपन नवनाम दासनक सामिग्री चोरि कऽ लेइ छथि, तेहन सन। आब ओ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्भाग्य! जाइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक साधन बनौने छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर थाना सेहो अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जत्थावला लोक कम्युनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचबालेल वामपंथक शरण, तेहन लोक सभसँ कम्युनिस्टकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे:

ht tp://vi deha.co.i n/pot hi .ht m
ऍाs ऍकटा गय मान याि दी ज जखन विल (गझकँ युछल (गलह्वि ज की डा ऍक्ष वॉक्ष रानाम याॅॅनशीक तनसँ दनीसँ आनि नहल छथि? गँ हूनकन उम्हन नहह्वि ज माॅॅक्वासॉङ्ग याॅॅनशीक तन काना उद्याद दनीसँ नै उानन अछि। स निदह यटानम हम सट ऊ गनहक निष्क नहिगा ऍकना आन समृद्व कनैगा नहव, कानध समानान्हन धानाम स७ल माँछ द्वान याखनिक सट माँछ नै सउॅ, ऍाुक्वा मलाह (गाट-(गाट कs स७ल माँछ निकालैगा नहल छथि, निकालैगा नहगा।

सिद्धीकरटत समीजायन अन्हिम यहान।

मूल दिनश कूमान मिश्र (दूॅॅ याटन क वीच मं... २००६): यह थ्यान दन की वाग है कि 1923 स 1946 क वीच कासी ऊत्र मं मलनिया स 5,10,000, कालाजान स 2,10,000, हैजा स 60,000 गथा चचक स 3,000 मौगं (कूल 7,83,000) हूॅॅी। वान यंकज मा यनाशन (**साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समिगिक सदस्य)** [जलप्रांगन २०११ (यृ. १०३)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनश कूमान मिश्र (दूॅॅ याटन क वीच मं... २००६): रानगनर्ष मं विहान मं कासी नदी का वांधन का काम 12वीं शगाह्वी मं किसी नाजा लक्ष्मध द्विगीय न कननाया था। ऊैन ॅॅस काम क लिऍ उसन

प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबंध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबंध के अवशेष आज भी सुपौल जिले में भीम नगर से करीब 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध कोसी नदी के पश्चिमी किनारे पर मिलता है और उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबंध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि जैसा लगता था कि इस तटबंध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

युवा समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चारि उपन्यासकारक पी0 (0ाकव, देखू युवा समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चारि पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २७१-२७८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

घान यंकज मा यनाशन (साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समिगिक सदस्य) [जलप्रांगन २०११ (यृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह कि पहचानता की एक मलकफिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन था जिसने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाया था। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे पड़ाव में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की

ऊपर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाय। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियापुर के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और बीच वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इन रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुल्तान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

श्री पंकज झा पराशर **(साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य)** [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०७)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवत: कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंतत: तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र अही लिंकपर आर स्क्रीनशॉट अपडेट कएल जायत।)

विदेह ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... निरन्तर दिनेश कुमार मिश्र

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पत्र।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

निशा नवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ पहिने श्रेय छीनि लेलनि? की पहिने हुनकर ब्राह्मणवादी संस्थानक अहंकार- जे हम ककरो चढ़ा सकै छी आ ककरो उतारि सकै छी- कोन रचनाकास्था थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण?

चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा कोन स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादुवला साहित्यक निश्छल दुनियाँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियाँमे।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आनहुसँ पहिनहिये 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे। "

आ उपन्यास आनहु।

गामवालीक मृत्यु आ तखन समस्या, गामवालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिण्डीकेटक समीक्षायन अन्तिम प्रहार।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक 01 फरवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... **वित नवल सुशील**

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

विदेह ब्लॉगकार्स लिस्ट

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन □□□□□□□□ नम्बर देमन □□□□□□□□ □□ +919560960721 पर पठाउ, ठाकन प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

६

विदेहक "साहित्यिक ग्रन्थागार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक ग्रन्थागार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल □□□□□□□□□.□□□□□.□□□□□□@□□□□□.□□□ पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमीः-

(क) पुरस्कारक राजनीति

(ख) सरकारी अकादमीमे पैसबाक गएर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सभागृह आ अकादमी कार्य काज करबाक नीति

(घ) सरकारी सभाक छद्म निराधार उपयोग तात्कालिक समानांतर सभाक कार्यपद्धति

(ङ) अकादमी पुरस्कारक पाछाँ षड्यन्त्र: मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३. प्रकाशन उद्योगमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सभहक आचरण

५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, रिव्यू, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा

७. लेखक सभहक जन्म-मरण शताब्दी करब चुनाव , कैलेंडरवाद आ रचना पाठक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सभहक संग भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

९. आर आन विषय।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

ANNEXURE

Read the original Article by Douglas Kellner and then blatant copying in hindi version in his own name by Pankaj Parashar published in Pahal-86

After that read blatant intellectual theft/ copying of Maithili Poem by Pankaj Parashar Published in Aarambh-23 (March 2000) and then Shri Arun Kamal's original Hindi Poem "Naye Ilake Me" Ist published by Vani Prakashan in 1996.

Thanks Readers for coming out with so much information.

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

By

Douglas Kellner

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life.

I, however, want to make another distinction between functional intellectuals who serve to reproduce and legitimate the values of existing societies contrasted to critical-oppositional intellectuals who oppose the existing order. Sometimes oppositional intellectuals voice their criticisms in the name of existing values which they claim are being violated (i.e. truth, rights, rule by law, justice, etc.) and sometimes in the name of values or ideas which are said to be higher potentialities of the existing order (i.e. participatory democracy, socialism, genuine equality for women and blacks, ecological restoration, etc.). Functional intellectuals were earlier the classical ideologues, whereas today they tend to be functionaries of parties or interest groups, or mere technicians who devise more efficient means to obtain certain ends, or who apply their skills to increase technical knowledge in various specialized domains (medicine, physics, history, etc.) without questioning the ends, goals, or values that they are serving, or the social utility or disutility of their activities.

Functional intellectuals are thus servants of existing societies who are specialists in legitimation and technical knowledge, while oppositional intellectuals are critics who struggle to create a better society. Critical intellectuals were traditionally those who utilized their skills of speaking and writing to denounce injustices and abuses of power, and to fight for truth, justice, progress, and other universal values. In the words of Jean-Paul Sartre (1974: 285), "the duty of the intellectual is to denounce injustice wherever it occurs." For Sartre, the domain of the critical intellectual is to write and speak within the public sphere, denouncing oppression and fighting for human freedom and emancipation. On this model, a critical intellectual's task is to bear witness, to analyze, to expose, and to criticize a wide range of social evils. The sphere and arena of the critical/oppositional intellectual is the word, and his or her function is to describe and denounce injustice wherever it may occur.

The modern critical intellectual's field of action was what Habermas (1989) called the public sphere of democratic debate, political dialogue, and the writing and discussion of newspapers, journals, pamphlets, and books. Of course, not all intellectuals were critical or by any means progressive. With the rise of modern societies, there was a division between physical and mental labor, and intellectuals became those who specialized in mental labor, producing and distributing ideas and culture, with some opposing and some legitimating the established forms of society.

Thus, intellectuals were split into those critical and oppositional individuals who opposed injustice and oppression, as contrasted to functional intellectuals who produced technical knowledge that served the existing society and those producers of ideology who legitimated the forms of class, race, and gender domination and inequality in modern societies. In the following reflections, I want to discuss some challenges from postmodern theory to the classical conceptions of the critical-oppositional intellectual and some of the ways that new technologies and new public spheres offer new possibilities for democratic discussion and intervention, which call for a redefinition of the critical intellectual. Consequently, I will discuss some changes in the concept of the public sphere and how new technologies and new spheres of public debate and conflict suggest some new possibilities for redefining intellectuals in the present era.

The Public Sphere and the Intellectual

Democracy involves a separation of powers and popular participation in governmental affairs. During the era of the Enlightenment and 18th century democratic revolutions, public spheres emerged where individuals could discuss and debate issues of common concern (see Habermas 1989). The public was also a site where criticism of the state and existing society could circulate. The institutions and spaces of the 18th century democratic public sphere included newspapers, journals,

and a press independent from state ownership and control, coffee houses where individuals read newspapers and engaged in political discussion, literary salons where ideas and criticism were produced, and public assemblies which were the sites of public oratory and debate.

Bourgeois societies split, of course, across class lines and different class factions produced different political parties, organizations, and ideologies with each party attracting specialists in words and writing known as intellectuals. Oppressed groups also developed their own insurgent intellectuals, ranging from representatives of working class organizations, to women like Mary Wollstonecraft fighting for women's rights, to leaders of oppressed groups of color, ethnicity, sexual preference, and so on. Insurgent intellectuals attacked oppression and promoted action that would address the causes of oppression, linking thought to action, theory to practice. Thus, during the 19th century, the working class developed its own oppositional public spheres in union halls, party cells and meeting places, saloons, and institutions of working class culture. With the rise of Social Democracy and other working class movements in Europe and the United States, an alternative press, radical cultural organizations, and the spaces of the strike, sit-in, and political insurrection emerged as sites of an oppositional public sphere.

Intellectuals in modern societies were thus conflicted beings with contradictory social functions. The classical critical intellectual -- represented by figures like the French Enlightenment ideologues, Thomas Paine, Mary Wollstonecraft, and later figures like Heine, Marx, Hugo, Dreyfus, Du Bois, Sartre, and Marcuse -- was to speak out against injustice and oppression and to fight for justice, equality, and the other values of the Enlightenment. Indeed, the Enlightenment itself represents one of the most successful discourses of the critical individual, a discourse and movement which assigns intellectuals key social functions. And yet conservative intellectuals attacked the Enlightenment and its prodigy the French Revolution and produced discourses that legitimated every conceivable form of oppression from class to race, gender, and ethnic domination.

Against the EN and Sartre's model of the committed intellectual who is engaged for freedom (engagé), Michel Foucault complained that Sartre represented an ideal of the universal intellectual who fought for universal values such as truth and freedom, and assumed the task of speaking for humanity (1977). Against such an exalted and in his view exaggerated conception, Foucault militated for a conception of the specific intellectual who intervened on the side of the oppressed in specific issues, not claiming to speak for the oppressed, but to intervene as an intellectual in specific issues and debates.

Foucault's conception of the specific intellectual has been accompanied within a new postmodern politics with a turn toward new social movements as the domain of contemporary politics (Laclau and Mouffe 1985), replacing the state and the national realm of party politics. For a postmodern politics, power is diffuse and local and not merely to be found in macroinstitutions like the workplace, the state, or patriarchy. Macropolitics that goes after big institutions like the state or capital is to be replaced by micropolitics, with specific intellectuals intervening in spheres like the university, the prison, the hospital, or for the rights of specific oppressed groups like sexual or ethnic minorities. Global and national politics and theories are rejected in favor of more local micro politics, and the discourse and function of the intellectuals is seen as more specific, provisional, and modest than in modern theory and politics, subordinate to local struggles rather than more ambitious projects of emancipation and social transformation.

In my view, such a binary distinction between macro and micro theory and politics is problematical, as are absolutist commitments to either modern or postmodern theory tout court (Best and Kellner 1991 and 1997). Using the example of the events of 1989 that saw the collapse of communism, for instance, it is clear that the popular offensives against oppressive communist power combined micro and macropolitics, moving from local and specific struggles rooted in union halls, universities, churches, and small groups to mass demonstrations forcing democratic reforms and even classical mass insurrection aiming at an overthrow of the existing order, as in Romania. In these struggles, intellectuals played a variety of roles and deployed a diversity of discourses, ranging from the local and specific to the national and general.

Thus, whereas I would argue that postmodern theory contains important criticism of some of the illusions and ideologies of the traditional modern intellectual, it goes too far in rejecting the classical role of the critical intellectual. Moreover, I shall suggest that some of the modern conception of the critical and oppositional intellectual remains useful. I would, in fact, reject the particular/universal intellectual dichotomy in favor of developing a normative concept of the critical public intellectual. The public intellectual -- on this conception -- intervenes in the public sphere, fights against lies, oppression, and injustice and fights for rights, freedom, and democracy à la Sartre's committed intellectual. But a democratic public intellectual on my conception does not speak for others, does not abrogate or monopolize the function of speaking the truth, but simply participates in discussion and debate, defending specific ideas, values, or norms or principle that may be particular or universal. But if universal, like human rights, they are contextual, provisional, normative and general and not valid for all time. Indeed, rights are products of social struggles and are thus social constructs and not innate or natural

entities -- as the classical natural rights theorists would have it. But rights can be generalized, extended, and can take universal forms -- as with, for instance, a UN charter of human rights that holds that certain rights are valid for all individuals -- at least in this world at this point in time.

Consequently, one does not need all of the baggage of the universal intellectual to maintain a conception of a public or democratic intellectual in the present era. Intellectuals may well seek to occupy a higher ground than particularistic interests, a common ground seeking public interests and goods. But intellectuals should not abrogate the right to speak for all and should be aware that they are speaking from a determinate position with its own biases and limitations. Moreover, intellectuals should learn to get out of their particular frame of reference for more general ones, as well as to be able to take the position of the other, to empathize with more marginal and oppressed groups, to learn from them, and to support their struggles. To perpetually criticize oneself, to develop the capacity for self-reflection and critique -- as well as self-expression -- is thus part of the duty of the democratic intellectual.

New Technologies, New Public Spheres, and New Intellectuals

In the following discussion, I will argue that although the public intellectual should assume new functions and activities today, the critical capacities and vision of the classical critical intellectual are still relevant, thus I suggest building on models of the past, rather than simply throwing them over, as in some types of postmodern theory. I want to suggest that rethinking the intellectual and the public sphere today requires rethinking the relationship between intellectuals and technology.

In a certain sense, there was no important connection between the classical intellectual and technology. To be sure, intellectuals -- especially scientific scholars like Leonardo de Vinci, Galileo, or Darwin -- deployed technologies and entire groups like the British Royal Society were concerned with technologies and were indeed often inventors themselves. Some intellectuals used printing presses and were themselves printers and many, though not all, of the major intellectuals of the 20th century probably used a typewriter, though I personally know of no major studies of the relationship between the typewriter and intellectuals. Yet a classical intellectual did not have to intrinsically deploy any specific technology and there was thus no intimate connection between intellectuals and technology.

I now want to argue that in the contemporary high-tech societies there is emerging a significant expansion and redefinition of the public sphere and that these developments, connected primarily with media and computer technologies, require a reformulation and expansion of the concept of critical or committed intellectual,

as well as a redefinition of the public intellectual. Earlier in the century, John Dewey envisaged developing a newspaper that would convey "thought news," bringing all the latest ideas in science, technology, and the intellectual world to a general public, which would also promote democracy (see the discussion of this project in Czitrom 1982: 104ff). In addition, Bertolt Brecht and Walter Benjamin (1969) saw the revolutionary potential of new technologies like film and radio and urged radical intellectuals to seize these new forces of production, to "refunction" them, and to turn them into instruments to democratize and revolutionize society. Sartre too worked on radio and television series and insisted that "committed writers must get into these relay station arts of the movies and radio" (1974: 177; for discussion of his Les temps modernes radio series, see 177-180).

Previously, radio, television, and the other electronic media of communication tended to be closed to critical and oppositional voices both in systems controlled by the state and in private corporations. Public access and low power television, and community and guerilla radio, however, open these technologies to intervention and use by critical intellectuals. For some years now, I have been urging progressives to make use of new communications broadcast media (Kellner 1979; 1985; 1990; 1992) and have in fact been involved in a public access television program in Austin, Texas since 1978 which has produced over 600 programs and won the George Stoney Award for public affairs television. My argument was that radio, television, and other electronic modes of communication were creating new public spheres of debate, discussion, and information and that intellectuals who wanted to engage the public, to be where the people were at, and who thus wanted to intervene in the public affairs of their society should make use of these new media technologies and institutions, and develop new communication politics and new media projects.

In fact, one can argue that the victory of Reagan and the Right in the United States in 1980 was related to the Right's effective mobilization of conservative intellectuals and their use of television, radio, fax and computer communication, direct mailings, telephones, and other sophisticated political uses of new technologies, as well as more traditional print media. Furthermore, one could argue that Clinton's victory over Bush in 1992, and the surprising success of the Perot campaign, were related to effective uses of communication technologies. And more recently in the U.S., the Republican and rightwing success in the 1994 elections can be related to their use of talk radio, computer bulletin boards, and other technologies. Indeed, Newt Grinrich, William Bennett, and other conservatives have made very effective use of public access television, radio, computer networks, book promotion tours with high media exposure, and other technologies to promote their ideas. Yet it is generally acknowledged that the Clinton administration deployed much more effective communications politics in the 1996 election than the Dole

campaign. Effective CU politics are thus now essential to political success in national and local conflicts and often which side has the most effective politics of CU wins the struggle in question.

Consequently, I would argue that effective use of technology is essential in contemporary politics and that intellectuals who wish to intervene in the new public spheres need to deploy new communications media to participate in democratic debate and to shape the future of contemporary societies and culture. My argument is that first broadcast media like radio and television, and now computers have produced new public spheres and spaces for information, debate, and participation that contain both the potential to invigorate democracy and to increase the dissemination of critical and progressive ideas -- as well as new possibilities for manipulation, social control, and the promotion of conservative positions. But participation in these new public spheres -- computer bulletin boards and discussion groups, talk radio and television, and the emerging sphere of what I call cyberspace democracy require critical intellectuals to gain new technical skills and to master new technologies.

I am thus suggesting that intellectuals in the present moment must master new technologies and that there is thus a more intimate relationship between intellectuals and technology than in previous social configurations. To be an intellectual today involves use of the most advanced forces of production to develop and circulate ideas, to do research and involve oneself in political debate and discussion, and to intervene in the new public spheres produced by broadcasting and computing technologies. New public intellectuals should attempt to develop strategies that will use these technologies to attack domination and to promote education, democracy, and political struggle -- or whatever goals are normatively posited as desirable to attain. There is thus an intrinsic connection in this argument between the fate of intellectuals and the forces of production which, as always, can be used for conservative or progressive ends.

Toward a Radical Democratic Techno-Politics

A revitalization of democracy in capitalist societies will therefore require a democratic media politics. Such a politics could involve a two-fold strategy of, first, attempting to democratize existing media to make them more responsive to the "public interest, convenience, and necessity." In the United States, the media watchdog group FAIR (Fairness and Accuracy in Media) has developed this alternative, criticizing mainstream media for failing to assume their democratic and journalistic responsibilities and calling for an expansion of voices and ideas within the media system. Another strategy involves the development of oppositional media, alternatives to the mainstream, developed outside of the established media

system. On my view, both strategies are necessary for the development of a democratic media politics and it is a mistake to pursue one at the neglect of the other.

Developing a radical democratic media politics thus involves continued relentless criticism of the existing media system, attempts to democratize and reform it, and the production of alternative progressive media. On my account, democratizing our media system will require expansion of the alternative press, a revitalization of public television, an increased role for public access television, the eventual development of a public satellite system, democratized computer networks, and oppositional cultural politics within every sphere of culture, ranging from music to visual to print culture.

Community and Low-Power Radio

Community radio has long provided an alternative set of voices to the highly commercialized mainstream radio. Citizen-band (CB) and short-wave radio allows individuals to directly communicate with each other. Many countries have also experimented with low-power community radio, which enables groups to actually bring individuals out of their homes to public places to engage in discussion or communal activity. Low-power radio enables individuals to directly communicate with their neighbors through call-in telephone connections, or through discussions in nearby studios, and thus provide democratic and participatory institutions (see Box 3).

Low-power radio, however, is subject to quick suppression by the state, as happened in Japan which had an extensive low-power radio culture in play that was shut-down almost overnight when the state outlawed low-power broadcasting. In the U.S., there have been some low-power radio experiments, but the government too has cracked down on these local attempts to democratize radio. A democratic media politics should thus struggle for low-power radio and to increase the possibilities of direct communication through radio technology.

Ironically, despite the higher costs of television technology, there are probably more immediate possibilities for democratic alternative television than in radio. As mentioned, while low-power radio technologies are relatively inexpensive, they are easily suppressed by a state which opposes democratic and free-wheeling communication. Community radio has been curtailed by saturation of FM and AM frequencies and in most places there is simply not room for legal community radio stations. During the early 1990s in Austin, Texas, for instance, a vicious battle took place between the University of Texas and a local community-based co-op radio group for the remaining FM frequency band. Hence, it has been difficult to develop

new radio outlets for public communication with the previous limited spectrum allotment, although fiber-optic community cable system and the Internet also make possible a dramatic expansion of community and alternative road which could make possible Brecht's vision of a radio system with every individual a sender.

Public Access Television

Public access television has been for some decades now an established venue for alternative democratic communication. The rapid expansion of public access television in the 1970s in the U.S. provided new possibilities for progressive individuals and groups to produce video programming that cuts against the conservative programming which dominates mainstream television in the United States. Progressive access programming is now being cablecast regularly in such places as New York, Los Angeles, Boston, Chicago, Atlanta, Madison, Urbana, New Orleans, Austin, and perhaps as many as 2,000 other towns or regions of the country. Public access television, in most cases, provides free equipment and airtime to individuals and groups who want to make their own programming. Usually, one must take a course to actually use studio and editing equipment and a few systems lease the equipment and airtime, but, for the most part, where there are public access channels, the cable systems make them available for public use and they are usually managed by an independent body, answerable to the community, and often financed by the cable system.

When cable television began to be widely introduced in the early 1970s, the Federal Communications Commission mandated in 1972 that "beginning in 1972, new cable systems {and after 1977, all cable systems} in the 100 largest television markets be required to provide channels for government, for educational purposes, and most importantly, for public access." This mandate suggested that cable systems should make available three public access channels to be used for state and local government, education, and community public access use. "Public access" was construed to mean that the cable company should make available equipment and air time so that literally anybody could make noncommercial use of the access channel, and say and do anything that they wished on a first-come, first-served basis, subject only to obscenity and libel laws and prohibitions against advertising and pitches for money. Creating an access system required, in many cases, setting up a local organization to manage the access channels, though in other systems the cable company itself managed the access center.

In the beginning, however, few, if any, cable systems made as many as three channels available, but some systems began offering one or two access channels in the early to mid 1970s. The availability of access channels depended, for the most part, on the political clout of local governments and committed, and often unpaid,

local groups to convince the cable companies, almost all privately owned, to make available an access channel. Here in Austin, for example, a small group of video activists formed Austin Community Television in 1973 and began broadcasting with their own equipment through the cable system that year. Eventually, they received foundation and CentertainmentA government grants to support their activities, buy equipment, and pay regular employees salaries. A new cable contract signed in the early 1980s called for the cable company to provide $500,000 a year for access and after a difficult political struggle, which I shall mention later, were able to get at least $300,000-$400,000 a year to support Austin Community Television activities.

A 1979 Supreme Court decision, however, struck down the 1972 FCC ruling on the grounds that the FCC did not have the authority to mandate access, an authority which supposedly belongs to the U.S. Congress. Nonetheless, cable was expanding so rapidly and becoming such a high-growth competitive industry that city governments considering cable systems were besieged by companies making lucrative offers (20 to 80 channel cable systems) and were able to negotiate access channels and financial support for a public access system. Consequently, public access grew significantly during the early 1980s.

Where there are operative public access systems, individuals have promising, though not sufficiently explored, possibilities to produce and broadcast their own television programs. In Austin, Texas, for example, there have been weekly anti-nuclear programs, black and chicano series, gay programs, countercultural and anarchist programs, an atheist program, feminist and women's programs, labor programming, and a weekly progressive news magazine, Alternative Views, with which I am involved, that has produced over 470 hour-long programs from 1978 to the present on a wide variety of topics. We combine news reports from alternative sources with discussion, documentaries, and video-footage from alternative sources. Paper Tiger Television in New York combines critique of corporate media by media critics with imaginative sets, visuals, editing, and so on. A labor-oriented program, The Mill Hunk News, in Pittsburgh used to combine news reports of labor issues with documentary interviews with workers, music-videos, and other creative visuals, while Labor Beat in Chicago also uses documentary footage, music, drama, and collages of images, as well as interview and talking head formats, to present alternative information (see Box 4).

There have been some experiments with national progressive satellite networks, although they have suffered from inadequate funding and the failure of often conservative-owned cable systems to carry progressive programming. While public access television is still in a relatively early stage of development in the U.S. and Europe, it contains the promise of providing a different type of alternative television.

Despite obstacles to its use, public access provides the one institution in the commercial and state broadcasting systems that is at least potentially open to progressive intervention. It is self-defeating simply to dismiss broadcast media as tools of manipulation and to think that print media are the only tools of communication and political education open to progressives. Surveys have shown that people take more seriously individuals, groups, and politics that appear on TV; thus the use of television could help progressive movements and struggles gain legitimacy and force in the shifting and contradictory field of U.S. politics. The Right has been making effective use of new technologies and media of communication, and for progressives to remain aloof is a luxury that they can no longer afford.

Of course, many will claim that democratic politics involves face-to-face conversation, discussion, and producing consensus. But for intelligent debate and consensus to be reached, individuals must be informed and radio, television, and computers are important sources of information in the present age. Thus I am not proposing that media politics supplement all political activity and organizing, but am suggesting that a media politics should be developed to help activist groups and individuals obtain and disseminate information. In Austin, Texas, for instance, a group, Council for Public Media, has been working to inform activist groups how they can get information through the new computer technologies and how they can use the press, broadcast media, and other methods of communication to get their messages out. Activist groups are coming to see that media politics is a key element of political organization and struggle and thus more work on developing institutions and strategies for media politics is necessary.

Indeed, if progressive groups and movements are to produce a genuine alternative to the Right, they must increase their mass base and circulate their struggles to more segments of the population. After all, most people get their news and information from television, and the broadcast media arguably play a decisive role in defining political realities, shaping public opinion, and determining what is or what is not to be taken seriously. If progressives want to play a role in local and national political life, they must come to terms with the realities of electronic communication and computer technologies in order to develop strategies to make use of new technologies and possibilities for intervention.

The Democratization of Computers and Information

Other possibilities for expanding a system of democratic techno-politics reside in new computer and information technologies. It appears that there will be a merger of entertainment and information centers in the homes of the future with all possible print media information accessible by computer and all visual media entertainment and information resources available for home

computer/entertainment center access. But the threat--and likelihood if alternative concepts are not developed and disseminated--is that this information and entertainment material will be thoroughly commodified, available only to those who can afford to pay. Consequently, it is necessary to begin devising public alternatives to these private/corporate information and entertainment systems of the future.

Given the growing importance of computers and information in the new techno-capitalist society, producing new information networks and systems must therefore be an essential ingredient of a progressive media and information politics. The computerization of the world is well underway and possibilities are growing for new information networks and computer communication systems. To avoid corporate and government monopolization and control of information, new public information networks and centers are also necessary so that citizens of the future can have access to the information needed to intelligently participate in a democratic society. For computers, like broadcasting, can be used for or against democracy.

Indeed, computers are a potentially democratic technology. While broadcast communication tends to be one-way and unidirectional, computer communication is potentially bi-, or even omni-, directional. Individuals can use computers to do word-processing to communicate with other individuals, or can directly communicate with others via modems which use the telephone to link individuals with each other. Modems can tap into community bulletin boards, web sites, or computer conference programs, that make possible a new type of public communication and progressives should intervene in these information modes as well as participating in public debate and discussion. For instance, many computer bulletin boards and web sites have a political debate conference where individuals can type in their opinions and other individuals can read them and if they wish respond. This constitutes a new form of public dialogue and interaction.

Computer data bases and web sites provide essential sources of information and new technologies that tremendously facilitates information-searching and research. Mainstream data bases include Lexis/Nexis and Dialogue which contain a tremendous array of newspapers, magazines, journals, transcripts of TV programs, news conferences, congressional hearings, and newsletters, reproduced in full. Alternative data bases include Peacenet which has over 600 conferences on topics of ecology, war and peace, feminism, and hundreds of other topics. Here progressives put in alternative information and some of the conferences have lively debates. Between the mainstream and alternative computer data bases, individuals and groups can access a tremendous amount of information in a relatively short time.

I was able to research my book on the media and the Gulf war, for instance, because I was able to access information on various topics from a variety of sources

simply by punching in code words which enabled me to discern the conflicting media versions of the Gulf war and to put in question the version being promoted by the Bush administration and Pentagon. Eventually, the lies and disinformation promoted by the U.S. government in the war were thoroughly exposed by a variety of sources, accessible to computer data base searches. Corporations, government institutions, the major political parties, and other groups are taking advantage of these computer data bases and progressive must learn to access and use them to produce the information necessary to prevail in the public debates of the future.

But the politics of information in the future must struggle to see that alternative information is accessible in mainstream computer data bases, as well as alternative ones. Many data bases and information services omit leftist, feminist, environmentalist, and other alternative information sources from their listings, thus in effect shutting out radical alternatives in information sources, much as the broadcasting networks exclude dissident voices from broadcast communication. Progressive groups and alternative publications should struggle to make sure that their information sources and services are listed in data base bibliographies and source material.

Yet the proliferation of the World Wide Web enables independent and alternative groups and individuals to creat their own web sites, to make their information available to people through the globe, often free of charge. In the next section, I will give some examples of how computer techno-politics have deployed web sites, bulletin-boards, mailing lists, and email campaigns to promote a variety of political struggles. First, however, I want to conclude this section by noting that a synergy is emerging between the new sources of information, new media and technologies, and political organization and struggle. Print and broadcast media organs can obtain information from computers and disseminate it to the public. Political groups can obtain information from these sources and disseminate it back through print, broadcast, and computer technologies. Information critical of, say, transnational corporate policies can be disseminated through a multiplicity of sites, so political groups need to be aware of the potential for the transmission of information through a variety of media in the contemporary era.

Moreover, the Internet may be a vehicle for new forms of alternative radio, television, film, art, and every form of culture as well as information and print material. New multimedia technologies are already visible on web sites and Internet radio and television is now in its infancy. This would truly make possible Brecht's dream of a communications system where everyone was a sender and receiver and would greatly proliferate the range and diversity of voices and texts and would also no doubt give a new dimension of the concept of information/cultural overload.

Indeed, we must obviously gain a whole set of new literacies to use and deploy the new technologies (see Kellner, forthcoming). But in conclusion, I want to limit my focus on new technologies and techno-politics of the present day.

Techno-Politics and Political Struggle

Since new technologies are in any case dramatically transforming every sphere of life, the key challenge is how to theorize this great transformation and how to devise strategies to make productive use of the new technologies. Obviously, radical critique of dehumanizing, exploitative, and oppressive uses of new technologies in the workplace, schooling, public sphere, and everyday life are more necessary than ever, but so are strategies that use new technologies to rebuild our cities, schools, economy, and society. I want to focus, therefore, in the remainder of this section on how new technologies can be used for increasing democratization and empowering individuals.

Given the extent to which capital and its logic of commodification have colonized ever more areas of everyday life in recent years, it is somewhat astonishing that cyberspace is by and large decommodified for large numbers of people -- at least in the overdeveloped countries like the United States. In the U.S., government and educational institutions, and some businesses, provide free Internet access and in some cases free computers, or at least workplace access. With flat-rate monthly phone bills (which I know do not exist in much of the world), one can thus have access to a cornucopia of information and entertainment on the Internet for free, one of the few decommodified spaces in the ultracommodified world of technocapitalism.

Obviously, much of the world does not even have telephone service, much less computers, and there are vast inequalities in terms of who has access to computers and who participates in the technological revolution and cyberdemocracy today. Critics of new technologies and cyberspace repeat incessantly that it is by and large young, white, middle or upper class males who are the dominant players in the cyberspaces of the present, and while this is true, statistics and surveys indicate that many more women, people of color, seniors, and other minority categories are becoming increasingly active. Moreover, it appears that computers are becoming part of the standard household consumer package and will perhaps be as common as television sets by the beginning of the next century, and certainly more important for work, social life, and education than the TV set. Moreover, there are plans afoot to wire the entire world with satellites that would make the Internet and communication revolution accessible to people who do not now even have telephones, televisions, or even electricity.

However widespread and common -- or not -- computers and new technologies become, it is clear that they are of essential importance for labor, politics, education, and social life, and that people who want to participate in the public and cultural life of the future will need to have computer access and literacy. Moreover, although there is the threat and real danger that the computerization of society will increase the current inequalities and inequities in the configurations of class, race, and gender power, there is the possibility that a democratized and computerized public sphere might provide opportunities to overcome these inequities. I will accordingly address below some of the ways that oppressed and disempowered groups are using the new technologies to advance their interests and progressive political agendas. But first I want to dispose of another frequent criticism of the Internet and computer activism.

Critics of the Internet and cyberdemocracy frequently point to the military origins of the technology and its central role in the processes of dominant corporate and state powers. Yet it is amazing that the Internet for large numbers is decommodified and is becoming more and more decentralized, becoming open to more and more voices and groups. Thus, cyberdemocracy and the Internet should be seen as a site of struggle, as a contested terrain, and progressives should look to its possibilities for resistance and circulation of struggle. Dominant corporate and state powers, as well as conservative and rightist groups, have been making serious use of new technologies to advance their agendas and if progressives want to become players in the political battles of the future they must devise ways to use new technologies to advance a progressive agenda and the interests of the oppressed and forces of resistance and struggle.

There are by now copious examples of how the Internet and cyberdemocracy have been used in progressive political struggles. A large number of insurgent intellectuals are already making use of these new technologies and public spheres in their political projects. The peasants and guerilla armies struggling in Chiapas, Mexico from the beginning used computer data bases, guerrilla radio, and other forms of media to circulate their struggles and ideas. Every manifesto, text, and bulletin produced by the Zapatista Army of National Liberation who occupied land in the southern Mexican state of Chiapas in 1994 was immediately circulated through the world via computer networks. In January 1995, the Mexican government moved against the movement and computer networks were used to inform and mobilize individuals and groups throughout the world to support the Zapatistas struggles against repressive Mexican government action. There were many demonstrations in support of the rebels throughout the world, prominent journalists, human rights observers, and delegations travelled to Chiapas in solidarity and to report on the uprising, and the Mexican and U.S. governments were bombarded with messages

arguing for negotiations rather than repression; the Mexican government accordingly backed off their repression of the insurgents and as of this writing in August 1997, they have continued to negotiate with them.

Earlier, audiotapes were used to promote the revolution in Iran and to promote alternative information by political movements throughout the world (see Downing 1984). The Tianenaman Square democracy movement in China and various groups struggling against the remanents of Stalinism in the former communist bloc and Soviet Union used computer bulletin boards and networks, as well as a variety of forms of communications, to circulate their struggles. Opponents involved in anti-nafta struggles made extensive use of the new communication technology (see Brenner 1994 and Fredericks 1994). Such multinational networking and circulation of information failed to stop nafta, but created alliances useful for the struggles of the future. As Witheford (forthcoming) notes: "The anti-nafta coalitions, while mobilizing a depth of opposition entirely unexpected by capital, failed in their immediate objectives. But the transcontinental dialogues which emerged checked --though by no means eliminated--the chauvinist element in North American opposition to free trade. The movement created a powerful pedagogical crucible for cross-sectoral and cross-border organizing. And it opened pathways for future connections, including electronic ones, which were later effectively mobilized by the Zapatista uprising and in continuing initiatives against maquilladora exploitation."

Thus, using new technologies to link information and practice, to circulate struggles, is neither extraneous to political battles nor merely utopian. Even if material gains are not won, often the information circulated or alliances formed can be of use. For example, two British activists were sued by the fastfood chain McDonald's for distributing leaflets denouncing the corporation's low wages, advertising practices, involvement in deforestization, harvesting of animals, and promotion of junk food and an unhealthy diet. The activists counterattacked, organized a McLibel campaign, assembled a website with a tremendous amount of information criticizing the corporation, and assembled experts to testify and confirm their criticisms. The five-year civil trial, ending ambiguously in July 1997, created unprecedented bad publicity for McDonald's and was circulated throughout the world via Internet websites, mailing lists, and discussion groups. The McLibel group claims that their website was accessed over twelve million times and the Guardian reported that the site "claimed to be the most comprehensive source of information on a multinational corporation ever assembled" and was indeed one of the more successful anticorporate campaigns (February 22, 1996; visit http://www. envirolink.org/mcspotlight/home.html).

Many labor organizations are also beginning to make use of the new technologies. Mike Cooley (1987) has written of how computer systems can reskill rather than deskill workers, while Shosana Zuboff (1988) has discussed the ways in which high-tech can be used to "informate" workplaces rather than automate them, expanding workers knowledge and control over operations rather than reducing and eliminating it. The Clean Clothes Campaign, a movement started by Dutch women in 1990 in support of Filipino garment workers has supported strikes throughout the world, exposing exploitative working conditions (see their website at http://www.cleanclothes.org/1/index.html). In 1997, activists involved in Korean workers strikes and Merseyside dock strike in England used websites to gain international solidarity (for the latter see http://www.gn.apc.org/lbournet/docks/).

Most labor organizations, such as the North South Dignity of Labor group, note that computer networks are useful for coordinating and distributing information, but cannot replace print media that is more accessible to more of its members, face-to-face meetings, and traditional forms of political struggle. Thus, the trick is to articulate one's communications politics with actual political movements and struggles so that cyberstruggle is an arm of political battle rather than its replacement or substitute. The most efficacious Internet struggles have indeed intersected with real struggles ranging from campaigns to free political prisoners, to boycotts of corporate projects, to actual political struggles, as noted above.

Hence, to capital's globalization from above, cyberactivists have been attempting to carry out globalization from below, developing networks of solidarity and circulating struggle throughout the globe. To the capitalist international of transnational corporate globalization, a Fifth International of computer-mediated activism is emerging, to use Waterman's phrase (1992), that is qualitatively different from the party-based socialist and communist Internationals. Such networking links labor, feminist, ecological, peace, and other progressive groups providing the basis for a new politics of alliance and solidarity to overcome the limitations of postmodern identity politics (on the latter, see Best and Kellner 1991, 1997, and forthcoming).

Moreover, a series of struggles around gender and race are also mediated by new communications technologies. After the 1991 Clarence Thomas Hearings in the United States on his fitness to be Supreme Court Justice, Thomas's assault on claims of sexual harassment by Anita Hill and others, and the failure of the almost all male US Senate to disqualify the obviously unqualified Thomas, prompted women to use computer and other technologies to attack male privilege in the political system in the United States and to rally women to support women candidates. The result in

the 1992 election was the election of more women candidates than in any previous election and a general rejection of conservative rule.

Many feminists have now established websites, mailing lists, and other forms of cybercommunication to circulate their struggles. Likewise, African-American insurgent intellectuals have made use of broadcast and computer technologies to advance their struggles. John Fiske (1994) has described some African-American radio projects in the "techostruggles" of the present age and the central role of the media in recent struggles around race and gender. African-American "knowledge warriors" are using radio, computer networks, and other media to circulate their ideas and counter-knowledge on a variety of issues, contesting the mainstream and offering alternative views and politics. Likewise, activists in communities of color -- like Oakland, Harlem, and Los Angeles -- are setting up community computer and media centers to teach the skills necessary to survive the onslaught of the mediazation of culture and computerization of society to people in their communities.

Obviously, rightwing and reactionary groups can and have used the Internet to promote their political agendas. In a short time, one can easily access an exotic witch's brew of ultraright websites maintained by the Ku Klux Klan, myriad neo-Nazi groups including Aryan Nations and various Patriot militia groups. Internet discussion lists also promote these views and the ultraright is extremely active on many computer forums, as well as their radio programs and stations, public access television programs, fax campaigns, video and even rock music production. These groups are hardly harmless, having promoted terrorism of various sorts ranging from church burnings to the bombings of public buildings. Adopting quasi-Leninist discourse and tactics for ultraright causes, these groups have been successful in recruiting working class members devastated by the developments of global capitalism which have resulted in widespread unemployment for traditional forms of industrial, agricultural, and unskilled labor.

The Internet is thus a contested terrain, used by Left, Right, and Center to promote their own agendas and interests. The political battles of the future may well be fought in the streets, factories, parliaments, and other sites of past struggle, but all political struggle is already mediated by media, computer, and information technologies and will increasingly be so in the future. Those interested in the politics and culture of the future should therefore be clear on the important role of the new public spheres and intervene accordingly.

पंकज पराशर

बुद्धिजीवी, लोक वृत्त और टेक्नो पॉलिटिक्स



बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों का वर्गीकरण भी विवाद का विषय बनता जा रहा है। जिगमेंट बोमन बुद्धिजीवियों को समाज की एक ऐसी इकाई के रूप में देखते हैं जो सामाजिक संस्थाओं की सेवा करने के लिए वैश्विक मूल्यों का विधेयन करते हैं। इस वर्ग के बुद्धिजीवियों के बारे में ऐसा माना जाता है कि ये बुद्धिजीवी अपनी योग्यता के आधार पर आम जनमानस के लिए मानवाकृतियों, लोक में घटित घटनाओं आदि की बेहतर व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। अमेरिकी बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों की भूमिका को लेकर जो गरमा-गरम बहस छिड़ी हुई है उनमें से एक धड़े का मानना है कि फिलवक्त जो सामाजिक और वैश्विक हालात हैं उसमें बुद्धिजीवियों की स्थिति में आधुनिक बुद्धिजीवियों से लेकर उत्तर आधुनिक बुद्धिजीवियों तक में बदलाव आया है। दिलचस्प यह है कि पश्चिम के बुद्धिजीवियों में जैसे ही यह बदलाव आया उसका त्वरित असर हिंदी के उन उत्तर-आधुनिक बुद्धिजीवियों पर भी पड़ा, जो कुछ साल पहले तक उत्तर-आधुनिकता के भारतीय प्रवक्ता होने का दावा करते नहीं अघाते थे। जहाँ एक ओर आधुनिक बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के कार्यकारी इकाई के तौर पर नई आधुनिक समाज-व्यवस्था का विधेयन करते हैं वहीं दूसरी ओर इस प्रकार सामाजिक जीवन में बुद्धिजीवियों की भूमिका के राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत का भी प्रतिपादन करते हैं।

नोम चोम्स्की के बाद की पीढ़ी में वामपंथी रुझान के कवियों/विचारकों और बुद्धिजीवियों की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी जारी है। बुश प्रशासन अपनी तमाम नीतियों को लेकर पनप रहे असंतोष और मुखर होते प्रतिरोधी स्वर को लेकर भी हैरान-परेशान है। गौरतलब है कि 2003 में इराक हमले की पीठिका बनते समय भी वहां के बुद्धिजीवियों ने बुश प्रशासन की आलोचना की थी और आज आम जनता वहाँ से अमेरिकी सैनिकों की अविलंब वापसी की मांग कर रही है। मगर राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू. बुश के सिपहसालारों ने इन विरोधों की न तब परवाह की और न अब ऐसा लगता है कि उन पर कोई खास असर पड़ा है। अमेरिका स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डगलस कैलनर ने कुछ वर्ष पूर्व, 2005 के आखिर में छपी अपनी किताब 'मीडिया स्पेक्टैकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी' में इन मुद्दे पर जोरदार बहस की है कि इन दिनों मीडिया में जिन मुद्दों को जनहित के नाम पर उठाया जा रहा है वह असल में जनहित के वास्तविक मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने की एक शातिर चाल है। 9/11 के बाद मीडिया ने जिस तरह से अपना चेहरा और चाल दोनों को बदला है – कैलनर खास तौर पर इससे चिंतित होते हैं और बुद्धिजीवियों के बीच खास-

खास बिन्दुओं पर चिंतन का आह्वान करते हैं। इसी तरह 'द वार फॉर द व्हाइट हाउस' किताब में वे अमेरिकी विदेश, रक्षा और आर्थिक नीतियों की गंभीरता से नये-नये तथ्यों की रोशनी में न सिर्फ आलोचना करते हैं बल्कि खासी मज़म्मत भी करते हैं।

अभी हाल ही में छपी वाशिंगटन डी.सी. के बाशिंदे मिखाइल मैकडोनाल्ड की 'द अमेरिकन इंटरेस्ट' नामक छपी किताब में खास तौर पर अमरीकी हितों और वैश्विक परिदृश्य की पड़ताल की गई है। उन्होंने एक और बेहद दिलचस्प किताब 'द स्ट्रेंजर इन क्राउफोर्ड' में जार्ज बुश और कालजयी फ्रेंच उपन्यासकार अल्बेयर कामू के बीच तुलना करते हुए एक किताब ही लिख मारी है। बहरहाल, असली मुद्दा यह है कि मीडिया की बदली प्राथमिकता और चाल की बेहतर समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डगलस कैलनर ने 'टेक्नो पॉलिटिक्स' जैसी शब्दावली के सहारे बुद्धिजीवियों की भूमिका और नई-नई आने वाली चुनौतियों को रेखांकित किया है। बुद्धिजीवियों को दो वर्गों में वर्गीकृत करते हुए कैलनर कार्यकारी बुद्धिजीवी (फंक्शनल इंटेलेक्चुअल) के बारे में कहते हैं, ये स्थापित सामाजिक मूल्यों का उत्पादन और विधेयन करते हैं। जबकि इसके ठीक विपरीत विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी (क्रिटिकल-अपोजीशनल इंटेलेक्चुअल) स्थापित सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हैं। कभी-कभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी समाज में मौजूद मूल्यों के खिलाफ ही अपनी आवाज बुलंद करते हैं और ऐसा मानकर चलते हैं कि इन मूल्यों का समाज में दबदबा बढ़ रहा है। मसलन कानून, न्याय, सत्य और अधिकार आदि। ऐसे बुद्धिजीवी कई बार और भी गंभीर मुद्दों का विरोध करते हैं – जैसे लोकतंत्र, समाजवाद, अश्वेत लोग और स्त्रियों की समानता आदि।

कार्यकारी बुद्धिजीवी पहले रूढ़ और काफी हद तक आदर्शवादी थे, जबकि आज उन वर्गों और तकनीकविदों के हितों के संरक्षक बने हुए हैं जो परिणामों तक पहुँचने के लिए समर्थ साधनों का इस्तेमाल करते हैं। ये बुद्धिजीवी अपनी क्षमताओं को विभिन्न क्षेत्रों, जैसे दवा, भौतिक विज्ञान और अतीत में मौजूद तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने के लिए करते हैं। बिना नतीजे की ओर उँगली उठाये और किसी चीज की परवाह किये बगैर वे जिन मूल्यों की स्थापना और वापसी के लिए प्रयत्नशील रहते हैं – उसकी उपयोगिता और अनुपयोगिता पर आज विमर्श करना बहुत आवश्यक है।

कार्यकारी बुद्धिजीवी समाज को बेहतर बनाने (अपने तरीके से) के लिए तकनीकी जानकारियों में दक्षता हासिल करते हैं, वहीं विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी आलोचक सामाजिक बेहतरी के लिए संघर्षरत हैं। देश-विदेश में ऐसे बुद्धिजीवियों की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने आंदोलनों में न सिर्फ शिरकत की, बल्कि ता-उम्र के लिए उससे जुड़ ही गए। तेलुगू में वरवर राव, अंग्रेजी में अरुंधति राय, बांग्ला में महाश्वेता देवी आदि लेखकों-बुद्धिजीवियों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी परंपरागत तौर पर अपने ज्ञान और लेखन का प्रयोग अन्याय, शक्ति के दुरुपयोग, सत्य के लिए संघर्ष और अन्य वैश्विक मूल्यों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए करते हैं। ज्याँ पॉल सार्त्र के शब्दों में कहें तो, ''विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता तक सीमित है।'' सार्त्र के इस कथन के आधार पर एक विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का काम समाज की विभिन्न कुरीतियों का विश्लेषण करना तथा उनको और अधिक मुखरता प्रदान करना है। यह बुद्धिजीवी के शाब्दिक हथियार हैं जिनके जरिये उन्हें समाज में कहीं भी हो रहे अन्याय का विरोध करना है। हेबरमास (1989) के कथन की रोशनी में अगर देखें तो ''आधुनिक समय में विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता से जुड़े मुद्दे, राजनीतिक वाद-विवाद और विभिन्न किताबों, पत्र-पत्रिकाओं में छपी चीजों पर लिखना और विमर्श करना है।'' हालांकि सभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी वैचारिक रूप से प्रगतिशील नहीं हैं, बावजूद इसके समाज के आधुनिक होने से बुद्धिजीवियों की भौतिक और मानसिक दशाओं में तब्दीलियाँ आई हैं। इन दिनों बुद्धिजीवी वे लोग हैं जो नये विचारों और नये

संस्कारों को पैदा करने में माहिर होते हैं। इनमें से भी कुछ बुद्धिजीवी वर्तमान समाज का समर्थन करते हैं तो कुछ उसका विरोध करते हैं। शायद इन वजहों से भी बुद्धिजीवी, कार्यकारी और विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी के रूप में बँट गए। कार्यकारी बुद्धिजीवी जहाँ एक तरफ समाज की सेवा तकनीकी जानकारियों से करते हैं वहीं नये आदर्श पैदा करके वर्ग, रंग और लिंग को वैधता प्रदान करते हैं। कहना न होगा कि अपने देश में भी सांप्रदायिक शक्तियों के सत्तासीन होते ही ऐसे-ऐसे तुर्रम खाँ, 'बुद्धिजीवी' का बिल्ला लगाये हुए कभी 'वाजपेयी क्लब' बना रहे थे, तो कभी उनकी कविताओं को नये-नये 'रागों' में गाकर सत्ता की आराधना में तन्मयता दिखा रहे थे – अभूतपूर्व समाजवादियों के समर्थन पर टिकी भाजपा राज के समय।

विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी अन्यायी और शोषकों के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। जबकि विरोधी खेमे के परंपरागत बुद्धिजीवी उत्तर आधुनिक सिद्धांतों द्वारा पैदा की गई चुनौतियों के साथ-साथ नई तकनीकों द्वारा तलाशी गई लोकतांत्रिक बहसों की संभावनाओं पर चर्चा करना मुफीद समझते हैं। यह सारी बातें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी और उनकी भूमिका को ठीक से पुनर्परिभाषित करने की माँग करता है।

लोकक्षेत्र (पब्लिक स्फीयर) और बुद्धिजीवी

अगर मूल परिभाषा पर नजर दौड़ाएं तो लोकतंत्र मूलतः सत्ता के विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ सरकारी मामलों में जनता की भागीदारी का नाम है। पुनर्जागरण और 18 वीं शताब्दी की राजनीतिक क्रांति के काल में एक ऐसा लोकक्षेत्र उभरकर सामने आया जहाँ आम आदमी अपने से जुड़े मुद्दों पर बहसें कर सकता था। दिलचस्प यह है कि उस काल में सरकार की आलोचना खास तौर पर आम जनता तक पहुँचाई जाती थी। खुद को अभिव्यक्त करने का साधन बना अखबार और पत्र-पत्रिकाएं। उस वक्त तत्कालीन प्रेस की आजादी आम जन को काफी कुछ सही रूप से चीजों को जानने-समझने का रास्ता फराहम कराती थी। वैचारिक आदान-प्रदान के लिए लोग कॉफी हाउस, पान की दुकान, नाई की दुकान आदि जगहों पर बैठा करते थे और वहीं विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएं छिड़ जाती थीं। दुखद यह है कि बूर्ज्वा समाज के टूटने के बाद तमाम लोगों ने अपनी-अपनी पार्टियाँ बना लीं, संस्थाएं बना लीं और विचारधाराएं विकसित कर लीं। बकौल डगलस कैलनर, "आम जनता को रिझाने के लिए विभिन्न पार्टी और संस्था के लोग लिखने लगे और खुद को खुद के ही द्वारा बुद्धिजीवी का दर्जा दे दिया। देखते-देखते शोषित वर्गों ने भी अपने बुद्धिजीवी पैदा कर लिए। हालांकि ये बुद्धिजीवी विद्रोही विचारधारा के थे और शोषकों के मुकाबले शोषितों के बुद्धिजीवियों में खास बात यह थी, वे समाज के सारे तबके का प्रतिनिधित्व करते थे।" ध्यान रहे कि मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट जैसी महिलाओं ने महिला अधिकारों के लिए आवाज बुलंद की थी। शोषित वर्ग के विद्रोही विचारधारा वाले इन बुद्धिजीवियों ने दमन और उनके कारणों के खिलाफ तो आवाज बुलंद की ही साथ ही इसके हल के लिए इनके समाधानों को सिद्धांत से उठाकर वास्तविकता के धरातल पर प्रयोग करने की बात कही। इसलिए 19 वीं शताब्दी में कर्मचारी वर्ग के लोगों ने शोषकों के खिलाफ अपना एक अलग ही लोकक्षेत्र विकसित किया। यूनियन हॉलों, दफ्तरों, सार्वजनिक स्थानों में इनकी सभाएं, चर्चाएं होने लगीं। इसी दौर में बकौल जुरगेन हेबरमास, "अमेरिका और यूरोप में पनप रहे लोकतंत्र और श्रमिक आंदोलनों ने एक वैकल्पिक प्रेस को जन्म दिया। इसके साथ ही हड़ताल और बैठकों जैसी चीज ने शोषक-विरोधी लोकक्षेत्र को एक नया मंच प्रदान किया।"

आधुनिक समाज के बुद्धिजीवियों में विरोधाभासी रूप से सामाजिक कार्यों को लेकर हमेशा एक मतभेद बना रहा। पारंपरिक रूप से विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों जैसे टॉमस पेन, मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट और बाद में मार्क्स, ह्यूगो, सार्त्र और मार्क्वेज जैसे लोगों ने पुनर्जागरण के दरम्यान अन्याय और शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। इसके बावजूद संकीर्ण विचारों के बुद्धिजीवियों ने पुनर्जागरण और

फ्रांसीसी क्रांति की कामयाबियों पर हमला करते हुए कुछ इस तरह का इजहार-ए-खयाल किया जिसके तहत वर्ग, लिंग और रंग के नाम पर दमन और उत्पीड़न को जायज ठहराया गया।

इन बुद्धिजीवियों के विरोध में मिशेल फूको ने शिकायत की थी, ''सार्त्र ने एक आदर्शवादी नमूना प्रस्तुत किया है, जो बुद्धिजीवियों को वैश्विक मूल्यों, मसलन, सत्य, अहिंसा, आजादी और मानवता आदि के लिए लड़ने की सलाह देता है।'' फूको ने इसके विरोध में विशेष बुद्धिजीवी का प्रस्ताव किया जो बिलकुल तटस्थ होकर शोषितों-उत्पीड़ितों के सवालों से जुड़े खास मुद्दों के लिए अपनी आवाज बुलंद करे। फूको का यह विचार उत्तर-आधुनिक राजनीति में प्रासंगिक हो गया और राजनीति को पार्टी की राजनीति से हटाकर सामाजिक आंदोलनों की तरफ मोड़ दिया गया। उत्तर-आधुनिक राजनीति के लिए शक्ति का विकेन्द्रीकरण जरूरी है।

डगलस कैलनर कहते हैं, ''मैं यह मानता हूँ कि आलोचक बुद्धिजीवी या कहें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों के कुछ विचार उपयोगी हैं। आम बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के हनन के खिलाफ आवाज उठाते हैं, जबकि आम लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी दूसरों के लिए आवाज उठाने के बदले व्यक्तिगत या वैश्विक मुद्दों से जुड़े खास मुद्दों पर ही अपनी राय जाहिर करते हैं।'' नतीजा यह होता है कि वर्तमान परिवेश में लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी कहलाने के लिए वैश्विक बुद्धिजीवी के पूरे गुण होने की आवश्यकता नहीं है। कहना न होगा कि बुद्धिजीवियों को व्यक्तिगत इच्छाओं/अनिच्छाओं से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। बिना किसी पक्षपात के अपनी बात कहनी चाहिए - तमाम पूर्वग्रहों को छोड़कर। इसके साथ-साथ अपनी सीमाएं जानते हुए खुद को दूसरे की जगह रखकर सोचना चाहिए।

नई तकनीक, लोकक्षेत्र और नये बुद्धिजीवी

कुछ मामलों में बुद्धिजीवियों और तकनीक में कोई खास संबंध नहीं होता। आज के उच्च तकनीक से संपन्न समाज में कंप्यूटर और त्वरित मीडिया युग में प्रतिबद्ध आम बुद्धिजीवियों को परिभाषित करने की जरूरत है। बीसवीं सदी की शुरुआत में जॉन डिवे ने 'थॉट न्यूज' नामक एक ऐसे अख़बार की परिकल्पना की थी जिसमें विज्ञान की नवीनतम खोजों और विचारों को जगह दी जाए। इसके अलावा बर्टोल्ट ब्रेख़्त और वाल्टर बेंजामिन ने सिनेमा और रेडियो के क्रांतिकारी परिणामों को देखा था और दूसरे बुद्धिजीवियों से यह अपील की, कि वे इन साधनों का इस्तेमाल समाज को और अधिक लोकतांत्रिक बनाने और उसे बदलने में करें। ज्यॉ पॉल सार्त्र ने भी रेडियो धारावाहिकों का अध्ययन किया और इस बात पर बल दिया कि प्रतिबद्ध लेखकों को भी रेडियो और सिनेमा का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे भागना ठीक नहीं है।

पहले रेडियो, टेलीविजन और दूसरी इलैक्ट्रानिक मीडिया पर तमाम तरह की बंदिशें आयद थीं। रेडियो और टेलीविजन का विवाद, बहसें, जानकारियां आदि एक नये लोक वृत्त का निर्माण करते दिखाई दे रहे हैं। डगलस कैलनर जोर देकर कहते हैं कि, ''बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे इन माध्यमों का उपयोग करके जन मामलों में सीधे जनता की भागीदारियों को सुनिश्चित करें और एक नयी संचार राजनीति और मीडिया-परियोजनाओं का निर्माण करें।''

यह तथ्य अब धीरे-धीरे असलियत को काफी हद तक स्पष्ट करता जा रहा है कि आज की राजनीति में यदि कोई बुद्धिजीवी लोकवृत्त (पब्लिक स्फीयर) में अपनी पैठ बनाना चाहता है, समाज को नई दिशा देना चाहता है - तो नई तकनीकों का उन्हें अधिक से अधिक इस्तेमाल करना चाहिए। पहले रेडियो और टेलीविजन ने एक लोकक्षेत्र का या कहें लोकवृत्त का निर्माण किया था लेकिन अब कंप्यूटर और इंटरनेट ने अपने अलग लोकवृत्त बनाये हैं। जानकारियां, बहसें, लोकतांत्रिक सहभागिता और विचारों को पहुँचाने के

लिए नई संभावनाओं को भी पैदा किया है।...और यह कहना शायद गैर-जरूरी है कि इस्तेमाल में लाने से पूर्व इन तकनीकों का बारीकी से अध्ययन जरूरी है।

आज के समय में बुद्धिजीवी होने का मतलब है नई तकनीकों का उपयोग करके विचारों के क्षेत्र में नई और ऊर्जस्वी विचारों की खोज, उसका संपूर्ण वितरण और इससे तैयार हुए लोकवृत्त में अपनी पूरी भागीदारी। डगलस कैलनर इस मुद्दे पर अपनी राय साफ-साफ जाहिर करते हैं, कुछ इस तरह, ''आज के नये बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वह अपनी नीतियां इस तरह से बनाएं कि शिक्षा, लोकतांत्रिक विकास के साथ ही अपनी नीतियों को बेहतर ढंग से प्रसारित करने के लिए नई तकनीक का बेहतर इस्तेमाल करें। भविष्य में जो वक्त आएगा उसमें बुद्धिजीवियों और नई तकनीक के बीच नाभिनालबद्ध रिश्ता बनाना अनिवार्य हो जाएगा।'' इसके बगैर नई तकनीक से भागने वाले लोग अपनी मेधा का सही इस्तेमाल कर ही नहीं पाएँगे और तब वे कैसा लोकवृत्त बनाएँगे और किस तरह के बुद्धिजीवी रह जाएंगे, यह मुद्दा बहसतलब है।

नव पूँजीवादी समाज में लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह और भी आवश्यक है कि लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति (डेमोक्रेटिक मीडिया पॉलिटिक्स) नई रणनीति के तहत की जाए। मीडिया की लोकतांत्रिक राजनीति में दो तरह की नीतियां होती हैं - पहली कार्यरत मीडिया को लोकतांत्रिक बनाना और दूसरी आम जनता की सुविधाओं, इच्छाओं और जरूरतों के प्रति मीडिया को जिम्मेवार बनाना।

मुख्य धारा की मीडिया के विकल्प के तौर पर एक विपक्षी मीडिया को तैयार करना भी आने वाली 'टैक्नो पॉलिटिक्स' का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है। लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति के लिए मुख्य धारा की पूँजीवादी मीडिया समर्थित नीतियों की तीखी आलोचना, उसमें सुधार और वैकल्पिक मीडिया का विकास, इसकी जरूरी शर्तें हैं। मीडिया को लोकतांत्रिक बनाने का प्रयास तभी संभव है जब एक वैकल्पिक प्रेस का निर्माण हो। आम जनता की पहुँच में टेलीविजन हो और एक सकारात्मक विपक्षी राजनीति के साथ-साथ ऐसी वैचारिक दृढ़ता से सम्पन्न नीतियां हों जो मुख्यधारा की मीडिया को प्रभावित करें। उसकी नीतियों की परत-दर-परत पड़ताल करके उपयुक्त भाषा-शैली और अंदाज में बेनकाब करने का बेहतर एजेंडा हो।

पिछले कुछ दशकों में टेलीविजन संचार माध्यम के एक बेहतर विकल्प के रूप में देखा जाने लगा है। 1970 में अमेरिका में हुए टेलीविजन के विकास में प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के लिए नई संभावनाएं पैदा की थीं। उसने इस तरह के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जो तत्कालीन संकीर्ण समाज की कठोर आलोचनाएं करता था - उन दिनों मुख्यधारा की मीडिया में इसकी भरमार थी। 1970 में जब टेलीविजनों की संख्या में इजाफा होने लगा तब वहाँ 'फेडरल कम्युनिकेशन कमीशन' का एक आदेश आया जिसके अंतर्गत 1972 के बाद के नए 'केबल सिस्टम' को कम-अज़-कम एक चैनल सरकार को शिक्षा और आम आदमी को नई जानकारियां मुहैया कराने के लिए देने होंगे। शुरुआती दौर में कुछ कंपनियों ने एक चैनल मुहैया कराई तो कुछेक ने दो या तीन।

कई लोग ऐसा मानते हैं कि लोकतांत्रिक राजनीति में आम सहमति बनाने के लिए आमने-सामने बैठकर बातचीत करना जरूरी है लेकिन एक चतुराई पूर्ण सहमति के लिए जनता का जागरूक और जानकार दोनों होना बेहद आवश्यक है। कहना न होगा कि वर्तमान संदर्भ में यह रेडियो और टेलीविजन के द्वारा ही मुमकिन है। यह जरूरी नहीं है कि मीडिया वर्तमान राजनीति की पूरक बने लेकिन मीडिया राजनीति को बढ़ावा अवश्य दिया जाना चाहिए ताकि इसके माध्यम से जागरूक और जानकार लोग सूचनाओं को

अधिक-से-अधिक लोगों तक प्रसारित कर सकें। अमेरिका के टेक्सास राज्य में 'काउंसिल फॉर पब्लिक मीडिया' अपने कार्यकर्ताओं और आमजनों को यह बताता है कि नई तकनीक और कम्प्यूटर वगैरह का इस्तेमाल अपने विचारों को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए कैसे करें? मीडिया राजनीति में ज़्यादा लोगों की भागीदारी, राजनैतिक संरचना की इसकी आवश्यकताओं को दर्शाती है। इसलिए आज नव पूँजीवाद और भूमंडलीकृत शोषण के हथियारों को मात देने के लिए मीडिया राजनीति को और अधिक विकसित करने की जरूरत है - साथ ही इसके लिए और अधिक मेहनत करने की जरूरत भी है।

अगर कोई विकासशील समूह या आंदोलन से जुड़े आंदोलनकर्मी वर्तमान राजनीतिक माहौल में 'अधिकारों' का कोई विकल्प तलाश करना चाहते हैं तो हर हाल में उन्हें अपनी बात अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचानी होगी और खुद से ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को जोड़ना होगा। आखिर ज्यादातर लोग समाचार और अन्य अनेक सूचनाएं टेलीविजन से ही प्राप्त करते हैं। प्रसार माध्यम ही आम जनता के विचारों को बनाने में एक अहम भूमिका निभाता है और यह तय करता है कि किस चीज को गंभीरता से लें और किसको गंभीरता से नहीं लें। अगर वैकल्पिक विकास के यूटोपिया से लैस लोग राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पैठ बनाना चाहते हैं तो उन्हें नई तकनीकों को ध्यान में रखकर ही अपनी नीतियों का निर्माण करना पड़ेगा।

लोकतांत्रिक समाज के निर्माण और विकास में 'टैक्नो पॉलिटिक्स' को बढ़ावा देने के लिए कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी नई-नई संभावनाएं पैदा करता जा रहा है। ऐसा लगता है कि आने वाले समय में घर-घर में मनोरंजन और जानकारियों का भंडार होगा - मगर वे भारतीय नागरिक हर चीज की तरह इससे भी अंतत: वंचित रह जाएंगे जो आज भी दो वक़्त की रोटी के लिए संघर्षरत हैं और कल भी संघर्ष से शायद नहीं उबर पाएंगे। यह सारा ताम-झाम अंतत: इन मध्यवर्गीय नागरिकों को फायदा पहुँचाएगा जिन्हें मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। दूसरी चिंता इसके साथ यह जुड़ी हुई है कि अगर वैकल्पिक विचारों वाले मीडिया का विकास नहीं हुआ तो इसका उपयोग वही कर पाएंगे जो आर्थिक रूप से बेहद मजबूत स्थितियों में होंगे। नतीजा यह होगा कि गरीब मुल्कों के लोग किसी भी तरह इसका लाभ नहीं उठा पाएंगे। नाइजीरिया, कांगो गणराज्य और दक्षिण अफ्रीकी मूल के लोगों की इस तक पहुंच हो ही नहीं सकेगी। भारत के 'हिंदी पट्टी' के लोग तो आज भी छोटी-से-छोटी जानकारियां नहीं पा सकते हैं। फलस्वरूप, इन निजी मनोरंजन माध्यमों का विकल्प ढूँढ़ना जरूरी होता जा रहा है।

आज के इस टैक्नो पूँजीवादी समाज में कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी की बढ़ती महत्ता विकासशील मीडिया की जरूरत के रूप में उभरा है। पूरी दुनिया कंप्यूटरीकृत होने जा रही है और आने वाले वक्त में जिस देश के नागरिक की इस दुनिया तक पहुँच और दखल नहीं होगी वे हर तरीके से दुनिया में रहकर भी किसी और दुनिया के वासी में तब्दील होते चले जाएंगे। गरीब मुल्कों की सरकारें जिस तरीके से बहुराष्ट्रीय पूँजी के आकाओं और पूंजीवादी मीडिया के सेठों को अपने यहाँ बुलाकर मनचाहे तरीके से काम करने के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं उसके कारण भी जनता अपनी मूलभूत जरूरत की चिंताओं में ही गर्क है। उन्हें यह सोचने और जानने का मौका ही उपलब्ध नहीं करवाया जा रहा है कि हमारा आनेवाला वक्त कैसा होगा और हमारी सरकारें किस तरह की दुनिया बनाने वालों के साथ हैं, सहयोगी हैं? इसलिए निजी कंपनियों और सरकारों के एकाधिकार से बचने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि नये-नये जानकारी केन्द्रों की स्थापना की जाए ताकि लोकतांत्रिक समाज में अपनी सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सके।

कंप्यूटर अपनी क्षमताओं के कारण अंतत: एक लोकतांत्रिक तकनीक है, जहां प्रसारण के माध्यम मात्र 'वन वे ट्रैफिक' हैं वहीं कंप्यूटर और इंटरनेट द्विपक्षीय माध्यम है। कंप्यूटर, इंटरनेट, चैटिंग आदि का उपयोग आम जनता एक दूसरे से बातचीत करने के लिए कर सकती है। मोडेम और टेलीफोन लाइनों की

सहायता से तमाम लोग – जो इससे जुड़े हैं, जुड़ सकते हैं – वे लोग तमाम मुद्दों पर विमर्श कर सकते हैं। इस तरह यह एक नये संसार और प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। वर्तमान समय में जन सरोकारों से जुड़े लोगों के लिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि वे ऐसे कार्यक्रमों से जुड़कर, इस दुनिया में प्रवेश करके गरीब मुल्कों की व्याख्या प्रस्तुत करें, जिससे उन दमित और शोषित तबकों तक भी इसका लाभ पहुंच सके – जो आज तक तो वंचित हैं ही और सरकार की जैसी नीतियाँ हैं, राजनीतिज्ञों की जो कार्य शैली और प्रतिबद्धताएं हैं उससे आगे भी दुनिया में हो रही हलचलों से वे वंचित रहेंगे। 'टेक्नो पॉलिटिक्स' में शामिल विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों पर ही अंतत: यह जिम्मेदारी आयद होती है कि वे एक वास्तविक लोकवृत्त के निर्माण के लिए जन-जन तक सूचनाएं अपने-अपने तरीके से पहुँचाएं।

सहायक ग्रंथ

1. फ्रेडरिक जेमसन : ए क्रिटिकल रीडर, सं. डगलस कैलनर एंड सीन होमर, 2004
2. मीडिया स्पेक्टेकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी : डगलस कैलनर, 2005
3. मीडिया कल्चर : कल्चरल स्टडीज, आइडेंटिटी एंड पॉलिटिक्स बिटवीन द मॉडर्न एंड द पोस्ट मॉडर्न : डगलस कैलनर (1995)
4. द रोल ऑफ पब्लिक इंटेलेक्चुअल : एलन लाइटमैन।
5. द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉरमेशन ऑफ द पब्लिक स्फीयर : एन इनइक्विटी इंटू ए कैटेगरी ऑफ बूर्ज्वाजी सोसाइटी, जुरगेन हेबरमास, 1991, अनुवाद : थॉमस बर्जर, एम.आई.टी. प्रेस।
6. मासेज, क्लासेज, एंड द पब्लिक स्फीयर : माइक हिल, वारेन मोन्टाग, वर्सो, 2001
7. पावर एंड पॉलिटिक्स इन ग्लोबलाइजेशन : द इंडिस्पेंसबल स्टेट : होवार्ड एच. लैन्टर, 2004
8. रूल ऑफ एक्सपर्ट्स : इजिप्ट, टैक्नो पॉलिटिक्स, मॉडर्निटी : टिमोथी मिथेल, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002

पंकज पराशर प्राय:, महत्वपूर्ण किताबों को लेकर 'पहल' में लिख रहे हैं। नोम चोम्स्की के बाद पूंजीवादी दुनिया में वामपंथी रूझान बढ़ने के दृश्य पर वे विस्तृत काम कर रहे हैं। नोम चोम्स्की की ताज़ा किताब 'फेल्ड स्टेट्स' पर अगले अंक में संपादकीय टिप्पणी पाठक पढ़ सकेंगे।

सांझ होइत गाममे

भारतक नक्शापर
जकर कोनो टा जिक्र
कतहु देखार नहि होइत अछि
से एकटा कोनो गाम
आ ओहि गामक एकटा सांझमे हम
ठाढ़ छी चुपचाप
बहुत दिनपर घुरल
कोनो बटोही जकाँ

जे तकैत अछि अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
आ सिंगरहारकेँ नहि देखि

घुरि अबैए बेर-बेर
हिया हारिके
भ' जाइए ठाढ़
चुपचाप

चुपचाप ठाढ़ ओ बटोही
तकैत रहैए
ठकनबैत रहैए
सोचैत रहैए
किनसाइत ...
किनसाइत ...
किनसाइत ...

चिन्हबाक प्रक्रियामे
बेर-बेर असफल होइत ओ
बेर-बेर तकैए किछु परिचित निशान
बेर-बेर तकैए किछु पहिचान
अपन स्मृतिक दरिद्रतापर कानि
बैसि जाइत अछि थसथसाक'
चुपचाप कोनो ठाम

ओ तकैत अछि
अपन हृदयमे बसल गाम
गाममे अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
ओ तकैत अछि बेर-बेर

मोन पड़ैत छैक
बेर-बेर पड़ैत छैक मोन
'ने ओ नगरी, ने ओ ठाम ...
फकड़ा गुनबैत ओ बुढ़िया

बुढ़ियाक तमाकुल माँगब
मोन पड़ैत छैक
एक-एक क' सबटा

मोन नहि पड़ैत छैक घर ?

घर नहि मोन पड़ैत अछि
वा घरे नहि मोन पाड़ैत अछि
घर ओ नहि चिन्हि पबैए
वा घरे ओकरा नहि चिन्हैए
घरसँ ओ गेल छल
कि घरे ओत'सँ गेल छल
ई एकटा भयंकर समस्या अछि उपस्थित

एहि मुन्हारि साँझमे
जे निरन्तर गाढ़ भेल जा रहल-ए
तेज आँचपर खौलैत दूध जकाँ
ओ ठाढ़ अछि
निरन्तर अस्पष्ट होइत जा रहल
साँझक गाछ तर
ओ ठाढ़ अछि
ठकमकाएल
साँझ क' घुरल सुग्गा जकाँ
घर कें तकैत

साँझक गाछमे
गाछक झाँखुड़ सबहक दोगमे
निरन्तर अस्पष्ट होइत गाम

आ गाममे ठाढ़ ओ
निरन्तर अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
निरन्तर
बाढ़िमे आस्ते-आस्ते डुबैत
आ अंततः चक्कडुम होइत
घर जकाँ
ओ अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
साँझ खन गाममे
गाममे साँझे खन
ओ विलीन भेल जा रहल-ए
आस्ते-आस्ते…
आस्ते-आस्ते…
आस्ते आस्ते…

□

नये इलाके में

इन नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसन्त का गया पतझड़ को लौटा हूँ

जैसे बैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो—
क्या यही है वो घर ?

समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देख कर

घरबाली आ बगिया। संगहि सड़क नाटक अछि : चिन्हियौ नेपाल, लेहुआयल आँचर, नै आब नै, ककर लाल, कोंटा सिंगार आदि।

द्वितीय : रूपम श्री (सहरसा)

सुश्री रूपम श्रीक जन्म सहरसामेँ भेलन्हि। अहाँ स्नातकमे पढ़ैत छी संगहि संगीतसँ सेहो प्रभाकर कऽ रहल छी। रंगमंचसँ लगाव अहाँकेँ सुजीक प्रयाससँ १९९५ सँ भेल। रूपम श्री विभिन्न संस्था संग रंगमंच कऽ रहल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि इप्टा, पंच कोसी। हिनका द्वारा कएल गेल महत्वपूर्ण नाट्य प्रस्तुति अछि : मधुश्रावणी, कनियाँ पुतरा, पाँच पत्र। रूपम श्रीक प्रिय नाटककार छथि महेन्द्र मलंगिया आ प्रिय निर्देशक छथिन उत्पल झा। मैथिली रंगमंचमेँ काज क'र' मे नीक लगैत अछि। २००३ मे खगौल, पटनामे अहाँकेँ सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रीसँ सम्मानित कएल गेल, तरंग महोत्सवमे उत्कृष्ठ नृत्यक लेल द्वितीय पुरस्कार राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा सिंहदेवी पाटीलसँ अहाँ ग्रहण केलहुँ।

तृतीय : कल्पना मिश्रा (दिल्ली)

सुश्री कल्पना मिश्राक जन्म मिथिलाक नागदह गाममे भेलन्हि। बच्चेसँ कल्पना जीक लगाव संगीतसँ भऽ गेलन्हि। अहाँ शास्त्रीय संगीतक प्रशिक्षण प्रयाग विद्यापीठ संगीत समिति, इलाहाबादसँ प्राप्त केलहुँ। अहाँक शिक्षा दिक्षा बेगूसरायमे भेल। पहिने हिनक झुकाव मैथिली संगीत दिस भेल, तत्पचात ई अभिनय दिस सेहो आकर्षित भेलीह। अहाँ दिल्ली स्थित मिथिलांगन संस्थासँ रंगकर्म कऽ रहल छी। मैथिलीक संग भोजपुरी, हिन्दीमे सेहो अहाँ लगातार अपन पहचान बनेबामे सफल भेलहुँ अछि। रंगमंचक संग अहाँ लगातार फिल्म, टेलीविजनक लेल काज कऽ रहल छी। कल्पना जी कतेको मैथिली नाट्य प्रस्तुतिमे अपन अभिनय प्रतिभा देखा चुकल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि : जट जटिन, उगना हॉल्ट, सामा चकेबा आदि। हिनक इच्छा छनि जे महिला कलाकारक प्रति मिथिला समाजक नजरियामे बदलाव अएबाक चाही। कल्पना जीक प्रिय निर्देशक छथि संजय चौधरी आ प्रिय नाटककार महेन्द्र मलंगिया।

सूचना: पंकज पराशरकेँ डगलस केलनर आ अरुण कमलक रचनाक चोरिक पुष्टिक बाद (http://www.box.net/shared/७५xgdy३७dr)बैन कए विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ निकालि देल गेल अछि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५, १६४.१००.८.३, २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....**पंकज पराशरकेँ बैन कए विदेह साहित्य आन्दोलनसँ। निकालल जा रहल अछि।**

सम्पूर्ण दस्तावेज मूल आ पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ , २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....क चोरुक्का *नीचाँक लिंकपर सेहो अछि।*

http://www.box.net/shared/७५xgdy३७dr

विदेहमे किछु अनोनिमस ई-मेल अएलाक बाद ओकर इन्क्वायरीक बाद चेतना समिति द्वारा पंकज पराशरकेँ देल सम्मानकेँ वापस लेबा लेल आ एहि लेखककेँ बैन करबा लेल ई हमर (चेतना समितिक आजीवन मेम्बरक हैसियतसँ) आधिकारिक अनुरोध अछि आ इन्क्वायरीक विस्तृत विविचन नीचा देल जा रहल अछि। कृपया चेतना समिति एहि विषयपर अपन आपात बैसकी करए आ उचित निर्णय लए से अनुरोध।- गजेन्द्र ठाकुर

इन्क्वायरीक विवरण:

पाठकक सूचनाक बाद ई पता चलल अछि (आ ओकर सत्यापन कएल गेल) जे एहि लेखकक ई एहि तरहक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो Douglas Kellner क Technopolitics क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक रूपमे नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे धोखासँ छपबओलक। तकर पता चललाक बाद "पहल"मे एहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२. एहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकेँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइक युगमे निबद्ध" पोथीकेँ हटाओल जा रहल अछि। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) आ आन कार्रवाही लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि। ३.पाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल kellner@gseis.ucla.edu पर "पहल" पत्रिका वा तकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा info@deshkaal.com पर आ दैनिक जागरणसँ nishikant@jagran.com, sanjay@jagran.com पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। डगलस केलनरक आर्टिकल गूगल सर्चपर technopolitics टाइप कए ताकि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहल पत्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com पर सेहो पहल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रारम्भ भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हुअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमर ई-पत्र ggajendra@gmail.com पर अवश्य पठाबी।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

डगलस केलनरक नीचाँक आलेखकक पंकज पराशर द्वारा चोरि सिद्ध कएलक जे एक दशक पहिने एहि लेखक द्वारा अरुण कमलक चोरि सँ आइ

धरि हुनकामे कोनो तरहक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरेबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्नियां वि.वि.क प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। २०-२२ बरख पुरान सत्य कथा। दरभंगामे रहैत रही, छतपर हम आ हमर एकटा पिसियौत भाइ साँझमे ठाढ़ रही। सोझाँमे सरवनजीक घरक बाअड़ीमे खूब लताम फड़ल छलन्हि। हमर पिसियौत भाइ हुनका इशारा दऽ कहलखिन्ह जे दस टा लताम आनू। ओ बेचारे दसटा लताम तोड़लन्हि आ आबि रहल छलाह आकि रस्तामे हमसभ देखलहुँ जे एकटा छोट बच्चा संग हुनका किछु गप भेलन्हि आ ओ पाँचटा लताम ओहि बच्चाकेँ दऽ देलखिन्ह। जखन सरवन जी अएलाह तँ कहलन्हि जे ओ बच्चा हुनका भैया कहि सम्बोधित कएलकन्हि आ पाँचटा लताम मँगलकन्हि- से कोना नञि दितियैक- सरवनजीक कहब छलन्हि। आब पंकज पराशर प्रसंगमे की भेल से देखी। प्रदीप बिहारीजीक बेटा प्रणवकेँ पंकज पराशर नोम चोम्स्की आ डगलस केलनरक रचना दैत छथिन्ह आ तकर अनुवाद करबा लेल कहै छथिन्ह। बेचारा जान लगा कऽ अनुवाद कऽ दैत छन्हि, ई सोचि जे जिनका ओ चच्चा कहै छथि- जे क्रान्तिकारी विचारक छथि (मार्क्सवादी!!!) से कोनो नीक पत्रिकामे ई अनुवाद छपबा देथिन्ह। मुदा छह मासक बाद चच्चाजी कहै छथिन्ह जे नोम चोम्स्की बला रचना हेरा गेल आ डगलस केलनर बला रचनाक अनुवाद नञि नीक रहए से रिजेक्ट भऽ गेल। मुदा क्रान्तिकारी कवि (चोरुक्का सेहो विवरण नीचाँमे अछि) दुनू रचना पहल पत्रिकामे पठा दै छथि- पहल-८६ मे डगलस केलनर बला रचना छपितो छन्हि (आ से अनुवादक रूपमे नहि वरन् मूल लेखकक रूपमे) आ ओ बैन सेहो कऽ देल जाइ छथि। हमर सरवन जी एकटा बच्चा द्वारा भैया कहलापर पाँचटा लताम ओकरा दऽ दै छथिन्ह मुदा हमर पराशरजी भातिजोक पाँचटा लताम निर्लज्जतासँ छीनि लैत छथि।

आ हम हुनकर खोजबीन तखन करै छी जखन ओ विदेहंमे आइडेन्टिटी बदलि हमरा गारि पढ़ैत छथि- हुनकर रियल आइडेन्टीटी नाङट करै छी। फेर सभसँ गप करै छी आ पाठकक सहयोगसँ *आरम्भ*, *पहल* क पुरान अंक भेटि जाइत अछि जतए हिनकर कुकृत्य छन्हि।

डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइडक कथा अंग्रेजी विषएमे स्कूलमे पढ़ने रही। एकटा वैज्ञानिक रहथि डॉ. जेकील हृदएसँ कलुषित। मोन करन्हि जे चोरि-उच्चक्कागिरी करी। से एकटा द्रवक खोज कएलन्हि जकरा पीबि कऽ ओ मिस्टर हाइड बनि जाथि आ रातिमे चोरि-उच्चक्कागिरी करथि। एक रातुक गप अछि जे मिस्टर हाइड ककरो हत्या कऽ भागि रहल रहथि मुदा भोर भऽ गेल रहै से लोक सभ हुनका खेहारए लगलन्हि। ओ डॉ.जेकीलक घरमे पैसि गेलाह (कारण डॉ.जेकील तँ ओ स्वयं छलाह) आ केबार भीतरसँ लगा लेलन्हि। लोक सभ चिन्तित जे डॉ. जेकीलकेँ ई बदमाश मारि देतन्हि से ओ सभ केबार पीटए लगलाह। मिस्टर हाइड द्रव पीअब शुरु केलन्हि मुदा ओहि दिन दवाइमे रिएक्शन

नहि भेलैक आ हुनकर रूप डॉ. जेकीलमे नहि बदलि सकलन्हि। आब एहि कथाक अन्तमे मिस्टर हाइड माथ नोचि रहल छथि जे हुनका अपन समस्त पापक प्रायश्चित मिस्टर हाइड बनि करए पड़तन्हि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... हिनकर रियल आइडेन्टिटी हम नाङट करै छी आ ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

मैथिलमे ई एकटा तथ्य छै जे चुपचाप जे गारि सुनै अछि तकरा कहल जाइ छै जे ओ बड्ड नीक लोक छथि। मुदा समए आबि गेल अछि मिस्टर हाइड सभकेँ देखार करबाक आ ओकरा कठोर सजा देबाक। मुदा ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि। मैथिलीमे बहुत गोटे छथि जे हिन्दीमे बैन भेल लेखककेँ पोसै छथि (मैथिली सेवाक लेल) जे जखन ककरो गारि पढ़बाक होए तँ ओ तकर प्रयोग कऽ सकथि।

एहि ब्लैकमेलरक डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइड बला चरित्र मैथिल सर्जनाक विरोधमे मैथिल-जन पत्रिकामे एक दशक पहिने उजागर भऽ गेल छल मुदा लोक हिनका पोसैत रहल।

आरम्भमे सेहो ई एकटा चिट्ठी मैथिलीक सम्पादकक विरोधमे देलन्हि जे छपि गेल आ ओकर घृणित भाषाक कारण भाइ साहेब राजमोहन झाकेँ माफी माँगए पड़लन्हि आ फेर ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुभेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिस्टर हाइडक ब्लैकमेलिंग आ एब्युजक द्वारे अहाँ सभकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घैला भरि गेलाक बाद ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

जे.एन.यू.मे छात्र-छात्रा सभसँ पोस्टकार्ड पर साइन लऽ ओहिपर अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घुमैत अपस्याँत कथित गोल्ड मेडेलिस्ट(!!!) मिस्टर हाइडकेँ चिड़ैक खोता तोड़बाक सख शुरुहेसँ छन्हि। पहिल कथा गोष्ठीमे जखन ई सहरसामे सभसँ पुछने फिरै छथि जे साहित्यकार बनबासँ की-की सभ फाएदा छै तखन ई एकटा पाइ आ पुरस्कारक लेल अपस्याँत मैथिल युवा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करै छथि, जे राजमोहन झा जीक शब्दमे मैथिलीसँ प्रेम नञि करैत अछि। ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि आ जखन ओ माफ कऽ देलखिन्ह तखन फेर हुनका गारि पढ़ब शुरु कऽ देलन्हि। हमरासँ लिखित मेल-माफी अस्वीकार भेलाक बाद मिस्टर हाइडक माथ नोचब स्वाभाविके। मिस्टर हाइड ककरो इनकम टैक्स, कस्टम वा सरकारी नोकरीमे देखै छथि, सुनै छथि तँ पाइक मारल जेकाँ हिनका मोनमे ब्लैकमेलिंग कुलुबुलाए लगै छन्हि, प्रायः आनन्द फिल्मक एक गोट कलाकार जेकाँ- जे एहने मिस्टर

हाइड लेल कहै अछि- जे ई डॉक्टर रहितए तँ किडनी बेचितए, से ओ जतए छथि ओतहु ब्लैकमेलिंगक धन्धा शुरू कैये देने छथि। मुदा चिड़ैक खोता उजाड़ैत-उजाड़ैत मधुमाखीक छत्ता उजाड़बाक गल्ती एहेन ब्लैकमेलर कैये दैत अछि। जे सरकारी नोकरी वा इन्कम-टैक्स, कस्टममे ई ब्लैकमेलर रहितए तँ देश जरूर बेचि दैतए।

जे कियो सूचनाक स्वतंत्रताक नाम पर, अन्तर्जालपर स्वतंत्रताक नामपर वा साहित्यिक समालोचनाक नामपर गारि पढ़ैत अछि तँ सर्वदा मोन राखू जे ई सभ स्वतंत्रता अहूँकेँ प्राप्त अछि। एहि घटनाक विषएमे अहाँसँ पत्रकार, न्यूजपेपर, पत्रिका आ हिन्दीक गणमान्य लेखकगण/ प्रोफेसर/ विश्वविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करेबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल ggajendra@gmail.com पर सूचित करू।

कोना पकड़ाएल ई चोर:-स्टेप बाइ स्टेप:-

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com

Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४८ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३.

Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४५ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

pahal=- ८६, aarambh -२३ aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad pathakgan.

Reply ०१/२५/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed२५३a/newDK/intell.htm ehi link par douglas kellner ke lekhak anuvad pahal-८६ ke page १२५-१३१ par achhi-soochnak lel dhanyad pathakgan.

Reply ०१/२४/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake

Me" hoinh aa Aarambh (ank २३, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March २०००) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.
Reply ०१/२४/२०१० at ०८:०२ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.
Reply ०१/२३/२०१० at ११:४० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and addresses parasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.
Reply ०१/२१/२०१० at १०:०० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
the htpps host matches reliance communications and the corresponding email gamghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com
Reply ०१/२१/२०१० at ०८:५० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, the organisation being taken into confidence.
Reply ०१/२१/२०१० at ०६:१३ PM
१४

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
maithil, mithila aa subodhkant nam se abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३ aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.
Reply ०१/१८/२०१० at ११:१९ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi
Reply ०१/१८/२०१० at ०९:२७ PM
from ISP २२०.२२७.१७४.२४३ of Dainik Jagran he abused many times earlier too to others. अविनाशकेँ सेहो २२०.२२७.१७४.२४३ आइ.एस.पी.सँ एहि प्रकारक ई-पत्र अबैत रहै मुदा ओ मामिला खतम कs देने रहथिन। ओ टिप्पणी सभ एतेक घृणित छैक जे एतए नहि देल जा रहल अछि।

पाठकक संदेश: एहि घटनाक्रमपर

kellner@ucla.edu" <kellner@ucla.edu
Dear Gajendra
thanks for the detective work. was there a response?
best regards,

Douglas Kellner
Philosophy of Education Chair
Social Sciences and Comparative Education
University of California-Los Angeles
Box 951521, 3022B Moore Hall
Los Angeles, CA 90095-1521

Fax 310 206 6293
Phone 310 825 0977
http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

dear Gajendraji,
apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.
Rajiv K Verma

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi
shridharam

ओकरा सार्वजनिक नहि करबै।अहां कें सूचनार्थ पठेने छी जे पंकज पहिनेहो इ सब काज करैत रहय छलैए।
avinash

ठीक छै--_-सम्पादक।

Dear Gajendra g

You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm the article published through the videha.

Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head jai Maithili jai Mithila

Sunil Mallick

President

MINAP, Janakpur

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.

shyamanand choudhary

Namaskar.

Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.

Dr. Ramanand Jha' Raman'

गजेन्द्र जी ,

चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहिं | यद्यपि हमहू चेतना क स्थाई सदस्य | जे हो. मुदा निंदास्पद घटना तं ई थिके तें दुखी कयलक | कतिपय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यानकनक हमर अपन स्नेग्रही स्वभाव, एहि दुर्घटनाक बाद तं आब चिंता मे ध' देलकय|

देखी,

हम अपने विस्मित भेलहुँ| बहुत दु:खद दृश्य | सृजन विरूद्ध साहित्यिक सन्दर्भ मे ई घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कुरूप प्रसंग क' क' स्मरण कैल जायत

सस्नेह,

गंगेश गुंजन.

PRIYA MAITHILJAN

APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA. DHANYABAD.

SAPREM,

PK CHOUDHARY

Gajendra babu

pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke

seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.
subhash Chandra yadav

प्रिय ठाकुरजी!
(माननीय संपादक)
"विदेह ई-पत्रिका" [मैथिली]
एखन धरिक उपलब्ध साक्ष्यक आधार पर हम अपनहिक संग जाएब पसिन्न करब।
शंभु कुमार सिंह
Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar;s duplicay
Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more
In the past Pankaj Parasar was accused for lifting the senses and emotions from poems of doyens of Hindi and Maithili poets. What Pankaj did should be condemned. I regret for him.

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country .–

VIJAY DEO JHA
Dear Gajendraji,
I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.
हां अपन मेल में लिखने छी जे विदेह आर्काइव से संबंधित लेखक'क सबटा रचना हटा लेल जायत। अहि से आर्काइव सं ई प्रसंग सेहो, एकर साक्ष्य सेहो मेटा जायत। हमर मत ई जा साक्ष्यब रहबाक चाही निक आ अधलाह दुनु तरहक काज'क। अहां अप्पसन कामेंट आ र्निणय सेहो आर्काइव मे जा के संबंधित रचना के पोस्टा-स्क्रिाप्टर के रुप मे भविष्या'क पाठक'क लेल सुरक्षित राखि सकैत छियन्हि।

ई दोहरेबाक बहुत औचित्यक नहि जे विदेह निक लागि रहल अछि आ अहांक परिश्रम एकदम देखा रहल अछि।
ईति,
सदन।

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole.
I feel proud for the person like you who shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean.

Thanx for enlightening me on the subject.

Regards,
Bhalchandra Jha.

पंकज पराशरकेर एहन कार्य पर स्मरण अबैत अछि करीब बीस-पचीस साल पहिलुक घटना, जहिया आकाशवाणी दरभंगासँ म,म,डॉ, सर गंगानाथ झाक एकमात्र मैथिलीक कारुणिक पदकेँ एक गोट कवि द्वारा अपन कहि प्रसारित कए देल गेल छल, जे बादमे (सजग श्रोता द्वारा सूचना देलाक बाद) आजन्म बैन कए देल गेलाह । कहबाक तात्पर्य जे जँ हम मैथिल दरभैगा- मधुबनीमे गंगानाथ बाबूक पदकेँ अपन कहि सकैत छी तँ ई कोन बड़का गप । निश्चये एहन रचनाकारकेर सङ्ग कड़गर डेग उठाएब आवश्यक ।
ajit mishra

Dear Gajendrajee,
We should take strong step to prevent such intellectual cheats.
My support is always with you.
K N Jha
This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,
Prof. Udaya Narayana Singh
प्रियवर ठाकुर जी,
मैथिल साहित्यकार आब साइबर क्राइम सेहो क रहल छथि, ई जानि अपार प्रसन्नता भेल |
पंकज पराशर के नकारात्मक बुद्धिक पूर्ण उपयोग करबाक लेल हम नोबेल प्राइज सा सम्मानित कराय चाहैत छी |
बुद्धिनाथ मिश्र

Sampadak Mahoday
Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee
ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi
Sadar
SHIV KUMAR JHA

गजेन्द्र भाई,
नमस्कार ! मैथिली मे एहि तरहक काज लगातार भ' रहल अछि । किछु व्यक्ति एहि धंधा मे अग्रसर छथि । मैथिलीक सम्पादक लोकनिक अनभिज्ञताक फायदा कतेको अंग्रेजी पढ़निहार तथाकथित साहित्यकार लोकनि उठा रहल छथि। पंकज जीक पहल मे छपल लेख के हम सेहो पढ़ने हीं आ किछुए दिनक बाद हम नेट पर मूल लेखकक आलेख के सेहो पढ़लहु । हमरा त' आश्चर्य लागल छल जे पंकज जी आलेखक कम स कम शीर्षक त' बदलि लैतथि मुदा हुनका एतेक ज्ञान रहितनि तखन की छल।

एतबे नहि , हिनक बहुत रास कवितो अंग्रेजी साहित्य स' हेर-फेर कयल गेल अछि । खैर ! जे करथि ... । मुदा एहि बेर कहाबत ठीक होबाक चाही " सौ सोनार के त' एक लोहार के "। प्रकाशन मे जे भी कियो व्यक्ति गलती क' रहल छथि हुनका गंभीर क्रिमिनल बुझबाक चाही। धन्यवाद एहि लेल अहाँ के जे एतेक जोरदार तरीका स' एहि गप्प के उठैलहु।
अहाँक
प्रकाश चन्द्र ।
pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal
kamini

Gajendr jee,
maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otabe svaahaa hetai.
हमर मनतब एतबे, जे एक बेर अहां देखार क देलहुं, आब छोडि देल जाओ. हिन्दीयो मे एहिना भ रहल छै. बेर बेर आ खराब भाषा मे लिखल मोन के दुखी करैत अछि. फेर लागैत अछि जे अहि मे समय कियैक नष्ट करी?
हिन्दुस्तान मे जाति आ सेहो मैथिली से जाति नयि जाएत. हम एकरा नयि मानैत छलहुं मुदा आब 30 बरख से मैथिली मे लिखनाक बाद आब देखल जे एक ओर
1 मैथिली साहित्य मे लिली जी, उषा जी आ शेफलिका जी के बाद यदि किओ नाम लैत अछि त हमर.
2 एखनो कोनो पत्रिका बै छै त हमरा लेल रचनाक आग्रह होइते छै.
3 एखनो हम ओतबे सक्रिय छी आ निरंतर लिखि रहल छी.
4 दुखद जे हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन के हम अपने तुरिया बुझैत छी) के बाद एहेन कोनो सशक्त कोन, महिला लेखने नयि आएलए.

5 ई स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पाबै छी जे हमरा पर, हमर रचना यात्रा अथव हमर रचना पर किछु नयि लिखल गेलए, चाहे ओ मोहन भारद्वाज रहथु अथवा आन किओ. जहन हमर दशक केर चर्च होइत छै, तीन चारिटा नाम पर सविस्तार चर्चा होइत छै, जाहि मे हमर नाम नयि रहैत छै. हमर नाम मात्र सन्दर्भ लेल जोडि देल जाइत छै.

6 एतेक दिन मे मात्र रमण जी हमरा पर एक गोट लेख लिखलन्हि. हम ओकरा पुन: टाइप करबा के अहां लग पठायब.

7 जाति पाति धर्म आ द्वेष पर कहियो ध्यान नयि देलाक कारणे त कही हमर ई स्थिति नयि छै, आब हमरा ई सोचबा मे आबि रहल अछि.

8 हमर शिक्षक, जे स्वयं हिन्दी के ख्यातिलब्ध कथाकार छथि, हमरा बुझेने रहलाह जे हम मैथिली मे लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) से नयि छी, तैं हमर लेखन के कहियो मैथिल सभ नयि नोटिस करताह, कहियो किछु नयि करता.. अपन भाषाक प्रति प्रेम के आगरह कारणे हम हुनकर बात नयि माननियै, लिखैत गेलहुं, मुदा आब लागि रहलअए जे हुनकर कहबी सही छलन्हि की?

9 एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखियो. ओकरा विरुद्ध किछु करियु. मैथिली मे जे पैघ पैघ संस्था चाइ, चेतना समिति सनक, सभ बेर विद्यापति पर्व मनबैत छथि. लाखो खर्च करै छथि, मुदा नीक लेखक केर पोथी सभ बेर 5-7 टा निकालैथु, से नयि होबैत छन्हि.

10 हमरा भेटल जानकारी के मोताबिक विद्यापति हॉल किराया पर चढै छै. तकरा मे कोनो आपत्ति नयि, यदो ओकरा से किछु आय होबै. मुदा ओकरा मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लेल मांगल जाएत, त; नयि भेटै छै. यदि ओकर शुल्क चुका दी, तहन त किरायाके रूप मे किऊ ल' सकि छै. एकरा सभ के उजागर करी.

11 व्यक्ति से संस्था पैघ होइत छै. जतेक संस्था सभ छै, तकरा पर लिखी, साहित्य अकादमीक मैथिली विभाग सहित.

12 लिली रेक सभटा रचनाक अनुवाद अधिकार हमरा देने छथि. हुनक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त पोथी 'मरीचिका' केर हिन्दी अनुवाद लेल पिछला 2-3 साल से हम लिखि रहल छी. साहित्य अकादमीक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य" मे हम पिछला 25 साल से अनुवाद सहित छपि रहल छी. मुदा हमरा से अनुवादक नमूना मांगल गेल. ओहि कुर्सी पर जे स्वनाम धन्य बैसल छथि, हुनका हमरा मादे नयि बूझल त कोनो मैथिल साहित्यकार से पूछि सकैत छलाह. ई तहिने भेलै, जेना एक बेर एक गोट चैनल ऋषिकेश मुखर्जी से हुनकर बायोडाटा मंगने छल आ एखनि पढल समाचारक अनुसारे आ. जानकी वल्लभ श्हस्त्री से हुनकर बायोडाटा पद्मश्री लेल मांअगल गेलैय.

13 अपन विनम्रता दर्शाबैत हम लिली जीक दू तीन टा कथाक हिन्दी अनुवाद हम पठा देलियन्हि. तैयो अई पर कोनो विचार नयि. लिखला के बाद हमरा कहल गेल जे हम लिली जी से साहित्य अकादमी के अनुवादक अधिकार दियाबे मे मददि करी. आरे भाई, अहां के अनुवाद से मतलब अछि ने, आ जहन हम अनुवाद क; के देब' लेल तैयार छी तहन अकादमी के किअयैक अधिकार चाही? अई लेल जे अकादमी अपन पसीनक आदमी के अनुवाद लेल द; सकय. एखनि धरि ओकरा पर निपटारा नयि भेलैये. अकादमी से फेर कोनो पत्र नयि आएल अछे. अनुवाद तैयार राखल छै. लिली जी आब बहुत बुजुर्ग भ; गेल छथि. हुनक मात्र इयैह इच्छा छै (आ बहुत स्वाभाविक) जे हुनकर पोथी सभ हुनका सोझा मे प्रकाशित भ; जाए.

14 लिली जी के पोथी हिन्दी मे आनबाक श्रेय हमरे अछि, ई मनितहुं ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल

समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.
15 मैथिली के भारतीय ज्ञानपीठ से पुस्तक प्रकाशन लेल हमही आगां एलहुं आ प्रभास जी आ लिली जी के पोथी बहार भेलै.भारतीय ज्ञानपीठ से मैथिली पुस्तक प्रकाशन के श्रेय हमरे छन्हि, ईहो मनैत ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.
गजेन्द्र जी, मैथिलीक ई सभ मानसिकता पर आन्दोलन करी जाहि से रचनाकार आ वरिष्ठ रचनाकार सभ के अपमानित नयि होब' पडै. अहां चाही त' एकरा विदेह पर द' सकै छी.
हम दोसर बात सेहो लिखि के पठायब. मुदा हम फेर कहब, जे हम व्यक्ति के नयि संस्था आ व्यक्ति के मानसिकता के दोष देबन्हि. लोक पढथु आ पूचाथु ई स्वनामधन्य सभ से जे जकरा से अहां के गोलौंसी अछे, तकरा पर अहां लिखब आ जकरा से नयि अछे, जे मौन भावे लिखि रहलए कोनो विविआद मे पडल बगैर, हुनका लेल ई व्यवहार?
-विभा रानी.
Shri gajendraji
good work.
Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat.
chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi.
Saadhuvaad.
manoj pathak.

संगहि "विदेह" कैँ एखन धरि (१ जनवरी २००८ सँ १४ जनबरी २०१०) ९३ देशक १,०४२ ठामसँ ३६,७१७ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी.सँ २,११,८९१ बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा)- धन्यवाद पाठकगण।- गजेन्द्र ठाकुर

संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मादेँ।]

१. श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२. श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद। आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।



रमेश

बहस- पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

विदेह-सदेह २ (२००९-१०) सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छनि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कयल जाय, कम होयत। ‘‘विदेह’’क मैथिली प्रबन्ध-समालोचना- अंक, अइ पोल-खोल लेल कएक युग धरि विलम्बित भऽ कऽ निबद्ध रहत, से ‘‘समय कें अकानैत’’ कहब कठिन अछि।

साहित्योमे चौर्यकलाक उदाहरण पहिनहुँ अबैत रहल अछि गोटपगरा। मुदा एक बेरक चोरि पकड़ा गेलाक बाद प्रायः चोरिक आरोपी साहित्यकार मौन-व्रृत धारण करैत रहलाह अछि आ मामिला ठंढ़ाइत रहल अछि।

मुदा ताहि परम्पराक विपरीत अइ बेरक चोर ’सिन्हा चोर’ निकलल अछि आ विगत एक दशकसँ निरन्तर चोरि करैत जा रहल अछि- सेन्ह काटिकऽ। आ तेहेन महाचोरकेँ मैथिलीक साहित्यकार आ संस्था सभ तरहत्थीपर उठा-उठा कऽ पुरस्कृत केलक अछि आ समीक्षाक

चासनीमे चोरायल कविता सबकेँ बोरि देल गेल अछि।
विदेह-सदेह-२ प्रमाण-पुरस्सर अभियोगे टा नहि लगौलक, अपितु एहेन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विरुद्ध साहित्यिक दण्ड आरोपित कऽ अपन ‘‘बोल्डनेस’’ सेहो प्रदर्शित केलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः ‘‘डेयर डेभिल’’ होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओही सीढ़ीकेँ निचाँ खसा दैत अछि। फेर ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे गारिक निकृष्टतम स्तरपर उतरऽ मे कनियों देरी नहि होइत छै। ओ नाम बदलि-बदलि कऽ गारि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे.एन.यू.क छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखेबामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहेन प्रवृत्ति कएटा आओर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ-पैघ नामक माला जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तूरकेँ हिन्दीक पैघ-पैघ नामक वैशाखीक एतेक जरुरति किऐक होइत छनि?
‘‘विदेहक’’ ‘‘इनक्वायरीक विवरण’’ पढ़ि कऽ रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। पहल-८६ आ आरम्भ-२३ मे जे पोल खूजल छल, अइ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बादे मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेवाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक। ‘‘मैथिल ब्राह्मण समाज’’, रहिका (मधुबनी) सन अँखिगर संस्थाकेँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा ‘‘विनोद’’ आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन

अछि जे पुरस्कृत करेबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल हैत। “विदेह” द्वारा रहस्योद्घाटन केलाक बावजूद एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार आपस करेवाक वा आने कोनोटा कार्रवाई करवाक बेगरता नहि बुझा रहल छै आ सर्द गुम्मी लधने अछि। एहेन “जड़-संस्था” सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय जे पहल-८६ वा आरम्भ-२३ अइ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। “विलम्बित कएक युग मे निबद्ध” क भूमिकामे अनेरो विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता केँ विश्वस्तरीय प्रमाणित करबाक लेल अँखिगर चोरे एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस केलनर जकाँ ओहू सभ कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एही काव्य-पोथीमे भेटि जाय। अंततः मि. हाइडक कोन ठेकान? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। तकर नाजायज फायदा कोनो ब्लैकमेलर किऐक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पोलिटिक्स की थिक- टेकनिकल पोलिटिक्स थिक, सैह किने? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानोक यात्रा कयल जा सकैत अछि। “टेक्नो-पोलिटिक्सक” बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सिंह “महेश” पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत अछि। प्रो. अरुण कमलक “नये इलाके में” सेंधमारी कऽ कऽ “समय केँ

अकानल'' जा सकैत अछि। आर तँ आर, अइ टेकनिकल पॉलिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ ''विलम्बित कएक युग...'' पोथीक समीक्षा लिखबा कऽ ''मिथिला दर्शन'' (५) सन पत्रिकामे छपवा कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत चछि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल औजार थिक ''टेक्नो पोलिटिक्स''!

ई मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आरम्भ-२३ आ पहल-८६ कोलकातामे नहि भेटल होइन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानबामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक ''चन्द्रभागा में सूर्योदय'' आ एही शीर्षकक नारायणजीक कविता (चन्द्रभागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पूछऽवला कविताक भावार्थ किऐक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करा गेलनि? एकरा ''प्रायोजित समीक्षा'' किऐक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ वेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटलनि जीवकान्तजीकेँ? ओइ सभ कविताक कनियोँ ''छाया''क शंको नहि भेलनि समीक्षककेँ? ''सभ्यताक सभटा मर्मान्तक पुकार''क नोटिस लेबऽवला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असभ्य आ मर्मान्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक ''पोजीशन फॉल्स'' भऽ जेतनि से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियें रहनि, उदय चन्द्र झा ''विनोद'' केँ सेहो नहि रहनि। ई अभिज्ञान तँ पंकजे पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारे ''पराशर'' मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जतेक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोत्री भऽ कऽ तीन बेर चोरि

केनाइ ''पराशर'' महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो कनबैत हेतनि। आखिर जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस किए ने लेलनि, जखनकि हुनका विचारेँ ''मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकऽ विषवमन करैत अछि''(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक चोरिवला कविता-पोथीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घोर प्रशंसक छथि। तखन अइ समीक्षा-आलेखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ ''विष-वमन'' कोना ने लगौक? हुनका सन ''पढ़ाकू'' समीक्षक-पाठककेँ ''फॉल्स पोजीशन''मे अननिहार ''एक्सपर्ट आ हैबिचुएटेड'' साहित्य-चोरसँ प्रशंसा आ पुरस्कार दुनू पाबि जाय तँ मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्भाग्य? अंततः विदेह-सदेह टा किऐक निन्दा केलक एहि घटनाक? आन कोनो पत्रिका किऐक नहि केलक? डॉ. रमानन्द झा ''रमण'' इन्टरनेटपर निन्दा करैत छथि तँ घर-बाहर पत्रिकामे किऐक नहि जकर ओ सम्पादक छथि? चेतना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहने-एहने साहित्यकारकेँ तखन अपने पत्रिकामे कोना निन्दा करत, जखनकि पुरस्कार आपसो नहि लैत अछि, जानकारी भेलाक वा साकांक्ष साहित्यकारक अनुरोध प्राप्त भेलाक बादो? नचिकेताजी नेटपर निन्दा करताह आ ''विदेह''मे छपत तँ ''मिथिला दर्शन''मे किऐक नहि निन्दा वा सूचना छपल? कारण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशरक काव्य-पोथीपर छपत, तखन ओही पोथीक चोरि कयल कविताक निन्दा कोना छपत? चारु भाग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ि रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समक्ष आ (अनजाने मे सही) हुनको लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे अन्ततः कोन अन्तर अछि वा

रहल? एहेन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक बेगरता किऐक नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय कतेक उचित, जखन कि ई चोरि तेसर बेरक चोरि थिक आ से छपि-कऽ भण्डाफोड़ भेल अछि। एकरा वरेण्य आ वरीय साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जायब किऐक नहि मानल जाय, जखनकि आरम्भ, मैथिल-जन, पहल आ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहेन सम्भावनायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चेन्ह लागल होइक? की पोथीक आकर्षक गत्ता देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? जँ से भेल हो तँ सब किछु ''ठिक्के छै भाइ''? अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डगलस केलनरक ''टेक्नोपोलिटिक्स'' तँ छपि गेल ''पहल''मे चोरा कऽ। आब जीवकान्तजी, ज्ञान रंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पूछथु जे नोम चोम्स्कीवला रचना कतय गेल, की भेल, कोन नामें छपल? पंकज पराशरक नामें कि पदीप बिहारीजीक सुपुत्रक नामेँ (अनुवाद रूपमे)। ई रिसर्च एखन नहि भेल तँ भविष्यमे पुनः एकटा साहित्यिक चोरिक पोल खूजत? अंततः एकटा माँछकेँ कएटा पोखरिकेँ प्रदूषित करए देल जाय आ से कए बेर? उदय-कान्त बनि कऽ गारि पढ़वाक आदति तँ पुरान छनि डॉ. महाचोर केँ। ककरो ''सरीसृप'' कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ कोनो परिवारमे घोंसिया कऽ विष वमन कऽ सकैत छथि। ऑक्टोपसक

सभ गुणसँ परिपूर्ण डॉ. पॉल बाबाकेँ चोरिक भविष्यवाणी करवाक बड़का गुण छनि तेँ हिनका नामी फुटबॉल टीम द्वारा पोसल जाइत अछि, जाहिसँ ‘‘विश्व-कप’’केँ दौरान अइ ‘‘अमोघ अस्त्रक’’ उपयोग अपना हिसाबेँ कयल जा सकय।

सहरसा-कथागोष्ठीमे पठित हिनकर पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी। ई उद्घोषणा करवाक की बेगरता रहैक- से आइ लोककेँ बुझा रहल छैक। अविनाश आ पंकज पराशरक मामाजी तहिया हिनकर कथाकेँ ‘‘टिप्पणीक’’क्रममे मैथिली-कथाक ‘‘टर्निंग प्वाइन्ट’’ मानने छलाह। आइ ओ ‘‘टर्निंग प्वाइन्ट’’ ठीके एक हिसाबेँ ‘‘टर्निंग प्वाइन्ट’’ प्रमाणित भेल, कारण कथाक ओहि शीर्षकमे सँ ‘‘नहि’’ हटि गेल अछि, हिनकर तेबारा चोरिसँ। हिनकर पहिल चोरि (अरुण कमलक कविता- नए इलाके में) क निन्दा प्रस्तावमे ‘‘मामाजी’’ आ डॉ. महेन्द्रकेँ छोड़ि, सहरसाक शेष सभ साहित्यकार हस्ताक्षर कऽ ‘‘आरम्भ’’केँ पठौने छलाह। आइ ओ हस्ताक्षर नहि केनिहार सभ कन्छी काटि कऽ वाम-दहिन ताक-झाँक करवाक लेल बाध्य छथि। द्वैध-चरित्र आ दोहरा मानदण्डक परिणाम सैह होइत अछि। अविनाश तखन तँ देखार भऽ जाइत छथि जखन ओ विदेह-सदेह-२ मे लिखैत छथि जे ‘‘एकरा सार्वजनिक नहि करबै’’। नुका कऽ सूचना देवाक कोन बेगरता? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब हेवाक डर वा कोनो ‘‘टेक्नोपोलिटिक्स’’(?) केर चिन्ता?

विदेह-सदेह-२ क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ दैत अछि। जतय राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.के.चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द झा, अजित मिश्र, के.एन.झा, प्रो.नचिकेता, बुद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र

झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि अपन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा केलनि अछि, ततहि अविनाश, डॉ. रमानन्द झा “रमण”, विभारानीक झाँपल-तोपल शब्द आश्चर्य-भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक “प्रबल भाव-भंगिमा” साहित्यकारोक “मेंहायल आवाज”क कोनो चिन्ता नहि करैत अछि। विभारानी तँ कमाले कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनेवाक उचित स्थान नहि छल। ई ओनाठ काल खोनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगनी भऽ गेल। कोनो चोर बेर-बेर अपन कु-कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बुझा रहल छनि आ चोरकेँ देखार केलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे कतेक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त केलनि अछि से अपने पत्र अपने ठंढ़ा भऽ कऽ पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयोमे एहिना भऽ रहल अछि, तँ मैथिलीमे माफ कऽ देल जाय? आब हिन्दीसँ पूछि-पूछि कऽ मैथिलीमे कोनो काज होयत? विभारानी ज्योत्सना चन्द्रमकेँ ज्योत्सना मिलन केना कहैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नोतल जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उच्चवर्णीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विभेद एना भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आरक्षणक दृष्टिकोणेँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु बेशीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) केलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणेँ जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ रहि जायत? विभाजीकेँ बुझले नहि छनि जे हुनका लोकनिक

बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन तेवरक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने ‘‘इजोड़ियाक अडैठी मोड़’’। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेलो छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रेरणा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा कोनो आपत्ति नहि, मुदा अर्थालाभ तँ एतय नगण्य अछिए। सामाजिक सम्मान विभाजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे ‘‘जड़’’लोक छै तँ ‘‘चेतन’’ लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करवाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेवाक होड़सँ बँचवाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दिवालियापन केर शिकार जूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर रहि जायत? विभारानीक विचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना केलनि अछि, आइ ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठेबापर बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कर्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक श्रृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब कोनो साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेवाको चाही आ तकरा देखार करवाक ‘‘बोल्डनेसो’’ हेवाक चाही। ‘‘चाही’’वला पक्ष साहित्यमे बेशीए होइत अछि। एहेन-एहेन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक ‘‘चुप्पी’’ एहेन घटनाकेँ प्रोत्साहित करैत अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम

तँ करिते अछि। जाधरि पंकज पराशरक चोरि-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझेतैक? विभारानी अपने तँ समीक्षा प्रायोजित नहि करओती? सक्षम लेखकक व्यवहारोक अपन स्तर होइत छै। तँ संगठित भऽ चोरिक भर्त्सना हेवाक चाही।

